श्रीः ।

हनुमन्नाटक ।

(रामगीतभाषा)

कवि हृदयराम विरचित.

श्रीपण्डितनन्दकिशोरदेवशर्माद्वारा

संस्कृत.

जिस्को

खेमराज श्रीकृष्णदासने

मुम्बई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें

छापकर प्रगट किया ।

संवत् १९५७, शके १८२२.

श्रीः ।

श्रीवेङ्कटेश्वराय नमः ।

दोहा—राम चरण रति जो चहै, अथवा पदनिर्वाण ॥
भावसहित सो यह कथा, करै श्रवण पुटपान ॥

चौ०—मनकामना सिद्धि नर पावै । जो यह कथा कपट तजि गावै ॥
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं । ते गोपदइव भव निधि तरहीं ॥

प्रस्तावना ।

हिन्दीभाषा के प्राचीन कवि **तुलसीदास**, सूरदास की कविता तो अति रमणीय हैंही, परन्तु यह हृदयराम नामक कवि की कविता हनूमान् नाटक भी उक्त कवियों की कविता से कुछ कम नहीं है किन्तु यह नाटक आज तक गुरुमुखी अक्षरोंहीमें होने के कारण ऐसा विख्यात नहीं है जैसी कि उक्त कवियों की कविता है । और इसी-लिये इस की रसमयी कविता के आस्वादन से बहुतेरे रसिकजन वञ्चित होंगे । जो हो आज हम श्रीमान् सेठ **खेमराज-श्रीकृष्ण-दास** के अनुरोध से इस अभाव के दूर करने को प्रवृत्त हुए हैं, पर इस के पहिले यह भी लिखना योग्य समझते हैं कि इस का नाम हनुमन्नाटक क्यों है, क्योंकि इस में नाटकत्व की एक भी बात नहीं है । हां ! सर्गों वा काण्डों की जगह **प्रथमोंकः द्वितीयोंकः** आदि १४ अंक जरूर लिखे हैं, सो भी नाटकशैली के विरुद्ध हैं । पर, इसमें कवि का दोष क्यों नहीं समझाजाताहै कि वह अपने ग्रंथकी " इतिश्री " में " रामगीते " ऐसा लिखते हैं, अतएव इस ग्रंथ का नाम यथार्थ में "रामगीत" ही है । अब रहा यह कि इस का नाम हनुमन्नाटक क्यों पड़ा. सो इस का कारण चाहे तो अंधपरंपरा समझलीजिये, और चाहे यह समझिये कि इस ग्रंथ के बहुतेरे कवित्त, सवैये, " **संस्कृत हनुमन्नाटक** " के श्लोकों का अनुवादमात्र है, इसीलिये इस का नाम हनुमन्नाटक पड़ाहो । पर क्या करैं ? हम तो संस्कृत हनुमान् नाटक मेंभी सर्वाङ्गीन नाटकत्व नहीं देखते । अच्छा कुछ हो, उक्त (भाषा हनु-मन्नाटक) ग्रंथ की कविता अत्यंत मनोहर है, इस में अणुमात्र संदेह नहीं. जहांगीर बादशाह ने हृदयराम कवि को किसी एक अपराध करने के कारण कैद (कारारुद्ध) किया था, उसी जेलखाने (कारा-गृह) में उक्त कवि ने यह ग्रंथ सम्वत १६८० विक्रमाब्द में बनाया था, औ फिर इसी रामचरित्र के प्रताप से कवि कारागृह से मुक्त भी होगये थे परंतु यह ग्रंथ जेलखाने की दीवारोंमेंही लिखा रहगया, इस

के पीछे जब बादशाहको खबर हुई तो उस ने इस ग्रंथ को अति उत्तम समझकर दीवारों में से पारसी में नकल कराकर अपने प्राईवेट् पुस्तकालय (कुतुबखाने) में रखवादिया तत् पश्चात् सम्वत् १७६३ में सिक्खों के दशवें बादशाह गुरुगोविंद सिंहजी जो कि उस समय में धर्म के रक्षक, मर्य्यादापालक और एक अद्वितीय ब्रह्मण्य थे हम उन की ब्रह्मण्यताके परिचायक उनहीं के लिखे दो सवैये अप्रसंग होने परभी इस स्थल पर प्रकाश किये बिना नहीं रह सकते,

यथा--

" सुद्ध जिते इनही के प्रसाद इनही के प्रसाद सुदान करै ।
अघ ओघ टरै इनही के प्रसाद इनही की कृपा पुनधाम भरै ॥
इनही के प्रसाद सुविद्या लई इनही की कृपा सब शत्रु मरै ।
इनही की कृपा के सजै हम हैं नहिं मो से गरीब के रार परै॥ १॥
सेव करी इनहीं कहँ भावत और की सेव सुहात न जीको ।
दान दियो इनहीं को भलो अरु आन को दान न लागत नीको ॥
आगे फले इनहीं को दयो जग में यश और दयो सब फीको ।
मो गृह में तन ते मन ते शिर लौं धन है सब ही इनहीं को"॥ २॥

पर बड़ेही शोककी बात है कि उन्हीं महापुरुष के मतानुयायी बाजे २ सिक्ख ब्राह्मणों की निन्दा करने में नेक नहीं संकोच करते । अस्तु, हमें क्या, " अपनी करनी पार उतरनी " हमारी तो प्रकृति यह है कि उनही गुरु गोविंदसिंहजी ने यह ग्रंथ शाहआलम बहादुरशाह अपने मित्र के समुद्ररूपी पुराने दफ्तर का आलोडन करने से चौदह रत्नरूपी चौदह अंकों का यह ग्रंथ प्राप्त किया, और इसे अनुपम रत्न समझकर इस ग्रंथ से इतना प्रेम करते थे किसी समय भी अपने देह से जुदा नहीं करतेथे । बस, तभीसे यह ग्रंथ गुरुमुखी

अक्षरों में हुआ, और खालसा पंथ में इस की ऐसी प्रतिष्ठा हुई कि अब तक सिक्खों के गुरुद्वारे श्रीदरबार साहिब अमृतसरजी में है गुरु ग्रंथ साहिब के बिना और कोई ग्रंथ पढा जाता है तो यह हनुमन्नाटकही पढाजाता है । पाठक ! यह वही हनुमन्नाटक है, इसे हम ने गुरुमखीसे नागरी में अनुवाद किया है, और कहीं कहीं कठिन पदों का खुलासा अर्थभी करदियाहै और इसके संशोधन करने में जो हम को परिश्रम हुआहै उसे तो वे सर्वान्तर्यामी करुणावरुणालय श्रीरामचंद्रजी महाराजही जानते हैं जिनका कि इस ग्रंथ में चरित्र है, किमधिकमिति ।

अमृतसर
ता० १७ मार्च १८८७ ई० } नन्दकिशोरदेव शर्मणः ।

श्रीगणेशाय नमः ।

हनुमाननाटक भाषा

प्रारंभ ।

प्रथमाऽङ्क १

कवित्त–तीनोंलोकपतिप्राणपतिप्रीतिहीमेंरति अगि नतगतीकेचरणशिरनाइहौं । सदाशीलपतिसतपतिएक नारीव्रत शिवसनकादिपतियशहिसुनाइहौं ॥ सुर[1]पति हूकेपतिजानकीकेपतिराम नैनकोर[2]ओरकबहूंतोपरजा इहौं । फुरे[3]वाँकपतिसुनोसंतसाधुमाति तबऐसेरघुपतिके कछुकगुणगाइहौं ॥ १ ॥

स०-काहुकोसारस्वतिवरपूरणकाहुकोहैशिवसेवरदैया ।
काहुकोहैचतुरा[4]ननकोवरकोऊगजा[5]ननआसबसैया ॥
कानसुनेपहचाननकाहुसोंसाँचकहेकविरामकहैया ।
जानतश्रीरघुवीरकेनामहिजासुनिएसबहोंहिसहैया ॥२॥

कवित्त–श्यामघ[6]नदेहसोमैं चात[7]कज्योंनेहबांध्योदेहप्रेम बूंदहोंजपैयाताहीनामको । चरणसरो[8]जरसभरेताकोभयो अलि[9]जादिनपरागपाऊँताहीछिनकामको ॥ रामसुखधु

---

१ इन्द्र । २ कटाक्ष । ३ सरस्वती । ४ ब्रह्मा । ५ गणेश । ६ बादल । ७ पपीहा । ८ कमल । ९ भौंरा ।

नसुनभयोमृगताहीछिनरूपासिन्धुमीनडरहै नकाल[1]घाम
को । वैउदाररायहैंमैंभक्तिभीखमाँगोवैतोरामचन्द्रचन्द्र
माचकोरमनराम[2]को ॥ ३ ॥

सवैया–शैवकहैंशिवयारघुवीरहिंब्रह्मकहैंसबवेदपढैयाँ[3] ।
बौध[4]कहैंइककर्मकहैंइकधर्मकहैंइकधामसहैयाँ[5] ॥
एककहैंकरताहरताजँन[6]एककहैंघटप्राणबसैया ।
तेप्रभुरामसुनोअपनोयशहैंसबद्यौस[7]नदौर[8]सुनैया ॥ ४ ॥

कवित्त–कौशलतलैया[9]तनु[10]कुशलनिधानप्रभुकलिम
लैं[11]मथनैं[12] सुसाधुनकेप्राणहैं । करुणा[13]कीखानपहचानजा
कीदीननसोंमानलेतजीकीसवहीकोसावधानहैं ॥ देवन
केदेवरीझेनेकाकियेसेव हियेपरपीरजानवेकोचतुरसुजान
हैं । वारिद[14]सेश्यामअभिरामकामहूकेकामऐसेरामराम[15]
कहियेविराजमानहैं ॥ ५ ॥

स०-रामकेनामसोंप्रीतिकरोजिनधामकेकामरहोउरझाई ।
जोनवनेतऊएकघरीसुनलेगुनकोतजआरसताई ॥
पेटहिमेंजिनपेटभरो अबपेटकेकाजकहादुचिताई[16] ।
लेसिखआवरेआव[17]चलीजैसेपानीमेंनावमलाहचलाई ।६।

---

१ धूप । २ कविकापूरानामहृदयरामहै उन्होंनेसंक्षेपसे अपना उपनाम रामरक्खाहै । ३ वेदके ज्ञाता । ४ बुद्धावतार । ५ घरबाहरसहायक । ६ दास । ७ दिन । ८ देश । ९ पुत्री । १० पुत्र । ११ पाप । १२ मथनेवाले । १३ कृपा । १४ बादल । १५ कवि । १६ दुविधा । १७ आयुः ।

रामकोरूपनिहारमनोज[1]लजायमनोनिजदेहविसारो ।
मज्जन[2]काजकियेउदवर्तन[3]ताहीकोलैनभचंदउभारो ॥
श्रीरघुवीरकेवाकविलासतेंधर्मरच्योत्रैलोक्यविथारो ।
नैनकीकोरतेनेहकियोविघडीलकीछाँहेतशीलसँवारो ७
क्योंधरतेधरधीरसवैभटहोनकछूबलकाहूकेपोते[4] ।
क्षत्रियशोणितकेकरकुंडननात फिरोभृगुनंदनसोते ॥
क्योंटरतेसुखरावणकेधनुतोरैकहोसियलायककोते ।
जोरघुवंशशिरोमणिभूतलराजिवलोचनरामनहोते ॥८॥
मोविनतीअहिनाथ[5]कहेविधिहौंविनकाननकाहेतकीनो।
होंडरप्यो सुनवातफनिंद[6]डगेशिरनैकफुटेपुरतीनो ॥
हैकहुकौनसुनेयशरामकोशीशकंपायकेश्वासनलीनो ।
मैंश्रमकैत्रैलोक्यरचेतुहिऐसोहिजानतुहीसिरदीनो ॥९॥
श्रीरघुवीरशिरोमणिकी यहकीरतिहैकिधौं दूतीबखानो।
आनदईकमला[7]हरिकीयहबातसुनेसुरलोकडरानो ॥
जानयहैमुखचार कियेविधिशंभुरहे अजहूँलपटानो ।
शक्र[8]सहस्त्रकियेचखचौंकछहूमुख[9]व्याहकियोनसयानो ॥
भोगहिछाँडनयोगकरेकोउमैंशिवलौंशिवलोकनिहारो ।
आगमतेनमिटेमनकोगमवेदविवादनजायविचारो ॥
मौनतेकौनसुभोटीरहेविनवोलेखुलेघरकोनाकिवारो ।

---

१ कामदेव । २ स्नान । ३ बटना । ४ पास । ५ शेषनाग । ६ शेष । ७ लक्ष्मी । ८ इन्द्र । ९ स्वामिकार्तिक ।

जातेयहैजियजानतहौंजिनरामकह्योतिनकाजसँवारो ॥
हैनकहूँकविअंतसुसुंदरसंतसमूहतऊसुखपैहैं ।
काहेतेरामकेनाममिलीकविरामतुमेंशिरनायसुनैहैं ॥
खारेउनीरहुवाइगविन्दहूजीवकोकोउचरणोदकदैहैं ।
कौनसुसाधुनआदरसौंकहिमूँडचडायनस्वादहिलैहैं ॥
हैमतिहीनइहैकविताशिरजानतहौंउपहासधरैगी ।
राममईसुखदैसबकोमनकेदुखदोषसँतापहरैगी ॥
ज्योंबनभीलकिरातकीआगमथेलघुदारुतेजोतजरैगी ।
त्योंकहिहैमसमूहनकोयहिहाटकलंकनदूरकरैगी १३॥
जोकछुबाकविलासहुलाससुसंतसुनेजगयाहिसुनावे ।
फूलसुगंधिसबैकविमंडलफूलचढेतुमसोअलिपावे ॥
आककेफूलसमानकवीश्वररामतुमेंकिहिभाँतारिझावे ।
चेतचढेचितचौपमेंलिन्देंक्रियाकरकेसबहीफिरआवे१४
व्यासपराशरनारदश्रीशुक एसबरामहिआजलौंगावें ।
शेषसहस्रधरेमुखयाहीतेबारपरेगुनपारनपावें ॥
संगफिरेहनुमानसदासुयथामतियोंकहकेसमझावें ।
ताहीप्रसादसेरामकहेभणिकेगिरतेकनज्योंदिखरावें १५
सूरजकीमनुकीकविराभदिलीपकीरीतिकहांलौंलिखाऊँ
श्रीरघुकेअजकेयशकी सुकथानकोअन्तकहांलौंसुनाऊँ
श्रीरघुनाथकेतातकीबातकहांतोकहांकहिअंताहिपाऊँ ।
तातेसुनोरघुवीरकथातुमसोंकहिकेतनतापसिराऊँ१६॥

---

१ भौंरा । २ खुशी । ३ भौंरा । ४ पर्वत । ५ किनका । ६ दशरथ ।

कवित्त–ऋषिसंगजायँबोधनुषचटकायबो धरनिजाँ[1] बिबाहिबोबडोईयशपाइबो । धायबोपरशुरामगैलमेंखि सायबोउलटबनजायबोश्रीरामराजगायबो ॥ बाटको सिधायबोजनकजाँ[2]चुरायबोसमुद्रकोपटायबोऔलंकप तिघायबो । वीरतीयसंगलेपलटघरआइबोसुऐसोरामचंद्र गीततुमेंहैसुनायबो ॥ १७ ॥

दोहा ।

खंजनलोचनकंजमुख, नितखंडनपरपीर ॥
अरिगंजनभंजनधनुष, भवरंजनरघुवीर १८
सुखसागरनागरनवल, कमलबदनद्युतिमैन
करुणाकरवरुणादिपति, शरणागतसुखदैन॥

विश्वामित्रउवाच ।

स०–बैठविचारकियोऋषिराजएयज्ञनपूरणहोतहमारे ।
कौनबलीयहलायकहैतिहुँलोकनमोंतिनरामविचारे ॥
धायचल्योनृपसोंकहबातकहीसमुझायबडेदुखभारे ।
तेनटरेशशिसूरटरेसुनसाथविनारघुनाथतिहारे ॥ २० ॥
स०-सोचवढ्योनृपकोजियमेंकुलपूजहैंपायनलागिमनावें।
एकविनारघुवीरहैंतीनोंलैनिजसंगगुरूसुखपावें ॥

१ सीता । २ सीता । ३ सीता ।

एतेरेपूतसपूतसबैविधिराजहँयोंऋषिराजसुनावैं ।
राजनयासुखरामकहोअबतासुखऔरकह्योनहिंभावैं ।

कवित्त—संगभटभीरलैसमीरहूतेवेगधाऊंआयसुजो पाऊँजायमारोंराजनीतहै । जोकहोतोठौरतुमेंवागमेंब नाऊंऔरभौंरींदेतरहूं चहूंओरजैसीरीतहै ॥ द्रुतियाके

[illegible]

तहै। भीरमेंसिनागेतेसुतरिनचलायजानेऐसोरघुवीरक्योंपिशाचनतेजीतहै ॥ २२ ॥ बालकअगानेहटी और कौनमानेबातबिनादियेमातहाथभोजननपाइहै । माटीकेबनायगजबाजीरथखेलमातेपलनाविछौरेताकीनैकनबसाइहै ॥ होतेधनवानसुनपौरुषप्रमानताकोहोंहिटूकहाथमेंसुकाकखोसखाइहै । रामकीतोऐसीबातकंजेपातगातजाकेसामनेमरीचताहिदेखसकुचाइहै ॥२३॥

स०—राजनकाहेकोबातबढावतज्ञानगहोमतिमेंनहिंजानी ।
पूतसोंनेहबढावतहोपुनिमोहिंदुखेबसहैरजधानी ॥
इन्द्रकेत्रासडरेजैसेभूधरयोंडरप्योमुनिकीसुनवानी ।
रामकेराखवेकीबतियांनृपकोटिकहीऋषिएकनमानी ॥
काँपउठोसुनतेअजनन्दनज्यों जलवायुडुलावतइन्दै ।
लेहुसुलेहुकँपायदोऊकर औरफुरोनहिंबातनरिन्दै ॥
रामचलेहँसकेसुनिसंगपरेपितुपायलिवायफनिन्दै ।

---

१ स्याहीकासर्प । २ कमल । ३ पर्वत । ४ दशरथ । ५ शेषनाग ।

योंऋषिलैनिकस्योरघुवीरकोकंजकीबासज्योंएंचमलिन्दै
संगदयोंऋषिकेनचलेवससो दुखनैननहीनूपघूटयो ।
तादिनतेनसुहायकछूबिनरामहयोंवनमैजनलूटयो ॥
शीशधुनैंधुनबातकहैरविकेकुलतेसुखजानतछूटयो ।
नैनचुचातरहैनिशिवासरजैसेरिसातरहैघटफूटयो॥ २६

विश्वामित्रऔररामचन्द्रजीकाउत्तरप्रत्यु०

स०–रामसोंबातकहीऋषिराजतपोबनजोतुमआजहिहेरो।
एदोउमैलसुनोसुतसुंदरएकतेदूरहैएकतेनेरो ॥
एकपिशाचनिहैयहवीचचलोकिनतातकरोभटभेरो ।
ताकुलकाननकोहमपावक[1]वीर समीर[2]सहायक[3]मेरो२७॥

कवित्त–राजऋषियज्ञमिसलेचल्योलिवायसंगगैल हीमेंतारकाकेप्राणपधरायहैं । व्है हैयज्ञपूरणसुपरमानन्दपूरणएपूरननतेईजिनेरामाविसरायहैं ॥ संकटहरनहारदशरथजूकेकुमारजाकीलाजछोहलोकचारोजुगगायहैं । आएवीरवीरतापिशाचनीकेतीरदेखो आजरघुवीर पदशूरनकेपायहैं ॥ २८ ॥

स०–द्दगश्रीरघुवीरनिहारनिशाचरिरोकरहीमगक्रोधभरी।
धरभ्यानकरूपमहाअतिदीरघबातकछूमुखतेउचरी ॥
प्रभुलेकरतानकमानसुबानहन्योतहमालसुभूमिगिरी ।
करकालभयोरघुनंदनकेभवसिंधुछनाकाविषैसुतरी२९॥

---

[1] अग्नि । [2] पवन । [3] रखवाला ।

दोहा।

ताहीदिननिरख्योसबै, वरुणविरंचिसुरेश ॥
मनहरखेविलखेबहुरि, फणीकुबेरमहेश॥३०
इहिविधिमुक्तपिशाचनी, करीरामबलवंड ॥
ज्योंपावसप्रगटारवी, प्रगटतकिरनप्रचंड३१

इति ताडकावधः समाप्तः।

सोरठा—चलेचमकदोउवीर, परपाँयनकुलपूजके ॥
धरेधनुषमुखतीर, तबहिहनोऋषिराजकहँ ॥ ३२ ॥

सवैया—देखतपोधनकोवनश्रीरघुवीरसुवीरबडोसुखपायो।
तालतमालविशालकदंबनकंजसरोवरभौंरलुभायो ॥
कोकिलकीरकपोतशिखीधुनहंसचकोरनयोंदरसायो ।
मानोंलैऋषिराजवसंतहिंरामकीदेहसोंकाममिलायो३३
यज्ञरच्योयहजानविरंचिसुबाहुमरीचसुभीचकोपेले ।
योंगरजेफटभूमिगईसबकांपउठेबिनरामअकेले ॥
धायगहेरघुवीरदोऊइकभाजगयोइकजीपरखेले ।
मानहुँपौनप्रचंडबलीकिदलीबनसेधरनीपरमेले ॥३४॥
पूरनयज्ञकियोपरिपूरनब्रह्मजहाँनतहाँदुचिताई ।
नामलियेअघवृंदटरेपुनिआपनबानकमानचढाई ॥
तादिनते सुनरावणकोविधिवामनज्यौंरुचिमीचबढाई ।
देवनजायकह्योसुरराजहिराममएजगलेहुबधाई॥ ३५ ॥

इति सबाहुमारीचवधः ॥ यज्ञःसम्पूर्णः ।

दोहा।

नीतोयज्ञतिहीसमैं, जनकदूतकहबात ॥
सियास्वयंबरलेतहैं, पगधारहुपरभात।३६।

॥ श्रीविश्वामित्रजीकाबचन ॥

कवित्त–रामलक्ष्मनजूसों बोलकह्योकुलपूज्यआयोहैप्र
मानहौंतोजनककेजाइहौं । जोकहोतोराजादशरथजूपै
पहुंचाऊंनहीं संगचलोतुमैंकौतुकदिखाइहौं ॥ छोटीसी
कछोटी कटि घनहीनमोटीकर चोटीधरकह्योनैकहोंहूं
तो चढाइहौं । राजातेजनमऋषिराजते मैंपायोगुण ऐसे
शिवजीके धनुषहूतेगुणपाइहौं ॥ ३७ ॥ चलेजातसुख
देत फूलेफूलतोरलेतऋषिसंगवीरनकीशोभायह भाँत
है । किधौंदेवत्रयी किधौं पौरुषकीजईनईकिधौंबीचमे
रुइतउतदिनरातहै ॥ किधौंरविसंगनवनीरदअनंगकी
तरंगगंगयमुनसरस्वतीपरातहै । देखरूप गैलकीलुगाई
जेदुराई रामसंगउलटाई नफिराईफिरीजातहै ॥ ३८ ॥
आयगयेजनककेदेशमेंनरेशसुत ऋषिकेसुनेतेराजाआ
गेलैनआयोहै। षोडशोपचारकरपूजाकुलपूज्यहूकी मन
वचकरमचरणशीशनायोहै ॥ पाछेबूझीकौनकेकुमार
तातसंगसुंदरसुपूतकेसुनतसुखपायोहै । चलियेगुसाँ
ईधामदीजियेबडाईमोहि यहैदुचिताईधनुकाहूनचढायो
है ॥ ३९ ॥ बोल्योराजऋषिराजागनियेकहांलोंगुनदे

लियेजूदोऊवीरवडेरघुनाथहैं । लछमनछोटेकीनेभूप वलखोटेमोटेधनुपचढायवेकोइनहींकेहाथहैं ॥ रघुकुल के तिलक वलहैमिलकजाको दशरथनंदवंदतीनोंलोक नाथहैं । भाग्यहैंतिहारेधामइनकोंसिधारेपगयज्ञकाजला येतवहीतेमेरेसाथहैं ॥ ४० ॥ सुनोंजवनामकुलमुलक पसीनेनृपधूपदीपचंदनचरचरघुवीरको।हंसतनहातजोर माथनायनयनमींचदीजेदेववलरामचंदमुझतीरको ॥ जनककेमनराम इनहींपेटूटैधनुसीनरूपजानकीविवाहूं जलनिधिनीरको । वातहैवनाईविधिराजासोजनाईऋषि मानमेरोवोलगाँठदेहानिजचीरको ॥ ४१ ॥ पूजकुलपूज कोंनिवायशीशचल्योनृपमनरघुनाथढिग धावेतनधाम को । मानोतरुछांहीकिधौंचीतीरथमाहींजैसेधुजाफह राहीतैंसेदेसेपाछेरामको ॥ कैसेकैवनावेविधि इनहींते होई सिद्धऋपितोकह्योहैयशइनहींकेनामको । ऐसीहू जोकानदैकेसुनियेंगनेशश्रीदिनेशश्रीनिशेशहौंमनाऊँदे ववामको ॥ ४२ ॥ आयरनवाससवबातकहीराजाजव तवहीतेनैनलागरहेवाहीठौरकों । देहसोंसनेहभूल्योगेह सों अनेहवाढ्योतीनलोकमाहीवरदेखोसियजोरकों ॥ ऐसीप्रीतिलागीमनोंचातकज्योंस्वाति घनतामरसभौंर जैसेघटाघनमोरकों । मेरोअपराधदोषकोंनशीशधरों

१ कमल ।

आजमारेकोऊमोललैकुबोलमेरे चोरको ॥ ४३ ॥
जनककीरानीसबदेखैरजधानी चढबालकजुवापुरानीर
ही नमहलमें । देखैरघुबीरजूकोआगेलागेऐसेनृपजैसेसू
रआगेपटबीजनासहलमें ॥ जानकीनिहारछबिरहीमन
हीमेंदबाबिधिसोंनआवेफबग्रानहैंकरलमें । राजाजीको
कठिनकुबोलमेरेएईपतिजानतहौं माईबापपरहैंजहलमें

जनकजीकेपुरोहितकावचन ॥

कवित्त—बडो बडभागीयोगयज्ञअनुरागी रामआज
कोऊशूरहै चढैयायाधनुकको । ताहीकेगलेकोफूलमा
लजसटीकोभालऔर वैठवेकोहैसिंहासनकनकको ॥
कुंदनतेकोमलकमलहूतेसौरभसुऐसी जानकीकोसाईदु
लहूबनकको । राजाकेपुरोहितसभामेंकहीऊँचीटेरसा
वधानसुनियोंयेबोलेहैजनकको ॥ ४५ ॥

रावणकेदूतकावचनजनकसे ॥

स०-तोहितोकाहूकोदीबोहैजानकीबांधहिजोरस्वयंबर
लीनो।रेरघुबीरतूकाहेकोव्याहतरावणव्याहनकोमनकी
नो॥भूपकहीधनुआनचढावेतोमैंसियशोधनवाहिकोदी
नो।रेगुरुकोयहनेकनहोयतोबांटतटूकतिहूंपुरतीनो४६
इन्दुउमादुरदाननऔरषडाननसोगनवृंदनजेते ।

१ जुगनू । २ सुंगधित । ३ शिव । ४ गणेशजी । ५ स्वामिकार्तिक ।

वारनसिंहमहीरुहतालतमालसरोवरऔरनकेते ॥
सोगिरिराजकैलासउठायलियोकरवामडरोनहिंहलेते ।
जोभुजकोबलतूनहिंजानतबूझलेमूढजुरेनृपएते ॥४७॥

जनकजीकावचनरावनकेदूतसे ॥

स०-तैंहिकह्योद्विजरावणकोबलसोसबसांचनकोउअरे ।
सुनबोललिवायस्वयंबरमेंलटतोनगयोबलआइकरे ॥
अरुतैंजोकहीशिवकोधनुहैतोकहाभयोरेछातियापजरे ।
गुरुकोघरतोलतलाजभईनकमानचढ़ावतलाजमरे ॥

दोहा ।

पचहारोपौरुषकह्यो, किनहुमानीबात ॥
भुजबलदीपप्रकाशबिन, कैसेहैतमजात ४९

कवित्त-आन निजकाजह्वैह्वैजातनउठायोजातकठिनसीबातकछूलागतहैअबके । पावतेमरमतौनआवतेजनकधामजानतहौंरूपदेखवरहैतोरवके ॥ महाकछुकठिनकुपेचआगेआनडारोवासकसुमेरुसोंनिरखजीमेंदबके । फूटोनिजकर्मनहिंलूटो सुखजानकीकोटूटोनधनुपटूटगएमनसबके ॥ ५० ॥

स०-सीयस्वयंवरकाजसबैधनुतोरनकोभुजठोकतवाईं ।
आयउठायसकेननवायकेनारिखिसाइचलेशिरनाईं ॥

१ वृक्ष । २ सूर्य ।

नाहकोरूपनिहारबेकोमहिमंडलकीकिहिमांहिलुगाईं ।
श्रीरघुवीरकिवाछविकोसलदेववधूमिलदेखनआईं ॥
पूरणहैकियोचाहतआजविरंचिमनोरथजानकीजीको ।
आनुजुरोजुहुतोनृपमंडललागतहैसवहीमनफीको ॥
रामअखंडलसेतिनमध्यविराजतहैसुलएयशटीको ।
देखस्वरूपसवैबालिजाँहिंकहेंसवयोंसियकोवरनीको ॥

कवित्त–जोलोंरघुकुलकेतिलकतीनोंलोकपतिऐंच तनतोलोंसबठोंकेभुजवामते । पागपेचखेंचदेलपेट फटफेटबांध ऐंडेऐंडेआवपैनेंटूटेडीमडामते ॥ राज ऋषिआगेरघुवीर देखराजाजितेफीकेसबलागेंजैसेदीपर विधामते । अंबरबनावतस्वयंबरकेराजाजितेकंवरसेव्है गयेपितंबरसेरामते ॥ ५३ ॥

दोहा ।

इहिविधपचहारेसबै, कठिनधनुषकीबात ॥
तबरघुपतिक्षितिपतिनसों,बोलेमुखमुसकात

स०–आनुजुरेसबदेशनदेशते आजनरेशकुलाहलभारी।
रेशिवकोधनुक्योंनउठावत आवतहोंढिगतेबलहारी॥
श्रीरघुवीरकहीसबसोंभई वीराबिनाछितिरोइपुकारी ।
देखहुहाथलगायसबैभटनांकचलीकटनाकतुमारी५५॥

---

१ पृथ्वी । २ स्वर्ग ।

लक्ष्मणजीका वचन ॥

स०-बोलउठोलघुवीरसुनोरघुवीरकहोछिनमाहिंउठाऊं।
श्रीमुखतेनकहोकछुदासहिंभौंहनकोनेकआयसुपाऊं॥
पाइछुवोऋषिकेअबहीरविकोकरवामसोंजायउचाऊं ।
रामउठायतुमेंदिखरायके देउंचलायकहोचटकाऊं ५६

सीताजीका वचन ।

दोहा ।

जनकवचनइतरामउतकठिनधनुषअतिईश
सियजियकीइतदुचितई, क्योंबनहैजगदीश

स०-कोमलश्रीरघुवीरमहानवनीतहुतेनवनूतनमाई ।
हैशिवकोधनुवज्रसमानशशीरवितााहिसकैंनउँचाइ ॥
तातकोबोलअडोलसबैनिर्मूलकआनबन्योदुचिताई ।
जानकीजानकीआशतजीकिबरोंइनकोंकिमरोंविषखाई ५८।

दोहा ।

कह्योराजऋषिरामसों,पूतक्योंनयशलेहु ॥
सबराजनकीआशको,करदुटूकधनुदेहु ५९

कवित्त-तेजपुंजदोऊभाईराजऋषिआज्ञापाई उठेरघु
राईमनमाहिंअतिहरखे । पायसोलगाय एकहाथहीउ
ठायरामराजनकेबलसबतेहीचरीपरखे ॥ सुरगपता

---

१ प्राणकी ।

लहिले अचलतमालगिरेहालचालपरीमनसबहीकेध
रखे । देवताविमानतेसुरेशकेदिवानतेनिशेषब्रह्मभानु
तेहरषफूलवरखे ॥ ६० ॥

स०–गाढीकसीसलगी[1]करकीकरसीछिटकीकमठी[2]करकी।
अरिकीछातियांदरकीफरकीछुटीजोगजुटीअखियांहरकी
पलकीं[4]खरकी हरि[5]की निधिक्षीरधराधर[6]की अहिऊपरकी
भईचापधुनीसुमहाडरकीभरकीभटभीरस्वयंवरकी ॥
कुंवंडै[7]कियो विवखंडमहाबरवंडप्रचंडभुजाबलते ।
डरप्योब्रह्मंडचक्योनवखंडअखंडलमंडलभूतलते ॥
रघुवीरघमंडकियोनृपखंडचल्योतजज्योंमछुलीजलते ।
पछतातखिसातचलेईपैजातभजेगजज्योंविचलेदलते ६२
चापकह्योबडेपापकेहाथरह्योशिवआपनिकंदनजू ।
पुनिमायकोमारतशंककरीन निशंकछुयोभृगुनन्दनजू ॥
जियजातईहैरघुनाथकेहातचढ्योंसपतीरथमंदनजू ॥
मनोप्राणतजोनभजोभुवमंडलफांदचलोभवफंदनजू६३

कवित्त–जानकीकोरामरामचंदकोपरशुरामताको
अभिमानाद्विजमंडलअसीसको । रावणकोकामक्रोधकु
हटकुपातिदूतरामसुरलोकडरकालबालीसीसको ॥ बो
लउमानाहकोअनललंकदाहकोऔ दुःखसिंधुजीवनको

---

१ खिचाव । २ धनुष । ३ कडकी । ४ पलक । ५ विष्णु ।
६ पृथ्वी । ७ धनुष । ८ द्वो ।

यशकपिईसको । खप्परकोजोगनीसुभोगनीसुग्रीवरा
जटूटचोधनुईशदोरपरीठौरवीसको ॥ ६४ ॥ राजऋ
षिबातकहीभलीपतरही राजाराजादशरथजूकोबेगहीबु
लाइये । कुटुंबसमेतऔरबालकलैसंगदोऊनैननसोंपूत
नकोव्याहदिखराइये ॥ मानीसोईकरी दूतबोल्योतिह
घरी विदाकीनोकह्योपौनसंगरैनादिनधाइये । सीरीभई
छाती पाईभागनकीथाती रामपातीलिखपठईबराती
व्हैकेआइये ॥ ६५ ॥ बांचीसोईपातीप्रेमसोंलगायछा
तीराजाअजजूको नातीभयोजातीचित्तहरख्यो । दुदुं
भीबजायकुलपूजनकेपूजपायदानऐसो दीनोमानोबादर
सोबरख्यो ॥कटकचल्योअपारसूझतनवारपारनेहडोरी
डारभूपमीनजोअकरख्यो ।भेटोचारोंपूतपुरहूतहूंतेसूत
नीकोवाढ्योअनुरागभागभालहोतपरख्यो ॥ ६६ ॥
स०-भूपगहेऋषिराजकेपाँयकह्योअवदीपभरोसबघीको
धायकेलायलये उरश्रीरघुवीरमनोनिजआनँदजीको ॥
चंदनसोंघनसारमिलेतस राममिलेसुमुहूरतनीको ।
आनवशिष्ठकियोअपनेकरभालमेंकेसरलालकोटीको ॥
व्याहकियोकुलइष्टवशिष्ठअरिष्टटरेघरकोनृपधाये ।
लैसुतचारविवाहतहीं घरीजानकीतातसबैसमुदाये ॥
सौनभयेअपसौनसबै पथकांपउठे जियमेंदुखपाये ।
अंकनिशंकलिखेविधिजेअबतेविधिहूंकवहूंनमिटाये६८

परशुरामजीकावचन

कवित्त-ऐसौकोनचारवाकमारेशूरएकैआंकदेवराज कौनआनतोरेजोधनुषको। नारायणक्षीरानिधिशेषकीव नैनविधिसूरज अकाशवहुसौंप्योहैजनकको॥ काहूची टीलागेपांखकाहियममारेकाखसुनौहैनदेख्यो घुनलागो हैकनकको। चल्योधायकमठीचढायफुरकायआंखवांई जगसांईबातकछूनतनकको॥६९॥ जानकीविवाहीराम रावरीदुहाईफेरीरह्योसोचकरबातसुनियोंनछिनज्यों। द शरथआयो वलवहुतेजतायेहैअनंत फूलचल्योसुवसंतके सेदिनज्यों॥ दोरौतेहीठांवतेसुआनडरपायेकैसेखाएहैंसु कैसेजैसेदारिदीकिऋणज्यों।कीनोबुरोकामताकोलीजेफ लरामभैंतोगैलहीमेंपाइसुधतोरोतानातृणज्यों॥

स०-भानुनिहारकहेभृगुनंदनचूकपरीतबयाहिनमारो। जानतहौंनिजबाणकुठारफल्योतरुमूलसमूलउखारो॥ जानसुभूलविचाराचितैघरयाहिप्रलैजलबोरनडारो। एजियमेंइहभांतिविचारतरामकछूचितऔरविचारो ७१

दोहा।

विश्वामित्रवशिष्ठऋषि,नवग्रहशुभनिजठाय सियजियसुखकबहूनलह,परोकर्मकेपाय॥

कवित्त-एकठौरभईसेनासिमटसटपटायकांपे सह्यो जायतेजएसेजोअरकको। कौनधरेधीरीपरीपीरीमुख

काशीरामकापैकरदंडखूनीनिरखोखलकको । लैकेसुत
साथजोरहाथइतभूपघटभाख्योवहमानतनजकीआपज
कको । कठिनकुठारकरधरेजोरावरद्विजआयोविकराल
जैतवारच्चारवकको ॥ ७३ ॥

परशुराम उवाच ।

स०-तोरकुदंडदुटूकाकियोजिनसोवैकहाहमसोंलरहै ।
भृगुनन्दकहैहोंनजानततातहिसुअंतकदंतनकीपरहै ॥
ऐसे उठीमुखकांतिघटीविपरीतझटीघटक्योंहरहै ।
सुनताहिमतंगतेभैनकछूजिनकेसँगरामसुकेहरहै॥७४॥
सोरठा-दशरथसकलसमाज, सुततियवधूविभूतिसंग॥
यहमातंगजराज, नदीनावबोरनचहै ॥ ७५ ॥
स०-क्रोधप्रचंडकियोमुनिनंदअखंडलज्योंडरपेसकुचाहीं
कौनगिनेभुवमंडलकेनृपहैबलमंडसुतौधरमाहीं ॥
ठोककहाभुजदंडकुठारसमेतधराफिरशोणितनाहीं ।
रामविचारनकामकियातूनजानतमोहिंबढ्योधरछाहीं॥
कवित्त-कौनेसिखदीनीतोहिंताकीतूवतायमोहिंओठ
नचबायओरदेखेरामचंदकी । रातेकरनैनधूमनाकतेस
साइतिनरोक्योनाकजाइतहांसूरज्योतिमंदकी ॥ राजा
पछतायदेखोपरोदुखकैसोआइ तोरागजचाहैवेतआनंद
केकंदकी । लैयसुखभयेधीयदीनविधकोपराधकोपदे
खओपमुखघूटीअजनंदकी ॥ ७७ ॥

दोहा।

धनुषछुटयोकरधरपरो,दशरथठोकतमाथ॥
विकटवचनभृगुरामसे,बोलेहँसरघुनाथ ७८

रामचन्द्रजीका वचन।

कवित्त–लाग्योयहैदोषजुमैरोषव्हैधनुषतोरोजाँजरो पुरानोहोमैंजानोगयोकामसो। सोतोऐसीहोनहाररावरो कहांविचारमारोचाहेमारवैरहैनकंजघामको॥ दुखसुख एकवारदशरथजीअधारजैसेफनि मनिहारतैसेरामनाम सो। कैसेव्हैहैदईमेरेआनंदकीजईरामभईरामरामआ जनईरामरामसो॥ ७९॥

लक्ष्मणजीका वचन।

कवित्त–महारणधीरमहावीरलघुबीरहंसबोलेऐसेने कप्रभुआयसुजुदीजिये। कहोबाघडारोंकहोदेसतोंनि कारोंकहोवारिधिउतारोंकहोजूराकाढलीजिये॥ कहे कविकाशीरामकेतकपरशुरामनामसुनताकोक्षितिपाल व्हैकैछीजिये। मारेमहापापछीनलैहोंतूनचापआपदे खियोतमासोपैनसाँसोकछुकीजिये॥ ८०॥

रामचंद्रजीकावचनपरशुरामजीसे।

कवित्त–मैंनजान्योतेरोबलतैसोताकोलाग्यो फलक ठिनकुठारधारकंठपरधारिये। इतेपरऔरकछूवातआवे

तातहाथकीजैसोईभावतीयेरोषकोनकरिये ॥ ऐसोकछु कुलकोसुभावहैहमारोराममारे मारखैयेयैनमारिएजुमारि ये। वैरीसरनायऔरसुनोमुनिरायगायबामनसेलरियेतो पाँयकाकेपरिये ॥ ८१ ॥

परशुरामजीकावचन ।

कवित्त–देखनजोपाऊंतोपठाऊंयमलोकहाथदूजोन लगाऊंवारकरोंएककरको । मीजमारोंउरतेउखारभुजदं डहाडतोडडारोंवरअविलोकरघुवरको ॥ काशीरामद्वि जकेरिसातभहरातरामअतिथहरातगातलागतहै धरको सीताकोसंतापमेटप्रगटप्रतापकीनोकोहैवहआपचापतो रोजिनहरको ॥ ८२ ॥

श्रीरामचन्द्रजीकावचन ।

कवित्त–जोईकरोचाहतहोसोईकरी इतआयबोलेर घुरायचलवैयानिकेपथको । तोरोमैंधनुषजाइल्यायोहो जनकजायबोल्योसुतभूपरूपधरेमनमथको ॥ कहेक विकाशीरामराम अभिरामप्रभुकरुणाकेधामदेनहारमो क्षपथको ॥ जगतउजारोभुजभारोयहबातसुनानिकस केन्यारोभयोप्यारोदशरथको ॥ ८३ ॥

परशुरामजीकावचन ।

क०-तरुनतेतातोभयोरातोभयोनख शिखविषसव चनबोलेछक्योछोहछयोहै । भौहैंचढीचढीआँखैरिसते

परतकढीकहेकाशीरामद्विजऐसोभेषभयोहै ॥ कांपतअ
धरलखेकीहरवरबाहसंभरकेकहरकुठारकरलयोहै ।
देखतही हाथरघुनाथकेधनुषबाणशावकमुनीश्वरकोपा
वकव्हैगयोहै ॥ ८४ ॥ जीवतनदैहोजानआनमहारुद्र
जूकीकरोंगोनिदानसून्योगयोजोऊअबही। ऋषिकेसुपूत
पुरहूतहूकोबोझधरैंकाशीरामबारबारबोलतगरबही ॥
आँखतरेआननतनऔरभटजानतनमानतनउछरउछरआ
वेअबही भयोदावेदारतोसंभाररारमोसोंरामनातरह
थ्यारभूमिमांझडारअबही ॥ ८५ ॥

रामचन्द्रजीका वचन परशुरामजीसे ।

कवित्त--तुमसबहीकेगुरुमानी अतिपुरुपुरुभूतल
केसुरतुमैंदीजियतदातहै। काशीरामपूजाकरैंहाथजोर
पायपरैंतुमसोहमारोप्रभुकछूनबसातहै ॥ बैरीअनमार
नेहोहमतुमपारनेहोबुधरघुवंशिनकीऐसीदिनरातहै ।
सुनोद्विजवीररघुवीरकहेहमपैअशीशकोदिवैयाकोकसी
सकरीजातहै ॥ ८६ ॥

परशुरामजीका बचन रामचन्द्रजीसे ।

कवित्त--काहेकोरेरामयमधामचल्यो चाहतहैखल
ककेलखतव्हैजैहैखलघायके । भ्रूकुटीचढ़ायअंगअंग
उपजायकोपठाढ़ोभयोभटआगेसबहीदबायके॥काशी
रामतबदलबलदशरथजूको द्विजकोदिमाकदेखगयोद

हलायके । ऐसीबातसुनसीसधुनधुनमुनिपुनिबोलोऽ७ वंडपुरुहूतज्योंरिसायके ॥ ८७ ॥

रामचन्द्रजीका वचन परशुरामजीसे ।

क०-अस्त्रकेचलैयाछितिछत्रकेधरैयाछत्रीछहूऋतुछ केरिसकलहसुहातहै । काशीरामरामरणधरिव्हैकहत करेकैसेहमतोरेंगातकंजकेसेपातहै ॥ मंगलपरायमहा वैरसोंबढायवरमुखआयेकालकेजियतकौनजातहै । नि गमकेभाँडेकतबोलतबचनबांडे काहेकोडपांडेगांडेहा थिनसोंखातहै ॥ ८८ ॥

परशुरामजीका वचन ।

कवित्त-सहसाहीमारोमैंसहस्त्रबाहुमहाबलीनरनकी नाहदाहतौनहींसिरातहै । कीनोयहप्रणतरपनतेरेरक्त कोहैजोलोंघटप्रानतोलोंआननसुहातहै ॥ काशीराम रामसोंपरशुरामऐसेकह्यो गहेहथियारसोईहोतपातपात है । बांधतजोखांडेतेमैंछांडेनाजियतखांडेखंडपतिखां डेपांडेऐसेगाँडेखातहै ॥ ८९ ॥

रामचन्द्रजीकावचन ।

कवित्त-छत्रीछत्रईशनकेअंगजगदीशनकेकोपकरो मनमाँहिबाहैउकसायबो । भृकुटीचढायरघुराययोंकह्ह्र नलागेकाशीराममेरोतेजकापैसह्योजायबो ॥ रेणु काकेढोटानेकपोटाहूकेमारेंलोटापोटाव्हैकेजैहैकहुंढूंडे

हूनपायबो। बहुतबच्योहैछत्रधारीदशरथसोहैवामनभि
खारीशस्त्रधारीकहवायबो ॥ ९० ॥

परशुरामजीका वचन।

कवित्त-अस्त्रछुडवायदो ऊकरजुरवायदशोंनखमुख
धाइअपनोंकैछिटकायोहै। मीचनदुरायबारबारसतरा
यअजव्हैगयोसिपाहीमोसोंताहीकोतूजायोहै ॥ कहेका
शीरामतबरामसोंपरशुरामशिष्यवामदेवजूकेनीकेकैसु
नायोहै। जाकीसौंहेंखातछत्रधारीकहकहजातताहीपै
मैं दशनतिनूकापकरायोहै ॥ ९१ ॥

श्रीरामचन्द्रजीका वचन।

कवित्त-फारतोकपोलबोलबोलतहीवामनकोडारतो
उखाडड़ाढजमीजेवदनमें। जीतबीरखेतपड़ेदेतयमलो
कतोहिंलेतोसबक्षात्रिनकोवैरएकछिनमें ॥ कहाकरोंह
त्याप्राणअबजेतिहारहतों सुभटकहायरनठाडोहोतोरन
में। यहैजाननातेहीबच्योहैएकवामनकेकाशीरामसम
झसमझकरमनमें ॥ ९२ ॥

परशुरामजीका वचन।

कवित्त-टूटटाटगोशागयेफूटफाटमूठगईजेवरनरा
खोजोरजानतजगतहै। सूरजजरायोवारिबोरकेसिरायो
महामेघनसतायोशीततामेंकहासतहै ॥ रंगगयोउखर
कुरंगभयोपरेपरेडारेउधरारेमारफूकके उडतहै। काशी

रामरामसोंपरशुरामऐसेकह्योतोरते धनुषऐसेऐसेवलक तहै ॥ १३ ॥

श्रीरामचन्द्रजीका वचन ।

कवित्त-वामनभिखारीतिनधारी तिनतूलतुच्छभू खनकेभूखे महातोसोंकहांकहिये । नावेहाथवाँविमेंन आवेमंत्रवीछुनकोतातेतोरीबातैंसुनचुपचापरहिये ॥ हमकोअयशतोसोंवांधे तरकसअनरसकरेब्राह्मणसोंता तेसवसहिये। काशीरामकहैरघुवंशिनकीरीतियहैजासों कीजेमोहतासोंलोहकैसेगहिये ॥ १४ ॥ राजनकेपूतम हावलीअतिकोपआएधनुषचढ़ायोसवहारेजोरकोरके। टाँकभरहाथलीनोटूटो विनजोरकीनोतातेतोरडारोको ऊसकोहैनतोरके॥क्रोधजीयभयोतेरेसुनहोपरशुरामवि नतीकरततातेदोऊकरजोरके। तुमसोंनजोरचोरभूपन केभोररूपकाकरीकोचोरकाऊमारोहैनटोरके ॥ १५ ॥

दोहा ।

देखरामकीदीनता, सवसमझावतताहि ॥
इकमीठीनिजसुयशकी, बातेंरुचेनकाहि१६

ऋषिका वचन ।

कवित्त-रामघनश्याम अभिरामसुठकामहूतेताते होपरशुरामक्रोधमतजोरिये । धनुषपुरानोटूटगयोवाहि जानदेहुकौनेकाजवैरवडोकीजेवातथोरिये ॥ वालकवि

नोदनतेजियमेरिसैयेमतधनुष चढ़ायोकहोप्रीतिकासों छोरिये । बाततोभियानीसचलैहैनकहानीरानीरमासों नरामरामदारिदसोजोरिये ॥ ९७ ॥

दोहा ।

पुहमिपायगाढोनिरख, दियेसुयशलियेसाथ
मुखबोलेमनमेंकहो, एअच्युतरघुनाथ ९८

परशुरामजीका वचन ।

दोहा ।

सनमुखदेखतमोहिंरण, कौनशूरठहराय ॥
लैपरचोतपकोचल्यो, भेटभुजारघुराय ।९९।

कवित्त—ऐंच्योहारिबारबारयाहीते निसारधनुराजन चढ़ायोहैहजारबारपायदै । ताकोचहियेनबलतोरतन लागेपलताते अभिमानरामकोसकचलायदै ॥ तौहोंछाँ डजाऊंतोहिसाँचीकहबातमोहिं रामअवतारभयोमोहूं कोबतायदै । तेरोतेजमान्योसहीजोतूकरैमेरीकहीमेरो ईधनुषलैकेमोहूंकोचढ़ायदै ॥ १०० ॥

लछमनजीका वचन ।

दोहा ।

बहुतसहीयाकीसबहि, कितुकुबंडभृगुवंश ॥
अबलछमनविनतीकरे, रघुकुलमानसहंस ॥

कवित्त–काहूको धनुषकाहूतोरयोकाहूराख्योघर कहोयाकीगाँठकोकहाहैभयोछीजनो। गालकोबजाय डरपायमारेसबैलोकतापरनदेखोरघुनाथहीसोंखीजनो॥ कहैंरघुवीरसुनवीररोषछांडोतुममेहमहागाजे विनवर खानभीजनो। तऊतोगुसाँईदेखोवामनढिठाईरामसूर जकेतेजकोउडारेपटबीजनो॥ १०२ ॥ कहोतोरडा रोंकहोयाहीफिरमारोंजोकहोतो कानलायऐंचराखोंसा तदिनमें। जोकहोतिहारेबलपाँयवाएँहाथनायआंगुरी सोंमेरुमलडारोंयहकिनमें॥ छैमुखमहेशऔगणेशसों सुरेशअलिकैसहूंजोबोलेबलदेखतनतिनमें। कायसकु चाऊंनिजक्रोधमेंजराऊंधनु आयसुजोपाऊंतोचढाऊंरा मछिनमें॥ १०३ ॥

दोहा।

धरोंनदूजेधनुषशर, शरणागतनहदीन ॥
सुरपतिहूंसोरघुपती, लटपटवातकहीन १०४

स०–सेवकथापनदूरकिधोजिनचूकपरेमुखतेहँसदीनो।
दानदियोजिनकोतिनपायनमांगवेकोवहुरोमनकीनो॥
बोलकह्योसुकह्योनफिरोअरुसीयविवाहकेव्याहनकीनो।
एकहिबानहन्योरिपुमंडलश्रीरघुवीरसदाव्रतलीनो १०५

रामचन्द्रजीका वचन।

कवित्त–बानभरछायलोहकानसोंलगायजिहिंजिहँ

पकरायलागोकरनानिदानसो । देखोवीरदेखोबापखैंचो परतापजानोचापचिररानोअरराकोअसमानसो ॥ काशीरामरामको रिसातभटरातरामभूलसुधगातपरोऊपरमशानसो।द्विजवरखोयोगयोभीरभयभीतभयोज्योंही करलयोदयोत्योंहीकरपानसो ॥ १०६ ॥
स०-रामकह्योमुनिनंदनसोंकहुकाहिहनोंअबदेहुदिखाई बूझकेताहिहन्योनभकीगतिऔरहुतीअबऔरबनाई ॥ देखरह्योमुनिकेसुतकोतुमहौअवतारसहीरघुराई । भेटझड़ाकचल्योबनकोजबरामकमानचटाकचढाई १०७

दोहा ।

रामपनचताधनुषकी, ऐंचीजबमतिलाय ॥
देखजनकजातीनही, मनधररोषरिसाय ॥

सीताजीका वचन ।

कवित्त--याहूकोतोबालकछूतातकोसोदेखतहोंऐसे तोअनेकव्हैहैंकहांकहांजाइहै । कालव्याहीनईहोंतो धामहूनगईपुनिआजहूतेमेरेशीशसौतकोबसाईहै ॥ राजनकीरीतविपरीतसबजानेजगकाकेवशभयेमोहऐसे डरकाईहै । मनमेंविचारेबातलैचढ़ैउतारेसीयतोरके धनुषयाकीबेटीव्याहलाइहै ॥ १०९ ॥
सो०-इनलछमनसंगराम, परशुरामबलपरिहरो ॥
प्रीतिकरीविसराम,अमरभ सुनदेहधर ॥ ११० ॥

यहदीपककिहकाम, सोखसनेहजरायगुण ॥
रघुकुलदीपकराम, सदाबढतदोऊरहै ॥ १११ ॥
छाँडचोसमरसुभाव, परशुराममनतपधरो ॥
रामउतारोचाव, भयोनदीसतआजलौं ॥ ११२ ॥

कवित्त--जैसे अहिमोरतेनशानोचोरभोरतेकुरंगसिं हशोरतेतुषारजैसेघामते । अंधकारदीपतेवियोगीति यशापतेज्योंकाः तककेमेघनभजातसुरधामते ॥ दा रिद्ज्योंपारसतेकालज्योंसुधारसतेपापनकोजालजैसेए कहरीनामते । जैसेएकलोभतेअनेकगुनभाजेरामतैसे भाजचल्योहैपरशुरामरामते ॥ ११३ ॥

अथ अयोध्यानगरप्रवेश ।

स०सबसंगचलेपितुकेमुनिजीतपढैंद्विजवेदउसासलयो।
मनमेंहरष्योअजनन्दनजूकहेआजहमेंविधिराजदयो ॥
धुनिढोलमृदंगबजायधसेपुरदेखतहाटबजारछयो ।
सुकरेबखसीसटरोदुखद्वंदअनंदभयोभृगुनंदगयो११४॥
वारनमत्तगुँजारतभृंगकपोलनतुंगध्वजाफहराहीं ।
चारनवंशउचारनकोनिजबांहउठायकवित्तपढाहीं ॥
चामरछत्रलियेसंगबीरवनेरघुबीरसनेमनमाहीं ।
देखस्वरूपपियेजलवारिसबैपुरनारिकहैंबलिजाहीं११५

इतिश्रीरामगीतेसीतावैवाहिकोनामप्रथमोंकः समाप्तः॥

श्रीः ।

अथ अयोध्याकाण्डप्रारम्भः ।

दोहा ।

बैठअयुध्यासुखकियो, अतिसुठदशरथसूत
अरिजीतेयशतिलकसो, घरमेंरामसुपूत ।१।

कवित्त–अवधरजधानीराजादशरथकीतीनरानी कौशल्यासुमित्राऔरकैकेयीसुनीतहै । वेदसमवेदपूत बडेरामसेसुपूतलछमनभरतसोंशत्रुहनप्रीतहै ॥ दैदैस न्मानउपहारऋषिपाँयपरविदासबकीनेनृपजैसीराजनी तहै । बाढ्योसुखसिन्धुअरिजीतेसुपनेनदुखकालचाल देखोआगेऔरभाँतिरीतहै ॥ २ ॥

दोहा ।

सुनहुसंतमनदैसबै, ह्यांलोंहैसुखशाँति ॥
अबहिंकथारघुबीरकी, चलीऔरहीभाँति ३

स०–राजसमाजजुरोपुरमेंसियराममिलेमनआनँदभारी।
सारसुतीनसकेकहिअंतशृंगारकहेमतिकौनहमारी ॥
कालव्यतीतभयोयहरीतविभूतिबढीसबअंगनसारी ।
राज्यदैरामहिहौंबनजाऊंवसिष्ठकहीभलीबातविचारी ४

सोरठा–कहारंककहाभूप, दुखसुखसंगसदारहै ॥
घरउजारकोकूप, लहेदुहूंघटजेवरी ॥ ५ ॥

दोहा ।

राजासबसोंयोंकही, रामशीशदैराज ॥
हौंबनबसतपकोकरों, यातेंभलोनकाज॥६॥

सोरठा—देखनकोअकुलाहिं, छत्रचमरशिररामके ।
नैनातबाहिंसिराहिं, जबदेखूंयहिभाँतिसुत ॥ ७ ॥

कवित्त—जोरकुलपूज्यपूजपांयशीशनाय अभिषेक कोकरायतबकहूंदूजेकामको । लोचनसिराहिछत्रचामरविजनताकेमाथेफहरायऐसेदेखूंघनश्यामको ॥ जानकीकोपटरानीसौंपोंराजधानी सबकानसुनोंआपनेहोंराजआजरामको। राजादशरथयामनोरथलौंसुखपायोतातकहीबातप्रातदैहौंराज्यरामको ॥ ८ ॥ रामराज्यकाजजोरकेसमाजवैठेनृपराजऋषिआदिऋषिमंडलवनायके । राजभारआजरघुवीरभुजथापबनजाहुँतपकाजमनबहुसुखपायके ॥ फूलेसुनबातसुखअंगनसमातउरज्योंपुरानेपातदुखज्योंचल्योउठायके ।एकउठेगायएकदुंदुभीबजाय एकधायधायपाँयछुवेरामचन्द्ररायके ॥ ९ ॥

स०—चारणकिन्नरमागधसूतसबैगुणआनंदसोंमिलगावें।
पंडितपुंजबनायकवित्तनआनपढैंयाहिभांतिरिझावें ॥
कौतुककोटिकरैंगणिकाकुलनृत्यतअंगस्वभावदिखावें
देशनदेशतेआयजुरेनृपरामकेकाजमहासुखपावें॥१०॥
आनिबनासपतीबनतेसबतीरथकेजलकुंभभरेहैं ।

आमकोमौरधरोतिहऊपर केसरसोंलिखपीतकरेहैं ॥
तेकुलइष्टवासिष्ठसबैपढवेदसुमंत्रनपूतखरेहैं ।
श्रीरघुवीरऽभिषेककेकाजसुयज्ञकेमंडल आनधरेहैं ११
पंतिदुकूलधरेरघुनन्दन राजकेकाजसुखीमनमांहीं ।
तेलसुगंधमिलेहरदी बटनोंनिजमातलगावतबांहीं ॥
जानकीफूलसीफूलतडोलतरामसोंनैनमिलेमुसकांहीं ।
बाहरभीतरभौनभंडारमेंयासुखकीपरमावधिनांहीं १२
आंहिबडेचतुराननसेशिवसेमघवासुरलोकबतावें ।
कंचनकेकणिकेचढवायुविवानवलोकनलोकफिरावें ॥
श्रीअजनन्दनकेसुखसोंकनकासुपनेहुनदेखनपावें ॥
काहेतेश्रीरघुवीरतेपूतकहोंकबरामजुराजाकहावें ।१३।
आनँदपुंजबढ्योपुरमेंघरहीघरहोतकुलाहलभारी ।
गावतगीतदिवावतदेतचलीसबआवतनागरनारी॥
जानकीरूपनिहारतदेतअशीशसबैसुफलोरघुबारी ।
रामकोराजरहोतबलोंजबलोंजगगंगबहेयमुनारी॥१४॥

सो०–फूलेअँगनसमात, यहिविधिपुरवासीसबै ।
लोचनसकलसिरात, देखरूपश्रीरामको ॥ १५ ॥
सुनीकैकयीबात, रामहिराज्यविदेशसुत ॥
नैकमनैनसिरात, रहोंरूठद्वैवचनसों ॥ १६ ॥

स०-रामहिराज्यविदेशबसेसुतसोचाकियोयहबातनचंगी
एकउपायकरोंजुफिरेमतद्वैबरवेलेउँमांगसुरंगी ॥

भूषणडारनआँचरलेतहै जातसुसातसुपाइननंगी ।
दौरचलीपियपैबरमांगनमानहुकालकरालभुजंगी १७॥
जायजुहाराकियोनृपसोंतिन द्वैबरवेतुमतेअबपाऊं ।
कौनसमैयहश्रीरघुवीरहिराज्यदैमानिननैनसिराऊं ॥
रूठरहीमनसोंकह्योभूपति आनँदआजनथाहिरुठाऊं
मांगकह्योबनवासदैरामहिं हौंअपनेसुतराज्यरजाऊं १८
रूठरहीपतिसोंतबलोंजबलोंनहिंमाँगदोऊबरलीने ।
देनकहेजुहुतेअजनंदनप्राणनसंगतेईअबदीने ॥
एकबंबीमुखतेवचसांपनिकारमनोनृपकेसुखछीने ।
बोलकेबोलकुबोलकुनारिपियूषकेकुंभहलाहलकीने १९।
रीसुनकैकयिहेसुनपापिनिहेसुनचंडडस्योसुखभारी ।
बोलतबोलनबोलथक्योमुख फाटहियोनहिंजाततिहारी
खायतँवारपरोधरहा!रविहा!शशिहा!शिवहा!मुखचारी ।
फेरसोकाहेकोप्राणनिकारतुसूधेहीजीकिनलेतहमारी॥
ज्योंतरफैरणमेंभटघायलत्योंकरसायलसिंहचबायो ।
ज्योंबिननीरहैमीनदशामनोकालकरालभुजंगनखायो॥
ज्योंशशिराहुग्रस्योनतजोपुनिज्योंअघफांसगरेदुखपायो
पौनचलेरविज्योंजलमेंनृपकैकयिकेबरयोंतरफायो २१

कवित्त—लीजियेसमाजसबदेशनकोराजआजहोंभि खारीभयोअबरामभीखहोंलहों । जोकहोतिहारेगांव भीखमाँगमाँगखाऊंजोपैरामसंगतोअनेकदुखमैंसहों ॥

जोनहोंसुहाऊंसंगरामलै विदेशजाऊंप्राणजातनारिसुन
बातएकहोंकहों । राज्यतेरेपूतकोनकीजियेकुसूतपूत
रामकोकद्वापराधरामघरहीरहों ॥ २२ ॥

स०-क्योंदुखपावतहोवरदेतसुमोहिंकहोप्रभुतेअबदेई ।
राजनजेजियमाँहिंरुचेवरमाँगलएतुमते अबतेई ॥
जेनरबोलनिबाहतहीशिरआनपरीघरीसोवहखेई ।
कैअबफेरकहोमुखकैकयिमैंबरतोहिनदेनकहेई ॥ २३॥

राजादशरथ उवाच ।

स०-जानतहोंजियमेंसुनकैकयिभूषनभौनपटंबरलैहै ।
जामुखकैवरमाँगतहैसुनतामुखलोचनतूनसिरैहै ॥
जादिनरामचलेवनतादिनमोहिंकहूंसुपनेनपैहै ।
तेरोईपूतसुनेयहबातपिशाचनिगाउँमेपाउँनदैहै ॥२४॥

कैकयीका वचन ।

स०-बोलनिवाहनकोहरिचंदनिहारहुतोनरतीसुखछीजे
औरदधीचिप्रसिद्धवलीबलबावनपावनज्योंयशलीजे ॥
राजनपूतसमानदोऊपुनिएकसोनेहनएकसोंकीजे । ।
कौनसीहानिभईतुमकोक्षितिएकाहिदैवनएकहिदीजे२५

कवित्त-प्रानचाहप्राणले निदानाजिनकहेवरदेनकहे
साँचपैतूबीरतसमाजको । देवऋषिराजकुलपूज्य
वाल्मीकिआजबोलनगयेहैंरामचंद्रजूकेराजको ॥ भलो
पगधारोपायआयसुासधारोवनभरतबुलाइएजी राजारा

जसाजको । रोवेविकरालकालव्यालखायोलोटेघरदेखो
कविरामहोवहांऊँऐसीलाजको ॥ २६ ॥

दोहा ।

यहसांपनवहसाधुनृप,परोअटपटोकाम ॥
यहकाटेवहमरजियें,सुधारामलैनाम ॥२७॥

सोरठा—इकतियइहअनुहार, सबहीयुगकविरामकह ॥
पतिहितपूतनिकार, आँनदकरजियजलपिये ॥ २८ ॥

स०—सोचरह्योमनमेंतबभूपतिकैकयीयेवरकाहेतेमाँगे।
कौनसमैयुगवज्रपरेयहहैनभलीसुविचारनलागे ॥
आइगईफिरकेमनमेंऋषिशापदियोसोईआवतआगे ।
याहीतेरामवियोगछुटेतनुजानतहोंघरतेसुखभागे॥२९
तौलगसंगलियेरघुवीरहिआयवसिष्ठदियेकरवाहीं ।
वेदसुपुंजपढेद्विजमंडलफूलरहेसबहीमनमाहीं ॥
चंद्रमुखीबनिताचढ़कोठनदेखस्वरूपसबैबलिजाहीं ।
बाजतढोलमृदंगबढीधुनिभीतरकीधुनिकीसुधिनाहीं ॥
द्वारकुलाहलबहुतसुन्योतबकैकयीराजहियोंसमझावे ।
आयोहैराज्यकेकाजबडासुतजायबसेबनआयसुपावे ॥
देदोउहाथकपालहिमारतभौंहनसोंकह्योजोतुहिपावे ।
जोमुखरामहैराजकोबोलबसोमुखक्योंबनरामपठावे३१
योंकहमौनभयोअजनंदनकैकयीराज्यरमूजसीपाई ।
हैतत्कालतजोपतिलोटतआनँदआजहियेनसमाई ॥

दौरकेपौरमेंबोलिवसिष्ठहिंरामचितैयहबातसुनाई ।
मोहिदियेवरद्वैइनकोवनमोसुतकोअपनीठकुराई॥३२॥
बातसुनीकुलपूज्यरह्योचकश्वासभरोमुखरामनिहारी ।
आयसुहोइकहोनृपसोंचलऔरहुतीअबऔरविचारी ॥
बोलउठीमुखसोंतवकैकयीसांचकहोंमुहिसौंहतिहारी ।
भूपकहीजिनमोहिंमिलेवनजायबसोकहुजायपुकारी ॥
सोरिसकैकयीभीतरभौनसुतैवनभूपतिसोंनमिलाए ।
बैठप्रणामकियोतिहठांतिनतातकेबोललेमाथचढाए ॥
शोकभरेऋषिलोकनसोंकह्योराज्यरह्योवनवासपठाए ।
राजनराजदियोरघुवीरहियोंरघुवीरफिरेघरआए॥३४॥
आइकेधामबुलायसबैद्विजदानदियोजुहुतोघरमाहीं ।
सीयसोंबातकहीसबरामसुनोदुखसोदोऊनैनबहाहीं ॥
काहेकोरोवतहैसुनसुंदरिजेकछुअंकलिखेनमिटाहीं ।
सासुकीसेवभलेकरियोऔरहोंहूचल्योहोबिदाकोतहाँही
औरकहोनलगेमनह्यांहितोजाहिपिताघरआजपठाऊं ।
ज्योंसुखतोहिकटैदिनसुन्दरिसोसुखआयसुदेहबनाऊं ॥
होंबसकेबनभूपतिकोसुनकैकयीकेऋणतेछुटकाऊं ।
कालहौंराजकरोंमिलतोसंगतातकोबोलकियेफिरआऊं

दोहा ।

बिदाभयेबनकोयुगल, पूतकैकयीहेत ॥
श्रीरघुपतिभुजठोंकके,बिदाजुइनकोदेत ३७

स०—देवनकेदुखकोसियकेसुखकोअरुबालिकेप्राणनहीको
रावणकेदशशीशनकोऔरईशकेबोलहिबोलकैनीको ॥
मीचमरीचमुनीश्वरकोयशबोलबिभीषणलंकपतीको ।
तातबिदादईरामहिजीसँगरामदईतबहीसबहीको॥३८॥

दोहा ।

कटिनिषंगकसिधनुपकर, लछमनअतिरणधीर
औरहुतीऔरैभई, अबचलियेरघुबीर॥३९॥

सो०—कहीवीरसोंबात, निकटबोलरघुवंशमणि ॥
तुमहि कह्योनहिंतात, राज्यकरोघरहीरहो ॥ ४० ॥

स०—दासकरेविनतीसुननाथहोंसाथतजोंनहिंपाँयगहों।
तुमराजकीबातकहीसुसहीअबफेरकहोतबदेहनहों ॥
अबमोहिंबड़ोदुखहैसबअंगनजीवतलौंइकबातकहों ।
बनमोचलतेंप्रभुडीलकीछांहरहोंतोरहोघरहोंनरहों।४१
सांचसबैतौऊएबनकेदुखबीरसहोरघुवीरकीदेही ।
पाँयनकोचलबोक्षितिकाँकरधामरहोपितुकीसुधलेही ॥
तालतमालपषाननदीअहिसिंहधराधरहोंहिसनेही ।
तूसुकुमारसबैअंगतोसुखदेखसुमोहिंवडोदुखएही ४२॥
जानतहोंसबकेजियकीप्रभुसंगतेजमुहिक्योंबनयैहै ।
जोंहठकैतजिहोमुहिंराघवसोहठकैसंगप्राणपठैहै ॥
जेदुखनाथकहेतुमरेसंगतसुखसोदिनरैनसबैहै ॥
रामहिछांड़कहोंकबहूंअबलौंऔरआगेहुकोसुखपैहै४३।

जानतप्रीतिभलीरघुवीरसहीसुनवीरकहींकठिनाई ।
तोसंगमोहिंनहैवनकोदुखहैहियमेंसियकीदुचिताई ॥
रोवतनैननतेजलडारअजोंघरहैनचलेवनधाई ।
सौंपचलोनिजमातकेहाथसुरामविचारईहैठहराई ॥४४॥

दोहा ।

सुनसीताबिलखीबदन, संगछुड़ावतमोहिं ॥
शेषअशेषधराधरी, क्योंभावतहैतोहिं॥४५॥

सीताजीका वचन ।

सो०—रविपावकसियराय, तपैतपनज्योंचन्द्रमा ॥
सरितासिंधुसुखाय, तौनसंगतजसियरहे ॥४६॥

कवित्त—देखेमुखजीऊं बिनदेखेनैनसीऊंदोऊपानीहू नपीऊंतातमातधामकोचहे । ऐसीविपरीतबात औरही सोंकहोनाथजौनसंगगहोंप्रानआनयममोगहे ॥ कौन काजआजपुरुहूतकोसमाजमेरेनाथघरनाहींसोईराजना गज्योंदहे । योगकीजुगतमेंतोआजहूंतजानीरानीकौस ल्याकेपासपटरानीहोइसोरहे ॥ ४७ ॥

श्रीरामचन्द्रजीका वचन ।

स०—भूखसहेनिशिरूखबसेरुमयूखलगेरविकीदुखपावे।
पांयचलेसरितागिरिकाननमेहतुषारपरेनजनावे ॥
सासकेधामलोंजातकृशोदरिहारपरेतुहिकौनउठावे ।
हैबनकोबसिबोदुखकोसुनतोहिंचलेकहुंक्योंवनआवे४८

सीताजीका वचन ।

कवित्त—पातफलखाऊंसिंहसांपतेडराऊंनाहींपाछे-
निजकाऊंकठिनाईसबजीगहों । थाकेचांपूंपाऊंधूपला
गेहांकूंबाऊंनाथसंगपरेआपदाअनेकदुखहोंसहों । जोन
मैंसुहाऊंमुखदेखेदूरचलीजाऊंबसोंएकगाउँचलेचलोरहे
हौंरहों । जूंठनचबाऊंजौनदेहमरजाऊंनाथसाथपैनतजों
यहसांचबातहोंकहों ॥ ४९ ॥

लक्ष्मणजीका वचन ।

स०—तातकह्योबनबासतुम्हेंतुममोहिंकहोबनहोंफिरआऊं
केतकबातसुनोमेरेनाथहोंभौंअनकोनेकआयसुपाऊं ॥
सीयसोंराज्यकरोयुगलोंपथतेभरतेमिलहोंपलटाऊं ।
जूझमरोंकिकरोंप्रभुकारजतौअपनोमुखआनदिखाऊं॥

श्रीरामचन्द्रजीका वचन ।

स०—एकपरेदुखसोंशिरलेसहियेदुखजानतआदछटीहै।
जायकेव्याहजंजालकियोपुनिभालकेअंकनथाहलटीहै
श्रीरघुवीरकहेदुखकीउरमेंचहुँओरनतेजभटीहै ।
तातकीसोगतिमातकीयोंमतिभ्रातचल्योअवनारहटीहै
वीरहिजोकहुँतूघरहीरहुसोमुहियोंकहकेसमुझावे ।
होंबनजाउँरहोतुमहींघरतातनदेखबडोदुखपावे ॥
सोसियसोंफिरबातकहोंवरआपरहेसंगप्राणपठावे ।
हैयहिभांतिकुसूतसबैपुनितापररामसुपूतकहावे॥५२॥

दोहा।

लछमनसियबिनतीकरी, सुनोरामरणधीर ॥
दुखअँधेरकिमिछैसके, करदीपकरघुवीर ॥
सोरठा—देखोकटकपिछोर, संगनछाँडेबीरतिय ॥
देवनसोंकरजोर, श्रीरघुपतिबिनतीकरे ॥८४॥
स०—श्रीसविताप्रभुशीतलताभजराहुसखेलघुताकछुपाऊं
वीरसमीरहरो तनुपीरअधीरनहोहुकहोंनकहाऊं ॥
होवनतूनिजकाहिकछूगिरितेतजमारगजाहुअगाऊं।
जानकीसंगचहेचलिबोअबकोमलहोहुधरातुरताऊं ॥
राजहिनेकभईसुधितौंलगबोलउठ्योजलबूडमरों।
अबकैतनुछाँडचलोदिवकोदुखरामबिनाकिहिंभाँतभरों
सबजेघरमेंयहहैंरथसिंधुरलैबनमेंबसराजकरों।
कैकोऊआनकहेरहेराघवराजसिंहासनफेरधरों ॥८६॥
तातदियोरथताचढ़श्रीरघुबीरसुमातके मंदिरआये।
संगलियेरघुबीरसियानरहेघरतेबहुतेसमझाये ॥
धायकेपाँयगहेकहिबातसुनीतिनरोइकेकंठलगाये।
देखहुकालभुजंगडस्योजगमानसकोजगदीशरुआये८७

कौसल्याजीका वचन।

स०—पूतरहोबलिजाऊंपिऊंजलबातसबैसमझायकहो।
सुनमातबुलायकेराजकोमोहिंकह्योबहुरोंबनवासगहो ॥
धरशीशलईसुकरीअबहीतुमदेहुबिदानविलंबगहो।

शुभचन्दनअक्षतभाललगायकेदेहुअशीशखवायदहो।

कवित्त-बैठोबलिजाउंमातलोचन सिरातगातलइ मनसीतासंगराघवसुहाएहो। ऐसेबदनतुमतीनोंकुह्म लानेफूलकहोकाटडारीतुमेकौनेविलखाएहो॥ राजाके वचनतेचलेहो बनवासआजबोलसुनबूढनकेभलेउठधा एहो। खेलरसमातेतवबोलहूनआवतहेवारफेरडारोंआ जआपहीतेआएहो॥ ५९॥ तबजोनदेखेजबराजऋषि संगरामलछमनहूकोलैसिधारेअरिनाशको। बहुरोपरशु रामसंग बकवादभयोतरसतरहेनैनाकीनोविधित्रास को॥ रोवतपुकारराम कंठलपटायमाथोचूमजानकी कोलेतऊरधउसासको। सुन्दरसुपूत मेरेवनेसूतमैनदे खेभरेभरेनैनाचलेजातबनवासको॥ ६०॥

स०-कैकयीकेवशव्हैविषकोघटपीनिवऱ्योकिधौंपीवतहै। किधौंताहीकोबोललग्योउरनागसोंकाटगयोअवखावतहै॥ जियजानतहोंकछुऐसीभईमतिज्योंविनतेलहिदीपतहै। सखिकैसेकैरामहिजानकह्योबनदेहछुटीकिधौंजीवतहै६१॥

कवित्त-भसमलगाओंगातचंदनउतारोंतातकुंडल उतारोंमुद्राकाननपहिरायह्यों। जटाऊसवारोकेशगोरख कोकरोंभेसजानकीलषणकोहोंकेथाऊसिवायह्यों॥ ख प्परलै हाथभीखहोंहूमाँगआनदेऊँदेखमुखजीऊंनहींप्रा णनबहायह्यों। एतीसबकरोंपैननैननतेटरोरामरहो ताईबागमेंजुद्धारेइबनायह्यों॥ ६२॥ जानकीतिहारे

संगजानतनएतोदुखयाकोसबलाडवेटाबनहीमेंसहियो।।
पाइनकोचलबोजहांलौंयांपैचल्योजायआगेजिनजैयो।
याकोसंगनिरबहियो ।। लछमनजूकोमुखभूखेनर
हनदीजोआवेकोऊइततोसंदेशनकोकहियो । उतरत
जैयोकाहूगाँउके निकटमेरे पूतबनबासीमेरीसुधलियेर
हियो ॥ ६३ ॥ कैसेदुखसह्योजायकौनसोंपुकारकरोंकै
सीउरलागी आगसुनतअचानकी । याहीकोबुलायभ
लेराज्यलेबिठायराजाराज करोराजनीतिबूडीकुलभा
नकी । रानीपछतातमनजातहायहायदेखोकैकयीको
देतबरनैकभूपहांनकी । कैसेरहोंदेहजरेखेहनउडानीरा
मबिदाहोतरामचंद्रलछमनजानकी ॥ ६४ ॥ एककाम
करोमेरेदुखकोजोहरोरामतातमातआयसुमेंभेदहूनक
ह्योहै।तातसियसंगबीर लच्छमनलैकेपूतमेरेधामरहोया
मेमीतधनरह्योहै ॥ होंहूंसुखपाऊंतुह्मेंकाहूनदिखाऊंरा
मदशरथजूकेजानेबडोबनगह्योहै । भूपैनसुनाऊंनबता
ऊँहोंभरतजूकोदेखमुखलोचनसिरानेमगरह्योहै ॥६५॥

श्रीरामचन्द्रजी कावचन ।

स०-मैंघरकेसबशीशलईबतियांतुमरीअपनेमनमें ।
अबदेहुबिदातुमहूतजमोहधरोंपगशीशचल्योछिनमें ॥
घरबैठरहोसबलोगकहेंअजहूमनराजसिंहासनमें ।
सुनसांचकहोंतुमसोंजननीतनुतोढिगहैमनहैबनमें६६॥

कौसल्याऔररामचन्द्रजीकाउत्तरप्रत्युत्तर

सवैया-आजरहोमेरेनैनासिराहिंकहोकहभूपतिकोसमझाऊं ।
कैकयीकोइहभाँतिदियेवररामरहेघरहौंवरपाऊं ॥
मोहिंगएबनहीबनमेंतुमखेदजोएकमैंबातसुनाऊं ।
जोघटप्राणरहेसुनमाततोकालहिपाँयनशीशछुवाऊं६७

कवित्त-रामहेसुचलेसंगलछमनसीताचलीमेरेप्राण वैठरहेकाहिनपरातहो । सघनअंधेरोवनकैसेकैविहैहोरा मतुमतोनगरहूकीबीथिनभुलातहो ॥ कबहूंनमारगच लेहोसुकुमारदोऊनेकहूकेश्रमपाएगातकुम्हिलातहो । खायकेतँवाररानीबूडीदुखसिंधुधारपारको लगावेपूत ऐसेकियेजातहो ॥ ६८ ॥

सोरठा-बहुतरहीसमुझाइ, रहेनमातावचनकहँ ॥
वनको चालेधाइ, लछमनसीतासंगहैं ॥ ६९॥

कवित्त-सूरज्योंसुमेरुकोनक्षत्रध्रुवफेरकोज्योंपारद परेरकोज्योंसागरमयंकको । जैसेगृहरासकोभ्रमरकंज बासकोबियोगीतियपासकोज्योंबलीदौरेरंकको ॥ चाप शरलच्छको सुमंत्रीनृपपच्छकोज्योंवीरभद्रजच्छकोउ नींदोपर्यंकको । कोटसमुझाएमानोछुटेसिंहधाएतैसेरा जाकेपठाएवनधाएतजशंकको ॥ ७० ॥ छुएपांवतेई घरीचलेसियरोवेखरीरानीदासीजानमोहिचित्तअभिला खियो । भावतीजोगुडियालैचलीहतीकांखचांपतेऊसों

पकह्योहन्हैंनीकेकरराखियो॥ ताकेपाछेसारिकानबूझे शुकहंसबूझेमोरऔचकोरमोहिंतोरजिननाखियो। तुम हेंहमारेअबहौंचलीतिहारेधाममेरीरामरामपीछेरामराम भाखियो ॥ ७१ ॥

सवैया—वीरचल्योसँगहैसुकुमारसुशोकभर्योघरमाहिंपिताहै। मातइतेबिललातपरीनसुहातकछूविधिसोंनबसाहै॥ तापरऔरचलेसँगनारिसुक्योंवरणैकवियादुखदाहै। सूरशशीशिवशक्तिविनायकसाथभलेरघुनाथनिबाहै॥

कवित्त—रोवैतातहीठौररोवैमातठाढीपौररोवतच लैहैंदोऊराजतेगिलानकी। आएअबामिलनसुमित्राजू कोरामचंद्रसोऊरोयउठीबातसुनतअचानकी॥ पांयप रकह्यौतुमखेद जिनकरोमाततातकोनदोषबातविधिके विधानकी। ताहीछिनशीशनायठाढोभयोलछमनरोइ केसुधायपांयआयगहेजानकी॥ ७३ ॥ बोल्योलछम नहांहूंजातमातजाहिपूतनीकेकरसेवाकीज्यो रघुकुल भानकी । इन्हैंनखिझैयोदलसेजकोबिछैयोपाछेजूंठन कोखैयोबात यहीहै समानकी ॥ याकेअपराधसियाक्षि माहूकरैयोरघुवीरहैंकृपालुजनहेतकरकानकी। वेईवन कोटखेरेपितासंगरामतेरराखिहैनदुखी तोहिंमातातेरी जानकी ॥ ७४ ॥ फूटजाहिंनैनविनदेखेरघुवीरमुखजा नकीनदेखोहौंनछौनालछमनको। राजाकोकुवचनवहा ऊंनदिखाऊंमुखचलोंसंगचलोभीखमांगोंकनकनको ॥

राजजारोंतन केपटंबरनफारमेलकंथाकरोंयोगनावियो
गीकरोंमनको । कहतसुमित्रहोपवित्रपुत्रदोऊतापैकैसे
जानेकह्योरामतुम्हें आजवनको ॥ ७६ ॥ गरुडअवध
पच्छतैसेहीसुहागलच्छसत्यकी अवधिहरिचंदउरआनि
ये ॥ धरमअवधिराजापंडुसुतसुनोकानजलकीअवधि
सातोंसागरबखानिये ॥ पानकीपयूखपानतेजकीअवधि
भानदेवमहादेवठकुराईहरिठानिये । रामकेविछोहेदुख
तातमातयोंहैजैसेतादुखकी अवधिनआजकछूजानिये
स०-आजहुतेसुखरूखकोकाटमहादुखवेलधरापरबोई ।
काहुकोदोषनहींकविरामलिखेविधिअंकबचेअवसोई ॥
सूराफिरेशिवखायहलाहलजोविधनाबलवाननहोई ।
ताकहकैकयीकेवशव्हैकविरामसेपूतनिकारतकोई ७७
एवनवासचलेदोउसुन्दरकौतुककोसियसंगजुरीहै ।
पाइछसाथचलीइतमेंरनवासहुकीनहिंसीमछुरीहै ॥
हाथधरेकटिबूझतरामहिनाथकहोकहाँकुंजकुटीहै ।
रोवतराघवजोवतसीसुखमानहुमोतिनमालटुटीहै॥७८
गांवतज्योसुचलेरथबैठसुएपुरकेजनसंगसबैहैं ।
एककहेंविपरीतबडीदोउबीरकहाघरआजनएहैं ॥
एककहेंजहँरामतहाँहमफेरहुँतेफिरधामनजैहैं ।
गातसहेदुखबातयहेवनभ्रातनके सँगपातचबैहैं ॥७९॥
रामकह्योफिरजाहुसबैमिलराजाहिदेहुसँदेशहमारो ।
धीरधरोनभरोजलनैननहैसबसांचसनेहतिहारो ॥
कौनसुनेयहबातचुचातचलेअँसुआमनमोहतवारो ।

गांवउजारभयोहरतालचलेरविरामभयोआँधियारो ८०
रैनबसेतिहठाँजियजानएआवतजातसबैपुरलोई ।
आधिकरातउठेरघुवीरकह्योसुनवीरप्रजासबसोई ॥
सारथिसोंसमुझायकह्योरथलैघरजाहुजुशोरनहोई ।
योंकहिकेसियसंगलईदोउवीरचलेनहिंजानतकोई ८१
भोरभएसबलोगकहैंरघुवीरकहांमुखजायनिहारें ।
देखफिरेचहुँओरनदौरगिरेधरणीमनरोइविचारें ॥
गैलगहीरथकीसुचलेसबलौकफिरीघरजायसँभारें ।
देखहिंजोफिरगांवमेंआयतोह्यांसबरोवतरामपुकारें ८२
राजसमाजउतारसबैरघुराजकहीअबहैसबफीको ।
लेवटदूधबनायजटाशिरवीरहैभ्रातबनावतनीको ॥
देखहुकालबलीकाविरामछडायासिंहासनऔधपतीको ।
मानसक्योंमनमेंपछतायसुरामहिवेषकियोतपसीको॥८३॥

कवित्त-रोवतपुरुषनारीयोगीपतीब्रह्मचारी रोवेंगिरिरूखअरुजेहटौआहाटके।रोवेंखगरोवेंमृगरोवतमरालभृंगरोयगुणपढ़तकवित्तवेटाभाटके ॥ रामकेविछोहेदुखऐसीभांतियोहैसोतौटारेनटरतपरोपैंचसोंकपाटके।वीरातियसंगलै वियोगीयोगीभयेयहबातसुनरोवतवटौ-आसव वाटके ॥ ८४ ॥

माताजीका वचन ।

कवित्त-भोरहूकेभूखेहैंहैंप्यासमुखसूखेहैंहैंपांयकंजदूखेहैंहैंचालेमगरातके । सूरकीकिरणलागेला

लकुम्हिलानेह्वैहैंकाटालपटानेझगाफाटेह्वैहैंगातके।एरी
अलीह्वैगिसांझव्हैहैंक।हूवनमाँझभईहोंनबांझहियेक्यों
नफाटेमातके ॥तजकेघरौनाकाहुरूखनकीछायातरेसो
येह्वैहैंछौनापैविछौनाकरपातके॥८५॥रोवैंसवगांववासी
रानीरनवासदासीदेहतेउदासीमानोकारोनागछ्वैगयो ।
छुटेकेशविकरालआपआपकोविहालकाहिकोप्रबोधेस
वहूकोरसव्वैगयो ॥सवहीकेप्राणहरतपसीकोवेषकरजा
नकीसमेतरामजौलोंकोसद्वैगयो। तौलोंरहेप्राणदशरथ
जूकेनीकेपाछेरामनामलेतराजारामरामह्वैगयो ॥८६॥
स०-खायतवारगिरोधरभूपतिबोलथक्योबहुभांतिपुकारे
औरनरामकोनामलियोतबबारदुतीनकैननउघारे ॥
प्राणछुटेहुनरामछुटयोअरसीनसकेघटतेकरन्यारे ।
ज्योंनभतेग्रहटूटपरेक्षितिज्योति कछूकरहेभिनसारे ॥
दैम्बहिंपीठचलेरघुनाथउसासभरोनृपताहिछिना ।
विधिक्योंअजनंदनआजजियेपलवीततहैरघुवीरविना॥
तवरामहिरामपुकारपुकारएरामएरामतूआवसना।
जिनकेसुतरामकेवेषधरेंभइन्याइहीतिमरजायकिना॥८८।
आयुबढ़ीतोकहाविनुरामहैलोमषतेवरणोअधिकाई ।
रामकेकाजतपोतपतीक्षणआपनेकाजनछानछवाई ॥
तातसोईपुनिमातसोईसोईपूतसहीसुनहैसोइभाई ।
रामवियोगविसूरविसारभिदेछातियाजिनदेहगँवाई ८९
इति श्रीरामगीतेश्रीरामचंद्रवियोगोनामद्वितीयोऽकः२

तृतीयांक ३

दोहा।

यहिविधिभूपतिदेहतजि, सुरपतिभवनपयान
नेहनिवाहनकोपुरुष, दशरथतेनहिंआन १॥

सो०—मंत्रीसबबिलखाहिं, छुटोराजरघुवंशते ॥
रामचंद्रघरनाहिं, भरतविदेशीमृतकनृप॥ २॥

स०—बैठविचारवशिष्ठकियोउतनैनबहैंइतैमंत्रकरे ।
लिखजोरघुवीरहिबोलतहै सुनराजसिंहासनपाँयधरे ॥
अबजोयहभांतिकीबातसबैभरतैलिखिहैंसोइबीचमरे ।
कहोकौनउपायकरैंजिहतेघरराजरहैदुखरामहरे ॥
आयगईसबकेमनमेंभरतैलिखिकैयहिभांतिपठावो ।
श्रीरघुवीरभुजाधरिराजविचारतभूपतिननसिरावो॥
ताहितेबेगिबिसारिसबैसुखआवहुपूतविलंबनलावो ।
तोहिकोरामकेपाँयनसौंपिवसैंवनमेंतुमहूसुखपावो॥४॥

कवित्त–राजाबिनभयेरंकसुनोदूतचारवाकयहांको कुसूतएकौनेकनसुनाइबो।जोतातोहिआपनतेबूझैंराजा रामनीके,सबहीकेकुशलसमाजराजगाइबो॥औरकोऊ कबहुंकदाचिढिगबोलउठेनाहींदुखपाछेनैनसैनसमुझाइ वो।बूड़तहैराजजोकुसाजव्हैगयोहैआज,लाखहेरफेरसों भरतघरलाइबो ॥ ५ ॥

छ०—स्वस्तिश्रीरघुवंशमौरमुकुटमणिउदभट।
अरिगंजनश्रीभरतदानभिक्षुकनकलपवट ॥

तेजपुंजरणधीरविपतिखंडनसुतबलभट ।
धर्मकर्मरतनित्यस्वच्छमनअघनाहिंनिकट ।
राजाधिराजदशरथवचनलिखवसिष्ठतुमसोकरहु।
सुनन्हातखातसोवतउठतपातीलैमगपगधरहु।६।

स०—औरबनायलिखीपतियाँबतियाँऋषिजेसबपाछेहिभाखी॥
भूपतिकोनहिंदाहदियोविनपूतकियोशशिसूरजसाखी।
रामसनेहछुटीनृपदेहसुपाछेऊमेलसनेहमेंराखी ॥ ७ ॥

कवित्त—चलीजबपातीकांपीछुहुनकीछातीआगे,आगमजनायोरामभरतकुमारको । कहनभरतलाग्योबोलिनिजमंत्रिनसों,पहलेलेआवेकोऊतातसमाचारको ॥ पवनप्रचंडघनघोरउडेचहूंओर, जंबुकपुकारतहैंआजभिनसारको । ज्योतिषीकहतराजादशरथनीकहूजोनीकैरामचंद्रसुखदीजोपरवारको ॥ ८ ॥

सोरठा—तबलगआयोदूत, लैपातीपहुंचोतहाँ ॥
देखोभरतसुपूत, पूछेबातेंप्रेमसों ॥ ९ ॥

स०—रामकहोसुखसोंघरहैं सोइरामविराजतभूतलमें ।
सबदेशबसेवर्षाबरसे अरुभूपतिहैंअपनेबलमें ॥
तबदूतबनायकहीबतियाँमनधीरजटूटगयोपलमें ।
छबिहीनभईछिनमेंमुखकीजनुतोरसरोजधरोजलमें १०

दोहा।

बेगदूतपहुँचोतहाँ, जहाँभरतबलराइ ॥
पातीदेपगशिरधरो, कह्योसँदेशबनाइ॥११॥
सोरठा—कह्योबहुतउत्साह, भरतजबैपातीलई ॥
कहुमोसेसतभाइ, तातभ्रातसुखसोंरहैं ॥ १२ ॥
स०-धायचलोउत्साहबढोमनरामकोराज्यसुन्योसुखपायो।
जायसुनोसबकेमुखतेचढ़राजसिंहासनछत्रतनायो ॥
आयकगांवमेंपाँयदियोमनशोकबढ्योशुभसै
कैरघुवीरनहींघरमोंपितुकैमरिकैसुरलोकसिधायो॥१३।
कवित्त—लोकबैठेमौन सुनकहूं नमृदंगधुनदेखियेन कहूँराजा धाम न धुजा लसै।हाथीहथियातनहींवाजीहि ननातनहीं नाचत नगावतसुमानोविनजीवसै।दूतकही झूंठीवातइहांउतपातकछु,वीरविनमेरेकंठकहोजलक्यों धँसै।पावैंनवछेरूदूधगेरूरंगडोलैंसब, रामराजहोइतोप खेरूवनकेहँसै ॥१४॥ देखिकैभरतसबनायरहेशीशका हू,पायहूनछुवैकोऊदेतनअशीशको। हाटहरतारकरी सूनीचटसारपरी, द्वारहैकिवारसबजपैजगदीशको॥ एकमनकरे घर पांउऊनदेउँभाईबूझतलजाउंकहाभयोदेशईशको। आएभौनमातबूझेसमाचारतात के कहोनबेगपापनीहोंजानिवाऊंशीशको ॥ १५ ॥ माततातकहां पूतहै सुरेशजहांतहां,कौनकाजगयोदेहछूटीपूतपीरते।

कौनसोसुपूततुमसबहुतेबडोभाईरामहैसुकहांवनगएनृ
पतीरते॥भूपतिपठायोनहींमाँगेवरपाथोंमैंतो,राजतुम्है
राखोछीनलीनोरघुवीरते । कहाहोईमोतेअबहोंहींगयो
तोतेतूजो, पेटआशदौरीपाल्योपूतडारोछीरते॥ १६ ॥
कहाभयोमोतेअबहोंहीं गयोतोतेतूजो,पेटआशदौरीपा
ल्यौपूतडारोअंकते । कौनकाजराजसुनआपनोअका
जकीनो, लाजबिनजीवननधर्मननसंकते॥ऐसोकामकी
नोतैंतोरामहिवनवासदीनो, मारोपतिपलमेंनडरतकलं
कते । रामहिबताऊ बूझों बाटकेबटाऊ पटफारहोऊं
योगी भीखमाँगोंरायरंकते ॥ १७ ॥

स०-रामकोराज्यसुनेसहसाननभूमिकोभारउतारदयोहै
जानसुपूतभयोकुलमेंरविकोयशदेवनमाहिंछयोहै ॥
रावणकेदुखतेअमरापतिढोलबजायनिचीतभयोहै ।
पापिनिकेछलतैंछिनमेंवनमेंसोईतोरघुवीरगयोहै॥ १८
तौलगआनवशिष्ठकहीतुमतातकोदाहकरोसुतमेरे ।
वेदविचारकियोविधिसोंपुनिरोयकह्योकहँरामननेरे ॥
लैकरवारणवाजिपदातचल्योतजिदेशफिरोनहिंफेरे ।
प्राणतजौंकिभजौंरघुवीरहिनीरपियोंनविनासुखहेरे १९
तौलगश्रीरघुवीरपषाणशिलानकोतारधसेवनमाहीं ।
आनवसेगुरुकेदिनद्वैपितुकीगतिकोनभईपछिताहीं ॥
रामकहीसुधिलेहुसबैएकैकयीनंदनहोइकिनाहीं ।
छत्रध्वजासँगराजसमाजसुपाँयनआवतपागविनाहीं २०

दोहा ।

आयसुजबरघुपतिदई,दौरेसबशिरनाय ॥
भटनबूझिधसिकटकमें,भरतनिहारेजाय ॥

सोरठा—अतिदुर्बलसबगात, रामपुकारतरामकवि ॥
लोचनसलिलचुचात,बीराविरहपुनितातदुख २२

स०—दूतकहेफिरलेबातियांसबलोगनरामजुयोंसमुझावै।
राजकीबातखरीविपरीतभलेमनकैकयीनंदनआवै ॥
आवनदेउकह्योबहुरोजिनसोंयशरामकहोकबपावै ।
मातकेबोलनअंकतजेनिजवीरलरेसुरलोकबसावै २३॥
दीठपरेजहँतेरघुबीरपरोधरताहिरहीसुधिनाहीं ।
ज्योंसिकताजरतेपरमीनजरेनमरेपलप्राणउठाहीं ॥
चेतउठेसमुहेभटक्योंमुखरामकहेदोऊनैनचुचाहीं ।
वेगहिवेगप्रणामकरेइहिभांतिहिहोरघुवीरकीछाहीं॥२४
देखिकेरूपकह्योनपरेअबफाटतहैदुखसोंछतियां ।
तबदौरिकैरामउठायभुजाभरिलैउरलायकहीबतियां ॥
सुतकाहेकोवेषकियोइहभांतिसुजीवतहीरघुकेनतियां।
पितुप्राणतजेहमहूतजिहैंनहिंधामचलोसँगवीरतियां ॥
शोककियोसुनिभूपतिकीगतिसीयसमेतसबैबिलखाहीं।
कौनबड़ेअपराधकियेहमजाफलतेस्वपनेसुखनाहीं ॥
तातकोकालभयोहमरेदुखसोंहमहूंवनमेंबिललाहीं ।
आनकुटुंबगहीविपदाअबजाइगहौंकिहकीपरछाहीं २६

रोयचलेपितुकोजलदेनादियोविधिसोंपुनिशोचकरैं।
दुहुंवीरनजायकेपाँयगहेरघुवीरजिएमनशोकहरैं ॥
चलियेघरलैसियसंगअबैहमकोटिकवारनपाँयपरैं ।
वनभूपकह्योसुकियोतुमहूप्रभुधामचलोविनदासमरैं २७
जोमनमेंवनमेंरहिहैंतौछत्रधुजाशिरचौरढरै ।
रथबैठिसबैभटसंगफिरैंप्रभुकीरुचिजोसोइदासकरै ॥
पगकीरजकेहमहैंसबसेवकराजतुम्हेंमुहिंदेहमरै ।
तिनपाँयनकोटिकरोंसतखंडजुराजसिंहासनजाइधरै ॥

कवित्त–लीनो लछमनसंगहोंविमुखकीनोकहो,किधौं हों न दास सुननाथमेरीगतिको । कहाभयोजोहोंदिनचारकविदेशगयो,मोहिंछाँडदियोतुमजान्योहीनमतिको ॥ तापरतोऔरउतपातकीहैबातमात, राजमोहिंराख्योपतिकीनेनभगतिको । तौहोंभलेजीऊंरामदेखिजलपीऊंमोहिं, दीजेभीखसंगहैभिखारीरघुपतिको॥२९॥

स०-पतिकोछलकैकयीराज्यलियासुतकीयहबातसुनीसबहीं।
तबभूपतिदेहतजीछिनमेंरघुवीरगएवनकोजबहीं ॥
अबजोसुरराजकोराजमिलेसोइकामनआवतहैकबहीं ।
मनलाजमरोरखुराजसुनोसोइराजजरोजिहरामनहीं ॥ ३० ॥

दोहा ।

इहविधिविनतीकरिभरत,रहेचरणलपटाय॥
क्षमाकरहुघरफिरचलौ,सियलछमनरघुराय ३१

सो०—जोनचलहुघरआज, सुनहुबातप्रभुकानदै ॥
जातवंशतेराज, तुमवनमेंहमताताढिंग ॥ ३२ ॥

कवित्त—बोलेरघुवीरसुनवीरमनधीरधर,पीरसहसही करआगेकोउपायको । जीवतहीराजाराजकाजकोबुलायपाछे, कह्योजायवसोवनसुन्योबोलमायको ॥ राजकोसमाजतेरोदीनोहैभरतजूको, सुनसुखपायोबोलकह्योसतभायको । जैसीकहगएताततैसीकीनीवनैवात, आयसुकोमेटसुतोआगेधरेपाँवको ॥ ३३ ॥ तेरीप्रीतिजानीतैंनपियोघरपानीअरुमोविनवहानीराजधानीदेशदेशकी ।मायकेनपाँयलाग्योतातकाजकियेभाग्यो छाँडदीनीबातसुखलालचकलेशकी॥देखोलछमनयाभरतजूकोनेहअवराजकौनछाँडेविनसंततदिनेशकी । सुनोरघुराईजहाँरामनसहाईतहाँ, कौनेनजराईठकुराईअमरेशकी ॥ ३४ ॥ जायलछमनजूकेपांयगहेताहीछिन, वीरसमुझायलैलिवायचलधामको । तातबोलीनोतुमबड़ायशलीनोवन,आएफलखाएदुखदियेसियबामको ॥ जोकहोतोजायघरकैकयीनिकारोंकहोमारोंआजकरोंहौंपरशुरामकामको।मोहिंवनछाँड़ोभावेसंगलैसिधारोप्राण, पलमेंनिकारोंजोनसुनोंराजरामको ॥ ३५॥ मेरीकहीमानभलोयाहीमाहिंजानवीरराजतौलोंकरोजौलोंमेरावनेआइबो।मानोरखथातीराजाअजजूकेनातीकछु,एसोई

कुपैंचजातेमोहिंवनजाइबो ॥ सुनेप्रभुमेरोकह्योपाँ
यछुवोतेरमैं [illegible] ॥ ना
तदुखमातदुखवडोरघुनाथदुख, एकलोभरतघरघेरघेर
खाइबो ॥ ३६ ॥

स०-जानिकैप्रीतसहीरघुवीरसुवीरकोलैमुखनीरपखारो
पागबँधायसँबोधकियो एइपाँवरीलैकरराजहमारो ॥
कैकयीनन्दनसांचकहोंतुहि प्राणसमानकरोंअवन्यारो ।
थोरेहीद्योसनआनमिलोंसवसोंयझसोरहियोउजियारो॥

श्रीरामचन्द्रजीका सन्देशमाताओंके प्रति।

कवित्त-सवहीकोकहियोसबमाइनकेपाँयलाग,कहि
योसन्देशसबनीकोरघुनाथकी । छांहसोंचलतढिंगगांव
केरहतजात, वैसएईगातजैसीपोखीमातहाथकी ॥ कहि
योसुमित्राजूकोलछमननीकेअहैंसमाचारनीकेपरछाहीं
करीसाथकी । जोकदाचबूझैकैसीरोससोंरहतवीर, सुने
दुखपैहैजटाकह्यो जिन माथकी ॥ ३८ ॥

दोहा ।

सुनोभरतसिखआनतुम, तोहिंकहोंसमुझाय॥
जातेसुखसंपतिबढै, सोहोंदेहुँबताय ॥ ३९ ॥

सो०-जोसुखचाहोराज, लोकसुखीपरलोकगति ॥
तौबातेंकरआज, सुनहुभरतरघुनाथकी ॥४०॥

कवित्त—तातमातसेवबडेभ्रातनकीभक्तिपरभात उठकीजियेभरोसोहरिनामको । ब्राह्मणकोदानसबही कोसन्मानसुनवेदकेपुरानन्यावकीजोनरवामको ॥राज अंशलीजोदुखीजानकछुऔरदीजोसुखीदेखडांडोंजिन करोएकदामको । ऐसीभांतिकीजोसबहीकोसुख दीजोवीरमेरेआगेपाछेवोलबांधिगांठिरामको ॥ ४१ ॥ नीचसोंनप्रीतिकीजोकुलकोनछांडदीजोवीरसुनलोभ जिनकीजोपरनीरको । आनतियमातसुनवातघरबाढै धनत्योंत्योंनीचेहूजोओकटैयापरपीरको ॥ वैरिनको शूरकूरमंत्रिननिकारदीजोदीजोजिनछांडदुखपरेहूजुधी रको । दानपुरहूतसोंनदूतवसदूजोभाईभरतसुपूतकी जोकह्योरघुवीरको ॥ ४२ ॥ जैसेपतीसंगतेसुमतिज्यों अनंगतेत्योंपापनीरगंगतेधनबढ्योजूंपहारते ॥ ज्योंकु लकुपूततेज्योंदारदसुपूततेज्यों ब्राह्मणकेपूताबिनापढ़ेच टसारते ॥ देखोबिनखेतीजैसेसावनमेरतीऔरबातेंकहो केतीजैसेतारलोहधारते । सावधानहूजोताहिदेशतेनि कारदीजोबूडजैहैराजऐसेमंत्रीदुराचारते ॥ ४३ ॥

सवैया—पाँयछुवेसुनसीखसबैप्रभुएनबिसारचलोकबहीं। धरपाँवरीमूंडसुसांवरीमूरतिदेखकह्योबिछुरोअबहीं ॥ अबजाहुघरैशिरहाथतबेधरआयसुशीशचल्योतबहीं । लिहवीरसियासँगवीरबिदाकरिरामधसेवनमेंतबहीं॥४४

वीरहिछाँडचल्योघरकोधरआयसुशीशनजाइमिटायो।
गांवमेंजायनपाँयदियोढिगकेनँदगांवसोंजायबसायो ॥
मूंड़जटाधरवेषतपोधनहोसुखझुंडसमुद्रबहायो।
रामसनेहधरोमनमेंतनकोतनकोनसनेहलगायो॥४५॥

कवित्त-वेहजोसिंहासनहोआपदा विनासनकोता
हीपरपाँवरीलैराखिशिरनायोहै। राजभयोअटलसुकाहे
तेहोकविरामरामसीखदीनीहीसुकीनीसुखपायोहै॥ ता
हीकेवियोगभोगछाँडोनसँभारोनेकुजैसेडारकांचरीन
भोगीफिरआयोहै। योगीह्वैनहँस्योसुरलोकयशबस्यो
घरआपनेनधँस्योदेशसोगुनोबसायोहै ॥ ४६ ॥

दोहा।

भक्तिभकारप्रगटकरी, रघुपतिक्रियारकार।
तरकतकारणसुखनदी, यातेभरतकुमार४७
इहविधिभरतसदारहे, तज्योतीसरोकाम ।
प्रातसँभारेराजको, रातसँभारेराम ॥ ४८ ॥

सोरठा-भरतसदायहभांति, सुनहुदशारघुवीरकी ॥
जिह्वाजिह्वनमेंजात, सोइवतावतरामकवि ॥ ४९ ॥

कवित्त-ऊंचेवटतालजहांलटेनतमालसालसरलवि
शालगातिहैनकालमंदकी । कहूंलालल्लालकहूंघुंघची
प्रवालकचनालनिंबुचंदनसोमानोवासुवंदकी ॥ चंपक
रसालनारकेलसोंकनेरही सुभारीतमकौनगनेजातमूल

कंदकी । मानोअहिदेशकिधौंकुहूकारेवेपडोलेंसूरकी नज्योतिवहांचांदनीनचंदकी ॥ ५० ॥ ऐसेवनकरेगो नरामचंद्रविनाकौनचलेजबपौनऊंचेपातखरकतहैं । से मरखजूरजायपूररही सूरमगताहीकेतुरंगतहांदेखवक तहैं ॥ फूलफलरातेमानोरातीजोतबारेकेऊतोरेकेऊछु एतातेऐसेझलकतहैं । तूलहैनजानोकविरामरविघोरे मानोडारतहैंलारकीफ़ुहारचिलकतहैं ॥ ५१ ॥ ऊवट नगैलसदा सिंहनकीशैलवनजारेकेसवैलमानोबोलेंडक रातसे । औरसोकरीकुरंगआधेअंगपरेकहूंहैसुरंगभूमि कहूंदेखेविललातसे ॥ मोरनकोशोरसुनफणीमणिडार मुंडदियासोबुझायबचेहैंअँधेरीरातसे । गीधनकीमाल कहूंजंबुककरालकहूंनाचतविताललैकपालजलजातसे ॥ ५२ ॥ तालनकीडालजेकरालहैंउलूकवाकीकूककेसुनेतमूकहोतहैअचानकी । पन्नगकेबाणकिधौंकालहू केकालताहिदेखजीयआडेधीरधरेकौनप्रानकी ॥ बाद रकीघोरजैसेगीधनकोशोरसुननभहूकी डोरनानिहारत गिलानकी । औरविकरालखगदेखियतपगपगतऊरघु वीरधीरधरेहैंनिदानकी ॥ ५३ ॥ कहूंवनकोलकहूंरोझ नकेटोलकहूंभीलनकेबोलतहांवातनअनंदकी । मान सकेनातेवनमानसहजूरकहूंवानरलँगूरनउँचाईगिरिमंद की ॥ कहूंचक्रवाककहूंभूतनकीहांककहूंकारेकाकमा

नोसूरकहूंपूतबंदकी । जानकीडरातबीचबीचचलीजा ततऊनैनमूंदलियेकाटिगहेरामचंदकी ॥ ५४ ॥ ऐसी भांतचलेजातकोहैजासोंकहेंबातगातकुह्मलानेजेवैपोखे घरमातके । जानकीनिहारभरश्वासमनक्रोधमारकैसी कुशलातहमेंलागेंदुखतातके ॥ तीनोबैठजातजहांगोख ह्मगड़ातमुसकातनजनातसमाचारसुनोप्रातके । सीरे जलन्हातटूटेफलफूलखातरामरातपरेसोवतबिछौनाक रपातके ॥ ५५ ॥

दोहा ।

रघुपतिऐसेवनफिरत, देखेनगरनठौर ।
आसनसुन्योअगस्त्यको, चलेहुलासनदौर

सोरठा–सियहिकहेउसमुझाइ, लोपामुद्रातासुतिय ॥
प्रथमशीशधरिपाइ, आयुसलैढिंगबैठियो ॥ ५७ ॥

स०-राममिलेमुनिसोंपरपाँयनलायरहेछतियांदुखखोयो।
रेसुतक्योंयहवेषकियोनृपजीवतहैकिबडेजगसोयो ॥
बातकहीसमुझायसबैरघुवीरमनोतनुतीरगड़ोयो ।
प्रातरहोयहठौरसबैमिलश्वासभरेमनतेअतिरोयो ५८॥

पंचवटीका वर्णन ।

स०-एकघटीनघटीसियकेदुखरामरहेमुनिकेनिकटी ।
घटकेसुतसोंतिहनारजटीमनोधूरजटीनहिंकामछटी ॥
द्रुपटीफटजातजहांतमकीप्रघटीघटमेंगुरुज्ञानघटी ॥

काहियेकहुँमुक्तहटीवरटीजहँपर्णकुटीरघुनाथठटी ६१॥
जहँसिंहकुरंगनवैरगटीमृगसंततसिंहनदूधजटी ॥
सोउनेकनदेखतजातलटीअहिपौढ़तमोरनिपुंजतटी ॥
चढ़केहरकंधअजालपटीनहिंभूंखलगीकबहूंझपटी ।
जिनकीदुखफांसकहूंनकटीतिनकेशिरहैसुखसांतसटी॥
जिनकीधुननैननजोतघटीतिनकेसँगमुक्तिफिरैलपटी ।
जिनकेहृदग्रंथिमहाचिकटीकरस्वच्छचलेमनोदूधघटी
मुनिवृन्दजहांजिहवेदपठीशुकसारसहंसचकोरचटी ॥
निशिवासरकामकमानटुटीशिरतेरतिसीलटजातलटी।
सबकेमुखनृत्यतवाकनटीसुअगस्त्यपढ़ावतहाथछटी।
तपतेजनतेरविजोतिहटीकपटीनरहेतहँएकघटी ॥
हरपूजनकीजिहआरभटीभरनैननिहाररमालपटी ।
जहँईंधनचन्दनकीखपटीकविरामकहैसोइपंचवटी ६२
यहकालबलीकविरामसुनोदुखश्रीरघुवीरकीबातनके।
जबतातकह्योचलहीनिकसेनरहेबिललातसुमातनके ॥
अब औरकीकौनकहैसुरभूपतिहैतकियाजुमलातनके ।
मनकंचनधामतजेवनमेंजबरामकियोघरपातनके॥६३

कवित्त–ऐसीभांतिरहेदेशरह्योदूरकह्योसुखदुखनिर बह्योसह्योमेहछांहघामको । दुखीजानकामधेनुक्षीरनि धिसैनजाकोहंसगौनपौनाशिवसेवजाकेनामको ॥ लछ मनगहेपांयसुनोरघुरायप्रभुजानतहों जाते वनआएजा

हीकामको । सोईक्योंनकरोदुखदेवनकोहरोरामाबिछु रोकुबोलसोईसौंप्योदेवबामकौ ॥ ६४ ॥

स०-जबलौंरुचिहीतबलोंरघुबीररहेऋषिकेबहुतैसुखपायो। बातकहीबनआनचलोसुनपाँयछुएअतिमोहबढ़ायो ॥ जानकीजायकेपाँयछुएसियकेबिछुरेऋषितीदुखपायो । अंगसुबासदईककईपटमोतिनहारगरेपहरायो ॥ ६५ ॥

रामहिएकसुमंत्रदियोऋषिजारिपुकोशिरभुइँनपरेगो । काटहितेउपजेपलमेंकहुसोतुमतेकेहिभाँतिडरेगो ॥ तारिपुकेशिरकोयहबाणसुनोप्रभुजू इहभाँतिहरेगो। ज्योंमृगझुंडनसोंमृगराजभुजंगनसोंखगराजलरेगो ६६

जाइबसेअबताबनमेंमनोसाबनमेघनकीअनुहारी । आपनेहाथबनायकुटीसियसोंमिलबीरहिऔरसँवारी ॥ लंकनिशाचररावणकेदिनरैनहतेतिहठांरखवारी । दौरकेजायकहीतिनयोंसुनशूर्पनखाइकबातहमारी ६७

जाबनकेहमहैंप्रतिपालकताबनमेंतपसीयुगआए । राजतज्योभवयोगलियोलघुमूंड़जटानखहैंनबढ़ाए ॥ रूपअनूपभयेदोउबीरननेकडरेबहुतैडरपाए । जेपहलेडररावणकेइकभाजगएइकदूरबसाए ॥ ६८ ॥

कवित्त--बातसुनजरी संगचलीखिजलरीआंखेंराती लोहूभरीरोषचढ्योनखशूपको । अंगअंगबनीमानोंलि खीचित्रबनीगटीनिजमनमनीआजबरोंकामभूपको ॥

वैरीशिवजागोताकेतैसेपाछे लाग्योजैसेपारोजायभाग्यो
देखसुन्दरस्वरूपको । लांबीडगभरीठौरठौरगिरपरी
रामदेखेजिहघरीदेखरहीसुखरूपको ॥ ६९ ॥ परीकाम
वशताकीसुसाजाकेमुंडदशकीने हावभावचितचावएक
बन्दसों।दीपसुतनैनदेंसुसैननचलायरहीजानकीनिहारम
नरहीनअनंदसों ॥ मानोदेववधूऐसीसुनीनाहिंकभूप्रभु
ध्यानतेजगायगहपाँयतामैमंदसों । पानखायखायमुस
कायनिजकायपाँयपरकै निशाचरीसुबोलीरामचंदसों
॥ ७० ॥ कौनदेशराजतापसीकोवेष मनसिजरूप
वंततुमसेनदेखेयुगचारमैं । हैजुनारसंगसोऊराजा
कीकुमारकहोयरहीतेलाएहोकिपाईहै उजारमैं ॥ तो
हिंकहापरीअबजाहिभलीकरीहमराजाहैं किरंकहैंकहूंते
पाईनारमैं । कहोकहांजाउँमोहिंहैनकहूँठांउँनाथ
तुह्मैंआजवर्णआईघरतेविचारमैं ॥ ७१ ॥ बोले
तारकारिरच्छयच्छमच्छकेतुनारिकिधो त्रिपुरारिलो
कछाँडक्षितिछाईहै । किधोंरंभाउर्वसीमेनकासुकेसी
कोऊतिनमेंकिमघवापठाईमोपैआईहै ॥ डोलतअकेली
कोऊसंगनसहेलीसमुझायकहोकौनतेरोतातमातभाईहै
सीतातवबोलीतुमज्ञानपोथीखोलीयहकोऊवनआपदभ
लीलैमुँहलाईहै ॥ ७२ ॥ नभतेनआईहोंसुरेशनपठाईप्र
भुरूपदेखकामकीचलाईजानलीजिये । राजनकेराजा

नामरावणसुभाईमेरो तुम्हें न सुनायोकाहूजाकेज्यायजी जिये। शिवकीवडाईतेदुहाईजाकीतीनलोकसोईवसेजाइ फेरदेशथापिदीजिये। गहोबांहनाहसेवोचापोंपगजाहजै सेसीताघरमाहिंतैसीदूजीमोंहिंकीजिये ॥ ७३ ॥ समा चारजानेमुसकानेकह्योबातसुन तैंन पहँचानेहमवैठेयोग वेषमें। तैंनसुनीबातरघुवंशमेंजोहोतजातआनतियसों नवोलेघरनाविदेशमें ॥ तामेंएकराममेरोनामहोंलजाऊं भारीतामेंतियसंगजाहिछाँडआजकेसमें। भलीसुधआ ईलछमनमेरोभाईदौरताही वरजाईवहजोपरोकलेशमें ॥ ७४ ॥ चलीतबधाईलछमनपाँयछुवेजाईबोलीमुसका यएकबातकहोंभावती। बरवेकेकाजरामतुमपैपठाईहों गजाननमनायआईतातेउतलावती ॥ कह्योसोईकीजो नपत्याहुजायबूझलीजोरूपवशभईनाहिंतुम्हैंनसतावती। रावणसुभाईलंकहेमकी बनाई जिनवनाहिमेंआईनिधिफे रोजिनआवती ॥ ७५ ॥

लक्ष्मणजीका वचन ॥

स०-तोहिंकहोंसुनबातानिशाचरितूजननीमेरीहैतवहींते। कामकोभावधरेमनमेंरघुवीरकेतीरगईजवहींते ॥ कैअवजाहितहींप्रभुपैचलआशतजोहमरीअवहींते। जोचलपूरवकीतटनीनटनीउलटीनवहीकवहींते ॥७६॥ धायचलीबहुरोनचलेवशदेखहँसीसियसोंरघुराई।

आयकह्योनवरेबलजाऊंसुआगेहुकीतिनआसचुकाई ॥
जायतहींअबकेवरहैतुहिदेहुंपतोकहियोसमुझाई ।
संगऋषीसुरकेवनमेंतुमतारकामारपतालपठाई ॥ ७७ ॥
आइकहीसोइबातसुनीसबबैनबरेंतिनऔरबताई ।
जाइकह्योसँगप्राणनलैरघुनाथकछूमुहिंऔरजनाई ॥
वारछसातफिरीइततेउतरामभलीउपमाजियआई ।
मानहुवीरनकूलदोऊभररोषबढ़ेनदनाउचलाई ॥७८॥

कवित्त—तिनहूविचारीएनदोऊव्यभिचारीपतिरहीन हमारीतबआपरूपव्हैगई । पाँयतोपतालधरशीशतोअकाशकरएकएकबांहकोसडेढडेढलौंगई ॥ बावरीदिवानीकछुऐसीबोलीबानीयातेजानकी डरानीकांपेमानोजुरीव्हैगई । रामैलपटानीजैसेशंकरभवानीकह्योनाथयाकोहाथसेसुप्रीतिरीतिखैगई ॥ ७९ ॥

स०-हाथनसोंनरमूंड़नफोड़सुजानकीकोडरपावनलागी ।
मोहेकियोचकडोरतबैअजहूंदुखसोंछिनएकनदागी ॥
रामसोंबातकहीबरियोसियबाहिबड़ोअजहूंअनुरागी ।
सौतसहोंशिरपाँयगहों अरितूयहरूपतजेनअभागी ८०
तब रामहँसेसियकोमुखदेखहमेनकछूयेबातनईहै ।
तूनहुतीऋषिकेसँगमेंवनमेंइकऐसीएमारलईहै ॥
याहिवधोजिनश्रीरघुबीरसुयौवनमेंकोईयोंनगईहै ।
नाकछिनायकलंकचढ़ायसुलंकानिशंकचलायदईहै ८१

कह्योहैनाकसुकानबनाइसहीरघुराइलेबातरुसाकी ।
लेहूचुचातगईढिगरावणजायपरीजैसेभीतमुसाकी ॥
बातसुनेतनुआगउठीढिगनारकहेतबबातगुसाकी ।
रामकोकोपकियेबकहातुमजोरतक्योंनहिंनाकसुसाकी ८२ ॥

दोहा ।

एकनिशाचरहँसपरे, भलीकरीरघुराय ।
नाककाढ़दौरीहुती, आईनाककटाय ॥८३॥
एककहेतुमहँसोजिन, कहोबातसमुझाय ।
बुढियासुएनरोइये, पैयमगीधोजाय ॥ ८४॥
सोरठा—नेकननयनासिराहिं, योंतड़फेलंकापती ॥
ज्योंथोरेजलमाहिं, जेठमीनदादुरबसे ॥ ८५ ॥

कवित्त—कहाँजाऊँकहाकरोंआगजोजरावेजरों सिंधु सबथाहिकैसेबूडमरोंजाइके । बूडीअबबातकुशलातहों नदेखोंयहां, मानसजनावेजोरयोगीबनेआइके ॥ कालहीं पछारोंशेषनागहूकोमारोंक्षितिलैपतारडारोंकिधौंमरों विषखाइके । कैसेजिओंआजमोहिकैसेभावैराजजोलों, तापसीविछोरासियलाऊंनचुराइके ॥ ८६ ॥ ऐसोशोच करेकुढमनहींमेंमरेतब,मेघनादआदिबातकहीहै उपाय की ।बोलेखरदूषणत्रिसुंडसंगदीनेझुंडकह्योजाइमारोसोई बाततिनेजायकी ॥पाछेनाकजोरिबेकेकाजपचहारेसबके सेजुरेरामबातकहोसतभायकी । आवेजोपिनाकीतौऊजु

रहीनताकीदशमूडतोनहोइयहकाटीरघुरायकी ॥८७॥
आनढिंगगाजेकईभाँतिनबजाएबाजे,खरदूषणादिरामच
न्द्रदेखकेहँसे। इनहीसोंलखेकेकाजहमजाएभले, राजन
केराजतुमरावणभयेभसे ॥ बाजिरथवारुणपदातकोऊ
नाहींएऊ,बैठेयोगवेषमुसुकायवनमेंधँसे। एकबाणकसेह
रिलोकएकवसेएकजोनिशंकनसेलंकवसेतेहूनवसे ८८॥
सवैया—बातसुनीसबबोलबडेभटऔरउपायकरोसुकरो।
उनलाखनमोंनहिंएकफिऱ्योदुखहैछतियांकिहभाँतिभरो
जुगियाइहलंकमरीचिबसेसोइहैमृगसोवनजायचरो ।
करवेषतपोधनकोकणमांगिसियकोइहभांतिसुवेगिहरो॥

दोहा।

भलीभलीकहकहउठे,मनमेंसबपछताहिं।
राजराखियोगीबने,ताघररूपकनाहिं॥९०॥

सो०—लटीधरमकीबात, जहांतपोधनपशुकियो ।
काहेकीकुशलात, मनपापीतनुतापसी ॥ ९१ ॥

दोहा।

सुनविचारमंदोदरी, बोलीवचनरिसात ॥
खरदूषणपलमेंहते, तहाँनाहक्योंजात ॥९२

स०—सुनुएकपटीदशकंधहटीहोउरामरटीनकछूकघटी।
हरधूरजटीकमठीखपटीसमतोररटीजनवाचकटी ॥
नठटीरतिनाथछटीतिनकोनितनाचतमुक्तनटीसुहटी ।

सुनकैंथकरीभगिनीनकटीसोइरामाविराजतपंचवटी १३

हाथनजोरानिवायशिरौधरिनाथसुनोतोकहोंइकबातो।
राजनकेमुक्तामणिरावणपावनरामसोंकौनसोनातो ॥
हेखहुक्योंनाविचारभुजाबलचौदहलोकडरेंदिनरातो ।
बातपुरातनयोंसुनियेघटकेहरिसोंनलरेगजमातो ॥१४॥
मूरखनाहिंदशोशिरसोंसाखिजानतहोंदिनआवघटेहैं ।
लोचनबीसनसूझतनाहिं नहाथनबीससुशस्त्रजुटेहैं ॥
पूतसपूतभयोमघवाजितशंभुसेकौनसेदानवटेहैं ।
सुन्दरद्वैभुजनैसकुसोतनयाहितिजानतरामलटेहैं ॥१५॥
रूपअपावनरावननीचमरीचसोंबातकहीसमुझाई ।
हदोउवीरसरोवरतीरकुटीरचितेजतहांनसमाई ॥
नारिअनूपमहैतिहिसंगभुवा[१]रहुआयसुशीशचढाई ।
छांडिगुमानपयानकरोजिनपा[२]नतजेतजप्राणपुजाई ॥
जानिकैबातमरीचमहामुनिदहतेवासछुटचोअबजीको ।
रामसोंवैरकियेसुखहैनलएदशकंधकलंककोटीको ॥
उत्तरदेतउतारतहेशिरयोंतरफेजैसेमीनथलीको ॥
सोनेकीदेहभईसुकहासुतऊमृगमोदकसिंहबलीको॥१७
जातबनेननरिसातबनेबुहरातबनेनहिंहैदुचिताई ।
हैउतपातकीबातसहीजुपैरावणरामतेप्राणउठाई ॥
तौमनक्योंपछतातअबैतजलंकपतीगहुरामकेपाई ।

१ राजादशरथ । २ आज्ञा ।

ठाड़ोभयोमृगश्वासलियोतिनकूदतफांदतचालदिखाई॥

दोहा।

फिरबोलीमन्दोदरी, कुह्मलानीसबगात ॥
ज्योंरोवेतमरातको,जानतरविकीबात ९९॥

सोरठा–कुंभकरणवशसैन, तुमराजावशमोहके ॥
देवरकछूकहैन, लंकपंकगहेरगडी ॥ १०० ॥
अजहूंचेतसँभार, पियतियवैननमनधरो ॥
पापबीजजिनडार, छांहदुहेलीबैठसी ॥१०१॥

स०-बोलिगयोशिवकोसुनुरेपतिताहिकेसंगसुहागहमारो
भूतलवासरह्योकुतकोअबतोभ्रमकोजडमूलउखारो ॥
छीनभयोतप तोहिं नसूझतज्योंतरदीपककेअँधियारो।
ऐसबकंतरहोहटकेनभलोघटतेपटरामाविसारो ॥१०२॥

कवित्त-रामसोंनवैरकरपापजीयमेंनधरसुनियोनऔ
रबातकीजेननिदानकी। अजहूंलोंकुसरातभगिनीकीथो
रीबातनाककाटीकाटीएकहैगईअचानकी ॥ केतेबली
मारेखरदूषणपछारेअबतुहैचल्योयोगीयहबातनसयान
की। ज्योंहिजौनमानेकंतकाहूकीबलाइजानेऔरसबकी
जोएकहरोजिनजानकी॥ ३ ॥ नारिकीनमानीबातादिन
हीसोंकहेरातबडोउतपातहोनहारचलोधाइके । आपब
न्योयोगीआगेकीनोहैमरीचमुनिदेखोकविराममृगसोने

कोबनाइके ॥ कहूंपातखातकहूंऊंचेडरकातलँगरातक हूंकहूंआगेनीचेसोहेआइके । कहूंचलेदौरबैठेपातनकी ओरकहूंजानकीनिहाररूपरहीहैलुभाइके ॥ ४ ॥

दोहा ।

जनकसुतामनमेंकहे, क्योंमृगपकरोजाइ ॥
कठिनकठिनईक्योंटरे, विनरघुवीरसहाइ ५

सोरठा–कंचनमृगकेहेत, होंयाचोंरघुनाथको ॥
जेवनवससुखदेत, अरुजानतपरपीरको ॥ ६ ॥

कवित्त–कीनोसोईकामआगेआपपाछेरामवलजाय कविरामऐसोरूपदेखजीजिए । लीनीगहिवाहिंप्रभुत्यों त्योंमुसकाहिंसीताकहांचलेजाहिंनाथनेककह्योकीजिए कुंजनकीओटपटहाथनसोंटारकहीबातमृगकंचनकोनी केदेखलीजिए ॥ हीनवलहैनातुमेकेहरकोमैनायाहिसाँ गकेछौनासुखिलौनाकरदीजिए ॥ ७॥ भयोचितभंगअं गअंगसबकांप्योरामजैसेशिवसंगमानोदूसरोअनंगहै । माँगोविनआनदीनोधनुषनिषंगताकोरंगनपछानेजानेह टहीमेंरंगहै ॥ कहीरघुवीरतूसुरंगदेखभूलेजिनभाजेसुख आजतेतुरंगपीठतंगहै । कीनोदुखपंगसुनजानकीकुरंगने नीहोयनकुरंगयहबडोईकुरंगहै ॥ ८ ॥

स०–शोचबढ्योजियमेंतवयोंमृगकंचनकौनरच्योजगमांई जोनवधोंसियप्राणतजेअरुमेंअबलौंकबहूंनरुसाई ॥

वीरहिबोलिकह्योसुखसोंदिनकाटतहैंवनमेंअबताई ।
जानकीआनकोदेखतहोंतऊछांडतहोंतुम्हरीशरनाई।९
आयसुनेकसुनोंप्रभुकोशशिकेरथकोमृगजायउखारों।
काहेकोनाथकरेंश्रमकोतुमयाहिकहोछिनहीमहँमारों ॥
जोछलमोहिंछलायछलैसँगयाहिहरोंइनहींपगधारों ॥
वीरसहीसियमोहिंकहीअबहोतुमकोकिहभांतिपचारों॥
अहोकंचनकोमृगतोअबलोंनविरंचिरच्योदुखकोफलहै।
किकलंकबडोरघुकेकुलकोकिनिशाचरकोवनमेंछलहै॥
किधौंरावणतेजबढ्योसमपावकताहिसभापतिकोजलहै
कहिरामचलेसियछांड़िकुटीपियकोनकछूतियकोबलहै
इतिश्रीरामगीतेकपटमृगआगमनोनामतृतीयोऽङ्कः ३॥

चतुर्थांकः ४

स०—लेकरतीरशरासनश्रीरघुवीरचलेसियबोलअरेहैं ।
फांदतखेतनलैनिकस्योतिनहूमुनिएकविनोदकोहैं ॥
पौनमिलेतबएकहिबाणगिरायलियोविनप्राणपरेहैं ।
जानकीतामृगहेतहरेतृणतोरपखारबनायधरेहैं ॥ १ ॥

कवित्त—गिरोकहरामनामलछमनकोपुकारलीनोबारबारमुखसुन्योसुअचानकी । मृगहीकेहेतमननैनकानएकतानसावधानठाडीउतदियेध्यानजानकी । बडोउतपातरामगातकीनकुशलाततताकोफललाग्योबातकरीनसयानकी॥लोटेधरमींजेकरतातबहुपीरहरप्राणक्योंनलेतदेहलागतगिलानकी ॥ २ ॥ बोलिलछमनजूसोंकहीसबबातसियजाहुअबवीरसुधलेहुवीरपीरकी ॥ शोकतजमातऐसोकौनतीनलोकमाहिंटेढ़ीकरभौंहँओरदेखैरघुवीरकी ।शक्रशिवशेषसिंधुचंद्रमाविरंचियमनरपतसेवैंरजजाकेपगतीरकी। मारिमृगकंचनकोऐहैंमृगराजरामकाहेकोहैहोतसकरीविनाहीनीरकी ॥ ३ ॥

स०-घातकरौंरघुनाथविनातनुतूसुहिबातनहींसमुझावे ।
वेपदकंजविनानिरखेघरीचारभाईकाहिंक्योंकलआवे ॥
है दृढप्रीतिसहीप्रभुसोंसुनताहितेजानकीतोहिंपठावे ।
सुलैकरबाणनिषंगकस्योकटिदूरहितेपगकोशिरनावे ॥
एकविचारकियोमनमेंसियकेहठतेप्रभुपैअबधाऊं ।

हैवनमाहिंनिशाचरकोछलमातकेबोलनक्योंउलटाऊं ॥
रेखकरीचहुँओरकह्योसुनयातजपाँउँनदेहुअगाऊं ।
जोविधिलौंइहबीचपरेजरछांडउडेतनुकौतुरताऊं ॥
योंकहकेसोइजातभयोवनढूंढतरामघरीकनपायो ।
तौलगरावणव्हैजुगियासियकेढिंगगोरखनादजगायो ॥
जानअतीतधरेकरतंदुलरेखतेबाहरपाँउँननायो ।
सोनचहेविनभीखचल्योकहिदानबंध्योअबलौंनहिंखायो।
राजकरोतुमभूंखलगेहमखप्परऔरकेआगेधरेंगे ।
भामिनभीखबँधीकिहकामसुतोहितजेहमहूंनमरेंगे ॥
जानतहौंजियमेंसुनसुन्दरतोसँगरामनआइलरेंगे ।
योंसुनहैकोउभीखविनागयोतादिनभोजनहूंनकरेंगे ॥
सिययोंडरपाइपिशाचकहेविधिजानतमूडकलंकदियो।
रघुवीराहियांचचलेतजतंदुलतादिनहैकिहिकामजियो॥
अबयोंचलहैजगमेंयहबातनहैघररामनवीराबियो ।
तबपीयविनासियएकअतीतहिभीखदईनसँबोधकियो॥

कवित्त–रेखछांडजाऊं तो डराऊंलछमनजीतैभीख विनादियेभीखमीचहौनपावती। कोऊमंदभागीयहराम केनआगेआयोदरशनपावनहोंदेतनसँकावती ॥ ढीटमी टदेउँफिरढीटहीमिलाइलेहुँव्हैहै बातसोईभगवंतजूको भावती॥ देखोकविरामकौनजानकीसोंकहेयहढीटहीमें बोलकेजंजारनचुकावती ॥ ९ ॥

स०-तौहिंलौंआयसुबोलउक्योतुमआयसुदेउकछूनहमारे ।
हौंउठजाउंकहावशहैउपजीनदयाजियमांहितुम्हारे ॥
ढीठमिटावतहीसुनसुन्दरिसूरशशीगिरिहैंनभतारे ।
योंनहिंजानतसोशठरावणमाँगतभीखकिमींचपुकारे ॥
ताहीकेहेतलईकरभीखदईतजफूलनकीनवलासी ।
बोलकह्योअबवीरतपोधनलैजबलोंनहिंरामविलासी ॥
आयगयोढिगहीकपटीजियजानहुफूलकनेरपलासी ।
ढीटमिटीपगसोंजबहींतबराहुग्रस्योमनोचन्द्रकलासी ॥
किधौंढीटकटीकिधौंआयुदशाननकेशिवबोलजँजीरछुटी
कविरामकहेकिधौंराघवतेसुखकेसरकीजनुपालफुटी ॥
किधौंदेवनकीदुखफांसहुतीसियकेपगलागतएकतुटी ।
मनोरावणराहुमयंककलाकटपूरणमोपरबांझपटी ॥

इति श्रीरामगीतेसीताहरणनामचतुर्थोऽकः ॥४॥

पञ्चमांकः ५

कवित्त—हाथगहिलीनोनाजभीखको ज्युडारदीनो,ऐ सोकामकीनोजैसाकोऊनकरतहै । हायरघुवीररणधीर परपीरहरआजतोविरहमूंड़भूमिमेंपरतहै ॥ हायलछम नमेरेढिगतेक्यों गयोहाइहाइकरजानकीपुकारज्योंजर तहै ॥ ढीठतेबिछोरीरामछोडोमृगबातथोरीयोगियाअ घोरीमोहिंझोरीमेंधरतहै ॥ १ ॥ हासुरेशहाविरंचिछै मुखशशीगणेशजानतदिनेशहूकोवोरोकछुपोतहै । सां चकह्योजानकीसुकाहे कोछुडावेदेवरामकविकामआज उनहींकोहोतहै ॥ लैउड्योलंकेशतजतापसीकोवेषभु जबीसदशशीशकरवोरोकुलगोतहै । विदाभयोभागएमं दोदरीसुहागकह्योरामरामराजअवतेरोनउदोतहै ॥ २ ॥

दोहा ।

इहविधिसियरावणहरी, रामहरेमृगप्रान ॥
बहुतसुखीअतिइकदुखी, कथाआनकीआन

सोरठा—योंजानतसबकोय, यहमगतजसुरमगगह्यो ॥
जनकसुतानहिंहोय, मनहुँमचिलैनभउडी

सवैया—उतमारकुरंगहिरामचलेवनतेघरकोसँगवीरलए।
इतरावणआनकुरंगकियाघरीचारभईसियचोरीगए ॥
सोइदूरहतेनहिंडीठपरीजहैजोवतहीमननैनदए ।
तहँआइरहेपछताइदोऊजहरेखकटीपगसोंहरए ॥ ५ ॥

कवित्त–जानकी नपाईरोइउठेरघुराईकहिवीरहिसु
नाईआईबातप्राणअंतकी । खायकैतवारसुकुमारकहेबा
रबारफूलीबेलकोऊगजलैगयोवसंतकी ॥ देखवनहारप
रेकोसकपुकारफिरेमानोमणिगईफणिवासुकिअनंतकी।
देखोतीनओरधामपाछेलोलउठेरामचौथीओरदेखीभावे
देहसियकंतकी ॥ ६ ॥ वेणीशेषनागमुखरोहिणीसुहा
गदोऊलोचनकुरंगभौंहभृंगदुखदेगए । कोकिलासेबैनच
लेवालगजराजमृगराजकटिआजकरकंजनमेरेगए ॥ क
दलीसेजंघअंगज्योतिकोअनंगहंसपाइनकोपाइमेरेपाछे
करजेगए । कहेरघुराईछविजानकीचुराईसोईजानकी
कोमारभाईतेईबारलेगए ॥ ७ ॥ व्हैगएनिराशआशगई
सिंधुपारतजपातकेअवासदुखसुनोदोऊवीरके । चकवा
चकोरनकुरंगसिंहमोरनकेबूझे सियशोधबूझेरूखपंखती
रके ॥ छूवेंजलजातजलजातन्हातनीरगातलागेवातजै
सेतारेरेतकणनीरके। लोचनचुचातनाहींसुधानअधरमा
हींअंगनाविहीनऐसेअंगरघुवीरके ॥ ८ ॥

स०-घासिलायलगायनचंदनकोतरुतेनछुडायफणीमनको।
अरुवीरउसीरहुदूरकरोनबुझेदुखपावककोकनको ॥
नलनीदलपातसोंबाताकिएउतपातबडोप्रभुजीवनको ।
सुनआगवढीउपजीनबुझेतृणदारुदेफूंकसमीरनको ९॥
श्रीरघुवीरअधीरतियाविननीरभरेअँजुरीअसरोवे ।

वीरदईबहुभांतिसोंधीरनपीरघटेपुरनीतनुजोवे ॥
कैपहलेडरजानवियोगसुहैकुचबीचनहारसमोवे ।
क्योंअबपारसिया विनश्रीपतिवारसियापतिश्रीविनसोवे
अविवेकसुरामकियोनअवासतजेवनवासविदासुलिया ।
जिनकेनिशिवासरकेमिलिबेहितराख्योहुतोबिनहाराहिया।
इहभांतिवियोगदियोविधिआयसुवारसियापतिपारसिया
तजिसंपतदंपतएकहिवेरविवेकविदारघुनाथकिया।११
व्याकुलडोलतहैंवनवीथिनबूझतलोगनरामसँदेसो ।
चंपकचंदनतालतमालनव्यालनसोंगिरिबूझतजैसो ॥
कुंजरकंजकदंबकुरंगनभृंगनकोकिलकुंडभरेसो ।
जानकीहाथनलागतरामकेहाथसोंहाथमरोरतकेसो १२
कवित्त—देखमृगकहेमृगनैनी सियाकहांचन्द्रमुखीचन्द्र
देखकहेमानोमतिबावरी।गाढेवनगौनकरधूपछाँहपौनपूं
छिधाइधाइबूझेंगिरिकूपसरबावरी॥सदाशीलवंतहैअनंत
भगवंतमनकीनोहैकुरंगदुखकेहरिकीबावरी । कैतोवह
राजको समाजरघुराजतबवैसीवाउहुतीअबऐसीभईबा
वरी ॥ १३ ॥ एहोलछमनतोहिंबूझतहोंबारबारदेखसी
यगईकैसीबातभईजानकी । आहटनपायोपगखोजन
चलायोहसमारीभूलगएअबकोमिलावेजानकी ॥ कौनै
हरलीनीमारडारीकहाकीनीकाहूबातऐसीकीनीहैअजा
नकीकेजानकी ॥ कासोंदुखकहोंगहोंकौनकीशरण

आजभलोहैमरणबातजीअतेनजानकी ॥ १४ ॥
विरहीविहालमनजनकसुताकेदुखतनुकोननींदपरेजागे
चारोंयामके । भोजनविसारजीयजप्योकरेनामसीयडा
ररहेदेहमानोदुखीबड़ेघामके ॥ जाहिनिजकातकोऊरू
खपातजातजरबातकहेकौनऐसेहाथलागेकामके । देख
तबटाऊआयरोवतरुखाऊतहां जरेघासझाऊजहांपरेपाँ
यरामके ॥ १५ ॥

स०-जबजानकीकोहरीकाननहेरगएसरतीरतृषाजलकी
कहिकंकणनेकभएदृगशीतलसंपतदेखरतोपलकी ॥
अलिकोशगएअथएदिननाथनईछवितौनबनीदलकी ।
मानोसांईवियोगपरेमुरझाईअलीमुखमैलेहलाहलकी १६
दीपविहीनपरेदुखसेजकुहूकनसीतघटाघनकारो ।
देहछुटेनहिंनींदजुटेनफुटेनिसईअसगाढअँधारो ॥
नारिवियोगतहांतमरूपकऐसेमेंडारतकामतिवारो ।
मूँदेइलोचनजानकीकोमुखदीसतमोहमयंकनजारो १७
सुरोवतनैननीरगयोघटऔरसमीरउसासनलेते ।
मासकुमासनमासकतेसबतेजगयोतियकेबिछुरेते ॥
जानकीनामपुकारतआरतबोलबकेसुनएनकहेते ।
सोरघुवीरहियोसुनवीरबढोभ्रमकेभयोवज्रहियेते ॥१८॥
कंचनकोमृगवेदपुराणलिख्योनकहूंनाविरंचिसवाँऱ्यो ।
ताहीकेहेतचल्योतजनारिसुमैंमतिहीनकछूनविचाऱ्यो

याहीतेकैकयीमायकरीसबनीतिसुहैघरतेबनडाऱ्यो ।
राजकेलायककैहैनमहाजड्यौंकहकेरघुनाथपुकाऱ्यो।१९

दोहा ।

मोहनतापनवशकरन, उन्मादनउच्चाट ॥
पांचबाणमन्मथनके,विरहिनतनुगएकाट ॥

स०-कामचलाइदएशरपांचसुपंखनलोतनुमाहिंगडेरे ।
तेजानकिकेविरहागनमेंजरेमोमनसोंसबआयुधतेरे ।
हैविपरीतभईविनबाणनरेविरहाअबजाहिनफेरे ।
औरसुखीजगहोइबडोजसमूढमनोजदुखीइकबेरे ॥२१॥

कवित्त-जानकीविरहआगचहूंओरउठीजागकहां जाऊंभागजीयबडीदुचिताईहै । तापरसुरतिऔरफूंक निरवारेकौनपाऊंनसँदेशजलयहैकठिनाईहै ॥ देहजरी जातअबजीवतहूंकोऊवरीएतेपरबानसीकमानतेचढाई है । कह्योरघुराईदुखदाईरतिराईकूरमारेपरमारिबोनशूर कीबडाईहै ॥ २२ ॥

स०-जादिनसिंधुमथ्योनिकस्योशठतादिनशोकघरीकहकोहीं।
राहुगिल्योउगल्योफिरबादकलंकसँभारजरावतमोहीं ॥
आजकुबंडचढायकरोंशतखंडशशीछिनमेंअबतोहीं ।
हैनकछूवशरामकह्योजोतूजानकीकीमुखछांहनहोहीं ॥
चंदनसोंलपटायरहीअहिमालकीज्वालनिशंकदह्योहै ।
पौनप्रचंडबनीउरतेजबहैनिकस्योतबगैलगह्योहै ॥

चाटसुधाभ्रमताछिनदैविषवारभुजंगमदेशरह्योहै ।
वीरपटीरसमीरउसीरहिनीरहिशीतलकौनकह्योहै॥२४॥
दाहकरेनभमेंपजरेनटरेयशशोचकहीमुखदेखे ।
औरचकोरअँगारचुगेजियशीतलजानसुकौनकेलेखे ॥
मानहुँभौंरापियोनिशिकंजनबूडतहैजलयाहिपरेखे ।
नाउँसुधाकरलोककहेकविरामकहैतुमकौनकेपेखे२५॥
सिंधुमथ्योजड़तूनिकस्योबडवानलदाहकोदानपठायो॥
कैशिवकंठहलाहलहैतिनऐंचसुधासमआपबनायो ॥
श्रीरघुवीरकह्योसुनवीरतूबूझशशीकिधौंराहुडरायो ।
नाउँसुधाधरहैविषकोघरल्याइविरंचिकलंकलगायो २६

एबिललातफिरेंइहभांतसुहातनहींकछुखाननपानी ।
रावणकेसँगजातिचलीइतजानकीरामकहेबिलखानी ॥
सोवहनामसुन्योखगराजजटायुउठ्योजिथमेंथहआनी ।
मारफिरोंकिकरोंप्रभुकारजकैयशलेदेउँदेहपुरानी २७॥
सुनिदूरहितेदशकंधकहैयहकौनबलीहठठानतहै ।
हरिवाहनहैशिवकोसुतहैसुनहोइसुमोहिंपिछानतहै ॥
गिरिजागणहैकनकाचलहैविधिलौंबलकोजगजानतहै ।
अबमोहिंकछूसमझोनपरेभाइकाहेकोकालपलानतहै ॥
तौहीलेआइसुनाइकह्योधिगतोतनकोमनकोपागियाको॥
तापरमोहिंजरावतहै अहिआँखदिखायजरायदियाको॥
हौंगरुडासनरामकोसेवकरेछलकेकोऊलेततियाको ।

कैतजदेहकिरावसनेहकितूरणमाँडकिछाँडसियाको ॥
जौंलगरावणबातकहेफिरतौंलगक्रोधहिएनसमानो ।
तोरघुजारथकीपथमेंमुखचोंचसोंचोंथिभुजालपटानो ॥
जानतहौंदशशीशकहीयहचाहतमीचजटायुपुरानो ।
हैनभलीअतिजाहरहीपतिसिंहअजाकोजोखातलजानो॥
चोंचचपेटनरावणकेअँगपायनकेनखघायनभांडे ।
औरकहीमुखकीबहुतेसुनआजलवेसुखसंपतिठाडे ॥
हारपरेरहिडारदियोसुतोआयगिऱ्योरिपुकेलगखाडे ।
घावलगेरघुराजकेकाजजटायुकीआयुघटीरणमांडे ३१
ज्योंसीयहरदशकंधचलोमगगीधमिल्योसोहुसनमुखजूझ्यो
त्योंलंकपतीगहिबाणविषाधरऐंचकुबंडअरीपरटूट्यो ॥
युद्धमहायुगयामकऱ्योतबहारपऱ्योकहिरामसऊब्यो ।
लच्छकघावलगेपरतच्छकपच्छगएपरपच्छनछूट्यो ३२
रावलईनदशाननतेसियमेंजियतेसबपौरखकीनो ।
औरनसंगगयोघरलौंफिरशोधकह्योनबडोयशलीनो ॥
औररहीसबरामकोरूपनिहारननैननकोसुखदीनो ।
भागविहीनजटायुकीदेहछुटेनछुटेमनकोदुखदीनो ३३
श्रीरघुवीरअधीरकीप्रीतिविचारतहीवनशोधतआए ।
नीरभरेदृगजानकीकेदुखऔरविहंगनिहारबहाए ॥
बूझरहेनकहेमुखतेकछुनैननकीसैननहीसमुझाए ।
मूंड़धुनेनभओरचितैनिजदेहकेघाउजटायुदिखाए ३४

दोहा।

तबरघुपतिखगपतिहिको, बोलेमनधरशोक।
स्वामिधर्मयशलेचले, रणजूझेपरलोक ३५

सोरठा–अबदीजेइकबात, मांगततुमपैजोरकर।
सुरपति पुरहैतात, तिन्हैहरणसियजिनकहो॥ ३६ ॥

स०–गीधचलेयशलोकसवारअबैपरलोकधरोईरहेगो॥
व्हैरहियोचुपकेतबलोंपितुबातसुनेदुखदेहदहेगो॥
जौंलगजूझकुटुंबसमेतउश्वासनतेशिवलोकगहेगो।
सीयकोल्यावनरावणकेवधहूविनबातलजातकहेगो ३७

शुचिदाहजटायुकोदेदोऊवीरधँसेवनमोमनशोकभरे।
सियकेबिछुरेमनकेसुखजोसबसूखगएदुखहोतहरे॥
जहँरीछलँगूरबडेकपिहैंगिरकंदरअंदरजाइपरे।
तहँफूलकेबागमेंभागभरेअनुरागरँगेहनुमानखरे॥।३८।

कवित्त–देहधरेमानोरातिकंतसंगलेवसंत डोलतअकेलेबलजैयेऐसीचालके। किधौंएईपूरणअनंतकविरामकहेकिधौंराजहंसछुटेमानसरतालके॥ तापसीकोवेषकियेरामरूपवंतकिधौंमुक्तिफलदोऊटूटे पुण्यतरुडालके। दूरहीतेदेखकह्योअंजनीकेपूतकिसुपूतकहूंराजाकेकिकालबलिबालके॥ ३९॥ लछमनसंगबूझेकमलकदंबकहूंदेखीसियकामितरुकुलीहुकनककी। चंद्रमुखीपिकबैनीसुन्दरकुरंगनैनीकदलीसीजंघकटीकेहरतनककी

श्रीफलउरोजहैमनोजतियवारोंछविदेहअहिकेशभौंहउ
पमाधनुककी । केतकीचँवेलीरायवेलहैइकेलीकोऊ
संगनसहेलीदेखीजानकीजनककी ॥ ४० ॥ वनकेकुरं
गतैंमहाकुरंगकीनोअबकहां सुखदैनीसियकाहूशोधला
इदै । कहेपिकबैनकहूंपिकबैनीहूकीसुधकंजमुखीखंजरी
टनैनकोबताइदै ॥ एहोराजहंसहंसगमनीगमनकीनोपौ
नअंगवासनेकइतहूपठाइदै । चंपकवरणकहूंदेखीसुनी
चंपककदंववनआजअवजानकीदिखाइदै ॥ ४१ ॥

दोहा ।

देखबनेइहविधिदुखी, मतिगतितजमनज्ञान
विकलवचनसुनरामको, बोलेश्रीहनुमान ॥

सोरठा—कितकदिवसइहवेष, कौनवंशप्रकटेदोऊ ।
कैतुम वरणसुरेश, नारिवियोगीवनाफिरो ॥ ४३ ॥

स०—सूरजतेरघुवंशकहेजगताकुलमोपुरऔधरहाहीं ।
रामहैनामापितापठए वन राजधरोलघुवीरकीबाहीं ॥
काननमेतियसंगहुतीसुहरीकिनहूहमयोंबिलखाहीं ।
बातहुतीसोकहीतुमसोंअरु मोहिंकछूकरहीसुधनाहीं ॥

कवित्त—पाछेलछमनकही बातसमुझायसबएईराम
शिवसनकादिमिलगाएहैं । एईरघुनाथतीनोलोकनके
नाथकापिक्षीरनिधिपाचेविधितातेक्षिति आएहैं ॥ शूर
नकेशूरएऊ पूरणहैंरामचंद्रमारेअंधकारअरिकंदर पठा

एहैं । तारकानिपाती खरदूषणकेघाती अबरावणकी
छातीकोचरणचपलाएहैं ॥ ४५ ॥

स०-हमतोअपनीसबबातकहीतुमसोंतुमहूहमसोंनकहो ।
कपिक्योंसकुचातडरातसेहोकिहकारणतेइहभांतिरहो
मेरोनामहनूकपिराजसुग्रीवहिआनमिलाउँजोबांहगहो ।
निजवीरछिनायलईतियराजगरीबनिवाजहोलाजबहो ४६

देखतश्रीरघुवीरकोरूपवनीकछुप्रीतिहनूजियऐसी ।
पंकजभौंरनज्योंघरमोरनचंदचकोरनहूनहिंवैसी ॥
कामवसंतहिभूमिअनंतहिकंतहिनारिपतिव्रततैसी ॥
पांयँगहेउरघुराइकेधाइ उठाइकेअंगभेराविधिजैसी ४७॥

आपमिलेभलिभांतिहनूपुनि रामहिआनसुग्रीवमिलाए
नारिवियोग बढोदुहुँओरकहेसुनकेबहुतैपछिताए ॥
बालिकीमीचकहीरघुवीराहिछेदनकोतरुसातबताए ।
भूलगयोअपनोदुखताछिनबानरकेदुखनैनबहाए॥४८॥

श्रीरघुवीरकह्योसबसोंहमसीयकोशोधकहूंनाहिंपायो ।
ढूंढफिरेगिरिकाननबाहरतादुखभोजनहूं बिसरायो ॥
सुगीधजटायुकहीविनवैननसैननसोंनभओरबतायो ।
योंसुनिकैहनुमानउठ्योकरजोरदोऊशिरनाइसुनायो ॥

एकनईनिधिवारकेवारबडीसुकुमारउसासदुखारी ।
संगनिशाचरकेअँग यों मुखराहुमनोशशिकीउजियारी॥
भूषणडारतरामपुकारत आरतमांगविदारतभारी ।
एवतियांसुनिकैकपिकीरघुनाथकहीवहनारिहमारी ५०

कंकणकुंडलठीकसुवेसरकंठसिरीमणिकंचनिभीने ।
औदुलरीशिरफूलवराकटिकंकणनूपुरझाँझनवीने ॥
पाइलडारिउताइलसोंकछुजेहनुमानसक्योतबवीने ।
भूतलडारिचलीसियजेमहिभूषणकोतइभूषणदीने ८१॥
देखिविषादकियोरघुवीर लगायलियेछतियांपछिताहीं ।
वारिभरेदृगयोंछविहैजनुमीनसरोवरमेंझलकाहीं ॥
जानकीअंगनतेबिछुरेमनोमूकभएकहियोंबिलखाहीं ।
वीरविचारकहोतुमहूँसियकेएइभूषणहोहिंकिनाहीं ।८२

कवित्त—जानकीकोमुखनविलोक्यो तातेकुंडलनजानतहोंवीरपाँयछुवोरघुराइके । हाथजोनिहारेनैनफूटियोहमारेतातेकंकणनदेखेबोलकहोसतभाइके ॥ पांयपरवेकोजातोदासलछमनानित्ययातेपहँचानतहोंभूषणजेपाइके । बिछुवाहैंएईऔरझांझनहैंएईयुगनूपुरहैंतेईरामजानतजराइके ॥ ८३ ॥

दोहा ।

नारिविरहदोऊदुखी, उतकपिइतरघुवीर ॥
बिनउपायदुखक्योंटरे, अरिमारनरणधीर ।

सो०—भूतलबालपछार, सप्ततालभेदनकरहुं ।
कपिपातिमिलवोनार, हनूमानसांचीकहो ॥ ८८ ॥

कवित्त-दीनेदुखभारेएहबालमारडारेसबअतिहीसँहारेहाथलागेऋषिशापके । राजछीनलीनोविननारिकपिर

जकीनोचामकेचलायेदामविनातोलनापके ।सोईकाम कीजेताहिमारिसुखदीजेयशलीजेबलजैयेअबचरणप्रता पके। आवतभरोसोप्रभुकहापैयेतोसों हनुमानकहेजा नतहोंबीतेदिनपापके ॥५६॥ पीछेसियशोधकोपठैयेह नुमंतनलनीलजामवंतबोलकीनोनछदमको । यहजो सुग्रीवढिगपाइनके ठाढ़ोरामराजाहैयोबानरअठारहु पदमको ॥ एकबिनवालीयाकोजीतेनकपाली यहअंश अंशुमालीकोदलैयाइंद्रयमको ।सोईमारलीजे याकोरा जयाहिदीजेआजरावरेभरोसोताकोकरोएकदमको ॥ ॥५७॥ व्हैगएकृपालुसुनेवचनरसालचलेसातताल भे दनसुग्रीवहिलिवायके । कपिहूविचारीकपिमारल्याऊँ नारीकिधौंजूझमरोंरामआगेघनेघावखायके ॥ कह्योर घुवीरतुमदोऊकपिएकरूपकैसे पहिचानोंताकोकैसेमा रोंधायके । टीकोकीनोभालगलेडालफूलमालकह्यो जोतअरिपौढ़ियोसुपलँगाबिछायके ॥५८॥ कहीलछम नतालसातनकीसुनवीरधोखोकछुनाहीं रघुवीरजूकेब लमें । एकहीजोबाणएकैवारसातोंतरुवेधैनेकचूकगएते ईमारेताहिपलमें । राममुसकानेसमाचारमैनजाने अब वचनबिकानेजगजीवोईसहलमें । तीरकाढ़तवहींधनुष मुखदीनोंतहांजायानिजबानेचालपरीबालिदलमें ॥५९॥ स०-जोऋषिराजकेपांयँनसोंमनपंकजभौंरकीरीतिबसायो

सीयविनास्वपनेपरनारिहिजोअपनोमुखमैंनदिखायो ॥
औरसहीभृगुनंदनकोफिरजोनहिंरोषकोबोलसुनायो ।
तौयहबाणपतालधँसेइनतालनभेदसुखैंचचलायो ६०॥

कवित्त–सातोंसिंधुसातोंलोकसातोंऋषिहैंसशोकसा
तोंरविघोरेथोरेदेखेनडरातमैं। सातोंद्वीपसातोंईतकाप्यों
ईकरतऔरसातोंमतरामदिनआनहैनगातमैं ॥ सातोंचि
रजीववरराइउठेबारबारसातोंसुरहाइहाइहोतदिनरातमैं।
सातहूंपतालकालशबदकरालराममेदसाततालचालप
रीसातसातमैं ॥ ६१ ॥ फूलेकपिरायउरआनँदनसमा
यरघुराइपायछुवेकरजोरशिरनायोहै। बोल्योहनूमानए
ईबालीकेनिदानकालजानतसुग्रीवराजआजहीतेपायोहै
चौंक्योउतबालीअंशुमालीकीकपालीकोऊतोकपालीभू
मिरणदेखबेकोआयोहै । दूतकहीबातजटामूंडछारगा
तऐसेवीरयुगसंगजोरवीरहाजनायोहै ॥ ६२ ॥

स०–तालभिदेमनचालपरी अबजानतकालकीबातनजीकी ।
औराजितेभटझुंडघनेसबकेमुखकीछविदेखतफीकी ॥
भेंटचल्योसुतभौनभँडारहि देखतहीभुजसीयपतीकी ।
बालकहैंअबकेरणमेंअपनीकछुबातनदेखतनीकी ६३॥
आनगह्योनिजवीरबलीरिसजाहुकहांअबतोहिंपछारों ।
तूउनकेबलकूदतहैएईआइलरेइनतेनहिंहारों ॥
वीरजुरेरघुवीरकहीअबमारसुग्रीवहांतोहिंपचारों ।

हीनभयोबलबोलउठ्योअबहैदुहुँभांतिनरामसँभारों ।
दूरहुतेदोउवीरनकोरणदेखतवीरसुग्रीवकीदारा ॥
श्रीरघुवीरकोसाथनिहारकैवारतकंकणकुंडलहारा ॥
आजहितेपतिसेरतिहैइततेउतफूलतडोलततारा ।
जोसखिबालिकीजीतसुनो निजप्राणकरौंजैसेआगकोपारा ६५

कवित्त—वीरननिकारदीनोमोहिंछीनलीनो इननीत रीतछाँडसबकरीजोअनीतहै । मूँडतेविसाररामतपेजै सेजेठधामकीनोअभिमानवेदबूढेऐसीबीतहै ॥ तोरहीध रमबातबडोउत्पातआजपापी बालीजीतसखीबडीविप रीतहै । देखोहायहायरघुरायसेसहायपतिआजजोनजी तहैतौकबहूँनजीतहै ॥ ६६ ॥

स०-तौलगश्रीरघुवीरसुग्रीवकोपच्छकरोप्रतिपच्छसँहारो
जोछतियांचढकूदतहोसोइएकहिबाणधरापरडारो ॥
पौनचलेजोप्रचंडबडोकदलीतरुमूलसमूलउखारो ।
जीतउताइलसोंएकबानरएकपरोरणघायलहारो ॥६७॥

सो०-इहविधिजीतसुग्रीव, रघुपतिचरणप्रतापते ॥
कटीपरमदुखसींव, रामराजवशसुखलह्यो ॥ ६८ ॥
कपिपतिकामसँवार, बालीअधमुसकतपर्‌यो ॥
तबंताहीकीनार, रघुपतिसोंविनतीकरे ॥ ६९ ॥

स०-बालिबडोबलवंतबुलाइल्योमारकरीमुकताफललेई ।
मासकेकाजमवासमृगावलिवेरहनीमृगमारतजेई ॥

केहरिकोहततोलभुजाबलराजअनीतबढीअबएई ।
बानरवृद्धतिहीगिनतीविनतीकरेबालिकीबालसनेई।७०
योंयहकामहुतोसुनराघवचाहहुतोतुमरावणमार्‍यो।
आगेहिक्योंनकहीसमुझायतैंबालिसोंबानरबादविदार्‍यो।
देखलियोनभुजाबलनाहकोनेकबलीतुमहूंनपछार्‍यो ।
ताहिकेजीतबेकोहनुबालकऔरसुग्रीवसोंभीरविचार्‍यो

कवित्त—जानकीको लाइप्रभुपायनमिलायलंकराय सोंतिहारोहेतनेकहूनतोरतो। आपुननजातोसिंहस्यारसोंननातोजैसेबातसुनेतुम्हेंभेंटभेंटदैनिहोरतो ॥ और जोतिहारजीयमारबेकीहुतीरिसएकहाथदेमूंजलनिधि माहिंबोरतो ॥ वंशअंशुमालीरामप्रीतिक्योंनपाळी नाहबालीताकेमारबेकोसेनाहूनजोरतो ॥ ७२ ॥

दारिदउडायबेकोपारसप्रगटजैसेपारदकेमारबेकोसिद्ध बडीबांहके । जैसेअहिराजनकोआजखगराजग जराजकोकुरंगराजवैररविछांहके ॥ सिंधुकेकसूतजैसोघटपूततैसोहुताकैसेसमुझाऊंलेतरोमरोमहांहके। करोंनबडाईरामरावरीदुहाइतैसेरावणकेमारबेकोहाथहुतेनांहके ॥ ७३ ॥ नारकेछिनाएनारनेकननिवाईनाथइनकीनाहींखिसीकोदेशराेइअतहै । भाजभाज गयोरणसामुहेनभयोमानोलाजबेंचखाईअरुजीबोजोइ अतहै ॥ तुमजबपाएतबहींचढायल्याएरामन्याव

नेककीजेवीर यो विगोइयतहै । भलीनतुम्हारीबातए
ककहोंसौकीबुरीभैयाहूसोंजोकीताकीचौकीसोइयतहै॥
स०-काहेकोछांड़दियोतवरावणरेपतिक्योंतवहींनविचाऱ्यो
नाथफिऱ्योलियेसातसमुद्रनभूलगयोघरआइसँभाऱ्यो॥
अंगदकेपलनाझुलकापरबांधकईदिनलातनमाऱ्यो ।
ताहिकेहेतभलेरघुवीरविनाअपराधहिबालिसँहाऱ्यो ॥
जीवतहैजगमेंयशसोबलसोपतिपौरुषपूररह्योहै ।
हारभईनकहूंरणमेंभाजिकेनहिंऔरकोसंगगह्योहै ।
नारनवंधकरीकबहूँगिरिकाननराजसदानिबह्योहै ।
जोविधिएसुखतोहिंदएतैसेरामकेहाथसेकालकऱ्योहै ॥
सोइजीवतहैइहलोकसुवीरणजूझअबैसुरलोकगए ।
पतिदेहछुटेनरहेविधिलोंपुनलाभबडोतुमरामहए ॥
विपरीतबडीहमकोसुननाथकेपाँइनसंगनप्राणदए ।
अबअंगदपूतसमेतसुनांहकीछांहविनापरधीनभए ॥
सोरठा-अबहोंचल्योअकास, प्राणकह्योकपिरायसों ॥
छांड्योजसतुमपास, पुनितासोंखिजकपिकहै
स०-नारिछिनाइदियोदुखमोहिंतुवानरक्योंतबहींनाविचाऱ्यो ।
बालिसोंप्राणचल्योकहवातमिलोनहिंरामाहिहौंनउवाऱ्यो ।
जाहुनहींसुहिंऔरबडेदुखदेखहुराघवन्यावसँभाऱ्यो ।
वीरहुतोहनुमानहुतेनलनीलहुते घटमोहिंनिहाऱ्यो ॥
बालिसँहारबलीअसुरारिछुडाइलेनारिदईकपिराजै ॥

आनसबैभटपाँइपरेतिनमध्यासिंहासनरामविराजै ॥
अंगदकोफिरथापतहींवनराजदियोभरनैननलाजै ।
वैरछुडायमिलायसुग्रीवहिबोलउठेरघुवीरसदाजै॥८०॥
औधकहांनिजदेशनरेशकहांप्रभुकोवनवासपठावे ।
क्योंदशशीशहरेसियकोकैकंचनकोमृगह्वैमुनिधावे ॥
क्योंसुतपौनसोंप्रीतबनेरघुवीरकेपांइसुग्रीवमिलावे ।
बालिमरेकपिराजकरेअसरामविनाविधिकौनबनावे ॥
इतरामसुग्रीवसमीरकेपूतहिमोदबढ्योनितनेहनयो ।
उतलेपहुँच्योसियकोदशकंधधँस्योगढलंकनिशंकभयो ॥
ऋषिगौतमकोपकरोपहलेतिनरावणकोइकशापदयो।
बलसोंपरनारिभजेजबहींतनुछारउठेकहकेसुगयो ॥
सोइताडरतेडरपेजियमेंनसकेछुइसौबलसोंकबहीं ।
जबकामकोभावधरेमनमेंतबअंगजरेतृणज्योंतबहीं ॥
सियरामविनाशिवशक्रनपूजतसोजगजानतहैसबहीं ।
जैसेगंगचलीधँसपूरबकोफिरपश्चिमकोनबहीकबहीं ॥
राजसमाजदिखायसबैसियरावणकोबहुभांतिनिहोरी ।
भूषणभौनभँडारनलोंपरपाहिरहोतिनडीठनजोरी ॥
जोअपनेपियरूपरचीकविरामातिन्हैरविकीछविथोरी ।
छाँडशशीकबहूँनहँसीकुमुदीसरसीपरसीनचकोरी ॥

कवित्त—सूरहूनहेरीऐसीरानीसबमेरी सुनतेतोतेरीचेरीसबआजहीकरतहों । देवनकीबेटीपटरूपहूंलपेटी

रतिलेटीजिनेदेखमाचेतिनकेधरतहों ॥ जानकीसयानी तेतोमहमानजानीकछुआपनीबिरानीतातेअधिकैडरत हों । ईशशीशचढेपुनिलैअशीशबढेदेखतेईदशशीशन सोंपांइनपरतहों ॥ ८५ ॥ जैसेअंधरूपाबिनुगांठधनजूप कीज्योंहीनगुणआशहैनकूपजलपानकी । मूकजैसेगान बिनहाथ चापबाणबिनकानबहरेकोआशहैनरागतान की ॥ चातकज्योंकातककेमेघतेनिराशहोतयाचकत जतआशकृपणकेदानकी ॥ कौलोंसमुझाऊंतोहिंकहां लोंबताऊंऐसीछांडरामआशराजाजनककीजानकी ८६

स०—तूगढलंकबसीसुनजानकीजाहिनिशंकहूदेवनदेखै ।
मोडरतेडरपैसुरराजनसोवतनैनलगायानिमेषै ॥
सूरशशीयमऔरसमीरनपीवतनीरविनापगपेखै ।
सेवतपौरसबैजबएतबरामकहोतपसीकिहलेखै ॥ ८७ ॥
अंगअनंगगहेसुगहेअरुपाश्चिमगंगवहीजियआवे ।
शीतलआगकहेकोउसांचगहेमृगगोदलेसिंहखिलावे ॥
मेरुचलेध्रुवसोंसुनसुन्दरिऔरवसंतसमीरजरावे ।
होयबडीविपरीतसबैपरसीतहिरामनदेखनपावे ॥ ८८ ॥
सोफिरउत्तरदेतननेकदशाननकोअतिशोचभयो ।
मनमेंकहिभयबिनप्रीतनहींवनमेंकहआयसुकोपदयो ॥
तहँराक्षसनारअपावनताडरपावनकोतिहसंगगयो ।
सोअशोकवनीमहिलंकधनीसियमानहुशोककोबीजबयो

दांतनकाढब्बुरीसबभांतिडरावनकोकियोएकमतोरी ।
याहिचबाउबिलंबकहाइनलंकपतीसँगडीठनजोरी ॥
एवतियांसुनकेदरकेछतियांपछतातकहेदृगढोरी ।
रैनदिनापियरामविनाजियसांचाकियोसियकोसबथोरी ॥
होंजीतसुरेशमहेशकोपूतगणेशकोदंतउपारलियो ।
यमकोवशकैपुनिवाहनकोजिनतोरबखानकुवंडकियो ॥
दशमूडनलैजिनदानदियोशिवलौंछिनमाहिंरिझायलियो
सोइरावणपाँइरह्योगहिकेनउठायदुहूंकरमानदियो ॥९१
सोडरपायरहींबहुभांतिनऔरविभूतिदिखायरहीं ।
जियमेंसबजानतयोठकुरायतदीपशशीजसहोतरहीं ॥
यहपूरबपश्चिमउत्तरयोंदिशिदक्षिणबातसुनीसबहीं ।
रविरामविनाकहुँएकछिनानलिनीसियफूलतहैकबहीं ॥
नाहविनासियजोदुखपावतसोपुनिसीयविनादुखपावे ।
हेतुबडोदुहुँओरनयोसोइनेहतुम्हेकविरामसुनावे ॥
ज्योंछविछीनशशीविनरैनाविभावरीसांवरीदेहवनावे ।
कालवितीतभयोइहरीतसुकोयसुग्रीवहिरामसुनावे ९३
सोरठा–संतसुनोमनलाइ, कथाजुकछुआगेभई ॥
परसरामकेपाइ, हनूमानलंकागयो ॥ ९४ ॥

इति श्रीरामगीतेवालिवधोनामपंचमांकः ॥५॥

षष्ठांकः ६

कवित्त—दूतदौरजाइसमझाइलै लिवाइआइकालइत बीत्योअबआगेकोउपाइको। राजतुम्हैंपायोबालिस्वरग पठायोतुम्हैबातभूलगईसुधसीताजीकेजाइको । आप नहींआयोकोऊउत्तरपठायो नहीं लायोहैविलंबबोलकी जोसतभाइको । सोएसुखयामिनीमिलेजोघनदामनीहो कामनीकोपायकामभूलोरघुराइको ॥ १ ॥

स०-बातसुनेकपिराइरहेचकराजसमाजलियेसँगआयो। देखतहीमुसकायदियोप्रभुदौरकेपाँयनशीशझुकायो ॥ संगलियेनलनीलहनूकपिकोटकनकोटकझुंडमिलायो। छांडविलंबकह्योअबहासियशोधजटायुकहांहैबतायो २ तबश्रीरघुवीरकहीभुजदंडउठायअखंडलज्योंबलसे । तुमहौबलबंडप्रचंडमहाकपिकोजुनिशंककहैलंकधँसे रणमंडघमंडनपैडकरेसुखपैजबसारकीधारलसे । कपिराजकहीसोइएकहनूजोकृपाकरयातनरामहँसे ॥३

कवित्त—हनुप्रभुसेवकननूतनहैनाथयहअंजनीकोपूतपैसुपूतमनपूतकी। चढेरणरोषपकेतूतसेगिरावेअरि एकबारबागजाइगहेपुरुहूतकी । परेदुखपारकरेवीरन केकाम रघुरायकेसहायकरवेकोबडोकूतकी॥सीताशो धलाइवेकोसिंधुफांदजाइवेकोपायकसोंरामयहलायकहै दूतकी ॥ ४ ॥ औरकहूंओरकोपठाऊंकपियूथसियशो

धकोमँगाऊंतबकंठपानीधँसिहै । कौनमंदभागीसुनरा
मकामैबैठरहेआपनेहीहाथकटिआपनीहुकसिहै ॥कह्यो
रघुबीरसबवीरसुतोतेरेहाथतेरेईभरोसेमोचरावणकोग्र
सिहै । लंकगढजैबेकोनिशंककलंकबांधअकलंकबलि
जाकोहनूमानएकबासिहै ॥ ५ ॥ एककपिपूरवपछा
हँएकसिंधुमाहँउत्तरकीछांहँएकपठएविचारके॥ तेऊतो
नवायशीशचलेजगदीशजूकोबीसनकेझुंडएकएकलेप
चारके । दक्षिणभुजाकोठोंकदक्षिणसमीरसुतदक्षिणके
जैबेकोजगायोकिलकारके । लंककसपूतअकलंकजान
कीकोशोधलंकधँसिआइदैनिशंकअरिमारके॥६॥
स०—देखहनूगढलंकविनातुहिसांचकहोगढऔरजुहोई।
ताकोवैऔरअनेकखरेकपिजाहिकहोकरकारजसोई ॥
राघवरावणमारबेकोसियशोधकोतूसुरचोविधिसोई ।
कूरकहोंनहिंरामहजूरहोंतोसमशूरनदेखतकोई ॥ ७ ॥
रामहिराज्यादियोहमकोअरुबालिकीबंदितेनारिछुडावै।
ऐसोएपीरसहेरघुवीरपैधीरबडोमुखतेनजनावै ॥
बादजनेजननीजगतेदुखमेंप्रभुमीतकेकामनआवै ।
औररह्योउपचारबनोसुनरामकेकामकोकौननधावै ।८।
जाक्षणसाहबकामकोसेवकजानतताक्षणकीबलजैये ।
[illegible]हभांतकीबातचहूंयुगतापररामसोठाकुरपैये ॥
न्याइहनूसबकामकरेभटलाखनमेंजबएकबुलैये ।

बातविचारकहैहँसिकेविनदामनताहिकेहाथबिकैये॥९।

कवित्त-रोमरोमफूलगयोठोंकभुजाठाढोभयोरामसु सकानरूपदेखहनूमानको । सीताजीकोशोधहमआज हीतेपायोमानोदेखतहोंडीलयाकोसिंधुफांदजानको ॥ जौलोंरघुवीरामिलवीरसोंविचारेतौलोंभयोकपिछैयासुछ वैयाआसमानको॥हाथजोरकहैलंकवारिधिकेपारअबकी जेनअबारदीजेआयसुनिदानको ॥ १० ॥ जोकहोतोरी तोसिंधुकरोंजसपियो मुनिऔरजोकहोतोबीचपानीरा खोंनामको। कहोजायलंकमारोंभीतनसोंभीतकहोराव णसमेतपरसाऊंपगवामको ॥ देखकेअनीतामेरोमरतन पीताजोईकहोसोईकरोंनाथनेकभरोहामको । सुनोमेरे मीतासुखसोइएअचींताकहोसीताशोधलाऊंकहोसीमि लाऊंरामको ॥ ११ ॥ खेदमारोखेदविनखेदजिनकरो नाथसीतालैकेसातहूपतालहूजोजायगो । छुवतातिहारे पांयकहोंलौंपरायमोतेतौकहबसाइआइशीशपगनाय गो ॥ कूपसुरलोकसिंधुअचलसुमेरुविधुरावणपरेवहनू वाजज्योंउडायगो ॥ नाइमाथकेहनाथकह्योताकेपाछे रघुनाथमेरेहाथकीसुभलीमारखायगो ॥ १२ ॥ कह्यो हनूमानताकोकहोपरमानप्रभुसुनियेश्रवणदेहोंतुमहिंब ताइयों । जरतोकमठभालसातोसिंधुआलबालदेशऔ विदेशडालचढकेनिवाइयों ॥ पातमेघसेतकारेफूलजे

अकासतारेभारेफलसूरशशितौऊतोझुकाइयों । हौंतो
शाखामृगमृगराजरघुराज ऐसेव्योमतरुतेतुम्हारीसीता
तुम्हेलाइयों ॥ १३ ॥ कहोसीयलाऊंकहोताहीकोसँदे
शकहोंरावणसमेतल्याऊंवेगसिखदीजिये । कहोताही
क्षुद्रकोकुटुंबलैसमुद्रबोरांलैआऊँमंदोदरीकोजानिये सु
कीजिये ॥ कहोदशशीशभुजबीसनबखेरोंआगेकहोजा
यघेरोंगढविनतीपतीजिये । रंकहनूमानकोनिशंकपा
नदीजेरामकहोतोउठायगढल्याऊंढूंढलीजिये ॥ १४ ॥
स० —देखहनूकपिरूपसियारघुवीरकहेजियमेंडरपैहै ।
मानसकीकहँटोटपरीजबदूतकियेकपिरीछलजैहै ॥
जुदेवनकोमगहैनजहांगढलंकहुमेंकेहिकोसमुझैहै ।
हैपरवीनतऊसियकोबिनचिह्नदियेपरतीतनऐहै ॥ १५ ॥
भूंखलगेवनकेफलतोरतयाहिभलेमुखमेंधरलीजो ।
एकनिदानकिएबिनहोकपिसीयविनापरतीतनकीजो ॥
एमनकेगुणगुंथतजेपहँचानतजानकीऔरनबीजो ।
कैवनमहँकैगिरानदुरीजहँहैसुंदारिसुंदारितहँदीजो ॥ १६
एककरोंविनतीतुमसोंसुनकेरघुनाथबुरोजिनमानो ।
एकफलंगकरोंतजशंकनिशंकसुलंकधँस्योमुहिंजानो ॥
हौंहनुमानअजाननहींप्रभुदेखनकोसबठौरसयानो ।
मंजुलवपदकंजकहोकिनहोंसियकोकिहिभाँतिपिछानो ॥ १७ ॥
साँचकहीइनबाततऊसियकीद्युतिहोंकिहिभाँतिसुनाऊं ।

जेउपमाकविदेतसबैतेईफेरकहौंतुझअंगलजाऊं ॥
हौंकपिढूंढरह्योजगमेंछविअंगनकीसमकोनहिंपाऊं ।
मोदुखतेजिहिभांतिसियासोइचन्हिहनूसबतोहिंबताऊं ॥ १८ ॥

कवित्त–जहां नहुलासतातेवासनअवासतहांनीके वीरवातसुनलीजियेनिदानकी । जाकेद्वारकाजरसोंमिलीपंकलंकमाहिंतहांदेखियेनिशंकवधूकुलमानकी ॥ जाकेनिशिघाममुखदीपहीकोदीप विनफूलअंगवासतहांरानीहनूमानकी । जहांमुखमूकरामरामहीकीकूकजहांसोवेसुखधूपवहांहैअचूकजानकी ॥ १९ ॥ जाकेबांधेकेशतनुतापसीको वेषसुनबानरनरेशदृगनीरउरधोवती । भूषणमलीनपियहीनसुखछीनजाकीह्वहैदशादीननिशिनींदहूनसोवती ॥ अंगनरुखाईफूलसेचनउसाईजाकीताकोजानलीजोनारिनींचेमुखजोवती । हनुसुनभीतसियपाइबेकीरीतलंकजाकीभांतभीतरामरामकहरोवती

स०-रावणपापकोजालरच्योविधितामहँपांउसंभारकेदीजो ।
बातविनामर्यादकरोजिनक्रोधकरेतुकरेसहलीजो ॥
देखफल्योनहिंदेखरह्योजिनअमृतज्योंयहअमृतपीजो ।
काहूलैशूलनिहालकरोमुहिंजाहिहनूअतिकालनकीजो॥
पालनएदोऊपानधरेशिरपायकछुवेरघुनंदनजूके ।
औरकरीविनतीबहुभांतिनदेहबडीप्रभुपायकनूके ॥
आपनजानधरेरहियोजियहांकपिसत्यकहौंतुहिकूके ।

नित्यकरेसुधचित्तकेसाथसुचित्तचल्योसँगमित्तहनूके ॥
तनछांडचल्योसुमहेशकोअंशगणेशमनाइचल्योदृढह्वै ।
भुजपीठकोठोंकनिहारहनूमुखलोचनचारचल्योजलह्वै॥
मुँदरीकरसोंपकहेमुखवैनसुदेहविनाकपिप्राणनह्वै ।
जबलोंममदेहउडेनहिंखेहतूआनदेशोधसियापगछ्वै ॥
वांधमुठीदोऊपाँइलगाइसुवीरवडोरघुवीरकृपाको ।
पूंछउठाइनिवाइदईकटिलोचनमूंदहिनीरहिताको ॥
रामकोनामलियेमुखतेजियमेंधरपौरुषतोहिंकृपाको ।
वारलगीवहिंपौनकेपूतहिपारभयोलँघवारिधिवाको ॥
रामकोकामकरोंजियतेइहतेशुभकौनसीऔरघरी ।
छविवारिधिवारदएकहिसोकविरामतहांतुवरीनतरी ॥
निधिनीरकेपारपऱ्योपलमेंपगकीअँगुरीजलमेंनपरी ।
कपिनाउहनूजिनकोतिनतेरघुवीरकेनाउकीनावकरी ॥
सिंधुकेफांदवेकोअमरापतिफणिपतिहूमनतोनहिंकीनो।
लैरतिनावलपौढरहेकविरामगुविंदहिअंतनलीनो ॥
सोहनुमानकछूनगिनेवलनावकह्योजोसुनोपुरतीनो ।
जानतहोंजुदईमुँदरीपढरामकछूजनठामनकीनो ॥

कवित्त-सिन्धुकेकरारनिजपौरुषसँभार किलका रघेसोउठ्योनभमंडलडरायोहै ॥ कमठकेभालपरफ णीफणिमालधरदेशदेशचालभूमिचालसोंजनायोहै ॥ महिमाअपारजाकेवलकोनपारडरराक्षसीकोमारपुररा

क्षसकेआयोहै । कीनीमनषंकनहींकंचनकी लंकयही व्हैनिशंकधर्योरूपवामसोंबनायोहै ॥ २७ ॥

स०—कंचनकोगढलंकभयोपुनिरामसोंवैरकलंकयहैहै । देखफिर्योसबकेघरभीतरसीताहिशोधकहूंनलहैहै ॥ जेरघुवीरकहेमुहिचिह्नसुएकनहींहनुमानकहैहै ॥ झारनमेंकिपहारनमेंकिधौंरावणकेगृहबीचरहैहै ॥२८॥

कवित्त—एकजीहपाईपुनिशारदासहाईनाहींरावण केनगरकीकैसेछविगाइये । फूलीफूलीडारतरुबैठेअलि मालअतिसुंदरकिलालतालपालसोंरिझाइये ॥ वापीकू पकुंडनमेंगुननकेझुंडबैठेकीनेदुखरुंडमुंडहोवतीजताइ ये । वारणतुरंगरथकंचनकेधामपरकौनसीविभूतिछाँड कौनसीबताइये ॥ २९ ॥ जाइपौंरजाइतहांकौतुकलुभा इतालआवजमृदंगबीनबाजतसुहावने।सूरशशीवरुणवि रिंचिसुरराजआजकौनइहलायकजुपावैयहांआवने॥औ रकछूरूपकरअंजनीको पूतजायपहुँच्योतहांलोंजहँखा सगीबिछावने । देवनकीबेटीदेखसंगतियालेटीजहांसी ताकेभरमहनूलागेपछतावने ॥ ३० ॥

स०—रामतजेकिहपापभजेगतिरूपनिहारभईदुचिताई कैतनुछाँडगईनभकोकिइहैसियहैकपियोंठहराई । देखमँदोदरिकीछविकोमुरझाइरह्योमनमोंफिरआई ॥ लंकपतीपर्यंकपर्योसोऊएकनअंककरेनढिठाई ॥३१॥

काहूकहीसियकीतहांबातकिआनअशोकवटीमहँराखी ।
देतवपीठकह्योधिगराजविभूतिसबैशशिसूरजसाखी ॥
हैयशरामकोदूधमनोयमकाढपरेयहरावणमाखी ।
फूलगयोसुनकेहनुमानभयोपगदेखनकोअभिलाखी ३२
श्रीरघुवीरकोशिशनवायगयोकपिरायजहांसुधपाई ।
चंपकमौलसिरीविटताललवंगलताकरनालसुहाई ॥
कंजकदंबजुहीकदलीसुरदाड़िमबेलिइलाअमराई ।
केतकीहारशृँगारगुलालसरोवरकूपमहासुखदाई॥३३॥
मोरचकोरकपोतकहूंशुभसारसचातकहंसलुभाने ।
खंजनचक्रझिलीवकबानरनीरकपिंजलऔरवखाने ॥
अंगकुरंगसदाधुनसोंसबसेवततावनकोलपटाने ।
एसुखजानकीरामविनाकविरामनसोवतजागतजाने ३४
तहँदेखहनूचितचौंकरह्योयहदेवनकेपतिकोवनहै ।
किधौंउज्वलनीलशिलागिरिहैकिधौंश्रावणकोउमड्योघनहै ॥
अहोक्योंनिजपावसकोयहरूपकिरामअमावसकोभनहै
अबमोहिंकछूसमझोनपरैकिइहैकमलापतिकोतनहै ३५
तावनमेंकपिपैठगयोविगस्योजबजानकीढूंढतपाई ।
रूखअशोकतरेमनशोकमनोइहतेउपजीदुचिताई ॥
नारनिवाइरहीयुगजंघखनैनखसोंपुहमीजियआई ।
रामवियोगकहेजनुसुन्दरबैठधराजननीदुखदाई ॥३६॥
झटताहिमहीरुहऊपरबैठसुकाढलईमुँदरीमुखते ।

सोइडारदईहरिएकहिबात।सियावचमातमहादुखते ॥
तबदेखविचारकियोचितचौंकाजियोताजियेअबयासुखते ।
सखिरामलिलापकीआशभईयहआनपरीकततेरुखते॥ ३७ ॥

कवित्त-प्राणनकेकाढवेकोकरकीकिंकरकीहैवैसे ईलगेहैंनगवैसेईहैसुन्दरी । बनकोनपथवनपथमहावन पथछाँडकैविनानीवनपातनकीगुंजरी ॥ प्रभुहैसुमुंदरी सुमुंदरीहैप्रभुआपकौनधौंपहारनमेंछाडआइतुंदरी । मे रेमनउत्तरीतूकैसेकरउतरीहैमुँदरीतू कैसे करउतरीसमुं दरी ॥ ३८ ॥ विनाकहेपौनकौनगौनयानगरबीचकौन आयसकेइहांराहपातनाथकी । जीयमेंनरहीभईनरही नकहाकरेविधिविरहीनकैकौविधिकेअकाथकी ॥ मकरं दइहैजियजानीभनसाथकीहैजाते कपिनाथबूझवेकोस नसाथकी । देखीनैनहाथकीनसुधपाईहाथकीसुरघुना थहाथकीनिशानीजबहाथकी ॥ ३९ ॥

स०-देखरहेचहुँओरनताहिसुकोऊनमानसदेतदिखाई।
शोचविचारकियेबहुभाँतिनरीमुँदरीनभतेउडआई ॥
तौहिंलौंबोलउठोकपियोंसुहिरामदईसुतुम्हेंपहुँचाई ।
दूतहनूमेरोनामहैमातपरोंपगजीनकरोदुचिताई॥४०॥

दोहा ।

तबजियमेंसियसुखकियोरामदूतयहआहि
मानसकीकहतोरही, मिलनकह्योहैताहि४१

सोरठा—बहुरोकियोविचार, प्राणनाथअतिचतुरहैं ।
कीनोकापिप्रतिहार, मानसकोराक्षसभखे ॥ ४२ ॥

कवित्त—दूजेभलीकरीमेरेजीकी शूलहरीप्रभुमानस जोहोतोतासोंकैसेमुखजोरती । रामदूतसुनेतेहीधरीमा रडारोहुतोताहीकोजिवायबेकोकौनकोनिहोरती ॥ ऐ सेकहपाछेमुँदरीकोछातीलायरही मानोमिलेप्राणनाथ नेकनविछोरती । कबहूँउघारेढापेनिधनीकेधनकीज्यों नैननकेनीरउरआंचरीनिचोरती ॥४३॥ बूझतहैताही सोंसँदेशोसियबारबारमेरेप्रभुप्राणनाथसुखसोंरहतहैं । लछमननीकेकहांछौडकहांकह्योतासोंमेरीसुधलेबेकोक बहूँउमहतहैं ॥ किधौंमेरेऔगुणविचारेहैंविसारदीनीकि धौंमेरेनामलैउसासनभरतहैं । बोलेहनुमानऐसेमुँदरीन कहेमाततेरेपाछेयासोंरामकंकणकहतहैं ॥ ४४ ॥

दोहा ।

भुजाभईअतिदूबरी, कंकणकीनीछाप ।
हनूमानसाँचीकहै, कौनहमारेपाप ॥ ४५ ॥

कवित्त—तेरेपाछेतेरो दुखतेराजपेनाममुखदूजकी सीकलादेहकैसेनिवहतहै । सुनियेनतेरीबातताहीकोअ टपटाततरफतगातबिजुरीसीचमकतहै ॥ कंकणकरीहै छापसोऊहैढिलढिलातप्राणनाथहूकोचिन्ता गहैइरहतहै छीनरघुराइसुनसीयमेरीमाइजैसेपडवापढैयाऐसीविधि उलहतहै ॥ ४६ ॥

दोहा।

तबबोलीत्रिजटीसुमति, सुनजानकीअचेत
तूजुरामसँगउठचली,घरतजवनकिहिहेत ॥

कवित्त—तूनसंगहुतीतबइतीओनहुती कहा तोविनअकेलेरामचंद्रकहूंडरते । तापरमनाइरहेराखवेकोपांयगहेपाछेसबमंदिरकेलोगतोसोंलरते ॥ कहूंवनजायकहूं कंदमूलखायसंगलछमनलैकेसुखी दुखीदिनभरते । काहेकीभलाइंजबनारसुँहलाईआजतेरेदुखकाहेकोहनूसेमोसेमरते ॥ ४८ ॥ सुनहैनिडरआजरहतीजोघरनारी भीतरतेपकरानिशाचरनलावते । विछुरेतोपीयकहोकौनसीमरीहैतीयतुमसुखीहोतेरघुवीरसुखपावते ॥ जानतीतोतवढिगमोसीजोनहोतीतेरे औरहनूमानविनलंकाकोनआवते । तेरिओउपाधिजोतूसंगहीनहोतीतवरावणह्वैयोगीरामचंद्रकोचुरावते ॥ ४९ ॥

दोहा।

सुनत्रिजटीसीताकहै, मर्मनजानेकोय ॥
पीयदुखीवनमेंरहें,तियासुखीघरहोय ५०॥

सोरठा—औरकहोंइकबात, जाहिसमझहोंघरचली ॥
सुनहुधरमकीभ्रात,त्रिजटीसवतोसोंकहों ॥५१॥

कवित्त—मूँडतोपितावचनभारहैउठायोरामदूसरोज

टाकोरावयातेअकुलाइगो । कंठखगभारकरधनुपखरो ईभारकटिसोंनिषंगअंगअंगमुरझाइगो ॥ मेरेघररहेको निपटछातीभारह्वैहैइहैमैंविचारीइनपैनसह्योजाइगो । भूखहैकिरूखहैकिन्याइमुरझाइहै सुयातेसंगचलीयहभा रनसहाइगो ॥ ८२ ॥

दोहा ।

तबत्रिजटीपांयनलगी, चतुरजानकीआह।
ज्योंलायोकपिरामते,पुनिसियबूझततांह ॥

सोरठा–जिनसोंबहुतसनेह,रामचंद्रमनतेकरहिं ॥
तिनहूंकी गति एह, सुकविरामसंगतजरहिं८४॥

स०–राजविभूतिविचच्छनएकततच्छनरामहिंपीठदई।
मनभावनकोपहुँचावनकेमिसपौरहूलौंनहींसंगभई ॥
पुनिमैंवनमैंतुममारगमोंसुनहोसुँदरीविपरीतनई ।
हमतोनहुतेसुपतिव्रतकीतिहलोगनतेपरतीतगई ॥८५॥

कवित्त–पहलेतोतुमेसुनसुन्दरीप्रवीनरघुवीरजूकीमूर तहोंनीकेकैनिहारती । पाछेतेतोपेखतीहौंआपनोस्वरू पसबऔरहोकिवहैहैकहोनक्योंहोंमारती ॥ पाछेरहीशो चतीयमेरेध्यानहुतेपीयमोसेह्वैगएहैंरामआसुनको डा रती । दैकपोलहाथरहीनाथकहेश्वासभरेमाथेलिखेअं कनविधाताननिवारती ॥८६॥ बोल्योहनूमानमातजा नकीनिवारशोकजाहीदिनजायतेरीशोधहैसुनाइहों ।राव

णकेमारबेकोउँमडरह्योहैमन ताईदिनसबनचढाइलेइआ इहों ॥ औरजोकदाचिमोसोंबहुरोकहैंगेरामसीताकोले आउतबछिनमेंलेजाइहों। रामहिलेआइहोंसुतोहिंपहुँचा इहोंतूमानमेरीबातहनूताादिनकहाइहों ॥ ५७ ॥ और जोतूकहेमोहिंअबहींलेजाऊंतोहिंलंकहीकेलोगनकोकौ तुकदिखाइके। रावणहिमारोंपुरभलीभांतिजारोंरुंडमुं डनबिथारोंआजरामबलपाइके ॥ औरजोकहोतोगढकं चनकोमूलहुतेलैउपारचलोंनभमंडलदिखाइके। तापर जोमोसोंरघुवीरजूखिजैहैंतबवीचपरमातामोहिंलीजोब कसाइके५८जादिनतेकपटीलेआयोतुम्हेमूढमतितादि नतेजानीलंकनगरीउदासहैहैजुकोऊदिलचटकीलोसोप्र तापयाकोकैसेजैसेसांझसमैदिनकोहुलासहै॥धुआंकेसेधौ लहरमिटइसेदेखियतरातघरीद्वैकपाछेरविकोप्रकाशहै॥ यमकीबनेगी शिवजूकीबिगरेगीरघुवीरकोपासिंहमृगरा वणगिरासहै ॥ ५९ ॥

दोहा।

सुखपायोजियजानकी,भलोदूतइहआहि ॥
सूखेसरजनु मेघकपि,वरषजियाएताहि ६०

सोरठा–सुनेवीरहनुमंत, तेरोबलसांचोसबै ॥
रामचंद्रबलवंत, कह्योतुम्हेंसोकीजिये ॥६१ ॥

कवित्त–सूरशशिमेघपौनइन्द्रयमसिन्धुकौनआयसुको

मेटेतीनोलोकऐसोकोरचे । जोकदाचिमेटकोऊताकी आयुमेटेविधिलोककहेपापीपरलोकदुखमेंपचे ॥ ताते बेगजाहिलंकलोकपतिआइजिनपायछलकपटनएक इनतेबचे । इनकेमिलेतेहौंहूंव्हैगईकठोरयातेमेरेप्राणर हेसुनरामदुखनातचे ॥ ६२ ॥ नाथपरपीरकहोकवते विसारीकपिवीररघुवीरपदकौलौंलंकआइहैं । कछूआ सलागे कछूआरजसुपदजागेपाछेतोपत्यानेप्राणआगेन पत्याइहैं ॥ वासीहैंनिकटकेउदासीसेतोनाहिमोसोदासी सीयकेसँदेशबहुरोनपाइहैं । बातकहांगोंकीकिधौंकरी होय नौकी राम प्राणनकी चौकी मोपै कबलौं दिवाइहैं ॥ ६३ ॥ विरहकीज्वालमेंनजातजरमेरोतनुनैननकेनी रहूंमेंबूड़नमरतहों । रावणकेत्रासनउसासननप्राणजात देहछांडछांडजीसोंनितहीलरतहों ॥ छतियाँकीबति याँकहांलौंकहांप्राणनाथराम बिन नेकहूनकहींविचरत हों । इहैमैलोवेषमेरोकहियोसँदेशकपिआशवशपरी तातेजीवोईकरतहों ॥ ६४ ॥

स०-कंचनकेमृगकाजहनूमहाराजहिजोतबहौंनपचारो। काहेकोहोयइतीविपरीतजोरेखमिटाइकेपाँउनधारों ॥ यहीदोऊमैंअपराधकरेक्षमियोरघुवीरनफेरपचारों । सोइअबलोंदुखपावतहोंजबपांउनदेखोंतोप्राणनिकारों॥

कवित्त—चंददेखचकईमिलानसरफूलेऐसोविपरीत

कालहैसुदेहहकहियतहै । बातीसंझबातीबनसारनीरचंद नसोंबारिलीजियतनअनलचाहियतहै ॥संगकेदुकूलदेख कुंजनकेफूलदेखरूखनकेमूलदेखशूलसाहियतहै । हमेप लभारीरामपलोंनसँभारीकपिऐसेगढलंकऐसीभीतराहि यतहै ॥ ६६ ॥

दोहा ।

हनूमानदुखपायअति, लोचनजलनरहाय ॥
रामचंद्रबिनसियदुखी, सियबिनउतरघुराय

सोरठा–तुमहिंभईपरतीत, जबमुँदरीतोकोंदई ॥
दूतहिद्वैविपरीत, इकपातीअरुपतेबिनु ॥६८॥

कवित्त–जानकीजूजीयआन्यो भलोहैसयानोकपि याहीतेपठायोरामजानेयाकीमतिको । चोटीमेंलपेटी एकमणिहीसुकाढदीनीदीजो रामहाथजोबढैयातेरीरति को ।दूसरोसँदेशो चित्रकूटतुममेरेहितकानो कियो का कसींकबाणलैसुगतिको । तिलकबनायोनिजहाथमेरे नाथकपितीनोपतेदीनेतिनतीनोलोकपतिको ॥ ६९ ॥

स०-जाहिहनूअबछाँडविलंबचल्योतिनदूरहुतेशिरनायो ।
आइगईफिरकेमनमेंकछुह्याँअपनोबलमैंनजनायो ॥
क्याचलहैजगमेंयहबातकिरामकोदूतकोऊकपिआयो ।
रावणकोजबजाइमिलेतबक्योंमिटहैमनकोपछतायो ७०

सोरठा–चंचलजातस्वभाउ,हनूमानचितयोंधर्‌यो ॥
शूरनकोसतभाउ, कायरबकमुखहीरहैं ॥७१॥

दोहा।

जोखिजिहैंरघुवंशमणि,ह्यांतोयशलेजाउँ ॥
प्राणरहेकैयशरहे,दोमेंएककमाउँ ॥ ७२ ॥

कवित्त–बागतोरखाइबलआपनोजनाइताकोएकपूतघाइतबसिंधुपारजाइहों । लंककहूजराइकेकलंककहूचढाइबडोऊधममचाइदूतरामकोकहाइहों ॥ रावणकोश्रावणकेमेघसोंरुआइरामचन्द्रहिसुनायबडो बांदरकहाइहों । औरजोकहेंगेविनाकहेक्योंकरीरेतबमेरोकहाजैहैनामसीताकोबताइहों ॥ ७३ ॥ जोहोजीअकोविचार जानकी सों कहोंअबडरहीमरेंगी यह जानत न बलको । आयसुविनाजोकरोंदोषनतेडरोंतबकहेहनुमानहोंकरोंतोएकछलको ॥ ढीलेढीलेपाँइनसोंसीताजूसोंकह्योजाइभूंखलागीविनाकहेबागमेंक्योंढलको । बोली सीयजैसेतेरेजीयकोनजोखोंहोयतैसेतोरखायकोऊएकआधफलको ॥ ७४ ॥

सोरठा–सियसूधीबडभाग,कपिपतिछल समझेनहीं ॥
चकमककीसीआग, हनूमानआज्ञालई ॥७५॥

दोहा।

इकचंचलकपिजातअति, आयसुकियोसहाय।
पटकपूंछठाढोभयो,रामतेजसुलगाय॥७६॥

कवित्त–पैठोवनतेहीखिनमनकीनहौंसराखीमारेरखवारे सबऊंचीकिल्कारकी।भागेएकठांडेरूखमूलतेउपाडेफ लतोडेमीठेखाटेहरीतोरहीउछारकी।आनपूरहूतनिजहा थनसँवारीऐसीरावणकीबारीपातपातडारडारकी । दूत कहीबातमहाराजउत्पातभयोआयोकपिएकतिनहमारे बड़ीहारकी ॥ ७७ ॥ हरेहरेआयेपेडहरेईहरायेएकताके मारबेकोहमबडीहालहूलकी।पाछेउनपूंछसोंफिरायमार डारेसबभागेहमआयबातभईऐसेशूलकी ॥ जाकीछविदे खेवननंदनसमीचे आंख सींचे मेघमालीसोइबारीनिर्मूल की।हमतो कहैहैं बात बागमें न रह्यो पात आशजिनक रोमहाराजफलफूलकी ॥ ७८ ॥ जोरावरधरपेडखरेई सबरगाडेविटपअबरवरअंबरछुवतहैं । कौरोमेंनआवेजि न्हेबाहुनहिलावेबलवाननझुकावेएतमानाडिढीअतहैं ॥ शिरोमणिबागनबगीचनवननबीचहुतेरखवारेतहां पंछी कीनगतहैं । चढतदुखारेहनूमानकेउखारेऐसेरूखउख रतजैसेऊखउखरतहैं ॥ ७९ ॥ कौनकपिआयोजिन ऊधममचायोऐसेजाइमेघनादजिनमारो बांधलाइयो । काकेकहेकीनोउत्पातआहिबुझोबात ताते एकबार वा हिमोंहिंदिखराइयो ॥ औरजोकदाचिकाहूदेवताकोहो यछलतौतोताहिनीकेब्रह्मफांससोंफँसाइयो । मान्यो जिन अक्षमातिवहीबलीहोयतासोंसावधानह्वैकेबेटाजीते

घरआइयो ॥ ८० ॥ चल्योजबधायनादबाजेशूरसा जेसबजायढिंगदेख्योकछुमेरुसोंबनायोहै । घरीद्वैकल रेएईमारेउतकौनमरेहारपरे ब्रह्ममंत्रपढकेचलायोहै ॥ वाणीब्रह्मआनबोलोकहां पावेजानकपियोंनजानेमूढवपु आपतेबँधायोहै । याकोफलआगेघरलागेजानजैहैसबबां धहनुमानकोसुमेघनादलायोहै ॥ ८१ ॥

दोहा ।

पुरजनसुरजनमनहरष, देखहनूमुसकाहिं ॥
इहिविधिबांधेकपिसहित, रावणकीढिंगजाहिं ८२

सोरठा–गढलंकाशिरमौर, देखहनूतनयोंकहे ॥
यहचिन्ताकीठौर, मनजानेमुखतेहँसे ॥ ८३ ॥

कवित्त–कौनहैरेकपिहौंरेकौनकपिहनूमानकाकोसु तबूझनीकेअंजनीकोपूतहों । कौनकाजबागतोरडारोसु तमार्‍योमेरोभूंखलागीतोर्‍योअरिमारबेकोभूतहों ॥ मेरे आगेशूरहैकहावतकहाऊंक्योंनतोसों गिरितोरबेकोवज्र पुरहूतहों॥क्योंहैलंकआयोरघुवीरहोंपठायोकछूलागतहै सेवकहोंदूतनसोंदूतहों॥८४॥जानकीलेजातोतोतेनेकन सकातोमूढआपनोहीतनुआपकाहेकोबँधावतो। कैसेमेघ नादआदिजीसोंछाँडदेतोअरिलरबेकोतोसोंशूरआजक हांपावतो॥तेरीबीसबाहँनकीहौंसनरहनदेतोनेकरामचंद्र जीकीआयसुजोपावतो । कासोंकहोंजायजैसीमनकीस

मायमनहायहायनीकोरणकौतुकदिखावतो॥८५॥बडो वाकचालयाहिसूझतनकाल निजकहोतोविचारकपिकौ नभांतिमारिये।एककहेबंदकीजेएककहेदीजेविषजीजेत बकोऊदिनऐसीभांतिटारिये॥बोल्योहनूमानहौंतोऐसेन मरोंरेजैसेतुमसोंकहतमेरेवचन विचारिये।पातिह्यांसुगई अबहौंहीमन्योचाहतहौं तूलतेलसोंलपेटदेहमेरीजारिये ॥८६।औरभांतिकेहूजबमारोनमरततबतैसोईविचाऱ्यो जैसोहनूमानकह्योहै। तूलसनतेलहूलगायघृतमेलवाकी खासगीफुलेलपटआन्योयहैरह्योहै ॥ देखोकविरामक छूभावीसोचलतनांहिंजातेघरजेरेइनसोईव्योंतगह्योहै । वायुपूततोसोंकहोंरामपुरहूतमेरोदूतसोईकपितिनजाइ लंकदह्योहै ॥ ८७ ॥ ब्रह्मफांसछोरदीनीआगेकपिगयो भागआपफूंकलीनीकऱ्योरावणगँवारको । जैसेइंद्रवरु णकुवेरयमजीत्योतैसेमोहूंजीत्यो चाहतहैरुद्रअवतार को ॥बागतोऱ्योतेरोपूतमाऱ्योबुद्धिदेखीतेरीरामजैसेजी तैकिमिजीतोप्रतिहारको । देखअबरंकलंकजारतानिशं कतेरीतऊनबुझेगीजौलोंआइहोंकुपारको॥८८॥ऐसीरि सआवतहैतोहिंकोजरायजाऊंजानकीलेजाऊंअबयेहैहौं सरहीहै।कहाकरेंरामचंद्रअंगदसुग्रीवजाम्ववंतनलनील जुरएकबातकहीहै॥सीताशोधलायजायरावणपछारमा रौंवज्रभुजदंडसोंपकरमारोंमहीहै।ऐसीजोनहोतीतेरोछाँ

ड़तनगोतीकोऊहैनवशवासोंरामराजगहगहीहै ॥८९॥
रामबलप्रथमगणेशकोमनायचल्यो जातहीतोकलशज
रायेअरिधामके । सिंहपौरंजारीऊंचेचौपखाअटारीभ
लीकरीरामदूतइनहूचलाएचामके ॥ रावणनिहाररह्यो
सभामेंपुकारकह्योबडेदिनमेलेइनएकदूतरामके ॥ पाँय
नहजूरातिनशूरनकोकौन गिनेजाकेप्रातिहारकपिएतेबडे
कामके ॥ ९० ॥ पाछेकह्योलंकपतिसुनोहनूमानकपि
रामचंद्रहिकोएकतेंहीखायोलोनहै । सांचीकहजोतूअव
तारहैउमापतिकोतौतोहोंसेवकतोसोंनातोपानीपौनहै ॥
जीयमेंनक्रोधकरजाहिअबकेहूठरनगरजरावेजिनसाध्यो
हममौनहै । बोल्योतबजोहोंशिवभयोतोकहाह्वैगयोरा
मकोपआगेक्षुद्रमहारुद्रकौनहै ॥ ९१ ॥ जानोजबबात
तबराजाविललातडोलेमोतेअपराधभयोताकोफलपेखि
ये । शंकरइकादशमैंदशोंशीशकाटकाटपूजेदशरह्यो
एककासोंअभिषेकिये ॥ तातेलंकजारीसेवामानीनहमा
रीअबआगेऊकुशलजबह्वैहैतबलेखिये । जानतहोंमेरो
प्रभुमोहिंसमुझावतहैरुद्रनकेझुंडनमेंभेदकोनदेखिये ॥

दोहा ।

इहविधिरावणलंकपति,मनहिंरह्योमुरझाय॥
जहँजहँकपिजारतफिरे, तहींनिरखमरजाय

कवित्त–पूछपकेजारेतेविराजमानहनूमानमानोबडवा

अनलसिंधुअकुलातहै । किधौंमेघसंगकोटविजुरीकेपुंज किधौंतीजेनैनसोंत्रिनैनमैनउतपातहै ॥ किधौंहेमगिरि नभमंडलसोंडोले किधौंसूर्यहूसोंमिल्योइंद्रधनुषसुहात है ॥औरछविरामकविमानोरामचंद्रडररावणप्रचंडकोप्र तापभाज्योजातहै ॥९४॥ छाँडछाँडछोहरनभोंहरनसों जडारछपजलजोंहरहुताशनकेत्रासते ॥ जातनबुझाई छिनहीछिनसवाईलाईहनूमानकीबुझे न पूंछआसपास ते ॥ सोनेकीअटारीचित्रसारीमारजारीजैसेघासकीअ टारीजरगईफिरवासते।दाँतनचबाइहाइपकर्योनजाइक पिभाजगईरानीसबरावणकेपासते ॥९५॥ लागीचहुँओ रआगसूतेसबउठेजागछूतेकाहूकेनपागएकचलेजातहैं। भूतहैरहेहैंतेअछूतेनरहनपाएहनूमानजीते गह्योदाँत नसेपातहैं ॥ कीनोजिनरावणनिपूतोयमहूतेयमकूतेखे तमूंड आजहूतेनसिरातहैं । परीदिनहूतेरोरव्हैगएकु पूतसबरामचंद्रदूतइंद्रहूतेनडरातहैं ॥ ९६ ॥

स०-जाछिनरामसोंवैरकियोशठतादिनतेमतह्वैगईकाचे। लंकपतीगृहमेंसियआनसुदेकरतारदुहूंकरनाचे ॥ पूंछसोंलायजरायदएहनुमानसुनाहकेडारतसाचे। रावणकेपरपंचनतेजरेकंचनकेगृहरंचनबाचे ॥९७॥ फूलगयोअमरेशदिनेशखगेशजलेशशशीसबहीते। सूरजवंशशिरोमणिहैसुनश्रीरघुवीरभएजबहीते ॥

ज्योंमणिकोफणिराजनिहारडरेनरतीतसरूपमहीते ।
जारकेलंकनिशंकभयोकपिरावणरंकभयोतवहीते ॥९८
कवित्त—खांसीचित्रसारी चित्रहीरनसँवारीधायलै ईतोजराईजरगईलेतसासते । लोगभागेजातपाछेओ ढनाजरतजातकैसेकैसुपैयेविनालंकापतिनासते ॥चौह टबजारजरेवोथीचटसारजरेघोडाहथियारजरेकपिकोवि लासते । जारीहनूमानपरजारीसीताजूकेसतछारह्वैनग ईसुविभीषणकेवासते ॥ ९९ ॥ पावनपवनपूतदूतरघु वीरजीकोतीरदशकंधकेननेकसकुचातहै । रामबलढी ठनेकनीचेनकरतडीठबोलेहनूमानकेनपटकतपातहै ॥ सबैसहरहेफेरउत्तर न कहैयोंहूं कहे क्योंहूंजायबोलेदोर फारखातहै । मनमेंनशंकाजाको ऐसोगढवंकाऐसीलं काजरेवीरयशडंकादियेजातहै ॥ १०० ॥ ऐसीभांति जारीलंकसमुद्रपखारीपूंछसमाधानहोतजानकीकोशिर नायोहै । बागमेंउखार्‍योवाकोबेटाएकमार्‍योमातगाउँ परजार्‍योऐसोवचनसुनायोहै ॥ रामकामकीनोऔरमेंहूं यशलीनोरघुवीरकोरतनदीनोहौंसोपहुँचायोहै । मुख मोदखायएकदांतकोमनायतवहनूमानफांदसिंधुरासिंढ गआयोहै ॥ १०१ ॥ दूरहीतेदेखरघुवीरसुखपायोकह्यो देखोहनूमानआयोलागतसुहावनो । खेतनउपारतेहव लेताहिमारतहैजानतहौंसीताशोधआजहमेंपावनो ॥

माथो चरणारविंदऊपरलुठायरघुरायसुउठायकियोछा तीसोंलगावनो । बोल्योपौनपूतमैंसुपूतीकौनकरीनाथ पाँयनतेघरीद्वैकमोंहिंनउठावनो ॥ २ ॥ पियोनसमुद्र वारिलंकनकरीउजारि जानकी न लायोकौनकाजकियो जाइके । तातेमेरेअंगकैसेश्रीअँगसोमिलेरामरावणकेशी शनबखेडेआगेआइके॥कहाभयोसिंधुफांदगयोसीयदेख आयोमाऱ्योअच्छलंकगढदियोहैजराइके । सीताकोर तनदीनोप्राणकोयतनराख्योबूझतसँदेशेरामचंद्रमुसका इके ॥ ३ ॥

सवैया—एहोहनूकह्योश्रीरघुवीरकछूसुधहैसियकीक्षितिमाहीं ।
हैप्रभुलंककलंकविनासुबसेतहँरावणबागकीछाहीं ॥
जीवतहैकहवेईकोनाथसुक्योंनमरीहमतेबिछुराहीं ।
प्राणवसेपदपंकजमेंयमआवतहैपरपावतनाहीं ॥ ४ ॥
फांदगयोशतयोजनसिंधुपऱ्योलंघिवारिहनूतनुहेरो ।
फाँसपरेदुखआंचतगीनहफूंककेलंकानिशंकानिवेरो ॥
खाइयोंकंठमृणालज्योंहोरिज्योंश्रीरघुवीरछुवोतनुतेरो ।
जैसोकछूसियनैनकेनीरपयोनिधितीरगयोवलमेरो ।५।
सोप्रभुआनसुजानमहारघुवीरसुनोहनुमानसुनावे ।
तौलगतालतमालविशालपषाणनसोंनिधिनीरपठावे ॥
जौंलगजानकीनैनसमुद्रकोसंगमआँसुनहोननपावे ।
डाढकहेकापियूथनकोबहुरोविधिबाँधकिआपवँधावे ।६।

दोहा।

युगलसिंहकीकहकथा, पण्डितज्योंसुखदाय।
तबसीताकेअंगकी, कहतहनूशिरनाय ॥७॥

कवित्त–दूबरीतोऐसीदेखीसुनोरघुरायजाकेआगेदू जशशिकीकलातोअतिपीनहै। पीरीइहभाँतिजातेहरदी कुसुंभरंगआंसुनकेआगेमेघसावनकेहीनहै ॥ विरहाके श्वासनकेआगे आगऐसेजैसेमहाहिमबोलमुखश्वासनअ धीनहै। जनकसुताकोएकपतिव्रतशीलसुनऔरदेखदे खमैंतोवारेपुरतीनहै ॥ ८ ॥

दोहा।

हँसबोलेरघुवंशमणि, पवनपूतपरवीन ॥
बूझततोकहँलछमनहि, कथाकहोअबतीन

सोरठा–रावणनगरसमेत, अरुजलनिधिक्योंतरगयो।
अग्निलंककोदेत, लंकापतिचुपक्योंकरी ॥ १० ॥

स०–जानतहोहमतोकपिहैंचढरूखनकेफलकेअनुरागी।
औरबडोयहपौरुषहैयाहिडारतेडारपरेतरुलागी ॥
श्रीरघुवीरकेनामहिलेभवपारपरेजगमेंबडभागी।
ताहिकोध्यानाकियोमनमेंमुहिंवारिधिलांघतवारनलागी

दोहा।

कहतबडाईआपनी, हनूमानसकुचात ॥
सिंधुकथाकहलंककी, कहतरामसोंबात १२

सवैया—कोपभयोतहँपावककोप्रभुकंचनकोगढऐसोजलायो ।
श्रीरघुवीरवियोगभरेपुनिजानकीश्वासनपौनपुचायो ॥
तेलसोंतूलभिजैघृतसोंपटताहिकेऊपरहोंधरआयो ।
देखियेनाथबडोयहकौतुकलोककहेहनुमानजरायो १३

दोहा ।

अबरावणकेनगरकी, कथाकहतहनुमान ॥
सुनतरामचितचौंपसो, संतसुनोदेकान।१४।

कवित्त—कथाहैनिदानकीनरुद्रसन्मानकीनबाणनकमानकीनकथाराहतानकी । रहीनगुमानकीनकहूंचढजानकीनपौरुषप्रमानकीनकथाखानपानकी ॥ वेदनपुरानकीनमुनिएसियानकी होझूंठजोकहोंतोसौंहरघुकुलभानकी । रामडररावणकेनगरदगरघरबगरबजारआजकथाभाजजानकी ॥ ११५ ॥

दोहा ।

इहविधिजबसुखसोंवचन, सुनेरामपरवीन॥
हनूमानसोंयोंकह्यो,ज्योंहैहैत्योंतीन ॥११६

इति श्रीरामगीतेहनुमानलंकादहनोनामषष्ठांकः ॥६॥

सप्तमांक ७

कवित्त—चंद्रमाचकोरजैसेगुडीवशडोरघनघोरनसों मोरदेवतापियूषपानसों । जैसेऊखपूर्वपानफूलजलरूख भूखदेशकवियशसुनोवामनकोदानसों ॥ जैसेवेदज्ञानन रपेक्षसन्मानजैसेकाननकोतानज्योंसरोजभौंरमानसों ॥ जैसेवीरवीरसोंज्योंवारिधिकोतीरसोंज्योंऐसीप्रीतिलागी रघुवीरहनुमानसों ॥ १ ॥

दोहा ।

तापाछेकविकटककी, अटकचुकीकविराम ।
श्रीरघुपतिश्रीमुखकह्यो, अबविलंबकिहिकाम ।

सोरठा—सबैचलैंकपिनाथ, शुभदिनघरीनक्षत्रबल ॥
रामलषणपुनिसाथ, दशमीविजयप्रसिद्धदिन ॥
निरखकटकभटभीर, भटकपूंछचितहरषसों ॥
चलरघुपतिकेतीर, हनूमानविनतीकरे ॥ ४ ॥

स०-नाथचलेउमडेकपिरायसुलायककहैंसबयुद्धअनीकी हालतनावचढेगजकेतिमिदेखतहोंगतियाधरनीकी ॥ जुभूतलव्योमपरीजनुरातगईदबधूपप्रभातमनीकी । भारतेकच्छपकेशिरऊपरफैलरहीफणिमालफनीकी ॥ ५ ॥

कवित्त—कह्योरघुवीरसुनवीरहनूमानकपियूथइनवातनकोलागतसुहावनो । भूमिभारदीबेकोकिसुरढांपलीबेकोसमुद्रकीचकीबेकोकिपानकैसुकावनो ॥ कूरमकले

शकोकिशोरदेशदेशकोकिहालहूलआगेकरऊधममचा
वनो। तेरेभुजदंडकेप्रतापकेभरोसेमोहिंरावणकोमारय
शदुंदुभीबजावनो ॥ ६ ॥

दोहा।

करीबडाईदासकी, निजसोंश्रीरघुवीर॥
वनपुरपट्टनगरतज, नजिकानेंनिधिनीर ॥

सोरठा–देखगांवकीनार, निजमानससोंयोंकहैं ॥
राजसमाजविसार, चलेलरनह्वैतापसी ॥ ८ ॥
तेकपिकहेंविवेक, तुमप्रतापजानतनहीं ॥
जोरघुपतिहैंएक, अरिकुलवनदावाअनल॥९॥

कवित्त–कहाभयोजोनसंगवारणतुरंगरथचामरधुजा
नछत्रचामीकरपालकी। हाथनकमानकटिबाणरणशूल
नाहींकाहूकेत्रिशूलहैंनदेखीछविछालकी ॥रीछकपिसंग
झुंडराजाकेजटाहैंमुंडरावणकेवैरसिंधुबांधोबडेसालकी
तऊएकरामहीतेपूरणहैंकामसबकरेंगोरसोईअरिसेनास
बकालकी ॥१०॥ ऐसीभांतिसंगकपिराजाजाम्बवंतनल
नीलबालिपूतपवनपूतसोंसुहायोहै। एकनकेहाथगहएक
नकोबातकहएकनकेआगेअंगएकननचायोहै ॥ जीयमें
तोजानेपीरबडेधीरनमेंधीरवीररघुवीरतीरवारीधिकेआ
योहै। कहेलछमनयाकीदेखियेढिठाई रामचन्द्रजूकेआ
गेसिंधुगरवजनायोहै ॥ ११ ॥

लक्ष्मण उवाच ।

कवित्त—आगेनामिलनआयोभेंटमणिहूनलायोशशि आनचरणकमलनछुवायोहै । कहोतोगुसाईंयाहिवाएं दियेकैसेबनेजौलोंऐसेमूरखननीकेसमुझायोहै ॥ आय सुजोपाऊंयामेंछारहीउडाऊंरामतौलोंआगबाणलैकमा नसोंचढ़ायोहै । वामनकोरूपकररामचंद्रजूसोंडरकांप तआशीशदेकेवचनसुनायो है ॥ १२ ॥

सागर उवाच ।

कवित्त—बडेरणधीरतुमभीरमेंसहाइहोतेमोतेकहा चूकपरीकृपाकैसुनाइये । सीतादशकंधहरीकौनजाने कहांधरीछिपीहोयमोमेतबतुमकोबताइये ॥ कहोसूख जाऊंसैनउतरेविनाहीनाऊंकहोलंकबोरोंनेकआयसुजो पाइये । कारणकरनहोतोसागरशरणआयोलागतचरण मोहिंकाहेकोजराइये ॥ १३ ॥

श्रीरामचन्द्र उवाच ।

कवित्त—तेरईतो ऊपरह्वैलेगयोसियाकोपापीजासों जायआगेलरझगरछुडावतो । औरतोमेंनक्रवक्रकच्छप कठोरहुतेमच्छबडवागिनिहोताहिकोपठावतो ॥ पर्वत सपच्छहैभुजंगनकेलच्छह्वैमिलाइएकठौरनभ सासुहेउ डावतो । औरसवरहीतेरीमानतेतोकहींसिंधुसीताजूके काजजायश्रीपतिजगावतो ॥ १४ ॥

सागर उवाच।

कवित्त–जोहोंऊंचेजाऊंतऊतुमतेडराऊंनाथएकहाथचढेमेरेअलयउतपातहै। औरइनमच्छकच्छउरगहुताशनतेसुनोबलिजाऊंलंकपतीजीत्योजातहै॥एकगिरिसहीहैसपच्छताकेपच्छनकेकाटबेकोइंद्रवज्रलियेअकुलातहै । श्रीपतिबतावतहोमोहिंवहिकावतहोमोमेंनहींसोतोअबराउरोईगातहै ॥ १५ ॥

दोहा।

इहविधिविनतीकरउदधि,रहेचरणलपटाय।
कहलछमनकहकीजिये, प्रभुलीजियेउठाय

श्रीरामचंद्र उवाच।

सोरठा–मुसकानेरघुवीर, बडोचतुरसरितापती ॥
थाउहोयनिधिनीर, जोमानेपतिसौख्यसब १७

कवित्त–आजतोतिहारेकूलवसेरहेंरूखमूलसोईशूलकीवोपेंडोरातहीबनाइबो । बातहैनआरसकीरीतिनासियारसकीलाखफेरएकबारपारतेरेजाइबो ॥ कह्योलछमनतोसोंरामहै कहतासिंधुआजयशलेहुऐसोसमोकदपाइबो । नातोराजासगरकीसंततिकोजानतहोंविनाश्रमखोएवैसेतुरतपठाइबो ॥ १८ ॥ मानीबातशीधरचलोहोप्रणामकरसुनीहनूमानरामऐसोठहराईहै।कहीबुरीभईबातपौरुषकीगईसबजाइजाम्बवंतनलनीलसोजनाई

है॥जगमेंचलेगीबातसेनाकपिराजनकीरामबूझ्ञासिन्धुथा हहेकेपहुँचाईहै। होतोएकबालकनमोहिंकछूतालकपैदे खोतातातुमहूंकोकैसीलघुताईहै॥१९॥ सबैएकजातमुख रातेमानोहैरिसाततापरसुनाई बातहनूमानकोपकी। अंगदसुग्रीवएऊदोनोंगएरामढिंगसुनोमहाराजसिंधुकरी बातधोपकी ॥ नाथहमसागरकीगैलकैसेचलैंअरुतुमहू विचारोयामेंकौनबातओपकी। किधौंयाकेबांधबेकोहैंन बलवंतहमकिधौंहनूमानहूकेआगेपतिलोपकी ॥ २०॥ देखेंऐसीभांतिसबरामचंद्रबोलेतबमैंहूतोकहीहैजुसुग्रीव उरआनहै । मोहिंतोतिहारेसुखसुखहैसदाईसूधेसागरबँ धावोयाकीकालकहाकानहै ॥ मेरेजीयहुतीयाहिकाहे कोबँधाऊंअपराधहैनयाकोदयाकीसीमेरीबानहै । या कीतोसहलआगेरावणकेबांधबेकीकह्योलछमननाथद याकौनमानहै ॥ २१ ॥

दोहा।

सीताबिछुरनदुखउदधि, पैरतगएनप्रान ॥
याकोपाटतकौनश्रम, शतयोजनपरमान ॥
सोरठा—रघुपतिकह्योसुनाय, उतसागरइतसुभटसब ॥
द्रुमनपषाणनछाय, बांधहुसेतविलंबतज२३॥
कवित्त—चलेकपियूथमनआनँदसोगूथअतिसिन्धु बातमानीअबकरियेउपायको।ऐसीतीनोलोकमाहिंराम

कभीदेख्योसुन्योदेवनरचलेआजआयसुमिटायको ॥
सिंधुदुखसह्योबोलइनहींकोरह्योभाईभयोनिरधारयाहि
बोलरघुरायको । हनूमानजानजियबातपरमानय
हवारिधिपटाए विना आज पारजायको ॥ २४ ॥

सोरठा–बिदाभएनिधिनीर, भोरजगावतरामकहँ ॥
सुखसोएरघुवीर,कपिभटअतिफूलतचले ॥२५॥

कवित्त–चिरईचुहुचुहानीप्राचीपीयरानी अतिआध
वाटचकवाऔचकईमिलातहैं।अमलअकाशभयोकमल
फूलनलागेजमलभँवररसमातेअकुलातहैं ॥ तमीपति
ज्योतिकुह्मलानीतमचुरबोलेचोरबाटभागे शंखशबदसु
हातहैं । जागेरामकामकी कमानटूटीछूटयोबलल
टीसीतरैयाबीचतेऊछिपिजातहैं ॥ २६ ॥ कौतुकके
काजरघुराजबैठेसिंधुकूलजहां नलनीललैलैआवतपहार
को । एकद्रुमडाररूखमूलतेउखारेएकबारएकपारएक
पाटेमाँझधारको ॥ त्योंत्योंसकुचाहिंअपराधसागरको
नाहिंकरुणाकृपालुरामजोकरेविचारको । तौलोंजुर
आयकपिरामकरशीशनायवचनसुनायऐसेराघवकुमा
रको ॥ २७ ॥

स०-बांधतसेतुजहांरघुनाथलजोहेसनैनाकियेपछताहीं ।
बातसुनीवरबानरवीरनधीरतजीप्रभुपैचलजाहीं ॥
नैननकीकरुणारघुवंशशिरोमणिजौनहिंदूरकराहीं ।

तौकरुणाकेकियेकरुणानिधपाथरपाँतनपंथमिलाहीं ॥

कवित्त-वानरअपारलैलैआवतपहार किलकाररघु वीरसोंसुनायकहेंबतियां । ताहीकोबुलायरघुरायपीठ ठोंककहेजाहुजाहुचलेहँसकाढकाढदतियां ॥ राजाकेकु मारहमेंडारतहैंसिंधुधारदेखियेगुसाईएईरावणकीछति यां । समुंदकसुतनकीशाखामृगपूतनकीलंकापतिदूत नपठाईलिखिपतियाँ ॥ २९ ॥

एककपिवारएकपारएक सिंधुधारहारवारकियेमिलपाटे निधनीरको । एकद्रुमडारएकडारतपहारएकभारेभारे पावेंनजनावेंनिजपीरको ॥ एकजेउदारभरछारदोऊहा थयहरावणलिलारयोंसुनावेंरघुवीरको॥एककिलकारकि लकारउठेंबारबारएकश्रमेंदेहकोसुनावेंभटभीरको३० । मानोक्षीरनिधिमेंरिसानोरमाजीसोंपतित तेबीचभीत करआधोबांटलीजिये । किधौंसंगचलवेकोफेंटाकटिबां धतहैकिधौंजुरमेघनकेझुंडनसोंपीजिये ॥ किधौंनभफू टयोकिधौंछूटयोबूंददिग्गजकोकहेशेषनागसमोहैतोसै नकीजिये । किधौंटूटगयोपहरावतजनेऊयाहिबांधेहूते सातछविकहाकौनदीजिये ॥३१॥ दौरदौरआयरघुराय जीसोंकहेंकपिएककीकहाहैकहोसातोंबांधौंछिनमें । च रणप्रतापआजतेऊतोपहारल्यावेंबूढेखंजेकूबरेजेरोगीहु तेवनमें ॥ चलियेगुसांईअबलंकगढतोरंडारेंरावणकोमि

लेंरहजैयेहैंसमनमें ॥ बोलेरघुवीरवेगिपुलहैबढाएजाहु
जैसेकैसेकृपणबढावेधनधनमें ॥ ३२ ॥

दोहा ।

सेतुसकलपूरणभयो, चलेरामबलबंड ॥
इकपुलपरपुलकितचले, इकनभमगपरचंड ।

सोरठा–लेअक्षतफलएक, रामसमर्प्योंसिंधुको ॥
देखोराजविवेक, बांधतफिरपूजतप्रकट ॥३४॥

इति श्रीरामगीतेसिंधुसेतुबंधनोनामसप्तमांकः ॥ ७ ॥

अष्टमांक ८

कवित्त—सिंधुपारपरेसबआँनदसोंभरेकपिगाजेशंख बाजेअबलंकापरधावनी। बडेबडेशूरजेलँगूरतेहजूरआ वेंएककहेरावनीजुबनैमतआवनी ॥ ताहिकेनगरजाँय बोलताहिफारखांयखासगीरसोंईएकबारतोलुटावनी। बोलेहँसिरामतुमभूंखेहोरहतनाथ फसलको लूट घरजूंठ आनपावनी ॥ १ ॥

दोहा।

इतकपिभटउतरेउदधि,कुशलक्षेमसबगात।
उतरावणसोंजोरकर,कहतविभीषणबात२।

विभीषण उवाच।

सोरठा—जोनकरहुरिसनाथ,तौसेवकाविनतीकरे ॥
धरोंचरणपरमाथ, रामवैरकुलक्षयकरन ॥ ३ ॥

कवित्त—सीताईकीबाततातेएतो उतपातकेजीमेरेपा छेनाथमेरीबातनविचारियो। नगरकेवासिनकोसौंहदैदै बूझोतुमकोऊयोंकहतहैजुरामचंद्रहारियो ॥ तीनलोक संपतिसमाजराजतेजघरसोई यों कहतहैजुमूलतेउपारि यो। कहोहोहूंजाऊंसीयलैकेरामछाऊंजोपैमिलेमारडार हैतोमोहिंमारडारियो ॥४॥ जौलोंनलनीलजाम्बवंतह नूमानभौंहअंगदसुग्रीवग्रीवफेरकेनबंककी। जौलोंरघु वीरजूकोकोपनघटाइओपमेरीसीबड़ाईजोपैभईहैनटंक

धायविभीषणपाँयगहेशिरनायरतीविनमैनरतीसो ॥
लेतउसासचल्योप्रभुपाससुगाँसगहेतिनदंतवतीसो ।
पापकियोरघुवंशशिरोमणिनैनकीसैननलंकपतीसो ॥
रावणनेदशशीशउतारबडेश्रमतेशिवसोंपदलीनो ।
जीतलियोसुरराजकोराजसुदेवनकोनरतीडरतीनो ॥
वासररैनडरेचतुराननसेवतपौरमिलेपुरतीनो ।
पाँयगहेजबहीरघुराइलजाइविभीषणकोसोइदीनो ॥

मन्दोदरी उवाच ।

दोहा ।

यहसुनकेमंदोदरी, तलफेज्योंजलमीन ॥
रामवचनझूंठोनहीं, जानतहैंपुरतीन ॥१८॥
सोरठा--निपटेकंथअजान, शिवकेवलकूदतफिरे ॥
प्रगटसहसकरभान,दीपकरावणसोंकहे ॥१९॥

कवित्त–गहीशरणाईजयराखीनबडाईनेकवीरदुख दाईतिननेकहूनशंककी । तेरीप्रभुताईखारेसमुंदबहाईकुललाजबेंचखाईडारनारपरयंककी ॥ तासोंरघुराईप्रीतिबहुतेजनाईरहेंछातीसोंलगाईयोंबडाईपतिलंककी योंकहेलुगाईतोसोंकाहूनसुनाईकंतसुनीठकुराईतेरेभाईपाईलंककी ॥ २० ॥

सुग्रीव उवाच ।

स०–श्रीरघुवीरकेतीरतवैकपिराजकहेइकबातकहों ।

तुमलंकविभीषणकोबखसीअबहींमिलतेकहोंहौनरहो ।
जोपैरावणआनमिलेसँगजानकीदेयकहेप्रभुपाँयगहों ।
तबमैंहूविचारधरीजियमेंवहऔधबसेसियसोंवनहो २१

दोहा ।

रह्योविभीषणपाँयगह, लैमिलयोंकपिराज॥
श्रीरघुपतिलंकादई, भरभरनैननलाज॥२२

सोरठा–जोप्रसन्नरघुराय, कितकलंकगढबापुरो ॥
आगेअंगदजाय, दशमुखकोसमुझाइहै॥२३॥

दोहा ।

रामचंद्रलछमनसहित, कपिपतिलियोबुलाय
कैटूटेलंकापती, कैटूटेसतभाय ॥ २४ ॥
सबकपिकटकउदधिउतर, कोकरसकेबखान॥
कपिपतिअंगदनीलनल,जाम्बवंतहनुमान॥

रामचंद्र उवाच ।

सोरठा–अंगदलियेबुलाय, बातकहीरघुवंशमणि ॥
जाहुअजहुँसमुझाय, आयमिलेलंकापती२६॥
भईसुगईविहाय, अंगदतूसमुझायकह ॥
अबयोंकहिरघुराय, दूतपठायोबालिसुत२७॥

कवित्त–मेरेपाछेहरीकितौविनाजानेकरीऐसेसिंधु
केभरोसेकिधौंराजअभिमानते । किधौंकुंभकर्णमेघ

नादआदिदीनोमतकिधौंशिवजोरराजाकिधौंमदपानसे
तोकोक्षमाकीनीसबजानकीलैमिलोअबजायकहोवीरक
हाँलेउगेसियानते । नातोसुनभाईलछमनकीचढाईहो
तलंकहिलपेटलैहोंउपज्योजुभानते ॥ २८ ॥

अंगद उवाच ।

कवित्त—चल्योसतभायरघुरायपाँयछुएकह्योनाथ
याहिबातकोहोंउत्तरजोआयद्यों । जोकदाचिमोसोंबुरो
बोलेदशकंधताकेदशोंमूंडजोकहोतोतुमपैचलायद्यों ॥
जोकहोतोशीशोगहलाऊंदिखराऊंपांयताकोपरिवारमा
रसमुँदबहाइद्यों । जोकहोतोजानकीसमेतवनलाऊंतुम
जोकहोतोरावणसमेतलंकालाइद्यों ॥ २९ ॥

रामचन्द्र उवाच ।

कवित्त—वीरसुनबाताजिनकरोकाहूघाततुमम्हारी
बातकह्योहमउनहीसोंकाजहै । कह्योतेरोमानेसीयआने
हमजाहिंफिरअजहुंलोंतूकितेरवीरहूकोराजहै ॥ और
कछूसमाचारबूझेजोहमारीतोसोंनीकीसमुझैयोतोपरेवा
कोसोबाजहै । दीजियोबड़ाईएसेकह्योरघुराईकछूमिल
बेकोसाजकितराईकोसमाजहै ॥ ३० ॥

स०-नाथचल्योशिरअंगदवीरमनायगणेशहिबालढुटौना।
कूदतफाँदतलंकनिहारनिशंकभयोमन रंचकमौना ॥
आयगईसुधतादिनकीजबबापकेजीवतहोतोतोछौना।

ताहिपैआजचल्योविधियोंपलनापरबांधकियोजोबिलौना॥

कवित्त–अंगदनिहारलंकपरीहैपुकारएकबारबार गयोअबआवतसरोषसों । छाँडगढचलेएककहेभा गभलेनाहिंदेशनाशव्हैहैभाईरावणकेदोषसों ॥ एक जेसयानेभरमाटीजलआनेलैचढाएधामधामफेंटबांधठा ढेचौखसों । कांप्योरनवासखासभरेत्रासभयोजीयआ योकपिनहैभयोअंजनीकीकोखसों ॥ ३२ ॥ ह्वैगई उजारकिलकारलंकपैठ्योजायदेरहे किंवार सब कहेंबा तडोबिया । कंचनकेधामकिहकामजहांएउपाधि रामराजभल्योजहांसोबेखायलेबिया ॥ भावेगढतोरेंभा वनावेंसोलैबोरेंकपिउत्तरजोदेयहेकहोहोआवकोबिया । लाटपाटकियेतबरहीपतिजैहैअबहाटहरतारपरी घाटहै नधोबिया ॥ ३३ ॥ एकहोजुआयोतिन पूंछसोंजरा योगाँउंकटकलैधायोजिनसिंधुनीरपंककी । कहबेको बीस पै नसूझतहैएकआंखदेखतहै आँखेंकोऊकुलकेकलं ककी ॥ हीनीविधिनर्वानंधिजानकीमेंकहा सिधिरावण सोंकहाऐसीबातक्योंनशंकली । सेवककेआगेसबका प्योंकरेरैनदिनठाकुरकेआयेठकुराईजैहैलंककी ॥३४॥

दोहा ।

इहविधिपुरवासीसबै, रहैंपैठघरमाहिं ॥
कै थामनेहनुमंतकी, जहँजहँअंगदजाहिं ३५

सोरठा-कछूचालकछुदौर,पौरंजायठाढोभयो ॥
माथेचंदनखौर, रामतेजमानोदियै ॥ ३६ ॥

कवित्त-एकओरदेवताबिछौनाठाढेकरेंसेवएकओर किन्नरजुश्वासनभरतहैंएकओरचारणपढतएकओरमत वारणकेयूथशिरधुन्योईकरतहैं ॥ एकओरपंडित प्रवी णकविवाजीरथवृषभमहिषमल्लसारँगलरतहैं । ऐसोईस माजकौनकाजराजारामबिनरामरामरावणसों सौंगईम रतहैं ॥ ३७ ॥

दर्बान उवाच ।

कवित्त-डरप्योनवाय नारहाथजोरछरीदाराराजनके राजाबालकहोसतभायसोंबांदरकेरूपएकद्वारठाढो ना थतुमजोकहोतोजायकहोंआयलागेपाँयसों ॥ सीताप तिहीकोदूतजानियतमहाराजसभाकेनिहारबेको भन्यो चितवायसों । हनूमानतेचऊनोजैसेशशिचौथपूनोदौर बातकहीदरवानलंकरायसों ॥ ३८ ॥

रावण उवाच ।

कवित्त-रावणविचारीहमबातहीबिसारीरामवहै क पिलंकगढवहुरोपठायोहै ।किधौंमेरेलोकयाहिचहूं ओर रोकतहैतातेदुखपायपरवानगीकोआयोहै॥देखोइनढीठ डीठवेदसोंदिखायोतबआपतोनजन्योमेरो नगरजरायो है । कहोबोललेहु आइगयोकह्योक्योंरेशठदूसरोउपा

यमरवेकोगढलायोहै ॥ ३९ ॥ अंगदपठायोरामयातेड
रेलंकग्रामयाकोनामशूरनमेंप्रथमैंसुनीजिये । मित्रपी
रहरीरिपुचीररणधारिवीर मारे जाकेमारियेजिवाएजाकेजी
जिये ॥ हनूजाकेरोमसानीवडोअभिमानीज्ञानीकिहां
लोंकहानीयाकेबलकीकहीजिये । रावणसंकान्योआयो
वहैकपिजान्योजैसेदूधकेजरेतेछांछफूंकफूंकपीजियेश्४०

अंगद उवाच ।

कवित्त–सीताजबहरीबुरोकीनोतिहघरीऐसीकबहूं
नकाहूकरीजैसीकरसोयगो । तापरनकुसरातऔरसुनो
उतपातहनूमानआयोवहसमुझायरोयगो ॥ होंकहोंउ
पायवहकोहैलंकरायताहिदेहुदिखरायदुखकालजाहिपो
यगो । देखोहायहायताकीकैसीपतजायभाईरामनाम
दीपकपतंगपरोहोयगो ॥ ४१ ॥

रावण उवाच ।

स०-जादिनतेगरफांसपरीकपितादिनतेमुखआजदिखायो।
जाहुहनूपतराखतहोंअबलोंहियरोषनहींउपजायो ॥
रामहिशोधकहोसियकोअरुक्रोधबढ़ायजुवैरबढ़ायो ।
जोबलतौनविलंबकरोसुनदंभविनारणखंभगडायो॥४२

अंगदउवाच ।

कवित्त–अंगदविहँसकहीबातसुनराजामीचआपनी
बताईउनतैसोफलपायोहै । ब्रह्मफांसपरीमारखाईपूंछ

जरीयहबातसुनबांदरनमुँहनलगायोहै ॥ वाके परपंचपररंचकतोहँसेरामलाजगातपरीफिरसभामेंनमा योहै । लंकशंकमच्छअच्छवारसागतोऱ्योजिन हनूवहीऔरयहऔरकपीआयोहै ॥ ४३ ॥ एकदूत आयोकहेसुनेहोंपठायोरामलंकाजारगयोतातेकपिनाखि सायोहै । छलनासोकीजेभुजवलनवसायरंककहालंक पतिजासोंपाखंडचलायोहै ॥ वाकीऐसीगतिजाकेडर तुमेहैनमतिहनूमानलैलैनाममोहूकोबुलायोहै । जीयमें विचारमोहिंनीकेकैनिहारबूझअंगदतूरामचंद्रकाहेकोप ठायोहै ॥ ४४ ॥

रावण उवाच ।

दोहा ।

रावणजियसमझीतबै, सबचंचलकपिजात।
पैयाकीकछुबातते, छतियांअधिकासिरात॥

सोरठा–छांड्योकोपस्वभाउ, बैठाऱ्योतबसभामें ।
कहुमोसोंसतभाउ, रामचंद्रलछमनकहां ॥ ४६ ॥

अंगद उवाच ।

सोरठा–सुनतहँकियोप्रणाम, राजातेसुखधन्यहै ।
जिहतेलछमनराम, निकसतचौदहलोकपति॥४७॥
ज्ञानकथा विस्तार, जलथलघटघटरामहैं ॥
उतरेजलनिधिपार, अरुतुमसोंहँसयोंकही ॥ ४८ ॥

कवित्त–अंगदप्रवीनबुधपौरुषनहीनतबमेरेपाछेह रीवोहकवितसुनायोहै । पाछेकहीबातराजाबडोउतपा तकीनोरामचंद्रजूसोंवैरमनतेबढायोहै ॥ याहीमेंसमुझ तैंतो रेखन मिटायसकी ताकोएकदूतफांदनीरनिधिआ योहै । औरजोकदाचिरुद्रहूकोअभिमानहैतोरुद्रहूकोबू झरुद्रकौनकोबनायोहै ॥ ४९ ॥

रावण उवाच ।

दोहा ।

लंकापतिजियमेंकहै, रिसकीनेउतपात ।
बिनबोलेछतियांजरे, उरगछछूंदरबात ५०

सोरठा–तबबोल्योलंकेश, जोरघुवीरमहाबली ॥
असतकरोकपिभेश, विनायुद्धसीतानहीं ॥ ५१ ॥

कवित्त–चातुरकहावतहैं बानरपठावतहैं मेरीजान कीकोएईअबतौलैजायगो ॥ जानतहोंसबनकोकालनि जकान्योइततबहींरहेगोजबभलीमारखायगो ॥ माते गजराजनकेकुंभनविदारजैवैलोहूसोंमिलायमोतीकेहरि चबायगो । तिनहीकीदाँउनकोमासलीयोचाहेकपिऐसो रामचंद्रआयलंकपछतायगो ॥ ५२ ॥

अंगद उवाच ।

कवित्त–कौनशिषदीनीतेरीदेखीमतिहीनी जाते ऐ सीबातकीनीभाईसुखकीतोहानकी । सूरशशिसेवैंपौर

आवतविरंचिदौरऔरपुरहूतकेनरहीबातमानकी ॥ देखतसमाजऐसोआजहूंनकालमूढअजोंचेतचालबातयहैहैसयानकी । जानकीनबाततैसीजानकीनलागीहाथजानकीलैआयोसोईजानीबातजानकी ॥ ९३ ॥

रावण उवाच ।

कवित्त–अंगदतूकाकोसुतनीकेसमुझायमोहिंबालीबलबंडजीकोएकलोतोतातहै । कौनबालीकहोक्योंनओरसोतोकहोपरतोसोंकहेताकेगुणउलटोलजातहै ॥ सांचकैलजान्योकह्योजान्योवहजीवतहैकैसेजियेरामकोपकौनकोनपातहै । तैनवैरलियोआनमिलेईतेजियोआगेतेरोवैरमेघनादलियेनपरातहै ॥ ९४ ॥

सवैया–बालीकीदेहबुढानीहुतीअरुतापररामकियोछलमान्योहोंबलबंडबडोजगमेंविपरीतबडीवहकाहेतेहान्यो ॥ कैवहझूंठकिमेरेईलोगनमोसोंपुरातनवैरविचान्यो ॥ जानीनजायकछूशिवकीगतिकंटकहोसुखसे विधिटान्यो

अंगद उवाच ।

कवित्त–रामहीकेकोपहरनाकसकीघटीओपऔराहिरनाक्षहूकीदयोजरतेलहै । रामहीकेकोपमधुकैटभसँहारेअरिताहीतेविगूचेबलरामसोंनमेलहै ॥ रामहीकेकोपमृगमान्योनाककाटी अरु खरदूषणादिकेलगायोछातीशेलहै । ताहीगिनतीमेंमृगराजशाखामृगमान्योरामकोपमेरेजानेतोकोहांसीखेलहै ॥ ९६ ॥

रावण उवाच ॥

कवित्त–जान्योहमनिराधारअंगदतुही विचारबाप जिनमान्योताकीयोंबडाईकीजिये । अंशपुरहूतहूकेकौ नेहेकुसूतजिनसुनकेकुपूतनाकोदूतह्वैकेजीजिये । सत कोनछाँडअजहूँलों रणमाँडतासोंमेरीओरह्वैकेसेनासंग सबलीजिये । बनीहैरेबातनेकबातहूकेमानेनिजतात वैरलेकेयशसुधाक्योंनपीजिये ॥ ५७ ॥ औरजो गिनाएजतेऐसेकीटभयेकेतेतेरेमिलेलंकापतिकबहूँनहा रहै । वैरीतृणदलताकोरावणअनलअरुतोसमीरपाए तेघनेईघरजारहै ॥ भटहैकिभाटहैबढावतहैरामयश सोऊहममानीकहामोहूंआनमारहै । जोवयारवेगसोंनिब हतेचल्योतौतबरूखनगीरायहैनगिरिकोउपारहै ।५८॥

अंगद उवाच ।

कवित्त–हँस्योमुसकान्योतेरो पौरुष तो जान्योतब बोल्योसुनबोलेबिनहीयरोजरतहै । बापतेनबलीहोन सिंधुतेअचलरामतेऊमान्योबांध्योतैंतोसुनेनडरतहै ॥ होंतोसमुझायवेकेकाजतोपैआयोअंधतूतोमोहे पंचनते न्यारोईकरतहै । मानतनबाततोहिंभयोसान्निपात मूढ आपतोबचतनाहींमोहूँलैमरतहै ॥ ५९ ॥ मोहिं दल देतहैसुतेरोकहाहेतहैतूतीनलोकलैकेसंगक्योंनसमुहा तहै । घरमेंविराजतहैबादरज्योंगाजतहैतौलोंजौलोंल

आवतविरंचिदौरऔरपुरहूतकेनरहीबातमानकी ॥ दे
खतसमाजऐसोआजहूंनकालमूढअजोंचेतचालबातयहै
हैसयानकी । जानकीनबाततैसीजानकीनलागीहाथजा
नकीलैआयोसोईजानीबातजानकी ॥ ९३ ॥

रावण उवाच ।

कवित्त-अंगदतूकाकोसुतनीकेसमुझायमोहिंबाली
बलबंडजीकोएकलोतोतातहै । कौनबालीकहोक्योंन
ओरसोतोकहोपरतोसोंकहेताकेगुणउलटोलजातहै ॥
सांचकैलजान्योकह्योजान्योवहजीवतहैकैसेजियेरामको
पकौनकोनपातहै । तैनवैरलियोआनमिलेईतेजियोआ
गेतेरोवैरमेघनादलियेनपरातहै ॥ ९४ ॥
सवैया-बालीकीदेहबुढानीहुतीअरुतापररामकियोछलमान्यो
होंबलबंडबडोजगमेंविपरीतबडीवहकाहेतेहान्यो ॥
कैवहझूंठकिमेरेईलोगनमोसोंपुरातनवैरविचान्यो ॥
जानीनजायकछूशिवकीगतिकंटकहोसुखसे विधिटान्यो

अंगद उवाच ।

कवित्त-रामहीकेकोपहरनाकसकीघटीओपऔराहि
रनाक्षहूकीदयोजरतेलहै । रामहीकेकोपमधुकैटभसँहा
रेअरिताहीतेबिगूचेबलरामसोंनमेलहै ॥ रामहीकेकोप
मृगमान्योनाककाटी अरु खरदूषणादिकेलगायोछाती
शेलहै । ताहीगिनतीमेंमृगराजशाखामृगमान्योराम
कोपमेरेजानेताकोहांसीखेलहै ॥ ९६ ॥

रावण उवाच ॥

कवित्त-जान्योहमनिराधारअंगदतुही विचारबाप जिनमान्योताकीयोंबडाईकीजिये । अंशपुरहूतहूकेको नेहेकुसूतजिनसुनकेकुपूतनाकोदूतह्वैकैजीजिये । सत कोनछाँडअजहूँलों रणमाँडतासोंमेरीओरह्वैकैसेनासंग सबलीजिये । बनीहैरेबातनेकबातहूकेमानेनिज तात वैरलेकेयशसुधाक्योंनपीजिये ॥ ५७ ॥ औरजो गिनाएजतेऐसेकीटभयेकेतेतेरेमिलेलंकापतिकबहूँनहा रहै । वैरीतृणदलताकोरावणअनलअरुतोसमीरपाए तेघनेईघरजारहै ॥ भटहैकिभाटहैबढावतहैरामयश सोऊहममानीकहामोहूंआनमारहै । जोबयारबेगसोंनिब हतेचल्योतौतबरूखनगीरायहैनगिरिकोउपारहै ।५८॥

अंगद उवाच ।

कवित्त-हँस्योमुसकान्योतेरो पौरुष तो जान्योतब बोल्योसुनबोलेबिनहीयरोजरतहै । बापतेनबलीहोन सिंधुतेअचलरामतेऊमान्योबांध्योतेंतोसुनेनडरतहै ॥ होंतोसमुझायबेकेकाजतोपैआयोअंधतूतामोहे पंचनते न्यारोईकरतहै । मानतनबाततोहिंभयोसान्निपात मूढ आपतोबचतनाहींमोहूंलैमरतहै ॥ ५९ ॥ मोहिं दल देतहैसुतेरोकहाहेतहैतूतीनलोकलैकेसंगक्योंनसमुहा तहै । घरमेंविराजतहैबादरज्योंगाजतहैतौलोंजौलोंल

छमणबाणकोनपातहै ॥ हनूमानहूकेआएसातोंभूलीहु तीअबसोंकुभूलजैहैकोऊऐसेइतरातहै । छाँडबकवाद याहिमतकप्रसादतूतोन्याइदेशदेश ठौर ठौर बांध्योजा तहै ॥ ६० ॥

रावण उवाच ।

कवित्त—कंटकअलापीकपिबालीवंशघातीतीनोलो कमाहींऐसोकौनमोहिंगहिबांधहै । जाकेबलकूदतहैसोई रामचंद्ररणआयमोहिंदेखकेसुकेसेबाणसाधहै ॥ एकही प्रहारसिंधुधारमेंलैबोरोंकापिकियापैहैआपनोजोमोसोंवै रनाधहै । दानवऔदेवसबकरेंजाकीसेवसोईरावणति हारेजैबेकौननमेंरांधहै ॥ ६१ ॥

दोहा ।

जबरावणऐसेकह्यो, मोहिंनबांधेकोय ॥
तबअंगदहँसहँसपरे, रामकरेसुइहोय ॥६२॥

अंगद उवाच ।

सोरठा—वहेसुनाऊंआज, जेजेरावणमैंसुने ॥
रामचंद्रकेकाज, फिरबोलपूरोकरे ॥ ६३ ॥

कवित्त—एककोसहस्रबाहुबांधलैगयोअवासऐसो त्रा सदीनोतोहिंकैसेकैसुनाइये । दूसरेकोराजाबलिबांधलेग योपतालदासनकेआगेनाचेजोततबपाइये ॥ तीसरेको बालीमेरोपितामेरेकाजलायोछौनालेखिलौनाबांधपाल

नेझुलाइये। रावणसुनेअनेकतिनमेंतूकौनएकगरबकीटे
कमेरआगेनजनाइये ॥ ६४ ॥

रावण उवाच।

कवित्त–भाईकुंभकानसन्मानजाकोकरेविधिबलको
प्रमाणताकोकैसेउरआनिये। पूतमेघनादजिनइन्द्रआदि
जीतेसबऔरनको बूझदेखकैसेकैबखानिये॥ धारतरवार
कीनवज्रपेसमारीजायएसोचन्द्र हासजाकोतेजनभमानि
ये ॥ ऐसोराजारावणकोतूनपहँचानतहैआजजाकोपौरु
षत्रिलोकीमाहिंजानिये ॥ ६५ ॥ इन्द्रमेरेमालीअं
शुमालीदरबारपालीतारापतिछत्रहाथलियेइरहतहै ।
वरुणसमीरमेरोमंदिर बुहारतहैनीरअँचवतपाछेजगमेंब
हतहैं ॥ पाककरेपावकप्रवीणवीणलीणऋषि नारद
औवाकपतिसभामेंरहतहैं । सुनोरामदूतघरएतीहैविभू
तमेरेरावणसुपूतविधिआपनकहतहैं ॥ ६६ ॥

अंगद उवाच।

कवित्त–जेतीहैविभूतिकही सबैअंगसबै सही औरके
प्रतापकीचलायसकेबातको। दानसनमानभुजपौरुषप्र
मानशूरऔरबलकौनगिनेतेरेबडेभ्रातको॥ राक्षससहाय
कहोसबैशूरनायकहोदेवन बिगारेतासों मानसकीजात
को। रावणप्रवीनपरएकमतिहीनतेरोराजरामचंद्रबिन
जैसेचंद्रप्रातको ॥ ६७ ॥

रावण उवाच ।

स०-देवनकोपतिताहूकोहोंपतिवैरीअँधेरनकोदिनसों ।
कपितूजुकियेमुहिं डारतहैलघुमानतहैजियमेंतिनसों ॥
अबजौलगतोहिंनमारतहोंतबलोंछातियांपरहैरिससों ।
शठरामकेदूतनयोंरिसआवतमारप्रलैकरोंजीबिनसों ६८

अंगद उवाच ।

कवित्त—जानकीलैचलहौतौसदाफूलफलहौतौहाथ तेरोगाहिरघुनाथसोंमिलाइहों ।पाइनलगायअपराधहूछि मायऔरसीतापैकहाथगढलंकहूदिवाइहों ॥ जोपैरणबा ततौनदेखेकुसराततेरोएकरामविनामासगीधनखवाइहों सुनोबीसडीठतुहिदुहूभांतिडीठहोहींअंगदवसीठभूमि पीठपैलुटाइहों ॥ ६९ ॥

रावण उवाच ।

स०—शीशगयेकपिसीनकरोंअरुलंकगयेऊकलंकसहोंरे
गांवजरोअबहींउजरोअरुरामविभूतहुआनगहोंरे ॥
वीरविभीषणकोवरुसीएईबोलसुनायकेलोकदहोंरे ।
अंगदपैअबजानकीलैप्रभुचूकपरीमुखतेनकहोंरे ॥७०॥

अंगद उवाच ।

स०-रामकेदेखतज्योंसियकीपरछांहीकोलैचलतौबलतोरे
जौछलकेनहिंरेखमिटावततौहमजानततोहिंनबौरे ।

चेतअजौंचितमेंशठरावणपावनरामकृपालअजोंरे ।
दोमेंएककरोनिरधारतौंकैसियदेहुकैशीशदशोंरे ॥७१॥

रावण उवाच ।

कवित्त–वाहनसेमतबीसवाहनसमेतबीसएतोबीस वाहनदुवाहनसमानकी। वाकेसंगवानरहैं मेरे संगबान रहैंवानरकीचमूवशकरोंएकबानकी ॥ वाकेसंगलछ मनमेरेकोटलछमनतीनतीनलोककीनकानकरोंआन की । देहदेउँजानकीऔगेहदेउँजानकीहैमेरीमतजा नकीनजानदेऊँजानकी ॥ ७२ ॥ हनूमानआयो तिनऐसोनखिझायोमोहिंबांदरकेमारमेरोपौरुषपरात है । लंकाउनजारीयहछातीकोजरावतहैक्रोधकियेक्रो धसीरेभयेसीयरातहै ॥ सीतातुमभीखसीजुमांगत होबारबारमैंहूंभीखपाईरंकरंककेनजातहै । बलहैतौआ जकरेसूधेरणआइलरेकायर ज्यों राम तेरो काहे बिललात है ॥ ७३ ॥

अंगद उवाच ।

कवित्त–अरेलंकपती मूढमती बिनारतीअवसतीको सोडाडसुतूकाहेकोकरतहै । घरबैठेआयोरामसीयदेसं वारकामबिनआईलैबुराईकाहेकोमरतहै ॥ पापकरमारे पाछेसमुझेसमारेप्रभुतेतेसबतारे कह्योकाननधरतहैकौ तुकदिखाऊंचलपाथरपयोनिधिमें पाथरोतरत आजतू

क्यौंनतरतहै ॥ ७४॥ परेरणगाढरुद्रहोयगोनआडेजोतू ठाडोहैबजायढोललाखकपुकारहै।विनाजानेतैंतोरामचं द्रसोंबिगारीअबजायमिलरामचंद्रतोसोंनाबिगारहै॥ बाप केसँहारेहोंचरणजायलाग्योदीनोराजमोहिंकह्योराममि लेईतेहारहै। हनूबिनमोबिनजोऐहेकोऊऔरकपिप्रभुके विनाहीकहेतोहिंमारडारहै ॥ ७५॥ जौलोंरघुनाथजूके नीकेनविलोक्योमुखतौहीलोंनपाइनसोंप्रीतिजोरियतहै कोटिशशिकोटिरविकोटिमैलरामकविकोटिकामछवि चुटकीमेंचोरियतहै । सदाहीहँसोहैनैननिपटेलजोहैमैन मोहेंभौहेंभृंगपातमानोमोरियतहै।देखरूपआपनेतूमन कोकहेगोधिगवैसीसियऐसीपिययोंबिछोरियतहै॥७६॥

रावण उवाच ।

कवित्त—ऐसोतेरोरामहै तो आय गढलंकवसेहँसेखेले वैरतजेहोंहूंनलरतहों । मोसेजिनडरेएकद्वीपदेऊंराज करेसीताविनाताकेव्याहबीसनकरतहों ॥ मोपरपला नतहैबलकोनजानतहैअंगदविनाहीआगयाहीतेजरत हों । रुद्रपरवारसोंपहारकोउचारवारभूमितेउठायाफिर भूमिमेंधरतहों ॥ ७७ ॥

अंगद उवाच ।

स०—रावणराजसमाजरहैघरश्रीरघुवीरहैंसीयदियेते । औरबडोयशहैअबलोंविपरीतवडीशिरवैरलियेते ॥

जानतहोंजुवसेढिगहीसुरलोकवस्योपितुवैरकियेते ।
जोजगमेंअपकीरतहैशठमीचभलीइहिभांतिजियेते७८

रावण उवाच ।

कवित्त--तेरो प्रभुलङ्कजो निशंक चल्योआवतहैकौ
नकाजआयोकिधौंकाहूकछूहन्योहै । सिंधुकोपटावतहै
बांदरपठावतहैसोतोकपिबालकनखेलवेकोकन्योहै॥ मे
रोनामजानतकिनाहीं कपि कहो क्यों न जानतक्योंना
हींकछूनयोनामपन्योहै । लंकापतिरावणकहतहै क्यों
यहैझूंठअवतीनोलोकमेंविभीषणकोधन्योहै ॥ ७९ ॥

अंगद उवच ।

स०-लैचलजानकीहोंहुंचलोंसँगरावणआजलोंरंगरह्योहै
नातरमूढगिरेईसेदेखतमूढनसोंकहावैरपन्योहै ॥
रामकोदूतपैतोहूकोचाहतसोईमेंमूढकलंकसह्योहै ।
मेरेपिताकोतूहैयशजीवततातेमेंतोसोंपुकारकह्योहै ॥

कवित्त-मेरेबलमाहिंकछुतोहकोहैभ्रमसुनबानरअ
धमसबमेरेईअधीनहै । कालगजव्यालवेदसालनव्याल
खातसूरजतपतमंदमंदबलछीनहै॥आठोलोकपालनकी
सदाईमुकटमालसेवतचरणधूरत्रासपुरतीनहै॥लाजवेंच
खाईदेतबानरपठाईवाकीबडीजडताईकापिलेखेपरवीनहै ॥

अंगद उवाच-दोहा ।

कहतबडाईआपनी,तोहिन होतगलान ॥
अपनीअपनीहीकहे,रावणउलटीजान ८२॥

सोरठा-अंगदजीरिसमार, बहुतकहीलंकापती ॥
बहुरोरामसँभार, कोपनैनहँसयोंकहे ॥ ८३ ॥

कवित्त-रामकोतोरह्योबललछमनहूसों दलएकप्रभु बाणकोसुभावऐसोपऱ्योहै।ताडुकानिपातीताकेश्रोणित मेंन्हायलीनोमारमृगकंचनकोमानोजयकऱ्योहै ॥शूर्पण खाहूकीनाककाटकीनोअपोशानमारखरदूषणअघायपे टभऱ्योहै । आचमनसिंधुसेतपीवेकोजुनीरलेतकहतमँ दोदरीकेनैननमेंघऱ्योहै ॥ ८४ ॥

रावण उवाच ।

कवित्त-रावणकहतसुनकंटकअलापीतोहिंदूतजानि छांडतहोंमारिबोनकह्योहै।नातोभुजदंडबलखंडखंडकी नोहुतोजाहिप्राणलैकेअजहूंलेरंगरह्योहै॥अंगदपठायोमे रेमारबेकोज्ञानकाढ्योसीताकेहरतनेकज्ञानकोनगह्योहै बैठेघरगाजतहै बोलतनलाजतहैरामकोपआगेकौनका लधारबह्योहै ॥ ८५ ॥

अंगद उवाच ।

कवित्त-जलमेंसमररचमहाघमसानकीनो मारमधु कैटभसेखेहमेरलायेहैं । बहुरो किलालबैठमाऱ्योजिनशं खासुरतातेवेदआनकेविधाताकोदिवायेहैं ॥ जायके पताल जिन मुरसमरोरमारे याही ते मुरारीनामजगमेंक हायेहैं। नखनसोंफारेहरनाकससेतैंनसुनेऐसेबहेमारकाल धारमेंबहायेहैं ॥ ८६ ॥

रावण उवाच ।

कवित्त—तेरेवनवासीरामकहाहैकरतकाम वैरिनको मारतहैसदा यहबानहै ।कौनमारेतैनसुनेशाखामृगराज बालीकौनजानेकपिनसोंकाकीपहँचानहै ॥ अंगदकह तराजाबालिबलीऐसोजबतूनजानेबालिबलऔरकौनजा नहै॥ होंतोहुतोछौनामेरोकीनोहैखिलौनाजिनताकोबि सरायोतोहिंनेकनगलानहै ॥ ८७ ॥ अंगदसुनायमोह पिताकीहैसोंह तोह रामचंद्र केतेकपिकीनेइकठौरहैं । तामेकेतेबूढेकेतेबालकतरुणकेतेतामेकेतेशूरकेतेतामे शिरमौरहैं ॥ तामेकेतेसिंधुकेफँदैयाकेतेहैंतरैयातामेके तरणभूमिदेखयुद्धदौरहैं ।कहोअनुमानयहांआयोहनु मानसुतोवैसोवहेअहेकिधौंपांचसातऔरहैं ॥ ८८ ॥

अंगद उवाच ।

कवित्त—जेहीहनूमानवनतोरतरवासोकियोमारझ कझोररंकलंककीसीनगरी । जेहीहनूमानअच्छमारसब केसपक्षलक्षलक्षरक्षनकेभरगिरदगरी ॥ सोहीहनूमा नसुतभानुकेकटकमाहिंभटनगनतकोऊकपिसेनसगरी रामकीरजाइसतेपाइयशऔपरमपदभयोप्रतिहारचह्यो लंकनगरी ॥ ८९ ॥

रावण उवाच ।

कवित्त—एकबारहूकेतेरेरामहूकोपाऊंकपिनकिसमु

झाऊंबातवैरकीनदुरीहै। समुँदपटावतहैबांदरपठावतहै शोरहीमचावतहैकौनबातफुरीहै ॥ अंगदहमारीप्रीति मानससोंऐसीजैसीकांकरीकीसानविनपैनीधारछुरीहै । तातेमेरेवचनसुनायडरपायकहसीताकीसहलधनरावण कीबुरीहै ॥ १० ॥

अंगद उवाच ।

कवित्त–रामचंद्रजीसोंजैसेमानसकहततैसेगंगाको कहेगोनदीरंभातियजानहै । ऐसेऐरापतिहूकोवारणकहे गोअरिमेरेजानेमध्यदेशदेशनमेंमानहै ॥ कालहीकहेगो तुसुमेरुभूधरहैऔरवासुकीभुजंगध्रुवताराकरठानहै । वेदविनबूझेतूधनंतरकहेगोजैसेतैसेहरिलोकसातलोकमें वखानहै ॥ ११ ॥

स०–जेनिजबूड़तहैंसवदेशनऔरछुवेतिनसंगबुड़ाहीं ।
तेईतोपाथरसिंधुतरेतिनऊपरकोटनकोटतराहीं ॥
मूढपषानाशिलासरितापतिवानरहाथनकोगुणनाहीं ।
रे दशकंध न सूझत तोहिं यहेरघुनाथप्रतापकीछाहीं१२

रावण उवाच ।

कवित्त–सीताकेविहारेरतीराममेंनरह्योबलदूजेलछ मनमेघनादतेक्योंजीतहै । कपिनकोराजाएकसुन्योहैसु ग्रीवसुतोवालीऐसोमाऱ्योजुरगएतेअनीतहै ॥ गयोजो विभीषणसुकौनगिनतीमेंनलनीलरणपौरुषकीकौनपर

तीतहै । हनूमानबांधमाऱ्योअंगदतिहारोनीकेसोहूकौ नमारैहैजुबडीविपरीतहै ॥ ९३ ॥

अंगद उवाच ।

कवित्त–आजहूलोंक्रोधतजप्रभुकेचरणभजयाहीते समुझतेरीवंशवेलफलीहै। रावणविभूतिकेभरोसेजिनभू लोआजयहेछलजातनहिंकाहूयहेछलीहै ॥तूतोहैबकत ऐसोमोहिंकौनमारसकेकोहैरेअमरअरुआईसुधभलीहै । ऐसोकोजुतोतेहारेरामकीबलाईमारेतेरेमारबेकोतेरोपा पमहाबलीहै ॥ ९४ ॥

रावण उवाच ।

कवित्त–रावणकहतमैंतोरामबलजान्योएकजाजरो पुरानोशिवधनुषचढायोहै। दूसरेहुसप्ततालछेदेहैंजुकर्म कालक्योंहूवनगईबूढोशाखामृगधायोहै ॥लाखनानिहोरे करतेरेमेरेपाँयपरलैलैकपिरीछनीरवारिधिपटायोहै । अंगदविकलवाकेएईचारोंबलताकेआएलंकचौगुनोचवा उतैचलायोहै ॥ ९५ ॥ औरएकपैंडेचलीजातीताडुका निपातीताकेमारेशूरनकोबडोउपहासहै । कंचनकेलो भमृगकंचनकोमाऱ्योमुनि यह कछूऔरकापिपौरुषवि श्वासहै ॥ मेरेभुजदंडकेप्रतापकोनजानेरामइंद्रयमवरु णकुवेरमानेत्रासहै । तापरतोलंककोनिशंकचल्योआ वतहैप्राणतेउदासपैनसीतातेउदासहै ॥ ९६ ॥

अंगद उवाच।

कवित्त—कौनवकवादकरेरावणमाऱ्योईमरेतातेकहे अंगदतूसावधानहूजियो । रामकेवचनतैंतोनेकनविचारेमनकोलोंसमझाऊंहौंनऐहोंवारदूजियो ॥ जातहोंपुकारेतैंतोदशोंशीशहारेअवतीनोलोकजोरभटकोटिशिवपूजियो । आनँदत्रिलोकछायोतोकोपरलोकभायोइहांपरलोकविनऔरनकछूजियो ॥ ९७ ॥

दोहा।

तबअंगदमनमेंकहे,करौंएकवलआज ॥
इतदानवदलपचरहे,उतप्रसन्नरघुराज ९८॥

सोरठा—तबकपिरोप्योपांव,प्रगटसभामेंयोंकह्यो ॥
सुनलंकाकेराव,हैजुउठाओशूरमा ॥ ९९ ॥

रावण उवाच।

सोरठा—कहेनिशाचरकोप,पकारिउपारोचरणको ॥
आजघटावोओप, जायकहोरघुनाथको॥१००
तबलागेदशशीस, कनकखंभचीठीमनो ॥
लंकापतिधुनशीश, कहेवहुतलागोसुभट१०१
तबघरमेंइतरात, अबसबवलफीकोपऱ्यो ॥
मनोबिलसोंपात, योंकांपैनिश्चरसबै ॥ २ ॥
जीतेसुभटविशाल, बच्योनकोऊलंकमें ॥
ज्योंसुमेरुउडमाल,मालफिरतचहुंअचलसों३॥

ज्यों श्रावण एँड़ात, भुजाठोंक सवशूरमा ॥
तेरो मन दवजात, ज्यों पंछी गिरिपरवसे ॥ ४ ॥
लगे चरण सवशूर, रघुपति चरणप्रतापसे ॥
रावणमरे विसूर, हनूमान पासँगनहीं ॥ ५ ॥

अंगद उवाच ।

सोरठा—तववोल्यो सुतवाल, वलदेख्यो कछुदूतको ॥
अजहूं मूढ सँभाल, चलहु शरण तृणदंतधर ॥६॥
गरेकुहारीवांध, जनकसुताआगेकरहु ॥
वैररामसोंनाथ, जवसेवकतेजीतियो ॥ ७ ॥
कागजचरणसमान, अक्षरसवदानोलगे ॥
कहोडड़ोंअसमान, कहोपखारोसिंधुमें ॥ ८ ॥
तिनसोंकैसीरीस, हैंपतिचौदहलोकके ॥
तेरघुपतिजगदीश, तूप्रतापजानेनहीं ॥ ९ ॥
रह्योलंकतेवास, जियरावणनिश्चैकरो ॥
रघुपतिचरणविलास, निरखगहोशिवलोकको ।
अवैउठावतपाँव, सुभटसवैतरहरकिये ॥
दूरकरोचितचाव, चिताचावमनमेंधरहु ॥ ११
तववोल्योयुवराज, ममचर्णनक्योंगहतहो ॥
चरणगहोरघुराज, जोचाहतसुखवंशको ॥१२॥
अंगदचरणउठाय, चमकचल्योरघुनाथपै ॥
डरपलंककोराय, सभाउठीमंदिरधँस्यो ॥१३॥
स०-वालकोपूतसुपूतवडोतजलंकवलीरघुवीरपैआयो ।

पांयछुएपुलकेसबगातकहीबातियांउत्साहबढायो ॥
नाथगिऱ्योनिजधामतेरावणब्रह्मसरापबडोदुखपायो ।
डारदियोतुमहींतबरावणआपनआनामिलेपहुंचायो १४
सोरठा–तबअंगदरणधीर, हाथजोरविनतीकरी ॥
सोकारियोरघुवीर, जोरावणपाछेकही ॥ १५ ॥

दोहा ।

यहविनतीरावणकरी, सोमैंकहासुनाय ॥
सुनतरामलोचनभरे, अंगदकंठलगाय ॥१६

कवित्त–शीशननिवाइहोंनरुद्रन भुलाइहोंनवैरीबल गाइहोघनेईसुरघाइहो।आइहोंनतुमपैनजानकीपठाइहों जुवाजीरणमांडवृंदबांदरनवाइहों ॥ तुमहिंबुलायए कएकबिचलाइकैजुमीजइहभांतिहैतऊनभरजाइहों । जेतेचढआएघरएकोनापठाइहोंतौताही दिनमहाराजरावणकहाइहों ॥ ११७ ॥ शीशदशजातहैंतोजाउएई कालवशअंगदयोंजायकहुक्रोधनघटाइहों । आजहीविभीषणकोदेहजीतलंकसोजुआयबसेऐसेऊकलंकनलजाइहौं ॥ शिवजोसहाइकरैंभलोनहींखरोभलोलेउबोलआपनोनदेइदुखपाइहों । रामचंद्रआयेतबडऱ्योसीयदीनीकपिताहीकीसभामेंऐसोनामनधराइहों ॥ १८ ॥
सोरठा–तियाकरैपरबोध, अरुमंत्रीसिखदेतहैं ॥
सबकेवचननिरोध रावणकछुमानेनहीं।११९।

इति श्रीरामगीतेरावणअंगदसंवादोनामअष्टमांकः ॥८ ॥

नवमांक ९

दोहा।

इतरघुपतिकपिकटकलै, लंकाकोसमुहात।
उतरावणरिसउमडमन, कंपतथरथरगात१

सोरठा—देखोकालप्रमान, असुरदेवसेवतचरण।
अबअंगदहनुमांन, मोहिंडरावतकामते ॥ २ ॥

कवित्त—एकदौरकरोंरौरमेरो भरकौरकपिएकवार सिंधुधारसबकोबहाइद्यों। औरजितीभूमिबेंढ़पऱ्योदल एककोकहोतोएकबाणतितीभूमिहूउडाइद्यों ॥ औरजि यआवतहैलोगनसमेतगढलंककको उपारउनऊपरचलाइ द्यों। छोरबंदसालतेनिहालकरतात्कालआबहमनऐसी हालकालहपठाइद्यों ॥ ३ ॥ रिसमेंजरोईजातओठनच बचबातचल्योरनवासकोजुहारसभाचलीहै । देवगएदे वलोकदानवभयेसुशोकआजमहाराजकी नदेखीधुनभ लीहै ॥ एककहेंहमतोपुकारशिरमाररहेकाहेकीभलाई लंककंचनकीजलीहै। सुन्योहमअंगदपुकारकह्योरावण सोंतोहिछलजैहैसीयमूढतैंनछलीहै ॥ ४ ॥ एकहाथधो पद्वैसोंकोपहजनावतहै एकतीयहाथपरठोंक्यो एकभा लसो। द्वैसोंशिववंदद्वैमरोरअंगराइयुगएककोउठायक ह्योमारोंरिसकालसो ॥ द्वैकमानबानतीनसोंत्रिलोकडा

टएकमूछनकोताउदेतलाग्योएकढालसो । ठौरठौरमू
कछविऐसीभांतिकछू निज मंदिरकोचल्योबाकीएकअ
च्छमालसो ॥ ५ ॥ अंगदखिझायोवकवादकौनकहसके
देववधूरहीचकचामरसहितहैं । एकफूलमालहाथएक
केगुलालकाहूदेतनजबावमानोबारेहुअदितहैं ॥ यक्षर
क्षकिन्नरभुजंगनकीबेटीसबहेटीमतभईआपआपकोच
कितहैं । चढेगढकहेरानीनीकेकैनिहारचलबांदरहैंआव
तकिबादरअमितहैं ॥ ६ ॥ देतकिलकारीसबहीतेडील
भारीयहहाथकोउठावेतौनदुर्योशशिभानहै । रातेविक
रालनैनकोपमानोऐनवैनअंगकीकठोरताकोमलपषा
नहै ॥ याहीकोतोअंगदकहतहोनरामाढिंगप्रगटेकहांते
रणयुद्धकोनिदानहै । याकोपहचानतहोलंकाजारीजा
नतहोअंजनीकोपूतबडीव्याधिहनूमानहै ॥ ७ ॥ देख
रानीताकेपाछेआवतजुगातआछेकांपेकह्यो जाययाकेब
लकोनपारहै । एकवारमेरेहाथलाग्योहोमैंछोडदियोता
कोकपिजानोजिनइन्द्रअवतारहै ॥ भाईदूरकीनोजिनदे
शराजलीनोसबनेकवैरकीनेयाकेवैरनउधारहै ।नामकपि
बालीजौनकालवशभयोतौतोतासुकोसुपूतवीरअंगदकु
मारहै ॥८॥ सबैअंगवडेकेशदीखियतरीछवेषयासोंलरवे
कोनदिनेशनअनंतहै । याकोकोपरानीरणभूमिकीबढा
वेओपऐसेअरिमारमानोखेलतवसंतहै ॥ शूरनकीभीर

परेऊधमभचावतहैदेखनकोऐसोमानोकोऊबडोसंतहै ।
वाकोबलवंतजाकोपाइयेनअन्तचतुराननकोअंशयश
वंतजामवंतहै ॥ ९ ॥ औरकपियूथनमैंद्वैजुचलेआवत
हैंवैरीवनदाहकोदवानलप्रबलहैं। औरनतेसुनेहैंसुतैसेही
मैंदेखेआजबडेडीलन्याइरणभूमिकोअचलहैं ॥ देखोच
हूंओरनतेऔरजेतेआवेंकपिमानोकविरामभादों बादल
केदलहैं । होंनपहँचानतहोंऐसेअनुमानतहोंअंगदकहे
हैंमोसोंएईनीलनलहैं ॥ १० ॥ बडोसन्मानयाकीकरें
सबकानअरिसबैकापिमंडलकोदखियतजीउहै। याकीदु
तिआगेछाविऔरनकीफीकीलागेदेखोकविराममानोपौ
रुषकीसीउहै ॥ याहीकेनिहोरेझूंठेसांचेराममारेबालीलो
गयोंकहततीयलैदईसुकीउहै। सुन्योजाकोनावमेरोदेश
देशगांवसबशाखामृगराउरविमूरतिसुग्रीउहै ॥ ११ ॥
छप्पय-शरदकमललोचनविशालअलिमालअलिकजन
सजलसघनघनद्युतिशरीरवनमालइन्द्रधन ॥
कोटिमदनछविरविप्रकाशलावण्यसुभगतन ।
भुवमंडलअवतंसचरणसेवतसुरमुनिजन ॥
आजानबाहुसारंगधर अधमउधारनविपतिहर ।
कविरामप्रगटरघुवंशमणि इहसीतापतिरामवर॥
तीरनवसभुजदंडप्रगटपौरुषप्रचंडअति ।
क्षितिमंडलब्रह्मंडचकितनवखंडशचीपति ॥

क्रोधअनलप्रज्वलतप्रबलजमदग्निसुभटसुव ।
करकुवंडसतखंडउमडघनवरखसुमतिभुव ॥
अतिरुंडमुंडकारणनृपतिकरमुसुंडकरवरहरन ।
कविरामकामपूरणसकलसुइसुइसुइरघुकुलभरन
कनकवरणछविमैननैनबिसियरजनसाइक ।
कमलवदनसुखसदनरदनद्युतिकंदपलाइक ॥
भृकुटिभ्रमरचंचलकपोलमृदुबोलअमृतसम ।
सुघटग्रीवरससीवकंठमुकताविघटततम ॥
यज्ञोपवीतकटिपटकलितरघुपतिअतिसेवानिपुन।
सोइजानसुमित्रासुतप्रगटसुकविरामप्रभुलच्छमन॥

कवित्त–मानोकनकाचलसोनीलगिरिचलोजातकि धौंघनघटाछटादामनीप्रकाशहै । किधौंयहपावसकीमावसमेपून्योतनाकिधौंगंगयमुनातरंगकेविलासहै ॥ किधौंदिनरैनआगेपाछेचलेआवतहैंकिधौंभृंगपुंजकंजमालज्योंसुवासहै । किधौंबडवानलसमुद्रइकठौरएसेरामचंद्रलछमनशोभाकेअबासहैं ॥ १८ ॥ एतेतोकहेविचार आएकपिवेशुमारपौरुषअपारकहांलोंगिनाऊंऔरके । दूनेक्योंनआवेशोरसौगुनोमचावेसुतोशिवकीदुहाईसब मेरीएकदौरके ॥ भीरकेपरेतेकुंभकानहेजगेहोंजायजाकोअच्छबानरापिटौराकौरकौरके । ताहूपरमेरेभुजदंड कीप्रचंडचोटलागफूटजैहैजैसेबासनबिलौरके ॥ १९ ॥

कौनेकपिराजनारगईतेनगईलाजताकोत्रासस्वासकैउ सासनउडाइहों । कहारंकनीलनलमारतनएकोप लहनूमानबाँध्योतैसोबहुरोबँधाइहों ॥ एकनकोसिंधुबो रएकनकीनारतोरएकनमरोरमूँड़कोटलैबनाइहों। डरो जिनएकदामकौनगिनतीमेंरामताकोभाईभाईसोंमिला यखायजाइहों ॥ १७ ॥ चहुंओरछेकछेकमारोरनएकए कबचहैनकोऊतबकौनकाकोरोइहै॥ श्रोणितमेंभलीभां तिभैरवहूवाऊंयूथयोगिनीअघाइकैपसारपायसोइहै ॥ मेरेबलआगेकौनकौनकीनगईपतिऔरचंद्रहासकौनकौ नकीनखोइहै । एतेपररामकरहैसुहैहैनाहींभलोभलो शिवजीकिरेगोसोईसोईहोइहै ॥ १८ ॥

कविकी उक्ति ।

सोरठा—यहहंकारप्रताप, अंतरमेलेरामसो ॥
कौनकरेतपजाप, नामलेतलज्जामरे ॥ १९ ॥

दोहा ।

जोकोउतुमसोयोंकहै, बिनबूझेयहबात ॥
रावणसबकोबलकह्यो,कौनहेतसकुचात२०
बैरीकोबलकहेते, सबैशूरताजात ॥
अबरावणलंकापती, कायरज्योंबिललात ॥
फिरपाछेनिन्देसबै, बहुरकहांयहहेत ॥

कैडरपैकैलरतहै, किधौंजानकीदेत ॥ २२ ॥
ताकोफिरसमुझाइओ, सुनोसंतमनलाय ॥
भलीप्रश्नतुमहूकरी, उत्तरसुनहुअघाय।२३
सोरठा—कीनोशापविनास, असुरजौनरावणपऱ्यो ॥
हुतोपुरातनदास, भक्तिभावमनमेंरहे ॥ २४ ॥
जोअपनोनहिंहोय, ताढिंगप्रभुआवेनहीं ॥
जोखेलतमेंगोय, बहकगएखैंचताफिरे ॥ २५ ॥
अरुप्रभुचरणप्रताप, दरशतहीमनाफिरगयो ॥
सुकोसँभारेआप, जलतरंगजलबिंबरवि॥२६॥
शिशिरहोतपतझार, आंबकटाहरएकसे ॥
राहवसंतनिहार, जगजानेमौरतप्रटग ॥ २७ ॥
लगीश्यामतारेख, बिनजानेमुखविशदको ॥
बहुरआरसीदेख, दूरकरेकैविशतरे ॥ २८ ॥
औरजुगतिसुनलेहु, तुमेसुनावतरामकवि ॥
कैफिरउत्तरदेहु, कैसमझोसुखपायके ॥२९॥
रामैरामपुकार, हनूमानअंगदकह्यो ॥
तबरावणरिसमार, रामचंद्रमनमेंधरे ॥ ३० ॥
प्रभुजानीविपरीत, मनमेंयोंरावणकहे ॥
कहायुद्धकीरीत, जबलगहोंमनमेंबसे ॥३१ ॥
देखतहीरघुराय, शशिदेखेजोमणिद्रवे ॥
सबहीकेगुणगाय रामनामरामहिमिल्यो॥३२॥

ज्योंकोकिलासुजान, काकवंशवासोंकियो ॥
बोलतकुलपहचान, रामनामऐसेगयो ॥ ३३ ॥
तबलगचमकतरेत, दिनकरकिरणप्रतापते ॥
जबअपनोबललेत, बहुरधूरकीधूरही ॥ ३४ ॥
तापाछेदशकंध, रिसबाढीभुजबलकहे ॥
भयोअंधकोअंध, ताहीतेनिंदाकर ॥ ३५ ॥

मंदोदरी उवाच–दोहा ।

तबबोलीमंदोदरी, चरणलगायोमाथ ॥
वचनयथारथमैंकहों, सुनहुलंककेनाथ ३६

सोरठा–विनायतनसोंहोय, जुकछुभागविधनालिख्यो ॥
ऐसोराजनखोय, सुरनरमुनिवंदतचरण ॥ ३७ ॥

कवित्त–कंचनकोगाउंतिहूँलोकनमेंनाउसदासुखहूं कीछांउहैनबोलपरपंचके । रुद्रसोतोऐसीरीतिजातेसुर लोकपतिखीजेडरजातबैठेआनँदभ्रमंचके ॥ मेघनादआ दिदेसहायकहैंसबैशूरपूरणभँडारमणिमानोगिरिकंचके। आजजोविभूतिघरमाहितेरेऐसीजैसीइंद्रनकुवेरकैनवरु णविरंचके ॥ ३८ ॥ चहूंओरसैनदीनऔरनारदूरकीननार कोनिवाइकहेविनतीकरतहों । एकबातमोहिंमांगीदीजे नविलंबकीजेकोऊदिनजीजजाततताहीकोअरतहों ॥ ऐसी कौनबाततताकोबेगक्योंनमांगोरानीमांगेजोनदेहुतातेमां गतडरतहों । राजक्योंनकरोकारियहैअनुसरैशिरजान कीनदैहोदेहुपाइनपरतहों ॥ ३९ ॥

रावण उवाच ।

स०-सोसियहैशिरकेसँगसुंदररावणऔरघुनाथयतीके ।
देहसँहारजुडारतहोंकपियूथरतीबिनएकरतीके ॥
रामकेजीततयोंभजहैंजैसेकौतुकदेखनहारसतीके ।
आपउमापतिबांधदियोसबपौरुषदेखहुलंकपतीके४०॥

मंदोदरी उवाच ।

स०-नाथयहैसबबातसहीपरसांचकहोजिहतेदुचिताई ।
जाकहुवेदपुरानकहेसोईयोंयहरामतोहैनभलाई ॥ जान
तहोंसुननारभलीविधकाहूकीवामनहैंडहकाई। एसबदं
तकथादईजोरकहोयहक्योंतसोंखाहुकमाई ॥ ४१ ॥

रावण उवाच ।

कवित्त—चारोंयुगजहींतीनरामसुनेसहीएसोकौनब
ड़ोतिनमेंजुमेरोबलटेकहै।एकतोपरशुरामदूजेबलरामए
कऔरसुनोकोऊआयोघनोघाउसेकहै ॥ मोंसोसुनप्रगट
विरंचिकह्योवीसवारतेरीओरतीनलोकमाहिंकौनदेकहै।
एकरामबीत्योएकह्वैहै एकछेकतहो राखेप्रणबोलेसुतो
रावणहीछेकहै ॥ ४२ ॥

मंदोदरी उवाच ।

स०-सोडरपीजदबातसुनीबिधआनबनीविधितूगहकायो
देवनकेपरपंचबडेजुछल्योतहँठौरकहूंनहिंपायो ॥
जोइहरामहेछेकतहोप्रभुताहीकेहातनक्योंनछिकायो ।

अंतकचौथेहँकारमैकैरिसछेकहैरावणक्योंगहआयो४३
कवित्त–सोईयहरामकामछांडआयो धाम जाकेना मबलछोकपालनिर्भयरहतहैं। सोईरामक्षीरसिंधुकेजगा यजायविधितुमसोंनकहेदेवतुमतेडरतहैं इनहींकेमारे मधुकैटभसिधारेआजहूँलोतियनैननतेझरनाझरतहैं । औरएकबडोहैसुभावनेकजायामिलोऔगुनोन्होततासों सौगुनोडरतहैं ॥ ४४ ॥

॥ रावण उवाच ॥

सवैया–रामकेदूततोबातकहीसुसहीअबआगेतमौनगहो तियहैविपरीतिकीबातसहीतबलंकदहीअबमोहिंदहो ॥ ढआनविभीषणराजकरेरघुवीरकेबाणनदेहसहो । तिनराजदियोनहिंसीयदईइकरावणकोयहबोलरहो ४५

मंदोदरी उवाच ।

स०-आपनेहाथनआपनेशीशउतारउमापतिरुद्ररिझाये तेपुनिआपनेहाथसुधारसुधारससानकबंधबनाये ॥ बातकहेबिनक्योंबनहैसुनमूढजोरामकेबाणगिराये । रुद्रकहासुनक्षुद्रतेमूढ़नरुद्रकेबापपैजायलगाये ॥४६॥

दोहा ।

कैमिलकरमेरोकह्यो,कैकरमेरोघात ॥
पाछेवचनसँभारियो,कहोंनिफोटकबात४७

सोरठा–तबहींलौंतोकान, जबलगजियजोखोंनहीं ॥
फिरकासोंपहचान, आयबनेजोप्राणसे ॥४८॥

दोहा ।

वेदपुराणस्मृतिसबै, बोलतवचनरसाल ॥
रामविमुखनरतेभले, सूकरश्वानशृगाल ॥
सोरठा–औरकहोंइकबात, राजाएसबहोयँगो ॥
ज्योंपैंतिउँउफनात, रामतेजतीक्षणलगे॥५०॥

स०-तूतोभयोचतुराननकेकुलपौरुषमेंनकहूंछीतिहै ।
सियदेहसुखीकरवंशबसैजोसहीशिवकेपदसोंरतिहै ॥
सुननातरेहैउत्पातबडोमोहिंजानतहोजियकीमतिहै ।
शठसोघरनीसरनीसरनीगढकीधरनीसबकांपतिहै ५१॥

कवित्त–बाततोबनी है भली आजजोगईहैचलीराम सोजुवैरयहबातजानीहानकी । सूखीबेलकालकीजोफूलिलागीकलीसुतोजादिनतेलंकजारीबातसोप्रमानकी॥ तोको निजलोकदेकेआपनोकुबोललैकेजानतहोबातक छूशिवकेसयानकी । गिरकेतरंगसोअनंगरिपुरुद्रतेरो सोईहैसमुद्रामनामलैहैजानकी ॥ ५२ ॥ बानरकेपूत मिलबडेअवधूतदेखछिनमेंकुसूतकरडाप्योहैसमुद्रको । हनूमानआयो तिनठाककेजरायोपुरवाकोकहेअंगदकी याहैकामक्षुद्रको ॥ रामचंद्रजूसोंसबहीकोबलफीकोजे सेवामनकेआगेवेदकोनसुनेशुद्रको । तेरजीअमनरहेप्र

गटपुराणकहेजैसेप्रभुतेरोरुद्रतैसेरामरुद्रको ॥५३॥ जै
सेभ्रमटारकेमिली विवेकवाणीतमतीनलोकमाहिंचंद्रचाँ
दनीनआनकी। अरुकुम्हलानीकुमुदिनीछविपाइशशि
शोककोनिवारफूलजातहैअचानकी ॥ जैसेबडेपापको
पछारेदौरवेदविधि जाय मिले तापसीको योगयज्ञदान
की। तैसोतोकुटुंबनसमेतपीसडारेकंतरामचंन्द्रजूसोंमि
लेजैसेयहजानकी ॥ ५४॥ जैसेपौनपानीमिलजातदान
दानीऐसोवानीकोतोसदानितकोप्रवीणतेकहै ॥ जैसेघ
टपूरणमेंपन्योप्रतिविंबरविफूटघेटमाहिंशठमूरनअनेक
है ॥जैसेरागतानमिलेवेदकोपुरानपढेसुकृतसोदानतोतु
रंगजलटेकहै । तैसेपियजानकीकेनाथरघुनाथतेरेवैसेच
न्द्रमौलपारवतीनाथएकहै ॥ ५५ ॥ कौलोंसमुझावेको
उखोएखिनमाहिदोऊलोकपरलोकगयोगयोशिवहैकहूं।
मैंहूसुनीगौरीवहह्वैरहीचकोरीरामचंद्र बिनतेरीओरदेख
खतननेकहूं ॥ आएरघुवीरमुहिंयहैबडीपीररणतासोंकै
सीजीतहोनजीतीसीयतेंकहूं । मेरोकह्योमानबातयहैसां
चीजानमूढजोनमानहैतोदुखपाइहैअनेकहूं॥५६॥लेआ
योचुरायसीयधन्योडरतेंनजीयरामचंद्रजूसोंऐसोदुखदी
जियतहे।तापरनिशंकपरयंकपौढेलंकपतिलैकलंकसूढ
एतोदिनजीजियतहै ॥ अजहूंहमारी मतिजानकीदेराख
पतिनारिहूकोकह्योकहींमानलीजियतहै। स्वामीदेखते

रीहामी शंकर न भरेआज औरे केभरोसेतूनहकमरियत है ॥ ५७ ॥ रणकीटँकोरगाजेदुंदुभीमेंमारूबाजेतेरेजी यऐसीरुद्रमेरीओरलरेगो । जैसेतुमदानवभएहोएकओर सबतैसेदेवएकहोतबीचकौनपरेगो ॥ बोलनगयेतेशिव कहेगोतूबडोपापीरामतेनडऱ्योतौतूमोतेकहाडरेगो ।दू रजाहनारनांगीबोलकीतोपीठलागीबेटासुररागीऐसोभा खफेरकरेगो॥५८तूटेदेतनवोनिधिमूठेईसमुक्तिविधिऐसो करुणाकीनिधिकोहैकहांपाइये । झूंठोसबतेरोहठदेवावि नाजैसेशठसोईरघुवीरनीलकंठकंठगाइये ॥ सिमरेजोए कवारताकोरामबारबारविसरेविसारेनाहींसोक्योंविसरा इये ।रघुकुलतिलकमिलकबलजाकीताकोकिलकीकिल ककैशरण क्यों न जाइये ॥ ५९ ॥

दोहा ।

पुनिबोलीमंदोदरी, सुनलेबातनिफोट ॥
श्रीरघुपतियशसोकहे,जाकीरसनाकोट ६०

सोरठा—मोमुखरसनाएक, गुणगावतसुमतीयके ॥
रघुपतिचरणअनेक, ताकोसाखभुजंगपति ६१
ज्योंखगगगनउडान,विनाअंतगिरभुअपरे ॥
तैसेमतिअनुमान,रघुपतियशवरणतसबै ॥६२
तोहिंनउपजतज्ञान,राजामोहिंप्रतापते ॥
अबनिश्चयजियजान,रामविमुखसुखतेरहे॥६३

महिमामहाअपार, जेघटमंदरभररहे ॥
धरेगंगकीधार, शिवअजहूं हैंध्यानमें ॥ ६४ ॥
कहवेकोवहनील, विनाअंतआकाशज्यों ॥
त्योंसीताकोशील, सातलोकऊपरसदा॥ ६५ ॥
स०-जानकीकेसततेधरिशेषरह्योक्षितिकोशिरभारनलागे
जानकीकेसततेशशिसूरफिरैंकनकाचलसोंअनुरागे ॥
जानकीकेसततेशिवसाधसमाधरहेअजहूंनहिंजागे ।
तासतदीपकीज्योतनिहारकैरावणरंगपतंगज्योंपागे६६
मेरुचलेध्रुवसोंक्षितिमंडलनीरवयारवहैप्रजरैरे ।
जोसियरोषधरेमनमेंफिरकेभ्रुकुटीतवकालमैरे ॥
जानकीशीलपतिव्रतकेशिवशक्रविरंचलेपाँइँपरैरे ।
तोहिंजोशापनदेतसुतोरघुनाथकेपाँइँनतेडरहैरे ॥६७॥
कवित्त-प्रभुतोवडो सुशीलताकेकालकीनढीलतेरो
डीलदेखवेकोकौतकसेरामहै ।लछमनक्रोधकरेसोईभौंह
देखडरेरुद्रआनबीचपरेताकोकौनकामहै ॥तेरोअपराध
सीयमानहूनलीनेयाते वैषमनकीनोयातेथांभ्योक्रोधधा
महै । ताकोशापजीजतहैजाकोनामलीजतहैरामतज
नीचकौनलेततेरोनामहै ॥ ६८ ॥

दोहा ।

कैतोवचनविचारपति, कैबूझोपरधान ॥
बिनआईमरजाइबो, कैधौंकौनसियान।६९।

सोरठा-सुनदेवनकीरीत, भीरपरेसेवतचरण ॥
जबदेखतविपरीत, फिरमारतसबासिमटके।७०।

देवा ऊचुः ।

कवित्त-ज्योंज्योंऐसीबातनमंदोदरीसँबोधेत्योंत्यों देवदुखपावेंकहेकैसेसमुझाइये । याकीबातमानेसियले केजाइमिलेयहऔरनाबिसारयाकोसौगुनवढाइये ॥ लाख पेचनसोकिहूंयोगहैवनायोविधहोतहैसुहानदेनफेरउर झाइये । कोऊयाहिजायसमुझावेरांडमौनभजतोकोऔ ररावणकीऔहैसोसुनाइये ॥ ७१ ॥

दोहा ।

मतिमानेयानारकी, देवमनावेदेव ॥
सीतासततेजाइगो, रावणकोअहमेव॥७२॥

सोरठा-निकलमहलतेआइ, सभामाहिंवैठतभयो ॥
मंत्रीचारबुलाइ, कौनकौनकविरामकह ॥७३॥
तियसमुझायोरोय, समुझैनहिंरावणविमुख ॥
रामकरेसोहोय,कहांरंककहांछत्रपति ॥७४ ॥

कवित्त-एकशुकताकोतुमव्यासमुतजानोजिनदैके वडोआदरमहोदरबुलायोहै । औरवीरुपांछजाकी सांछदीजेदेव गुरुताकीभुजगहकेवरावरवैठायोहै ॥ चौथेएकसारणसुमंत्रकोप्रवीणकह्योसबकोसुनायइहको

नकालआयोहै ॥ कोऊकहेरामभजकोऊकहेसीतात
जतुमहूंकहोतोकहाकरोंदुखपायोहै ॥ ७५ ॥

मंत्री उवाच ।

कवित्त—चारोंहाथजोरफिरतासोंकहे बात उठ जोक
होतोराजामतिएकहीदृढाइये।औरजोतिहारेमनरुचेन्यो
रन्योरव्हैकेजाइभलोहोइमंत्रसोईपैपकाइये ॥ एकबात
तोसोंहमसबैकहलेतवैरीछोटकरजानेतनजीतघरआइये
कैसेजैसेमहारुद्रवैरीतबकीनेक्षुद्रतऊसावधानसदाकहो
तासुनाइये ॥ ७६ ॥

रावण उवाच ।

दोहा ।

तबरावणफिरयोंकह्यो, कहोरुद्रकीबात ॥
जासुनकेमेरेसदा, लोचनश्रवणसुहात।७७।

मंत्री उवाच ।

सोरठा—चारोंकहताविचार, अरुनीकेकरजीतिये ॥
तऊननेकाविचार, शिवअजहूंदुचितोरहे॥७८॥
प्रलयकालकोहेत, ब्रह्मरुद्रमेंभेदनहिं ॥
सोतपधनहिंनिकेत, अरुदातारीझतसदा।७९।

कवित्त—देशनकोराजनहींराजकोसमाजनहीं खाता
सौकुनाजनहींब्याजनहींआवतो । कोऊबडोबापनाहीं
मंत्रिनकोजापनाहींहाथबाणचापनाहींखेपनचलावतो ॥

बलकीप्रतीतहैजुठौरठौरजीततऊवैरीते निचीतह्वैनआं
खनमिलावतो । तिनहीकेकाजमहाराज सुनतोसोंकहों
जैसेजैसेज्योंतनकोरुद्रहैबनावतो ॥ ८० ॥

सोरठा—जोघरमांहिसमाज, सोहमसबतुमसोंकहें ॥
अरुजानतमहराज, क्रियादानसेवानिपुण८१॥

कवित्त-राखहीकोढेरदेत औरनकोलाखताकीसाखको
पुराणवेदआजदीजियतहैं । आकपातखाकविषभांग
सोअघातदेतफलसिंधुतरुभिक्षामांगलीजियतहैं ॥वारन
कीमालगरेरुंडनकीमाल नेक गालके बजाएहालतालरी
झियतहैं ॥ बैलधनबौनाघरपातरीनदौनाजहांपन्नगके
छौनाकोबिछौनाकीजियतहै ॥ ८२ ॥ रुंडनकीमालश
शिभाललोचनकरालडौंरूमृगछालकटिकेहरकी खाल
है । नेकहीबजाएगालरीझजातखातकालविश्वप्रतिपाल
पुनकालहीकोकालहै ॥ रामसोंअभंजननिरंजनप्रसन्नमु
खगंजनअनंगअंधदीनकोदयालहै । तीनोलोकनाथभो
लानाथसुरसरीनाथपारवती प्राणनाथसबकोकृपालहै
॥ ८३ ॥ काहूकोनकरेजापताकोकोऊमानबापदाताता
वरसराखसदाशुभमातिहै । नेकहूकेरीझेरामनवोंनिधडा
रदेतमनकोविचारतेपुकारपहुँचतिहै ॥ भसमचढायेबांये
हाथसोडरांयेबैलदरशनपायेताकोगतिहीकीगतिहै । मूं
ड़गंगधरमाथेचंद्रमात्रिनैनधरकंठविषधरऐसोपारवती

पतिहै ॥ ८४ ॥ पाछेननिवायोनाथतुमकोतोभो लानाथभयोनसुकततातेजीसोंखीझियतहै । सुतोवा हीदोषहीतेपशुपंछीकीटक्रममानसको जनममरणदीजि यतहै ॥ रामअबपाँइनपरतमनमेंडरतयहएकनयोअप राधकीजियतहै । जनमनलैहैपगशीशनछुवैहैआगेदोऊ पापछमोतुकेकहेलीजियतहै ॥ ८५ ॥ यद्यपिमनोजैब रीडान्योकररावढरीतऊगिरजाईअरधंगहीअधीनहै । याहीतेसुधाकरकोमाथेपरदीनो धर कालकूटपचेकिनप चेकंठलीनहै ॥ प्रलैकालआगहूकोनैनकीनारामताको जटागंगराखवैरीजान्योंनहींहीलहै । ऐसेमहारुद्रजातेड रेंकालक्षुद्रसोईरसकोसमुद्रराजनीतिकोप्रवीनहै ॥८६॥

दोहा ।

जोवैरनतेडरपहीं, इन्द्रादिकसबदेव ॥
तौतुमसबविधहोबली, तऊतजोअहमेव ८७

सोरठा—मंत्रिनकीयहरीत, विनबूझेबोलेनहीं ॥
सुरगुरुबांधीनीत, मंत्रविफलतेहोतहैं ॥ ८८ ॥
रघुपतिमांडीरार, कपिदललैगढलंकपर ॥
तुमकोमंत्रविचार, समुझपरेपलखामुखी॥८९॥
जेप्रियवादीलोग, भीरपरेप्रभुसोंकहें ॥
अबतोकरलेभोग, कालशत्रुमरजाहिंगे॥९०॥
तिनकेवचनप्रमान, जेभूपतिमनमेंधरे ॥

तिनपरकालपलान,जगजीवननिजस्वपनज्यों।
कहेमंत्रविपरीत, मुखमीठेजियमेंडरे ॥
पितावंधुगुरुमीत, सुरगुरुकेमतमारिये ॥

रावण उवाच ।

दोहा ।

रावणतिनकेवचनसुन, बोल्योतबमुसकाय
लायकवैरीजानिये, तबकीजियेउपाय९३॥

कवित्त–कापरविचारोंमतरामकौनबलवंतऔरक
पियूथकोऊलाटकनजान्योहै । योगरूपराजनहींराज
कोसमाजनहींकौनजानेलंकापतिकहाकरमान्योहै ॥
शक्रनवदनचारीयाहीतेसकुचभारीकासोंजायलरोंमैंतो
ऐसोजीयआन्योहै । जैसेसिंहस्यारकोनपंडितगँवारको
पिपीलकाकोकाहुगजराजनपलान्योहै ॥ ९४ ॥

दोहा ।

तुमहमकोदोऊकही, रुचिअनरुचिकीधीर॥
जोमेरेमनरुचेगी, सोकरिहोंसुनवीर ॥९५॥

मंत्री उवाच ।

सोरठा–तबशुकमनहिंविचार, जबहियथारथकहतहों॥
तौयहडारेमार, पाछेकीपाछेलगी ॥ ९६ ॥

कवित्त–सुनोराजालंकपतिआजतेरीबातआतिकौन

सुरपतिधनपतिलोकपतिहै। बीसोभुजबलवंतदशोमुंड रुंडकरपूज्योपशुपतिऐसीतासोंआजरातिहै ॥ तीनोलोकचरणकमलतेरेसेवेंअरुसुरनकीपांतचेरीबोलकीबसतिहै। भलीकरीहरीसीयरामकोबिसारजीअबोल्योतबसाधुसाधुभलीतेरीमतिहै ॥ ९७ ॥

दोहा ।

जबशुककेवचननहँस्यो, दईबडाईताहि ॥
तबसारनमनमेंकहे,ह्यांतोऐसीआहि ॥९८॥

सोरठा—काहेकीकुसरात, ऐसेमंत्रसलाहिये ॥
परार्धीनकीबात, अरुप्रभुतजेअनीतहै ॥९९॥

कवित्त—तोबिनाश्रीलंकपतिचारोंयुगमूढमतिचींटीचतुराननलौंसदाआवागौनहै । सूरशशिसेवेंपौरबांध्योसुरराजदौरतेरेईअधीनकालनरपतिपौनहै ॥ कुंभसेकरनऐसेआपदाहरनवीरमेघनादसे सुपूततोहिंडरकौनहै । हँस्योतबसारनकोवारनानिवायदशन्यायतेरेआगेवाकपतिकीनोमौनहै ॥ १०० ॥

दोहा ।

कह्योमहोदरहालतें, मनमेंफूलतकूर ॥
जबैयथारथकहोंगो,तबकरहैचकचूर १०१॥

सोरठा—हमयाकेआधीन, श्रीरघुपतिजानतसबै ॥
ज्योंलकुटीतेदीन, कपिनाचेबैठेउठे ॥ २ ॥

कवित्त-राजातूबडोरसज्ञकीनेतैअनेकयज्ञताकोफ
लालग्योजोतूजानकीलैआयोहै । रामकेसुभावसबलो
गनमेंऐसोपऱ्योऔरकहोकहूंकाहूयातेदुखपायोहै ॥
औरजोत्रिलोकीरच्योचाहेतौतूरचेऔरतौहलौंनरचेजौ
लौंजीयमेंनआयोहै । काहेतेमहोदरनकहेमोसेऐसीबात
मंत्रीहैपुरानोऔरमेरोईबढायोहै ॥ १०३ ॥

दोहा ।

विरूपाक्षमनमेंकह्यो, निरखराजकीओर ॥
ठकुरसुहातीबिनकहे, मोपरपरेविचोर ॥४॥

सोरठा-कोटिकसहोअकाज, औरअबहिंशिरकाटियो॥
ताकीजननीलाज, रघुपतितजऔरैभजे ॥ ५ ॥

कवित्त-ऐसेतुमबलीभयेसातोंलोकछेदगयेबहुरोफि
रेतेअंतभूमिहूअधारहै । हालहमरामबलढांपेजैसेतूलआ
गप्रगटभयेतेकछुपाछेकोविचारहै ॥ बोल्योतासोंकोप
करक्योंरेविरूपाक्षआजमेरेजानेतूतोबडोबावरोगँवारहै।
एजोयोंकहतइन्हेसोंहदेकेबूझोराजाऔरकछूमंत्रहैकिय
हैमंत्रसारहै ॥ ६ ॥

रावण उवाच-दोहा ।

तबबोल्योसबसोंउलट, औरैकछूविचार ॥
विरूपाक्षयोंकहतहै, अबैकहोनिरधार॥ ७ ॥

मंत्री उवाच—दोहा ।

सुनबोलेतासोंसबै,हाथजोरशिरनाय ॥
महाराजजोजोकही,दोऊकहेसुनाय ॥ ८ ॥
सोरठा—तुमसबकेशिरमौर,एकपक्षविनतीकरे ॥
एकमंत्रहैऔर, आयसुबिनक्योंकहसके ॥ ९ ॥
दंभकाजकीपोट, जियमोरिसरावणकहे ॥
कौनवज्रकीचोट, मंत्रीसुरपतिमारहै ॥ १० ॥

रावण उवाच ।

सोरठा—जोकहहौसियदेह, तौहाँकह्योनमानहौं ॥
युद्धसामुहेलेह, तौएवचनप्रमानहै ॥ ११ ॥

दोहा ।

तबबोल्योलंकापती, कहोदूसरीबात ॥
तुममंत्रीमेरेसबै, रघुपतितेनडरात ॥ १२ ॥

मंत्री उवाच—दोहा ।

योंहीतेप्रभुताकहे,रावणकोयहहेत ॥
मृगहैताकोसिंहको, योंनाहिंजानतप्रेत॥१३॥
तबशुककोबोलतभये,सबके आगेधाय ॥
ज्योंतबतेप्रभुताकही,त्योंअबसांचसुनाय ॥
तबसारनकोशुककही, सुनमंत्रिनकेराय ॥
वारनलैतुमघरगये, मोंकोदेतझुकाय॥१५॥

पुनिशुकमनसमुझ्योतबै,जहांदिवसतहँरात
धरमकरतजोमारहै,यातेभलीनबात ॥१६॥

कवित्त—राजासुनठकुरसुहातीहमसबैकहीअबतोको वचनयथारथसुनाइये । रामकोपचींटीऔविरंचलों जुबघोकोऊऔरइनबीचप्राणकहांलोंबचाइये ॥ औरावि परीतअपराधबिनताकीतीयसूनेघरजाइछलबलकैचुरा इये । भावेमारडारमहाराजगजराजसुनमदकेभयेतेक होक्योंकरजगाइये ॥ १७ ॥

रावण उवाच ।

कवित्त—बोल्योतबलंकापतिक्योंरेकीटमूढमतिराम बलकहेअतिछातियांदहतहै । बीसभुजाशीशदशसुरासुर सबैवशउमापतिवशमेरेप्रीतिकोबहतहै ॥ देखसबहीकोए कमीचहूकोहोयडरसोतोकालक्योलेपाटबांध्योईरहतहै। सांचकेकहेतेराजाऐसोदुखलागतहैशुकतोकह्योहैअबसा रनकहतहै ॥ १८ ॥

मंत्री उवाच ।

कवित्त—नीतिकीसुनतबातकाहेकोरिसातप्रभुमंत्रसु नियेतेक्रोधमनमेंनधरिये ॥ औरसबबातनकोपाइनअ धीनरहेमत्रजबबूझ्योतबहमेंअनुसरिये ॥ शूरकोस्व भाउबिनायुद्धनकरेबखानकायरज्योंकहाघरबैठेशोचर रिये ॥ जौलौंसियघरमेंविराजमानमहाराजतौलौंलाख रुद्रकीसहाईहूतमारिये ॥ १९ ॥

रावण उवाच ।

कवित्त—सारनकोवारनादियेहैंसुतोफेरलेहुजानतहों पापीयहरामहीकीओरहै। काहेरेकुमतिसबमंत्रिनमेंनीच मतिआजसुरपातितेक्यारामचंद्रजोरहै ॥ ऐसीऐसीवात नकेहँसकेविषादकरेएतोकहेवज्रहूतेसुमनकठोरहै । बो ल्योविरुपाक्षराजाआछीवातऐसीबुरीतऊसुनलीजेआ जमंत्रकोनिचोरहै ॥ २० ॥

मंत्री उवाच ।

कवित्त-शूरजबकरेछलताहीघरीजायबलनातोरामवैर भयेकौनसीअनीतिहै।राजनकीरीतरणमांडेंअरिमारेंमरें हारेंपरलोकजाईयशजबजीतहै ॥ जहाँहैधरमबाततहां हैनपक्षपातमंत्रचूकगयेहमेंबडीविपरीतहै । रहियोनि चीतसदानीतचलेजैयोजबनीतनेकछांडे ताकीकौनपर तीतहै ॥ २१ ॥

रावण उवाच ।

कवित्त—सुनरेगँवारएकवारहोंनगयोलटकहोतोउपा रमेरुसिंधुपारडारद्यों । जोकहोतोसूरकोनिचोरतेजफी कोकरोंशशिमेंतोसुधारसरतिकैविकारद्यों । देवनकोमा रतातकालकरोंरुंडमालशिवकोचढाऊंहालकालहूको मारद्यों ।मनमेंमहोदरकहींसुदिनबीतेअबचूकेकरबातक होकहोतोविसारद्यों ॥ २२ ॥

मंत्री उवाच।

कवित्त–हनूमानआयोजिनहोरीसोंजरायो गांवबांध्यो वैरताहीकेकहेतेछांडदीजिये। बालिसुतधायोताकोपांउँ नउठायोकाहूतिनसोंनखीज्योराजा हमहूसोंखिजिये। बूझेतेनसांचकहेतौसदानरकरहेकहेजोयथारथतौऐसी मानलीजिये। तेरेदुखसुखसोंनरामकोनखायोलोनदोऊ हमकहीजोऊजानियेसुकीजिये ॥ २३ ॥

दोहा।

सुनरावणजियमेंजरे, कीनोतिहहंकार ॥
मंत्रिनकोअरुनारिको, देखतएकविचार २४

रावण उवाच।

सोरठा–इहमंत्रीकिहकाम, प्रभुकोहितसमुझेनहीं ॥
अबमायाकोराम, रचमारोंसीताछलों ॥ २५ ॥
सभाउठीयहबात, सुनीइंद्रयमलोकपति ॥
भलीभईकुसरात, मंत्रनमानेशीशदश ॥ २६ ॥

कवित्त–तीयलीनीसाथधर्योहाथपरहाथकह्योनाथ बडीबारलोंसुमंत्रकछुकरोहै। वेतोसबबूढेसबबावरीसी करेंबातजानतहों उनहीकेजीमेंरामपरोहै ॥ रानीदुख पायो कहे जीमेंकालआयोपाछेकहीभलीकीनीतुमतेतो इंद्रडरोहै। थोर्योरह्योसाथकौनबातकोबरोमनाऊं राम गुनगाऊंरांडभईपतिमरोहै ॥ २७ ॥

दोहा ।

अबआगेछलकरेगो, सीताकेढिंगजाय ॥
कथासुआगेहोयगी, संतसुनोमनलाय २८

सोरठा-बहुतआपदापाय, प्राणतजतहैजानकी ॥
त्रिजटीकरेसहाय, याहीतेजीवतबचे ॥१२९॥

इतिश्रीरामगीतेमंत्रीउपदेशोनामनवमोंऽकः ॥ ९ ॥

दशमांक १०

दोहा ।

तबरावणमनमेंकहे, करेएकअबकाम ॥
मायाकोपरपंचकै, रचोसुलछमनराम ॥१॥

सोरठा—तिनकोतुरतविनास, दिखराऊंमाथेयुगल, ॥
सियकीतोरेंआस, तबभजहैदशकंधको ॥ २ ॥
ऐमायाकेकाल, योंनहिंजानतमूढमाति ॥
ज्योंझीवरकोजाल, पर्‍योमीनछलकोकरे ॥३॥
उतरविकुलजुउदोत रजनीचरतमहरणको ॥
चित्रप्रदीपज्योंजोत,इतरावणऐसेलगे ॥ ४ ॥

कवित्त—जीयमेंविचारीजैसी जायवनकरीतैसीजहां सीयवैसीचल्योतहांहीकोधायके। तीयलीनीसंगमानोरु द्रपैअनंगधायोकालहँस्योआजकाललेतहोंउठायके॥ च हूचक्रशबदकरालभयो रामकविहालचालमेलेभरी दुंदु भीवजायके। भाज्योजायरावणतिहारेडरमहाराजराम चंद्रजूसोंकाहुऐसीकहीजायके ॥ ५ ॥

कवित्त—ऐसीसुनवातसबफूलगयेगातकपिरामसांसभ रेभारीअबकैसीकरहों।आइलछमनमुसकाइकह्योपांइग हकौनदुचिताईनाथकहोनाहींमरहों ॥ लोकयोंकहतलं कपतिभाग्योमेरेडरद्वैजुकारजभयेसुकैसीभांतिभरहों।

वाकेबिनमारेहोंतोसीयकोनलैहोंअरुभाज्योअरिताकी
कोनपीठचललरहो ॥ ६ ॥

लक्ष्मण उवाच ।

कवित्त-लछमनकहीसुनसुभटमुकुटमणिऐसीऐसीबा
तनतेऐसेअनुसरहों ।आजजोत्रिडीठजाकोपीठसोंलगाइ
राखोतहांतेघसीटतनएकआंखडरहों ॥ औरजोकहोतो
चहूंओरघेरराखोंप्रभुजौलोंतुमआओ तौलोंठौरतेनटर
हों । ऐसोरघुवीरक्षीरनीरकेविवेककपिभीरकीवहीरको
समाईकैनिकरहों ॥ ७ ॥

रामचन्द्र उवाच ।

कवित्त-तैंतोवातकहीतेरोपौरुखतोसहीपरशूरनके
लरवेकीऔरेभांतबातहै । जौलोंनभरावणकोमानसउ
डाऊंगीधयोगिनीपिशाचप्रेतगीधनअघातहै ॥ जौलोंद
शमुंडनेकझुंडनबखेरोंधरबीसों भुजदंडनतेलोहूनचुचा
तहै । तौलोंसुनवीरमेरेबाणठहरातनहींजौलोंरघुवीरन
केलोचनसिरातहै ॥ ८ ॥ जोतोभागजायतौनधरोंआ
गेपायऔरकपिमनेकरेतबआगेअनुसरहों । देखियोवि
नाविचारल्यावेसीयमेरेढिंगताहीघरीताकोमारतहीघरी
मरहों ॥ जौलोंरणआइसमुहाइदुंदुभीवजायजैसीभांत
लरेमोसोंतैसीभांतलरहों । ताकोनीकेमारपाछेराजदैवि
भीषणकोपाछेजानकीकीभेंटमनोहारकरहों ॥ ९ ॥

लक्ष्मण उवाच ।

कवित्त–बोल्योलछमनयहकोऊ रंकमान्योरणबातके कहेतेनाथक्रोधमेंउमाहुगे। सातोंलोकमारदैकेचापतहों भूमिफटजायगीपतालतबशेषसोंरिसाहुगे ॥ ऐसोकोऊ चौदहभुवनमेंनरचोतुमभ्रुकुटीचढायरणजासों समुहाहु गे। भागेकोनमारतहोमोकोनपचारतहोजानतहोंयाको राजयाहूकोदेजाहुगे ॥ १० ॥

दोहा ।

रामकरैंसुविचारइत, उपजतयुद्धतरंग ॥
उतरावणसियढिंगगयो लेअपनीतियसंग॥

मंदोदरी उवाच ॥

सोरठा–पियाजियअजहुँविचार, ममासियअंगनभेदनहिं
घटजेवरीनिकार, घसीकूपकछुशेषकर ॥१२॥

रावण उवाच ।

कवित्त–जैसेकनकाचलसोंतोहज्योंविवेकमोहजैसेदि नदीपतकेआगेतमयामिनी । जनकसुताकीदेहदामनी दमकआगेतूतोलागेऐसीकारेबादरकीकामिनी ॥ मृग मदकुंकुमकपूरबासतेरेतनचोआसोंचँबेलीहूतेहैनवस भामिनी। जैसीसीयओरतेझकोरआवेमारुतकीसोइंती नलोकछुटेसौरभकीगामिनी ॥ १३ ॥ तूजोगरबातसुन बावरीसदाकीनारजानकीकेअंगनतेमेरोघटगातहै । जो

लौंशशिपूरणप्रकाशतौनप्राचीदिशितौलौंन्याइतुमसी तरैयाइतरातहै ॥ जैसेकूजाकेतकीगुलाबमालदेखेवन बासआसपासवाकीफूलेनसमातहै ॥ तेरेजीयरूपकोअ डंबरहैभारीपैनकंबरपटंबरबराबरबिकातहै ॥ १४ ॥

मंदोदरी उवाच ।

कवित्त—ऐसोरूपभयो तो कहा ह्वैगयोप्राणनाथमांगे तेनआवेहाथमोलहूनपाइये। जैसेचित्रपुतरीबनायकाहू दीनीहाथताकोदेखमूढज्योंनचित्तकोचलाइये ॥ रेवा सरस्वतीगंगगोमतीजो यमुनाकेह्लाइकेतंरगनेमपाप कोबहाइये । किधौंआपबूड़जैयेतोकोलैसमैयेपीयकाहू कोतोझोटालैकेरूखचढजाइये ॥ १५ ॥

रावण उवाच ।

सोरठा—यहबकवादननार, खंडतवचननिशंकमम ॥
जनुविधनाउनहार,अहिमुखरसनादुइकहत १६

मंदोदरी उवाच ।

सोरठा—जोउपजीमनमाहिं, सुनराजातोसोंकहों ॥
भजेरामदुखजाहिं, तजेकपटसुखपाइये ॥१७॥

कवित्त—दानपुरहूतसोईकुलमेंसुपूतसोईलाखकामछां डकेजुकरेएककामको।पंडितप्रवीणसोईलोकशिरताज सोईऔरपेकहावेआपकहेहरनामको ॥ लाजकोजहा जसोईकविराजसोईप्रेमजलमीनसोईजोईभजेराजाराम

को । रामकविराजआजसोईराजको समाजसोईमहारा
जसोईजोईभरेहामको॥ १८॥सुनियेपुरानगुनियेसुभक्ति
ज्ञानसुतोवडोईहैध्यानअभिमानपरिहरिये।सोईहैसुजा
नजिहजान्योभगवानप्रभुछांडकेअसाधुनकोसाधुअंक
भरिये॥ऐसीजबहोयतबजीतहूलैजैयेगायऔरजोनहोय
तौतोएककामकरिये । जौलोंजगजीजेतौलोंभलेयशली
जेदानदीजेमानदीजेहँसदीजेपायँपरिये ॥ १९ ॥
स०-जानकीदैअपनायलैरामहेयामेंतौतोनरतीसुखछीजै ।
देशवसेनाहिंलोकहँसेदुखजीनपसेपियसोंजगजीजे ॥
जोयहबातरुचेतौभलीनरुचेतोभलीविनतीसुनलीजे ।
वंचकजोमननेहनहींतबरंचकहैपरपंचनकीजे ॥ २० ॥

रावण उवाच—दोहा ।

बहुकाईसरबरकरे, तबबोलेशरबैन ॥
लगतचटकसीदेखिये, बहुरकरेजलसैन २१

कवित्त—ऊंचकहटेरटेरपरपंचनसोंघेरहूजोसावधा
नएकछलकोकरतहों । रामलछमनकेबलायेमाथेलायेम
नकह्योशिवऐसोध्यानहोहूंनधरतहों॥कुंडलमुकुटकीच
टकदीनीगंधनमेंनेकहूनरीझकहूंपाँइनपरतहों ।लछमन
तऊविपरीतबडीमोकोहोइरावणतेहोंतोभांतभांतनडर
तहों ॥२२॥ छोटीछोटीजटामुंडमोटीमालकंठजुंडकहूं
कहूंछिडकीबनाइलोहूकीकनी ।तेहीछिनछविकेतरंगव

ढेरामकाविमानोनीलमणिपरफणिमणिसीठनी ॥ किधौं
नीलकमलमेंअमलविराजमानलालनकीपांतकामकार
गिरेहैखनी।एतेअपराधपरेनेकरीझपरेपाँयतौतोतीनलो
कमांहिंबातयाहीकीबनी॥२३॥लोचनविशालमालमो
हभृंगमालकहरावणकरालआजजानकीहरतहों।जाकी
छबिछूटेदुतिदामनीसीकौंधजाततताकीरूपज्योतिमेंपतं
गसोंजरतहों ॥गौतमकोशापआनआजहीजरावेमोहिंदे
हहूकेगएमनधीरजधरतहों।रामकवियाकेकछुपापनको
लेखोयातेपापयोंकहतऐसेपापीतेडरतहों ॥२४॥ऐसीभां
तिकीनोछलकेवलप्रपंचबलरामनसँभारपलसुखहीकी
हानहै ।जैसेइकरोगमेंत्रिदोषसन्निपातयोगमारेलरेयोगन
मेंकाकीतबकानहै ॥ रामकवियद्यपिजानकीपतिआए
घरतौऊमनपापनकीमिटेनउबानहै । जैसेतीनलोकन
कोजाततमउदैलेतकौनहानसूरकीउलूकजोनजानहै ॥
॥ २५ ॥ दुंदुभीबजाइढोलतालकरनाइबडोऊधममचा
इछलकीनेडीमडामको । वारनबनाइआगेकौतुकचला
इमुखधूरलपटाइमानोजीतेरणधामको ॥ धुजाफहराइ
छत्रचौंरेसोढुराइबागेवीरनबनाइयोंचलाइदामचामको।
रोयविकरालधिगकालकहांलाईढीलजानकीजुऐसे हाल
देखेतबरामको ॥ २६ ॥ रामहेसुलछमनसोंसुधारेदेव
धाममेरीएशरणअबहैनआसआनकी । तातेचलोसंगहों
अनंगतेतूवयछीजेगंगज्योंसमुद्रमिलीछांडबातमानकी ।

ताहीछिनदेखछाविनैनरहेनीरदवफूटचलीछातीज्योंमरी
चप्रातभानकी। रोईविकरालधिगकालकहांलाईढीलकौ
नएईरामचंद्रकौनएईजानकी ॥ २७॥

सीता उवाच।

कवित्त–हाय हायरामलछमनजगनाथप्रभुहायकंत
पूरणअनंतएकहावते। आनद्वारेनारदविरंचिशिवशेषश
शिवेदतुमहींकोनेतनेतकरगावते॥ सिंधुसुरराजऔरलो
कलोकनकेमेरेआगेनाथतेरीजायपनहींउठावतो भूपदेश
देशनकेबालकनरेशनकेसभामें प्रवेशकरबैठनेनपावते
॥ २८ ॥ रामप्रणनाथकामकेलइकसाथतुममेरेई
अधरकोसुधाअघायपीवते । ताकेपाछेमोहिंकोपिवाय
केपियूषपानदोऊतनभेदहुनप्रेमडोरीसीवते ॥ औन
जोकदाचकहोतेरोईअमृतसांचोतौतोपानकरकेजिवाइ
क्योंनजीवते । आजवैगीकाल्कमोहिं[illegible]
आसहांजुरामकोसुदेखेकटीग्रीवते ॥ २९ ॥ बैठपरयं
कभरअंकमोसोंकहीबातसीतामैंतूप्राणहूकेप्राणमेंबसा
ईहै । सुतोमेरोभलोईमनावतसुजानीअबतातेवनल्याइ
परतीतउपजाईहै ॥ कपटकीबातेंभईनिपटप्रगटसीय
जीयमेंजुहोतीसंगकाहेनलगाईहै । रावरीतोऐसीगातिबा
तकहोंबावरीसीकहोबलजाऊंपाछेकौनकोजिवाईहै ३०
नीलनलअंगदतेआएईअनंदघनकाहूननिवारेतुमकौन

भांतलरेहो । किधौंमेरोविरहतेपौरुषपुरानोसबकिधौंलं
कपतिकेकुपेंचमाँहँपरेहो ॥ किधौंहनूमानजायकहेमेरे
लुटेअंगतिनसोंआलिंगनकोदेतपीपडरेहो । एकैवारना
थआजजानकीअनाथकरीकाहूनभवधूवीरवडेदोऊवरे
हो ॥३१॥ पौरुषातिहारोजबजानतीहोंरामराजमोहिंघर
छांडकेअकेलेवनआवते। दूजेशूर्पणखावनआइकेरिझा
इरहीसहीवलजानतीहोंबातनलगावते॥ कहाकहोंमेरेभा
गपरीन्यारीरामचन्द्रशीलहोंसुदेख्योलोगमानोझूंठगाव
ते । रणहूमेंसंगजोहोंहोतीकहोंमेरीसोंहमोहिंछांडकैसे
सुरलोकजानपावते ॥ ३२ ॥ तुमेरघुनाथसुरनाथबूझे
मेरीगाथरहीसीयछांडसंगएसेकैनभाषवो । जौलोंकाठ
जोरकेजराइतनछारकरोंतौलोंपतिव्रतमेरोजैसे तैसे राख
वो॥ शीलतोसिधाऱ्योतबसंगनासिधारीजबतऊभलोआ
जहूलोंफूटोघटलाखवो। जैसीआदिहुतीतैसीअंतननिवा
हीरामतौऊपररावणकीआपदामेंनाखवो ॥ ३३ ॥ अरेह
नूमानधिकपौरुषप्रमानतेरोरामनामलैकेतबगाउँतैंजरा
योहै । किधौंसिंधुबूडोकिधौंबूढाभयोकिधौंअंधकिधौंका
हूआपदातेबेंचबलखायोहै ॥ देखोमिलवानरअनंतकाहू
मंत्रकरमारूकोबजाइरामरणमेंपठायोहै । लोहआंचला
गेकोनमरेजाइआगेऔरकालकेबटौआलोगकाकेकाम
आयोहै ॥ ३४ ॥ रावणकोमारकेनल्याएराममेरेढिगल

छमनचौंरलैकेलागेनसुहावने । केशनकोछोरमैनझारी धूरपाइनकीताहीछिननैनकंजाकियेनबिछावने ॥ मेरेजी अहुतीमैंमँदोदरीकोदेतमानसोतोसबरहा कोऊल्यायोन मिलावने । देखोमांझधारमेंमनोरथकीनावबूड़ी रामक विऐसेसीयलागीदुखपावने ॥ ३५ ॥ एककामकरोंपति व्रततेतोडरोंभारीरामतनदेख्योंकैसेआगकोदिखाइये । करमअधीनदेहपैठोबारबारपरऔसरकेचूकेपाछे क्योंध रमपाइये ॥ तातेशिरकमललैअंकपर्यंकराखताहीसोंल गाइध्यानप्राणनाथगाइये । विरहबयारसाधदेहनेहडोरी बांधगुडियाबनाइजाइरामसोंमिलाइये ॥ ३६ ॥ औरजो एमेरेप्रानहोयँगेबडेसुजानछुवतप्रमानमूँड़देवलोकजाइ ये। यहैएकरावणकोभयोउपकारमोकोरामकरैयाकोलो गरामसँगगाइये ॥ जोतोकछूछलहैतोकुटुँबसमेतदशकं धदिनथोरेमाहिंयाकोफलपाइये ।बातहैनिदानकीयोंरोइ कहेजानकीतोमेरीदेहप्राणनाथआपनबचाइये॥ ३७ ॥ यहैजी विचारकहेजानकीपुकारमेरेहाथबडभागीआज रामलपटायँगे । औरतोअभागमेरेसबैअंगआसतजरा मचन्द्रअंगकोसदाहींपछतायँगे ॥ देवनाविचार्‍योयेतो मायाकेबनाएमूंड़सीयकेछुवेतेतीनलोकजरजायँगे । बो लेनबलोपव्हैकेशोकतजएकमात राम कैसे रावणके हाथनसमायँगे ॥ ३८ ॥

देवा ऊचुः ।

कवित्त–रहीहैतोसंगपैअनंगकोप्रवनिआतिपौरुषन जानतहैतीनलोककोदहै। लंकपतिरंचकप्रपंचनतेडरते रीदेहछुटजायतबरामकोपकोसहै ॥ राखराखप्रानसुरभ येअंतर्द्धानिदेखरामचंद्रवानअवयाहीकोशिरोगहै । के हरकेआगेज्योंकुरंगतैसेरावणयेजौलोंजीवेतौलोंयोंपुकार वातकोकहै ॥ ३९ ॥

सोरठा–सीतावडीअजान, सवैदेवमिल यों कहैं ॥
अवलोंजातेप्रान, जोहमवीचनआवते ॥ ४० ॥
हमनहिंसकेंसँभार, रावणकेछलवलप्रवल ॥
सीताराजकुमार, रामप्रेमजीवतुवचै ॥ ४१ ॥
सुनासियवचनप्रतीत, समझावतसवदेवता ॥
यहरावणकीरीत, छलकीनोऔकरेगो ॥ ४२ ॥
पौरुषरामअभंग, कौनकाटिरावणकुमति॥
जैसेगरुडभुजंग, कोपकरतलज्जामरे ॥ ४३ ॥

सीताजीके वचन ।

कवित्त–सेवगएलोकलोकदेवआइकेअशोकवनमोंवि शोककरिशोककोनिवारकै । जानकीकीआपदाकेपुंज ऐसेभागेजैसेगंगाकोऊन्हाइताकोपापजायडारकै ॥ शी शतोगएअकाशरावणनिराशह्वैकेचप्योरूखरूखनलोंमुं

डमारमारकै। रामकविचारोंचारों बाटनकोचल्योंकैसे जैसेरामविमुखचलेहैंजन्महारकै ॥ ४४ ॥

रावण उवाच।

कवित्त–आयोगढलंकपतिपायदुखपापमतिआप नोसोकीनोअंतबैठ्योसुरझाइकै । मनेकियेसबैलोगजी यमेंबढायोशोगलागतनहाथसीयथक्योहैउपाइकै ॥ का लपन्योवंदसालसेवेंआगेलोकपालदेखोराममोसोंवैराकि योहैवजाइकै । कैसीहैहैदईठकुराईहैहैनईजानकीनलई गईराखीदेवनबचाइकै ॥ ४५ ॥ चारोमुखचरवाकपढें जिनएकआंखदूरदूरझांकयहआयोकौनकाजको । दे ख्योवाकपतिकह्यो लंकपतिमूढमतिजानतहै जीमेंसुर पतिकेसमाजको ॥ ठोंकोजिनबीनसुननारदप्रवीनअरु जीनडरतेरेइंद्रचाहतोनलाजको । डाटडाटदेवनसोंक हेदरवानआजजानकीवचनआनलाग्योलंकराजको४६।

सीता उवाच।

कवित्त–रावणकीऐसीगतिसीताआपनीविपतिकहीसब त्रिजटीऔशरमाबुलाइकै । देखोइनपापीमोसोंकैसेछल कीनोजोनदेववाणीहोतीप्राणदेतिहोंउडाइकै ॥ बोलीदो ऊयाकेपरपंचकोनअंतरानीआगेऊकरेगोतोसों कन्योस मुझाइकै। साधनहूजोयाकीबातनपतीजोजिनरामआ जकालयाहिडारतपचाइकै ॥४७॥ आयोरामनिकटवि

कटकिल्कारेकपिसवैरंगरंगभीरध्वजाफहरातहैं । शंख नकी घोरसुनमोरपिकनाचतहैंमानोमेघशूरहूतेलोचन सिरातहैं ॥ झरनाझरैंअपारफूलेद्रुमलताडारमानोफूल फूलगिरैंप्रेमसोंचुचातहैं । वाजीहिननातमातेहाथीझिन नातसीयरावनसेपापनकेऐसेघरजातहैं ॥ ४८ ॥

त्रिजटी सुशर्माके वचन ।

कवित्त—रावणको मारपाछेराजदै विभीषणकोमहारा जरामतवतेरीढिंगआइहैं । दूरहीतेतेरीओरदेखसुरकाय तेरोविरहजुव्यारधाइहियेसोंलगाइहैं॥कहेशरमात्रिजटी प्यारीसियतेहीघरीदासीकहआपनीजोहमेंनवचाइहैं। वा नरकेझुंडहाथलीनेरुंडमुंडतोतोकोऊकपिभूंखोमारहमें फारखाइहैं ॥ ४९ ॥

सीता उवाच ।

कवित्त—नेकसीयहँसीसखीसुनो घरवसीतुम्हेंप्राणनस मानरघुवीरसोंमिलाइहों ॥ औरतुम्हेपौनपूतनीकेपहचा नतहैंसोगुनीतिहारीसेवाताहूपैकराइहों ॥ जानकीतूह नूमानकेभरोसेभूलेजिनवहैफारखाइतोहोंप्राणकहांपाइ हों । वीररसमातेहैंहैंलोहूसोंअनातेहैंहैं कहाभयोता हितेरेपाइनलुटाइहों ॥ ५० ॥

स०—जाहिनधायपरेकपिकोदलजीतफिरैकोऊआनसुनावे। रावणकेशिरदैशिवकोकविरामनिशंककहैलंकजरावे ॥

जीवतजायसुनोजवसाससुपूतवधूकहमोहिंबुलावे ।
श्रीरघुवीरकेपांयरहोंगहसोदिनमोहिंकहोकबआवे८१।
जादिनआयमँदोदरिसुंदरीदीनह्वैरामकेपांयँपरै ।
मुक्ताखिसमांगतेटूटपरैदोऊनैनकेनीरसोंभूमिभरै ॥
तबहौंहीवलायसबैबाधकरोंकोऊतोहिंगहेतबसीयमरै ।
इहभांतमनोरथहैत्रिजटीसुविनारघुवीरकेकौनकरै॥८२

दोहा ।

दुखसागरक्योंतरसके, सीयधरमकीसीव ॥
देवनागनावतधुलै, पुनआयोदशग्रीव ॥८३॥

सोरठा–तूसियनिपटकठोर, मैंछलबलबहुतेकिये ॥
नेकनिरखममओर, जलतअंगशीतलकरो॥८४

कवित्त–दिनहीतेकरोंरातमेलोचाललोकसातवज्र पातहोइतोसहारबेकोसाहसी । मेरोकोपविनारुद्रसबकी घटाईओपतोसोंपचहाऱ्योपैतूजिरनैननाहँसी ॥ तेरेई निहोरेजोतूकहेछाडोंतेरोपतिनातोरामजीवेकीहोजान बातबाहसी । बोलीसीययासोंकोऊकहेदशकंधअंधआ जहीपरीहैमूंड़मरबेकीहाहसी ॥ ८५ ॥ जोकहातोमूंड़ काटराखोंतेरपांयँतरतोहीपरवारमारखेहमेंउडाइद्यों । औरजोकहेतोतेरोहैकेसबोंगाढोवनजोकहातोचेरोह्वैके पलकीडसाइद्यों॥जोकहोमँदोदरीसमेतरनवासतेऊदास ह्वैकेआजएकएकहेलुटाइद्यों । ऐसीकरवीररघुवीरतज कह्योसीयजाइजाहजोकहातोअबहींजराइद्यों ॥ ८६ ॥

सीता उवाच।

कवित्त—ऐसोदुखदेतहैउपाधहीकोहेतहैपैतौऊसीय दैसरायपापीनजरायोहै। साजदलआयेमेरेप्राणनाथया हीपरतातेप्रभुखेलमोपैजातनमिटायोहै॥ सोईतियकौ नकामरामकविसांचीकहोपतिकोमिटाययशआपनोच लायोहै। रविकेउदोतआगेदेखकेखद्योततनअंधदशकं धमनकौनकोलुभायोहै॥ ५७॥ पापकेमनोरथरेपापी मनहीमेंभलेऊपरकहेतेलोकबावरोकहतहै। त्रिजटीत्रि दोषजाहिव्याप्योताकोदोषनहींयातेमेरोप्राणनेकरोषन गहतहै॥ रामभुजदंडपरऐसीखंडखंडकरकोटिकबहाऊं प्राणकाहेकोदहतहै। जाहिदशकंधबीसलोचनसोंअंध कहूंपारोपुंजबीजुरीकोहाथमेंरहतहै॥ ५८॥

रावण उवाच।

कवित्त—ऐसीसुनगयोलंकनेकनभयोनिशंकजैसेरं कमीनबिननीरअकुलातहै। रामइतआयोदबसीताकीन लूटीछबमोसोपुछवाइएकहैजुउतपातहै॥ करोंएकबडो छलदेखोंतोसियाकोबलकैसेनामिलेगीमोहिंऐसोइतरातहै काचधनदैकेमाणिचाहतहैवंचकजोऐसेपरपंचनतेरंचन डेरातहै॥ ५९॥ मनमेंकियोकलापरामचंद्रबन्योआ पलीनोहाथचापमाथेमुकुटबनाइकै। पीरोपटकटसोंल पेटकेनिषंगकसअंगअंगसुन्दरअनंगकोलजाइकै॥ रा

वणकेमाथेकाटबांटआधोआधकरपांचपांचलीनेकडतो न्हसोंभिजाइकै । चल्योसीयतीररघुवीरखनमायावतवे षकोप्रतापपापरह्योनहिंआइकै ॥६०॥ धायोचढवारन विदारनसियाकोसतपतितउधारनकोरूपतनधारकै सेवकसिखायेरणरामचंद्रआयेजीतमूंड़लटकायेहाथवै रीनिजमारकै ॥ भेरीढोलपटहनिशानसोंसुहायेवीरदुंदु भीवजायेलोकरीझतनिहारकै ।रावणकहतवामीहैनमन कामीअवजानतहोंजानकीलखेतेछडिजारकै ॥ ६१ ॥

पुरवासी लोगोंके वचन ।

कवित्त—केउकानिहारकेस्वरूपभयेरूपलीनमानोम नहऱ्योजूयऐसेरहेहेरके । एककरध्यानभयेमोक्षकेपया नयोगएकलोगकहैहमदेखेंक्योंहूफेरके ॥ एककहैंभली कीनीमहाराजरामचंद्ररावणसोंपापीतुममाऱ्योघेरघेर के। एककहेंराजकरोलंककोनिशंकआजनगरबजारसव कहेंटेरटेरके ॥ ६२ ॥

रावण उवाच ।

कवित्त—जैसोजाकोलागोमनतैसोताकोपूऱ्योप्रनपू रणअनंतरामवेषशिरताजके । रावणकहतजेवैपावतस्व रूपमोक्षतेतो बडभागीवैरकीनोवेहीकाजते ॥ वहुरोब कनलाग्योसत्ततेछुडाऊंसियजैसेखगराजसुधाछीनीसुर राजते । पहुँच्योअशोकवनचाप्योशीलतेहीछिनऐसीम

नआईमानोउपज्योहैजालते॥६३॥रावणकहतवामीजैसे
मेरोमनकामीपहलेसियासोंतैसेक्योंनउमहतहौंकहागा
जपरीमतरामेअनुसरीयातेघरीघरीलाजशीलडीलकोग
हतहै ॥ औरमेरेजीयतेप्रचंडक्रोधछीनहोतजाइब्रह्मंड
लअखंडलदहतहै । योंनजानेपापीदेहरचीहैक्रियाकीया
कीऐसीएकजानकीसोघरमेंरहतहै ॥६४॥ तऊपैनतजी
आसपापरासगयोसीयपासअवडारेदेततोको दिखराय
के । रावणकेमाथेन्यारेन्यारेमैंउतारेदेखनीकेअवडारेदे
तमूंड़लटकायके ॥ जानकीकेअंगकछूतेहीछिनऐसेभ
येजातेकछूबोली नमिलीहैदौरजायके । कामकीतवारते
यछाररखपरीकहूंहारकहूंवारकहूंभूवनगिरायके ॥६५॥

त्रिजटा उवाच ।

कवित्त—उठीचेतभटज्योंकलहकैसेपटज्योंकपटकै
सेजान्योजैसेनटकोपिखाइबो । दूजेदवनानीकह्योजान
कीअयानीभईयहैएकलंकपतिरूपकोबनाइबो ॥ तौ
लोंचाहिभेंटबेको दौरोपैनदौरमनकैसेजैसेप्राणबिनदेह
कोचलाइबो । ज्योंज्योंचलेधायत्योंत्योंठगकेसेपरेपांय
तौलोंआयत्रिजटीकोबन्योहैसिखाइबो ॥ ६६ ॥

रावण उवाच ।

कवित्त—ताहीछिनभयोलोपलंकप्रगटयोसुशोकओ
पविनकोपतेसिखायभूमिपारहै । याहीपरपंचतेमैंरंचक

नपायोसुखकंचनसीजानकीनभेंटीहैनिहारहै ॥ जौलों जायसांचेऊनजीतोंरणरामचंद्रतौलोंमोकोदुखकीसवाई अधिकारहै । जीत्योंसुरराजतीनलोककोसमाजतौऊमे रोमनआजपातपातडारडारहै ॥ ६७ ॥

दोहा ।

इहविधिरावणइतलटे,मीचनिपटनिजकार॥
उतत्रिजटीशमासहित,सुनहिंसीयकीबात॥

सोरठा–कर्मरेखनीशीश फिरीसृष्टित्योंहीफिरी ॥
रामसकलसुरईश, ताकीतियऐसीदुखी ॥६९॥

सीता उवाच ।

कवित्त–सीतापछतायमुरझायदुखपायपायकहेहाय हायशीललाजधनगयोहै । कंटकबनायेवेषरामहीकोजा योपापीमेरोमनधुआंकोसोधौलनछपायोहै ॥ जोनआज त्रिजटीतुरतमोसोंकहतीतोआजहीनिशंकह्वैकलंकबी जबयोहै।देखोदेखोमेरेमनकीयही ढिठाईमाईबडेपापीसो बोपापीमिलबेकोभयोहै ॥७०॥ हाविरंचिहासुरेशचंडि कागणेशशेषसदानिरदेशदेहलागतागिलानकी।बडोअप राधइनकीनोदुखदीनोमोहिंवेषदेखभूलीनऊहैतोअंतआ नकी॥ मीचमोलपाऊंतौतोप्राणदेमँगाऊंआजयोगसाध हुतोतौतोमरतीअचानकी । रामभोगभूलरहीलोगनमें फूलीसदारामकविऐसोरोयरोयकहेजानकी॥७१॥पहले

तोरामहीतेकोटिककपटजातेअबतोकपटहीमेआपआ
यजातहै। यद्यपिनमेरेअपराधमेरेप्राणनाथतौऊमेरेअंग
नसोंअंगहीरिसातहै॥देहकहेपांयचलेपांयकहैनैनचलैनै
नदौरमेरेमोहूआइलपटातहै।प्राणनउड़ायभूमिकाहेतेन
फाटजाययाहीमेंसमायसीयऐसीदुखगातहै॥७२॥अरेमे
रेप्राणमेरकहतेउड़ातनाहीं आपनोकियोतुरतरामहीते
पाइयो।सदाकेसँगातीमोहिंहाती करतातकालरामजूपै
जाइमेरोदुखअतिगाइयो॥आदरनहोयतहांकैसेरह्योभा
वतहैनिपटनिलाजहोतैंभेदकोबताइयो। किधौंमेरेप्राण
नाथतुमसोंकह्योहैयाकेखीझभूंखेप्यासेदेहछोडजिनजा
इयो॥ ७३ ॥ प्राणकहेबातसुनजानकीप्रवीणहमतोमेंर
घुवीरजूमेंन्यारेनरहतहैं। लोगयोंकहतसीताविरहतेमरी
हैहैउनहीसोंरामफिरऐसेकैकहतहैं॥ जानतहोंजीवतहै
काहेतेगुसाईंसुतोजातेमेरेप्राणमेरीदेहकोबहतहैं। ताते
जौलोंतोकोरघुनायकनभेंटतहैंतौलोंतेरीबातेंहमलाख
कसहतहैं ॥ ७४ ॥

त्रिजटा उवाच।

कवित्त—ऐसोभयोसमाधानप्राननसँबोध्योज्ञानत्रिज
टीकह्योसयानकाहेकोधरतहै। कालपरोंनरोंरघुवीरको
मिलेगीकौनतूतोएकछलहीमेंछलसोंमरतहै॥ तोकोच
हूंघातेडरलाग्योहीरहतप्यारीमोतेयातेरावणतेरामतेड

रतहै । जौलौंभूअचापतनदेतनसरापयाकोतौलौंपाप मोलकैकेआपकोधरतहै ॥ ७५ ॥ तेरीपदरजकेप्रतापते प्रतापहमजान्योरघुवीरजूकेतोहिनविश्वासहै । तीरथके वासीजैसेजात्रिनसोंकहेतुमजानतहोयाकोभयोहमतेप्र कासहै॥रामदीपज्योतिमेंपतंगकोटिरावणसेपरेनेकलरेपु निपलहींमेंनासहै । देखहैतमासोजैसेपानीमेंपतासोलुट योगीहूमवासोपायोमासोमासोमासहै ॥ ७६ ॥

सीता उवाच ।

कवित्त–हिमऋतुकाटीआछेशिशिरवसंतपाछेग्रीष मकेलागेकहोकौनवायुजूडिए । उतरीहैदुखकोसमुद्रमो सीनावचढलागतकिनारेहोइहांसीकूदवूडिए ॥ नेकडर पायेहरखाजियोंमरोंमेंकैसेजैसेवायुचलेअनचलेसदागू डिए । त्रिजटीहमारेदेशऐसेउतपातनाहींरामराजसुनेते लगायपंखऊडिए ॥ ७७ ॥

दोहा ।

नगरअयुध्यासबसुखी,जहांहमारोराज ॥
रघुपतिचरणप्रतापते,घरघरइंद्रसमाज७८॥
राजनीतितोसोंकहों,सुनत्रिजटादेकान ॥
बिनदर्शनरघुनाथके,विधिनकरेजलपान
रघुपतिबिनसबएकसे,छत्रचमरशिरनाहिं॥

भूषणभौनभँडारते,हयगयसुखघरमाहिं८०

कवित्त–चित्रहूमेंलिखेनवचित्रचित्रकारतियपीयतेवि छोरकेनलंककोसोहालहै । मानसकीकहाजहांकोकिला कपोतमोरचकवाचकोरविननारनमरालहै ॥ सदामति ज्ञानमेंकिवेदकीपुरानमेंकीध्यानदानमानमेंसुऐसोएक ढालहै । दारदकोछलकोकपटकोसदाईकालपतिव्रतपुं जयज्ञअन्नकोसुकालहै ॥ ८१ ॥

दोहा ।

जहँदृढपोथीबांधिये,बांधब्रह्मकेकाज ॥
स्वप्नविदेशनजाइये,हमबिनहमरेराज ८२॥
जोअबकेरघुपतिमिले,वहेप्रेमवहसाज ॥
तोत्रिजटातुहिसंगले,दिखराऊंवहराज ८३॥

सोरठा–औरकहोंइकरीत,रघुपतिचरणप्रतापते ॥
कारियोसत्यप्रतीत,सखीसियानीप्रातसम ८४॥

छप्पय–कटुकनिंबचंदनबबूलउद्धतखजूरतर ।
परपंचकमेंदेहसदावंचकपुराणनर ॥
कुटिलतरुणिभ्रुवभृंगजटिलवटभस्मसुकुरमुख ।
बिनबिज्जुलधुनकदलिअवरकंपतनपाइदुख ॥
निकलंकरामसबविनाशशिअरुदारायाबिनप्रजापशु
पुरनीचकूपलंपटभ्रमरचित्तचोररघुपतिसुयशु॥

दोहा।

इहविधिसियत्रिजटामिली,तजोशोकअज्ञान
तबजानकीप्रसन्नमुख,करतरामकोध्यान ॥
छप्पय—अमलकमलदलनयनबनयजलधरधुनिसुन्दर।
रतनजटितकुंडलकपोलझलकनअलकनवर ॥
कचसिवारपरफुलसरोजसरवरआननदुर।
पीतवसनद्युतिदसनग्रसनअरुबसनऔधपुर ॥
कहिसुकविरामरघुवंशमणिमदनदहनसेवतचरन।
सुखकरनभरनपोषणनिपुणममपतिरघुपतिदुखहरन

दोहा।

दुखसुखकीबातेंसबै, जानीश्रीरघुवीर ॥
खुनसानेनहिंरहसके,बोलेकपिसबधीर ८८॥
सोरठा—अबतज सुकचविचार, घेरहुलंकानिशंकहुइ ॥
रावणनिपटगँवार, पूनउसोंपूरेकरे ॥ ८९ ॥
फूलेअँगनसमात, हनूमानअंगदसुभट ॥
चलीयुद्धकीबात, सुनहुसुनावतरामकवि।९०।
रघुपतिकोगुणग्राम, सुन्योविरंचिपिपीलिका ॥
तऊयथामतिराम, वरणतसंतप्रतापते ॥९१॥

दोहा।

सुनेसुनावेमनधरे, रघुपतिचरितअनंत ॥
ताकोमुक्तिसदाकहे, बरोबरोमुहिकंत॥९२॥
इति श्रीरामगीते रावणप्रपंचरचनो नाम दशमोऽङ्कः ॥ १० ॥

एकादशांक ११

दोहा।

रामकथाकवियथामति, वरणतजगअनुसार

ज्योंखगउडफिरधरागिरत, परतनअंबरपार

रामभक्तिबिनअतिकठिन, निगमबतावतनेत

छलबलतेरावणछल्यो, मीचउगाहीदेत॥२॥

सोरठा–तबलगसाधुनधूर, जबलगपरसनप्रेमको॥

क्योंतमभाजेदूर, विनादीपबातनकरे॥ ३॥

एकशरणव्रतहोय, जपतपनेमसबैरहो॥

पुरुषनारिनहिंदोय, क्योंपतिव्रतासराहिये॥४॥

इतनेकरेउपाय, सबफोकटइकप्रेमबिन॥

सोइसुनोमनलाय, सुकविरामविनतीकरा॥५॥

कवित्त–तीरथकरेंअनेकसदा मिलमीनभेककच्छ पअनेकचारोंयुगहीमेंगाएहैं। पौनहूसोंपेटभरसोव तभुजंगऔकुरंगातृणखातवनहीमेंघरछाएहैं॥ चातक विनाहीसाथीधूरमूंड़मेलैहाथीध्यानहीबिडालबकजनम गवाएहैं। नाचनाचमोरज्योंविवादघनघोरज्योंउडायप्रे महीनरघुनाथकहूंपाएहैं॥ ६॥

सोरठा–रावणअतिमतिहीन, समुझैपैचरणनभजे॥

सुनअतिभक्तप्रवीन, कुंभकरणवधकानदै॥७॥

छप्पय-रामचंद्ररणधीर सुभटकपिभीरविकटमति ।
किलकिलायउछलतरुपूंछपटकतचंचलअति।
डीठजोरसबधरतअसुरतबधरहतदुरदवि।
रविप्रगटतसुप्रभातजाततमनिरखवदनछवि ॥
रघुपतिप्रतापकविरामकहनिरखतपीठभजाइअर।
मृगरंककौनलंकाधिपतिजहाँसिंहविदारनकुंभकर।८।

कवित्त-अंगकोगिरिशमानभंगकोकपीशपुंजदेवन केदूतयमदूतनकीआवनी । जानकीकलेशकुललाजछां डछांडआठोलोकपालकाजरकीडीठकीलगावनी ॥ पं चभूतदेहकोसुसुंडमालमुंडनकोआएगणझुंडएतीबात नचलावनी । लंकईशऊपरनिशंकदांतपीसपीसदेखो बीसकारियेजुएकबारधावनी ॥ ९ ॥

रामचन्द्र उवाच ।

कवित्त-अंगदसोंकहबातरावणकीदेखीखातआ जहूलोंआइकेनमोकोशिरनायोहै । होनहारजाकोनै सोतैसीमतिहियेवौरीजानतहोंजानकी के कोपडहहा योहै ॥ बोल्योहनूमानयहिपापीअबलोंतोनाथरावरेके नैननकीकरुणाजियायोहै । नातोयाकोमारसयिलैकेदे शगएहुतेरामडरकाहूहाथपांवनचलायोहै ॥ १० ॥की न्हेनररूपकपिसुन्दरअनूपछाविगएछपभूपऐसो चरितब नायोहै। जेतेडीलतेतेहाथीतेतेइखवाससाथीकंचनकेकुं

डलकिरीटपुंजछायोहै।।प्रभुकीरजाइपाइचढेधाइधाइमा
नोआपनेगिरआगेलेनप्रेमैसोंआयोहै।कौनवडीवातत्रयी
तापकेहरनहाररामकेकटाक्षतेचटाकपदपायोहै ॥११॥
रामचन्द्रजूकेकाजसेवाकीनीदेवराजराजकोसमाजकावि
रामदैपठायोहै । चन्द्रमासमानछत्रचामरतुरंगपुंजएई
राखेवाहननआपनेवुलायोहै ॥ भएअसवारवाजदुंदुभी
अपाररामलंकढिगआएपैनकोपाढिगआयोहै । वैरीहूके
मारवेकीवातमुसकातकरैचेतैनेकरावणतोवडोप्रभुपायो
है ॥ १२ ॥ ऐसोभांतिरहेजहांगाव्योरणखंभतहांकिहेरघु
वीरमोहिवडोउपहासहै।उमापतितारकउपासेउपदेसैया
कोसोनउपदेसयातेहमसोउदासहै ॥ वोलेहनूमानराम
रुद्रयाकेवडेवैरीयाहोतेनदीनोउरदेख्योनाविश्वासहै।संप
तिविलासशिवदीन्होप्रभुभलोकीन्होसोतोवाहीमंत्रकेक
टाक्षकोप्रकासहै ॥ १३ ॥

हनूमान अंगद उवाच।

कवित्त-अंगदपवनपूतदोऊवडेरामदूतहँसकैविभीष
णसेकह्योकातेडरोगे । रावणकोमाररघुवीरकेप्रतापतुम
जाइलंकहैनिशंकवडेराजकरोगे ॥ तोकोराजदेतहमवी
चनविगाऱ्योकाजजानतहैंहमेंछांडभोगनमेंपरोगे । भा
ईकीविभूतिपाईरामचन्द्रकोरिझाईकहोतोहमारेआगेक
हाकहाधरोगे ॥ १४ ॥

विभीषण उवाच ।

कवित्त–सूधेदुखदेतहोकिप्राणकाढलेतहोजूजानत होंराजपायराजकोकमाइहों । एकरामरोमपरकोटिराज द्योंलुटायजहांपगधूरतहांमाथोहूलुटाइहों ॥ आपनेई लोचनकमलकेबिछौनाकरदोऊप्रभुताहीगैलधामपैधरा इहों ।लंकछिरकायचरणोदकसोंहनूमानताकेपाछेतुम्हें कोटिव्यंजनखवाइहों ॥ १५ ॥

दोहा ।

इतभेसबैप्रसन्नमन, हरषवंतसबगात ॥
शंखशब्दसुनरंकजिमि,सुनोलंककीबात १६

रावण उवाच ।

सोरठा–सुनोमँदोदरिबात, तूमंत्रीरावणकहे ॥
देखरामकीघात, आयगयोजान्योनहीं ॥ १७ ॥

मंत्री उवाच ।

सोरठा–यहैबडीविपरीत, तुमरामहिंजानतनहीं ॥
सदाबडनकीरीत, बहुतकरेंथोरेकहें ॥ १८ ॥

कवित्त–रामचंद्रचढेजबधीरजनरह्योतबभूमिडगम गीगतिभईभारीनाउकी । सूरछिप्योधुजाबीचकीनोहैस मुद्रकीचनीचसेहैगएअरिहैनआसआयुकी ॥ शंखनके बाजतबहुरभईछातीहूकभ्रमहीतेदेहमानलीनीमनोघा

उकी।एतेपरबूझतहौंबारवारमहाराजयहबलरावरेकोबा वरेसुभाउकी ॥ १९ ॥ औरसुनोबातकौनिमानुषकेगातकपिहौंरचौंरराजवेषसबकोबनाइके । सबहीकोदेकमानबानसावधानकरचावसोंवढायचापहाथनचढ़ाइके ॥ दुंदुभीबजाइवैरप्रगटेजनाइरामलंककेनिशंकढिंगमाड्योदलआइके । शूरनबुलाइकुंभकरनैजगाइराजाबातबीतगएतेरहोगेपछताइके ॥ २० ॥

रावण उवाच ।

कवित्त–बांधबांधगातीपक्षपातीजेसँघातीमेरेतातीबानीबोलबोलकह्योहैसुनाइके । मानसकीजातीभच्छपातीपाइबैठघरमनकीसुहातीबातीप्रगटीहैआइके ॥ शिवकीकृपातीकरोंयमकीजमातीसबयोगिनीबिललातीकोपठाऊंअघाइके ।पातीलिखीदैतनकोनातीकमलासनकेरातीकरआसैछातीक्रोधउपजाइके ॥ २१ ॥

सोरठा–राजमंचपरबैठ, मंत्रिनसोंबूझतप्रगट ॥
बीसोंभुजाअमेठ, रामलखनघरपाहुने ॥२२॥

दोहा ।

बोलमहोदरसोंकह्यो, बहुरलंककेराय ॥
रामचंद्रकाकरतहैं, कहमोसोंसतभाय२३॥

मंत्री उवाच ।

सोरठा–सुनराजाममईश, हाथजोरविनतीकरे ॥
रघुनायकजगदीश,इहविधिरहतप्रसन्नमुख२४

छप्पय–मृगकंचनमृगछालमालकपिमध्यनीलमनि ।
दशशरभरततुनीरवीरचारहसौपतागिनि ॥
चरणकमलहनुमानपानलालतउहभिट्टत ।
कहतबाततुवअनुजसुनतसुसकतदुखमिट्टत ॥
मृदुवचरचनसुग्रीवपतिअतिप्रसन्नलज्जानमत ।
राजाधिराजलंकाधिपतिजोइजातशरणवैरहेछिमत
कपिप्रचंडझुंडनउमंडतुंडनअरण्यदुति ।
प्रगटमंडरणकहेकरुणारसनैननछुभति ॥
पवनपूतकुद्धतानिवायअंगुलभूअलिखत ।
सियआगेधरमिलेरांड़तुअमारगपिखत ॥
सनद्धबद्धविनलच्छमनचँवरहाथऊपरकरे ।
कविरामसूरमणियुद्धमणिछुवतचरणडगमगधरे।

रावण उवाच ।

कवित्त–रामकीतोजानीबातविनायुद्ध किउंपलात मेरेशूरजातहैंघरीकमैंउडाइहैं ॥ एकनकोबांधलाय एकनकोदेंउडायएकनकीनारहीमरोरतोरखाइहैं ॥ तौ लौंएकराक्षसीप्रभंजनीबुलाइकह्योआधीरातबीतेईसबैजु सोइजाइहैं ॥ तहांजायरामकोउठायलायमेरेढिगभोरभ येजीतेकेनिशानहूबजाइहैं ॥ २७॥

विभीषण उवाच ।

कवित्त–तौहोलौंविभीषणकहीहैबातहाथजोरआवत

हैरातनाथसावधानह्वाइओ । बोल्योबातपूतरघुवीरपुर हूतसुनमेरीचौकीपाइकेपसारपांवसोइओ ॥ रावणकेआ वतलोंतुमेनजैगेहोंदेहोंएकलेजबावताकोपौरुष बिगोइ ओ॥प्रातरणबातहैजुशाखमृगआतसुनोमारमारवैरिनको राममुखजोइओ २८ सूरछिप्योपाश्चिमप्रकाश्योशशिप्रा चीदिशचक्रवाकबिछुरेचकोरसुखपायोहै।कुमुदनीफूली कुंदमूंदेभौंरबांधेबीचप्रातनाथबूड़ोमानोकालकूटखायो है ॥ आधीरातबीतीसबसोएजियजानआनराक्षसीप्रभं जनीप्रभावसोजनायोहै । बीजरीसीफुरभांतछुरीहाथछु रीलोहचुरीडठिजुरीदेखअंगदलजायोहै ॥ २९ ॥

अंगद उवाच ।

कवित्त-रामलोंनजानदीनीबाटहीमेंखरीकीनीबाट पारवेकोबलीअंगदप्रवीनहै । दौरजायहाथगह्योमोसोंसू धेबातकहोलऱ्योचाहेलराऐसाकौनतोतेहीनहै ॥ कछु नबसाईभागजैबेकोबिलबिलाइकैसेजैसेसिंधुमोदहरनी कोचीनहै । कीनोबडोशोरसबजागेमनोभयोभोरकोर कारभईसुनेरावणमलीनहै ॥ ३० ॥ भईप्रातफूलेजल जातरघुनाथमुखभाज्योतममानोभोगरावणप्रतापके । मिलेचक्रवाकऐसेसीताऊमिलनहारछूटेमृगभालमानो बाणरामचापके॥पूखनप्रकाश्यापुंजकिरणकेधायेछायेकै सेजैसेआयेसुखजानकीमिलापके।चंदपऱ्योफीकोलंकप

तीहूतेनीकोतारेलटेमानोआयुअंकमेघनादबापके॥२१
रघुपतिजूकेदलकीप्रबलदेखीचौपबडोदुखजीयमेंनमुख
तेजनाइए । तीनकोटराखसखपायेजेपठायेहमजैसेमेल
पारोतवआगमेंउडाइए॥ बोल्योमेघनादचहुँओरजायछे
कोदलमारोंएकएकगिनआयशुजोपाइए।किधौंचलेजाइ
कुंभकानको जगाइकहेआयोघरभक्ष्यताकोभलोईमना
इए ॥ ३२ मेघनादजायढोललाखकबजायरह्योतयोंत्यों
कुंभकानजूबडोईसुखपायोहै । हाथिनकेपुंजतेतोगोड
लोंचढाइरहेमानोपांवचापभलीभांतिसोंसुवायोहै ॥ बो
लीतबनारयाकोएकहैउपायकहोंजैसीभांतिरुद्रआनआ
पनजगायोहै।कानमेंगणेशकोपठायपाछेकोटिगणलोच
नमुँदेईरहेउत्तरसुनायोहै ॥ ३३ ॥ सोईकामकीनोगज
मुंडनबुलाईकेबजायढोलदुंदुभीसुकानमेंपठाएहैं। और
सबशूरनसोंकह्योहैपवरलागोजायलगेकेसजैसेपंछीगिर
छाएहैं ॥ घरीचारपांचलोंतोसमुझनपरीकहाभएगति
गएकिधौंपेटमेंपचाएहैं । ताकेपाछेराजाकेकुमारकुंभ
कानकह्योजानतहोंदेतदुखरावणजूआएहैं ॥ ३४ ॥

स०-सोवतहोघटकानजहांचललंकपतीपहुँच्योतिहठौरे।
किउँहोजगावतमैंहरीजानकीसोजगमेंसमुझावतबौरे ॥
सोभुगतीनाहिंक्योंसुननाथविनारघुनाथभजेनाहिंऔरे ।
रामहिंक्योंनवनेकपटीजोबन्योतौडीलसुशीलकोदौरे ॥

ताहीकेहेतलियेकपिकोदलरामबडोसुनवैरबढायो ॥
दौरविभीषणभाइमिल्योइकबानरआयकेगांवजरायो ॥
औरबडीविपरीतसुनोतुमतेनडरोतुमकोडरपायो ।
याहीतेवेगचलोघरकोदुखमोहिंहँसैसबतोहिंसुनायो ३६
औरसबैतुमजानतहोखरदूषणवौजिहभांतिपछारे ।
शूर्पणखापतिहीनकरीमुनिमारमरीचादियेदुखभारे ॥
अक्षकुमारकेसंगखपेभटरक्षसकोटिनकोटिसँहारे ।
क्रोधबढायलिवायलैवीरहिलंकपतीगढलंकपधारे ।३७।

कुंभकर्ण उवाच ।

स०-जोरसभासबबोलबडेभटबूझतराजकीरीतपुरानी ।
जोबलहैतौक्योंचालिएजिहमारगहोयनअनजनपानी ॥
बातसुनेसबबोलउठेधनहोघटकानबडेसुरज्ञानी ।
रावणबोलउठ्योसमुझीहमजानतहैंतुमदेहबुढानी ३८

कवित्त – बोल्योकुंभकानअबलंककेअबासएतोला गतउदाससुहिंकैसेकैसुहावने । जेईजेईठौरनतेकामकोग रबजातोतेईतेईठौरअबलागेडरपावने ॥ चौपखाअटारी चित्रसारीचौकभारीमानो कोऊबस्योनहींअबयहिमेंब सावने । कौनसीयबातजाकोएतोउतपातभयोरातविन आयेदौरदीपकजगावने ॥ ३९ ॥

रावण उवाच ।

कवित्त–बातसुनजर्‌योअंगअंगारिसमर्‌योमोहिंबडो

थोभरोसेसोतोऐसेबिललातहै। लोहकीनआंचलागीत्रा
णकीनवृष्टियागीनींदअबजागीकिधौंतातेभभरातहै ॥
एकहांकबांदरपलातजैसेसूखेपातबातकेचलेते भ्रातकौ
नउतपातहै।बादहीउठायोहमतैसोफलपायोअबकहैया
सोंसोइबेकेधामक्योंनजातहै ॥४०॥ बडोईसहाईजान
करतेबडाईहमसुतोबातपाई मानोरामहीसोंप्रीतकी ।
आयेकेलराईरघुराईहै मचाईजबतबयोंसुनाईसीचुराईसु
अनीतकी ॥ बडोदुखदाईयाहिपीरेनपराईयाकीनींदउ
चटाईसुतोबडीविपरीतकी । शिवकीदुहाईमैंनकहीहैब
नाईजहांऐसेजुरेभाईतहांबूड़ीबातजीतकी॥ ४१ ॥

कुंभकर्ण उवाच ।

कवित्त –ऐसेजबबोल्योकोपक्रोधसोंबढाइओपसोइ
गयोनसकेविवेकनिरमोकते । बोल्योकुंभकानकौनचंद्र
मासुरेशमानकौनकालव्यालमरजाहिमेरटोकते ॥ ऐसी
सुनसबैलोकपालनकेबूड़ेदुखतेहीछिनकैसेजैसेऋणीऋ
णथोकते।रामसोंजोलरेतौतोदेवनकेदीवावरैनकरामभा
जेदेवभाजेलोकलोकते ॥४२॥नींदतेभयोनिरासदेखेभ
टआसपासगागरपचाससोपखारमुखहँस्योहै । खैबे
कोमँयोजेतापायेगढलंकमांहितऊनअघायोमदपानर
समस्योहै ॥ रुद्रपैनमांग्योवरमासकेपहारघरकूपभरे
आसवनतीसोंजगबस्योहै। पाछेबोल्योमहाराजकाहेको

विषादकरेरामआनकुंभकानदाढ़नमेंधँस्योहै ॥ ४३ ॥
कहोतोसँहारोंकहोसिंधुबोरडारोंऔरजोकहोतोनभमेंबि
थारोंएकएकही। रीछकपिझुंडनकेमुंडनउतारोंकहोको
टलेउसारोंपैनहारोंरहोंटेकही ॥ आपनोतोपौरुषनतो
रडारोंमहाराजकालकोपछारोंसबकरोंसाँचीजेकही। ने
कजोसँभारोतारेतोरभूमिपारोंऔरजाहीको पचारोंता
हिमारोंछेकछेकही ॥४४॥ तौलोंदुचिताईजौलोंनींदन
जगाईमेरी सुनलंकराईभाईशोकननिहारिये । विनाइ
सहाईभुजदाहनीउठाईजबकोहैरघुराईतबकोनकोविचा
रिये ॥ गाजउठेरावणबडेईघनश्रावणज्योंसाधुसाधु
कुंभकानपौरुषनहारिये । छत्रिपनछांडेझुंडछत्रनमेंछो
डलागेतेरीएनछत्रपैपरत्रनाविगारिय ॥ ४५ ॥ कुंभकान
गाजेरणमारूभांतिभांतिबाजेसाजजंगशूरलाजेदेवब्रह्मं
डके । दरकेपहारदिकपालसरकेसरोषमानोपुंजबिजुरी
हिकरकेप्रचंडके ॥ हियेकपितरकेफरकेनैनदाहने
उगाहनेचढ्योहैयममानोप्राणचंडके । युद्धकोसमुद्र
गिरिमंदरबिलोवेमानो देखतहैराजाजुरआएखंडखंडके
॥ ४६ ॥ बोल्योकुंभकानकपिपुंजकहेकांपतहोतुमसोंल
रेतेबडीलाजमरजाइए। अरेकुलपापीतूविभीषणडराय
जिनभीरपरेछांडसंगप्राणनबचाइये।लछमनतुहीपक्षम
नोहोइहांसीनहींबलकोविलासहैतौऔरनजनाइये।शिव

कीदुहाईक्योंहोमरते विनाहीआईकोहैरघुराईभाईताही कोबताइये ॥ ४७ ॥ जौलोंरणशूरमानपैयेकोऊऔरतौ लोंभलेअनहोततोकछूकरघुराईहै । मोकोदेवजानतहैं जानोकिनजानेमुंडतुमसोंलरेतेमेरीकौनसीबडाईहै ॥ जै सेबडेमेघबिनवारिदकोपायजलपीछेछोटीगागरीतेप्या सनबुझाईहै । औरजैसेकेहरीपछारपुंजकुंजरकेपाछेल च्छमच्छरकोभौंहनचढाईहै ॥ ४८ ॥ एककपिभागेजा इलागेहनुमानपीठएकअनुरागेरघुनाथकेचरनको । ए ककहेंजानतहैं एईदिनबूझोइनेतेईआगे चलेघरयमकेभ रनको ॥ एककहेंनेकयाकेडाटेहियाफाटेजातआजकौन शूरकहोइनसोंलरनको । एककहेंरामलच्छमनसीताजी तालेहैंमारजाहैंतुमहींजुआएहोमरनको ॥ ४९ ॥

रामचंद्र उवाच ।

कवित्त—राममुसकाने देखेकछुकपिरानेकपिलछमन बोलबोलेआपनेसुभाइसों । ताहीसमैहनूमानआयकेनि वायोमाथनाथजोकहोतोमारोंएकही उपाइसों ॥ अंगद अनंतबलनीलनलजामवंतसबैकोपभरेमारबेकोचित्तचा इसों । तौलोंनिजकायआयगदाकोउठायऊंचेकुंभका नबोल्योगुरुरायरघुराइसों ॥ ५० ॥

कुंभकर्ण उवाच ।

कवित्त—ताडुकानतालऋषिवामनपरशुरामसेतनस

मुद्रकोनछुद्रवंशहीनमें।लंकऔमरीचनाहींवालीकपिनी
चनाहींत्रिशिरासुबाहुखरदूषणमलीनमें॥ रुद्रकोपिनाक
नाहींइन्द्रसुतकाकनाहींशूर्पणखानाकनाहींकीनेदेवदीन
में।कुंभकाननामकहां पैयेमोतेजानरामएजुतुममारेहैंन
तेरहनतीनमें ॥ ५१ ॥

दोहा।

जोरघुपतिचरणनविमुख, तेऐसेगरबार ॥
निजअपराधनसमुझहीं, प्रभुसोंमांडैंरार५२

हनूमान उवाच।

सोरठा-तबबोल्योहनुमान, करगिनतीसांचीकही ॥
इनतोकियोसयान,हमैंसगुनहैसौगुनो ॥५३ ॥

कवित्त-गदागहधायोकपिमंडलभगायोतिनजैसेच
लेवायुपुंजबादरउडाएहैं।एकहीचपेटयमदूतनकेभरेपेट
जीवतलपेटसबझेलकैचलाएहैं ॥ बडेबडेशूरनकोबडेई
लगाएहाथदेखरघुनाथभलरीझमुसकाएहैं । एकदबरहेग
हिरामपांइएकनअनेकनकेप्राणकुंभकानलैसिधाएहैं ४॥
बहुरोंत्रिशूललैकेधायोहैलँगूरतकयाकीदेखसूरत पिना
कीरीझगायोहै ॥ताको तेजदेखदुरेरविकोमजेजरामदौर
तिनताकँकापिराजकोचलायोहै॥ ताहीछिनरामचन्द्रबा
नलैकमानमुखतक्षकगरुडप्रतिपक्षकैपठायोहै । लाग
ननदीनो टूकटूकमारकीनोजैसेदीपकोप्रतापएकफूंक

हीतुझायोहै ॥ ५५ ॥ तीसरउठाइकैफिराइमुगदरधायो आयोनलनीलढिंगबोलडरपाएहैं । फूतकारहीसौंपकेतू तसेगिराएकपिवंशकेसुपूतमानोदारिदउडाएहैं ॥ रोंदेए कपांइनसोंमोरचितचाइनसोंकीन्हेबहुधाइनसोंचामके चलाएहैं । तौलोंहनूमानआइहाथतेछुडाइलीनोताके मारवेकोकपिऔरहीबुलाएहैं ॥ ५६ ॥

अंगद उवाच ।

कवित्त–अंगदसुजानकह्योकहाँपावेजानअबपौरुषप्रमा नदेखमारमारगयोहै ॥ नीलनललागेभुजजामवानतो रीभुजबालिसुतबहुरोगिरायभूमिलयोहै ॥ कोऊमारेबा नकोऊचोंथेनाककानताकेप्रानकौनकाढेकोऊराम बिन भयोहै। फूलेकिलकारीचढ़बैठेगिरिभारीमानोबहेसोइग योऐसेबाटसुखलयोहै ॥ ५७ ॥

रामचंद्र उवाच ।

कवित्त–रामचंद्रजानीकपिमंडलनज्ञानी याकेनेक हूसँभारेकथावडीविपरीतकी । मारवेकोसमोहमपायो हैगिरायोरिपुअबजानमारहैलोहमहूअनीतकी ॥ एक बानतानकेलगायो हियेतातकालभेदकेपतालजाइकही बातजीतकी । दूसरोकमानलैसिधाऱ्योसुरलोकमाहिंऐ सेरिपुमाऱ्योसेनाआपनीनिचीतकी ॥ ५८ ॥ हाहाकार भयोभागरावणकोगयोसबपाछेहनूमानलैपहारसोंउडा

योहै। हालचालपरीनसँभालरहीकाहूतनमानोप्रलयका
लकोबबूलाबडोआयोहै॥ एकसंगचलेएकआपसमेंदले
कपिएकगिरेपातसेसँभारेसुखपायोहै। ऊंचेनभेहेरहेरदे
वनसोंटेरटेरबेरबेरलछमनबोलयोंसुनायोहै॥ ५९॥

छप्पय—तजहुशोकसबअमरलोक रहियोहढआसन।
प्रभुदिनमणिमगतजहु नेकटररहुकमलासन॥
विगतध्यानलोचनपसारात्रिपुरारिनिहारहु।
उडुगणवरुणसमीरधीर जिनतजहुसँभारहु॥
सुरलोकआजमंडलकरहुकुंभकानवधपलउठग
रघुपतिप्रचंड भुजदंडलगपरसखंडधरपरठुलग ६०

कवित्त—पऱ्यो जब गातभयोबडोहीअघातमानोप
ऱ्योवज्रपातढिगआयेरघुराइहैं। कह्योसुसकाइयहबडो
ईअकाइमानोयाकोमांसगीधमासबीसतीसखाइहैं॥ बो
ल्योहनूमानरामजान्योईनजातकहांहाथकहांपांइयाके
कहांलागेघाइहैं। द्वापरकेअंतएकभीमबलवंतह्वैहैसोतो
याकीखोपरीमेंबूड़बूड़न्हाइहैं॥६१॥ बडीजीतभईरण
हरखेसुदेवगणबरखेसुमनशूरपरखेलरणके।करकेप्रचंड
कपिखरकेनलंकभटसरकेनिषंगजोररामकेचरणके॥ क
हीकपिराजआपआपनेसमाजरघुराजकाजकरोदुःखमे
टेंसीहरणके। थानेथानेहनूमानअंगदसयानेरहोजानेनि
जकानेदिनरावणमरणके॥ ६२॥

रावण उवाच।

कवित्त—रावणनिहारेकुंभकानतो पछारेरणहारेकपि यूथतेसिधारेशिवलोकको।ताकेसंगभारेभारेशूरेजहँमो रेतऊनेकनसँभारेरामचंद्रबाणफोकको॥ दईकेसँवारेह नूमानतवजारेघरआपनतोआंचनलगाईनखनोकको। ताकोजाइमारेकोऊकामकोसँवारेभाईताही दिनभलेबि दादेऊंमनशोकको॥ ६३ ॥ याहीगढलंककोनिशंकहै नदेखेंदेवआयसुकोमानमाथेभूमिशिरनावते। सातपौर बाहरबिछौना बिनठाढ़ेरहेंन्यारेन्यारोआपनजुहारपहुँ चावते॥ जाहीकोबुलावतोसुआवतोनिशंकमनमेरेबिन कहेढिंगबैठनेनपावते। ताहीगढकोतोरीछबांदरलपेटत हैंसबदिनएकसेनपाएमनभावते॥ ६४ ॥ कैतोसुरलो ककेमैंरोकरोकराखेदेवराजकोसमाजऔरकहांलोंबखा नियै। कंचनकोदेशमनरंचनकाहूकोडरमेरोत्रासमहीदे शदेशनमेंमानिये॥मेरेजीवतनिशंकव्हैलँगूररीछबीचलं कधँसेऔरआगेकहाहोगोजांनिये। जानकीकोकोपहै किभागहीकोलोपहैकिमोकोशिवलोकहैसुकैसेपहँचा नियै॥ ६५ ॥

दोहा।

रामविमुखतिहबुरीमत, पहलेहीहरलेत॥
बुराहोतसमुझनहीं, भलोदिखाईदेत॥६६॥

सोरठा–रामगीतमनलाय, सुनोसुनावतरामकहँ ॥
तिनकेदुखरघुराय, कुंभकरणज्योंमारहै॥६७॥
जेजगनिंदकलोग, रावणरामनसमुझहीं ॥
यहरसातिनाहिनयोग, औरकहेरसहानिहै ॥६८॥
मेघनादअबजाइ, रणक्षितियुद्धमचाइहै ॥
शिरऐहैउतराइ, आगेकथासुहोयगी ॥ ६९ ॥

इतिश्रीरामगीते कुंभकर्णवधोनाम एकादशोऽकः॥ ११ ॥

द्वादशांक १२

रावण उवाच ।

सोरठा—रावणक्रोधप्रचंड, मनोआगिनघृतपरसयो ॥
फरकबीसभुजदंड, मेघनादबोल्योनिकट॥१॥
अबकहुकौनदुराव, कुंभकरणजूकेप्रगट ॥
रामउतारोचाउ, इन्द्रजीतकेजीवते ॥ २ ॥

कवित्त—कुंभकानमारेशूरबहुतेपछारेअबजानतहमारेपक्षैहैनरुद्रदाहने । हारेसबराक्षसनटारेझुंडबांदरकेभागेसुखभारेदुखपरेहैंसराहने ॥ शंकाबिनलंककेकिंशूरव्हैविदारहोतोकाइरज्योंदेततोहिंघरमेंउराहने । सुनोपूतमीतभांतभांतविपरीतरामचंद्रकीअनीततेनचीतमननाहने ॥ ३ ॥ आजराजधानीकीबिकानीहैविभूतिसुनपूतमेघनादतैननेकजीयआनीहै । कुंभकानेजूझेदिनतहींतेबूझेऔरआगेकेबनाउकीनबातकाहूजानीहै॥ यहैहमजानीतौऊजानकीबिरानीहोतऐसीबोलीवानीमानोबीजुरीतरानीहै । जाकोहरआनीरहीभोगकीकहानीसुनभईसियरानीमेरीआयुसियरानीहै ॥ ४ ॥

मेघनाद उवाच ।

कवित्त—बोल्योमेघनादराजाकाहेकोविषादकरेकहाभयोजोपैरणकुंभकर्णहाऱ्योहै । रामचंद्रकीनोछल

औरहूपुजायोबलगयोदलभाजगहएकलोपछार्‍योहै ॥ भूमेसेजभईतवनींदआइगईव्हैहैदोषकौनदीजेउनपायो सुखभार्‍योहै । कैसीअबहांसीकौनकाजरहैवासीरणऊंध कीउसासनमेंफांसीमेलमार्‍योहै ॥ ५ ॥ दीजेमोहिंपान अबकहांकोऊपावेजानयुद्धकोनिदानकौनमेरीबातदुरी है । तुमहूतोजानतकिजीमेशंकआनतहोजीत्योसुर राजऐसीताकीपतबुरीहै ॥ वैरिनकेमारबेकोऐसीखड्ग धारजैसेपापनकेकाटबेकोकाशीशिवपुरीहै । जीजेतौ लौंराजकीजेरणकोनपीठदीजेलोकपरलोकराखबेकीबा तजुदीहै ॥ ६ ॥

रावण उवाच ।

सवैया-प्रेमसोंनैनबहेयशगावतनाचतखेदचलेसबअंगा। कैरणमेंगहखड्गभलीविधिलोहूसोंघाउभयेअरबंगा ॥ एदोऊपूतजनेजननीजगऔरसबैसुतकीटपतंगा । जगकोठाकुरजगकोजीवनसोनरहोतहैगंगकोगंगा ॥७॥ आपनरीइहभांतिकीगाँठगयोरणमेंसुफिरोनाहिंकोई । रावणकेजियतेनभईसुतपूतसबैअबसोवतहोई ॥ मानसआइलगेगढलंकहदेवनकीनचलावतकोई । बीचमँदोदरीबोलउठीमुखदीनभईमनतेअतिरोई॥ ८ ॥

मंदोदरी उवाच ।

कवित्त-शिवसेसहायकहैंसबैशूरपायकहैंनारदसेगा

यकहैंलाखभांतमनीही । कंचनकोदेशहोंनसुपनेविदेश होंसुरेशअलकेशजीतकारणबेअनीही ॥ पूतमेघनादहो सुराजकोसुवादहोनजीयमेंविषादहोनकेहुयतिछनीही ॥ जोतोसीयजूकोनचुरावतोतूकंततौतोआजसबबातकी बिसातभलीबनीही ॥ ९ ॥

रावण उवाच ।

सवैया-कौनसमोइनबातनकोरणरामदहैघरमेंपटरानी। रामकेहाथमरेदशकंधरतैंसबबातसुकाहेतजानी ॥ औरकदाचबनेइहभांतितोआजबनेकहुकौनसीहानी। देहछुटेहूनसीयछुटीचलिहैयुगमेंयुगचारकहानी ॥१०॥

सोरठा-ज्योंसहस्त्रतपभान, क्रोधप्रगटरावणकियो ॥ दएपूतकोपान, इंद्रजीतजीतेबने ॥ ११ ॥

कवित्त-रामतेनडरेदौरआरिराइपरेसबमेघनादचढे रथलोहजुरेपेखिए । श्रोणितसोंभरेतऊठौरतेनटरेहाथि यारटूटपरेकहांलौजुलखलेखिए॥ बानमुखधरेलैकमान करकरैपैनरामेअनुसरेपलमेंभलेविशेषिए । खालीकी नेतर्केसरुभरेभरेभारेभटलरेलरेलरेपटमरेमरेदेखिए १२ बडेइबनैतशूरसबैपखरैतजैतवारठौरठौरनकेबडेबडेडी लहै । युद्धकोअडोलस्वामीकारजीअमोलगोलतेनिक सलेतातेकीमतभलीलहै ॥ कालकोबनाउलंकराउको नदाउपरैजीतनकोचाउकहूंयद्यपिसुशीलहै । रामक

विआजकालरावणकेलोगनकोकोपहूकीढीलपरलोक
कीनढीलहै ॥ १३ ॥

स०-मघवाजितकोसबशीशनिवायधँसेरणमेंहथियारउधारे
आयनिदानकीबातपरीकहहकेइहभांतिबजाइनगारे ॥
रोसभरेसमझोनपरेगहिबांदरकोटिनकोटिसँहारे ।
रामकेकोपनओपरहीफिरअंतकोअंतकेधामसिधारे १४
सोरठा-मच्योयुद्धदिनरैन, दुहूंओरमारूबज्यो ॥
मायारथचढगैन, मेघनादबोल्योतबै ॥ १५ ॥

कवित्त-तोर्योजिनधनुषपिनाकीकोमहाप्रबल जा
कोबलदेख भृगुपतिकीनोमौनहै ॥ ताडुकाकोमार
बालीबलसोंपछारोजिनजाकोभलिभांतिहनूमानखायो
नौनहै ॥ आपहीतेजाकेसबसेवककहैंगएकपिजाकेडर
सिंधुकेनखानमेंसुपौनहै ॥ मेघनादरवकभभकककह्यो
सभाबीचकहोकहोसीतापति रामचन्द्रकौनहै ॥१६ ॥

रामचन्द्रकी सेनाके वचन ।

कवित्त-बोलेसबशूरऐसे क्रूरहूनबूझेकोऊअरुमेघना
दआजऐसोइतरातहै । जैसेजेठमासकीदुपहरीमेंजलेपाँ
यँसूरजबतैयेकोऊऐसेबररातहै ॥ पाछेलछमनआगेअं
गदसोकपिराउनीलनलपांयतलअंजनीकोतातहै । बी
चरघुराइताकीबलजाइरामकविताहीकोनमूझेजाकोआ
जकालजातहै ॥ १७॥

इन्द्रजीत उवाच ॥

कवित्त–सुनरेसुग्रीवग्रीवनीकेकै निहारराज आपनो नराख्योतौतोकौनभांतिडरहों ।नलमेंतोबलकोविलास कहाबूझतहोनीलसेलरेतेटीकोनीलकोनकरहों॥ हनूमा नहूमेंकहोकौनसोंगुमानजाम्बवानसुनअंगदके प्राणहौं न हरहों।जौलोंठहराइमेरीमारतेनभाजजाइतौलोंकछूल रहैतौरामहूतेलरहों ॥ १८ ॥

दोहा।

योंकहकेवर्षतभयो, बाणबूंदइकधार ॥
ऊंचनीचकायरसुभट, सबकीनेइकसार १९

सोरठा–कछूनरहीसँभार, कितेशूरकटधरपरे ॥
ज्योंदावापरजार, चटकतपटकतबांसतृण २०

कवित्त–जाहिकोपचारेताहि पहलेहीमारेआजभ लीभाँतसबहीकेबलपरखतहै। कहिरघुवीरमेघनादमेघ नादकरपाछेबाणबूंदखरीबडीबरखतहै ॥ जानतहोंआ जरहेगोनकोऊकपिदललछमननेकहूंनकोऊहरखतहै । होकहूंनिफाटकसबाकीओटव्हैकेवीरसबहीकोप्रानमा नोकालपरखतहै ॥ २१ ॥

दोहा।

जहांजहांकपितरतहै, तहँतहँदियेभजाइ ॥
तेमिलश्रीरघुवीरसों, बोलतगहगहपांइ।२२।

हनूमान उवाच ।

कवित्त-मेघनादकोप्योकालनाथऐसेबोल्यो चाल जाकेबलआगेशूरकौनसेसराहने । नीलकोअनंतघाउ ढीलेमनकपिराउआजप्रणकीनोसबबांदरनिबाहने ॥ ए तेपररावणसोंशीलतुमराखतहोभौंहनतनाईं आजहूजैने कदाहने । कीजेनबलाउचलदेखोदशपांउरणलोहूकत लाउमेंरलाउकछूनाहने ॥ २३ ॥

रामचन्द्र उवाच ।

कवित्त-हनूमानहूकीओरदेखमुसकानेरामजाइसुध लेहुसबबानरदुखारेहैं । बोलतकपोलनतेछविकेतरंगउ ठैतिरछौंहेंकंजनैनमोहेभृंगमारेहैं ॥ बोल्योलछमनएध नुषलीजेबाणलीजेइनहूकोदीजेहमतापसीबिचारेहैं । हां सीहांसीटारतहोजीत्योरणहारतहोइन्द्रजीतजीतसबैमा रमारडारेहैं ॥ २४ ॥

लक्ष्मण उवाच ।

कवित्त-काहेकोउठायो भारकरतहेविचारकहोहौं कमानसोंबडाईजुतनाइहों । बाणनसोंकहोहौंबनायरुंड मुंडकाटवैरिनकेश्रोणितमेंनीकेकैनिवाइहों ॥ सुनोरघु वीररणभीरकेपरेतेआजकामजोनआइहोंतोकौनकाम आइहों । दीजेमोहिंपानकोऊपावेकहांजानमेघनादको तोमेघकरपौनज्योंउडाइहों ॥ २५ ॥

रामचन्द्र उवाच ।

कवित्त–हँसेरघुबीरकरुणासोंरसभरेनैनलछमनबा
नसोंकमानजबतानहैं । हनूमानकाहेकोगुमानरहेरावण
मेंभारीहैभरोसोमोहिंजीसोंगहआनहै ॥ पीठठोंकडीठ
भरदेख्योमुखकह्योवीरऐसोयुद्धकीजोजैसीसदाकुलबा
नहै । बाढ्योअहलादरामकीनोशंखनादकह्योरणको
सवादमेघनादआजजानहै ॥ २६ ॥ उमडेअनेककपि
एकनतेएकतपिलछमनजूकोचहूंओरघेरघेरके । आगे
भएहनूमानपाछेनीलजाम्बवानलंकाकेनिशंकशूरमारे
हैंनिवेरके ॥ ऐसेबाणचलेजैसेश्रावणकेमेहभलेमारूकोब
जायरामरुद्रकहेंटेरके । गीधनकोमासबडोरावणको
त्रासमेघनादगह्योदांतघासऐसोयुद्धहेरके ॥ २७॥ परी
लोहमारसबआपसमेंबेशुमारकहूंतरवारनसोंहाथतरफ
तहैं । कहूंमातेहाथीहूगिरेहैंकटसाथीकहूंभातीबांधेगि
नतीकेश्वासनभरतहैं ॥ एकफेंटबांधकेकुठारनसोंलरें
धाइएकशूरधाएबिनमाथेकेपरतहैं।जूझेएकवारदोऊका
हेतनपाछेकोऊतेतोदोऊएकअपछराकोबरतहैं ॥२८॥
मेघनादैरिसआईमंत्रपढकेचलाईबाणहीमेंनागफाँसबडी
दुःखदाइनी । जाकेतेजआगेरामलोगनकेतेजघटेजैसो
प्रभुजैसोजनसबहीकोघाइनी ॥ पांचहाथियारेहैंपैस्तडे
महाभारेहैंयैनेकनसंभारेप्रानसबकेउडाइनी । काहे

कीलराइउनकथाइंचुकाइंजैसेपारामारडालतहैंपलमेंर
साइनी ॥ २९ ॥

चकवी उवाच-दोहा ।

पहलेश्रीघुवीरजी, चकवहिदियोशराप ॥
अवनिशिकोचकईही,तजमनविरहाविलाप॥

स०-शापदियोजिनमोपतिकोसोइरामपऱ्योदुखसोंरनमें
रघुवीरसमीरकेपूतसमेतरहेछिपकेकपिकेगनमें ॥
अबजीतभईमघवाजितकीकहकेहरषीअतिहीमनमें ।
चकईनिशिव्याकुलहीमनमेंतऊनाचउठीहँसकेवनमें ॥
रावणसोंकहीदूतनजाइनिचीतभएरणमेंहमजीते ।
रामसमेतसबैकपिमंडलभूमिपरेजनुचित्रनचीते ॥
नागकीफांसपरेइहभांतिनश्वासभऱ्योउकसेनकहीते ।
लैसियकोदिखरावहुजाइजुमोहिंभजेअजहूंअवहीते ३२

सखीशर्मा उवाच ।

स०-सीयसोंबातकहीशरमारणदेखसबैभटजूझपरे ।
तिनदेखकेश्रीरघुवीरभरेदृगसींचकियेदुखपुंजहरे ॥
कहीनाथसुजानकीपाइनलागतलाजगहोइहभांतिलरे ।
तुमउत्तरफेरनदेतहोमोहिंछमोअबजेअपराधकरे॥३३॥

सीता उवाच ।

स०-जबव्याहसमेऋषिमंडलहोतबमोहिंअसीसदईकहकै
रघुवीरसुहागनहोहुसदाभुजसोंभुजहाथनसोंगहकै ॥

तिनहूकीकहीअबझूंठीभईऔवेदकीबातगईबहकै ।
सखिऔरकीकौनकहेयहिऔसरप्राणनजातरहेसहकै ॥
वनकोचलतेकहीजेबतियांतेईजानतहोंचितमेंनरहीं ।
बसकेवनमेंपुनतोसँगजानकीराजसमाजकरोघरहीं ॥
सोइश्रीरघुनाथतिहारीएबातगडीजियमेंसचक्योंटरहीं।
तेइझूंठभईमेरेप्राणपतीसियपापिनिकीसबहौंसरहीं ३६
अजहूंअपराधनजानकीकीभुजवामफुरेमिललोचनसों ।
अँचराउकसेशुभसोनसबैनमरोंनाजियोंइनशोचनसों ॥
अजहूंनहीं देखतहोंभरनैनपरेक्षितिकोनसँकोचनसों ॥
कहोबूडमरोंकहोजाइझरोंहिमबीचगरोंमनशोचनसों ॥

कवित्त-ऐसोसुखमानतेनप्राननकोतानतेनरतीभर भ्राततेनमंदिरनवनते। ससाकेसनेहतेनबनीठनीदेहतेन कंचनकेमेहतेनकहूंसखीजनते ॥ जैसेसुखमेरेजीयहोइ मेरेप्राणनाथनैनजोकटाक्षकोरपरेउठरनते।नैननमेंशरम समोईशरमाकेआगेजानकीबिलबिलायरोइरोइमनते३७

दोहा ।

रामचरणतरलच्छमन, सियदेख्योबिनचैन
हियोफटतअँसुआढरत,बोलततासोंबैन ३८

सोरठा-भजीमौनरघुराज, कहलछमनकिहहेतते ॥
भलीनिबाहीलाज, रघुकुलतेलघुकुलकियो ॥

कवित्त-अरेप्राणवल्लभकेवीरवीरलछमनप्राणनाथ

मोसोंआजबोलतननेकहूं। जानतहोंमेरेअपराधनतेहू
ठरहेबूझेविनजैसेहैंकरतऐसीहैंकहूं ॥ तूतोमेरेचरणको
सेवकहैरेसुपूतनेकबोलप्राणमेरोजातकहूंतेकहूं । कासों
कहोंबातदिनहींतेमोहिंभईरातकैअनाथगएनभलोकलो
कमेंकहूं ॥ ४० ॥

सोरठा–बच्योजीयउतपात, रामचन्द्रलछमनथके ॥
जनकसुताजगमात, प्राणनसोंविनतीकरै ४१॥

स०–प्रानसुजानअजानपनोतजमानकह्योसुनबालजमाती
मांगतहोंइकबातबडीकरजोरबडेदुखमेंबिललाती ॥
जौलगपौनचलेजगमेंसियजीवतहैबिनरामसँघाती ।
तौलगदेहकोयोंतजरेजैसेपन्नगीकांचरीकोतजजाती ४२
काहेकोदूताकियोहनुमंतदईजिनरावणकेपुरदों ।
अरुकाहेकोसिंधुहेबांधदियोदुखलैयशबादहीकौनसीगौं
कपिमंडलवीरसमेतसबैमुहिंछाडकेक्योंनगएघरकौं ।
तुमअंतनबातनिवाहसकीसुकहूंगएआपकहूंकरहौं ४३

दोहा।

रेसियकेजियबातसुन, अबपियबिनगतिकौन॥
कैलैबूड़समुद्रमें, कैउडमिलनभपौन॥४४॥

कवित्त–ऐसेबिललायकरकाटकाटखायनाविमानते
उतऱ्योजायआँसुनबहावती। कछूनबसायकहेहायहाय
हाइरघुराइतुमऐसीकरछांडीअनभावती ॥ मनकेमनो

रथजेहुतेतेबिलानेसबशरमाशरमकरकाहूनसुनावती ।
लोगयोंकहतमुहिमांगेफलदेतविधिजानकीतोआजमी
चमांगेहूनपावती ॥ ४५ ॥

शर्मात्रिजटीके वचन ।

स०—रोवतजानकीकोशरमासुअशोकवनीमहिंजाइधरी ।
त्रिजटीतहँआइसँबोधकियोसियप्राणतजेजिनएकघरी ॥
सुनरामप्रतापहुताशनतेतिनरावणकीजरहीजुजरी ।
मितजंबुकयूथनसिंहकेसोवतसिंहनिहैकबहूंपकरी४६ ।

नारद उवाच ।

कवित्त—सुन्योसुरराजआजहारेरघुराजरणप्राणलेसि
धारेओटगहीहैसुमेरकी । रामकविएकश्रीमहेशबिनध
कधकीमिटेनविरंचकीनवरुणकुबेरकी ॥ लोकलोक
लोकनकेदेवऐसेभाजेजातज्योंबघूरणमेंबातदेखकेकुफे
रकी । नारदकह्योपुकारनागफांसबांधडारेसुनतहीगरु
डगरूरसोंदरेरकी ॥ ४७ ॥

गरुड उवाच ।

सोरठा—इहविधिगरुडप्रचंड, चल्योसुतातरिसातमन ॥
रावणकेभुजदंड, रामरजाइसतेहने ॥ ४८ ॥

कवित्त—पच्छनकीवायुसोंउडायेगिरिलच्छलच्छ
मानोतच्छभच्छकोप्रतच्छकालआयोहै । वासनातेअ
हिकोसलाखकगएहैंबाहिरामचन्द्रजूकोशिरनाइकेसुना

योहै ॥शूरनकीकौनगतिचौदहभुवनपतिनैननकीसैनतै अमृतवरषायोहै । रामहीकीओरनकेजीएहैंकरोरनपै चोरनकीओरनतोएकैनजिवायोहै ॥४९॥ सवैफिरगाजे सवहीकेशंखवाजेसुनवातकोविराजेप्राणजानकीकेदेहमें गरुडसिधारेसुरलोकमिटेशोकसवमेघनादगएदवामिलर हेखेहमें ॥ सुनतहीरावणकेछयेसुखतेहीछिनकैसेजैसेधू रछयेश्रावणकेमेहमें । वाढ्योदुखभारीनागपाशभईन्या रीपाईकौनवातप्यारीहमाशिवकेसनेहमें ॥ ५० ॥ मनमें विचार्योपापमिलवैठे वेटावापमायाकीवनाईसियमारि दिखराइके । सोईकामकीनोएसीरचीजैसीहैनसचीरंभा उरवसीदेखरहासुखनाइके । रामप्राणनाथरोइकेहमुख वानीतहांआनीगहिकेशजहांजुरीअनीआइके । रामैदि खराइमाथोकाट्योहैवनाइहायहायकररामक्षितिपरेमुर झाइके ॥ ५१ ॥

विभीषण उवाच ।

कवित्त–कोऊकपिहैनसुखीलछमनमहादुखीठौरठौ रऔरहीकीऔरैभईवातहै । धाइकेविभीषणसुनायकही सवहीसोंहायहायरामचंद्रगातकुसरातहै ॥ नाथमेघना दहीकीमायाकोविलासजैसेनागफांसपरीतैसेयहैएकघा तहै । जौलोंएहपापीदेहहोमनकरनपावेहातआवेभली नहींवडोउतपातहै ॥ ५२ ॥

स०-हैदुहिनाचलउत्तरओरतहांरचयज्ञमहाअनुराग्यो।
आपनमांसकेखंडनकाटिहुताशनमेंसुईहोमनलाग्यो ॥
दौरपन्योहनुमानतहांवहचौंकपन्योजनुसोवतजाग्यो
होमनहोनदियोरिपुकोहथियाररहेरणकोउठभाग्यो ५३

लक्ष्मण उवाच ।

कवित्त-पाछेलछमनकहीमेघनादमहापापीवामज पजापीअबकहांजानपाइए। रणकोनिदानआजसाखीहै सहसभानमेरोबानसहरेकैआपनोचलाइए॥ सुनिजबबा तउठीआगगातगात तिन योंचलाएबानादिनहीतेरातगा इए । तेसबबचायकहीलछमनजायप्रभुआजयाहिमार तहांदुंदुभीबजाइए ॥ ५४ ॥

दोहा।

तबहिंकोपकरलच्छमन, पटकभुजाक्षितिपीठ
आजसँहारोंइन्द्रजित, श्रीरघुवीरसुडीठ॥५५॥

छप्पय-अतिप्रचंडभुजदंडकठिनकोबंडसँभाऱ्यो ।
रतनजटितसुघटितबाणातिहमध्यसँचाऱ्यो ॥
अरिसन्मुखसोइसाधसुभटरणमाहिंचलायो ।
मेघनादशिरकाटप्रगटब्रह्मांडउडायो ॥
पुनिजहँथोलंकाधिपतिसोइशिरगिरतहँकरपऱ्यो ।
जीत्योसुलछमनरामबलअरिकुलहरिसुंभरहन्यो ५६

सोरठा—नईनकथाविचार, सुकविरामहिरदेकही ॥
ज्योंमछलीविनवार, त्योंतरफैलंकापती॥८७॥
आगेसुनहुसुजान, श्रीरघुनाथचरित्रको।
लछमनकोपहँचान, शक्तिभेदरावणकरे॥८८॥

इति श्रीरामगीते इन्द्रजीतवधोनाम द्वादशोंऽकः ॥ १२ ॥

त्रयोदशांक १३

चौ०-देखतमूँड़महातरफऱ्यो।निकसमीनजनुजलतेपऱ्यो।
शिवशिवशिवरावणकरउठ्यो।फणिकगएमणिमानोलुठ्यो १
चितहुलासधीरजगयोटूटी। रोगत्रिदोषनाडिकाछूटी॥
अबहिंकौनसोंआयशुकारों।प्राणनिकारबाहरेधारों ॥२॥
मेघनादजूझेरणमाहीं। यहसुनदेवनअंकसमाहीं।
तामेंइन्द्रअबैउठधैहै। ताकोजीतकौनघरऐहै ॥ ३ ॥
कुटिलकुवेरपवनसँगधावे। मेघनादवधसुनजरपावे ॥
हारीलंकबहुरअबजीते।जानहिंहमजोहमाशिरबीते ॥४॥

दोहा।

बंदिसालतेकालछुट, अबघेरतहैंआय ॥
मेघनादबिनयोंभए,ज्योंकेहरबिनपाय॥५॥

चौ०-जानबआजरुद्राफिरजैहैं। जाइरामकोमाथोनैहैं ॥
आजविभीषणकहांसमाई।बनीलंकजाकीठकुराई॥६॥
फूल्योफिरेगोइजनजीते। रामचन्द्रअबहोहिंनचीते ॥
रावणजीतनाबिलमनहोई। बालवृद्धजानेसबकोई ॥ ७॥
जाभाईकोभाईहँसही। सोनरसदाकालमुखबसही ॥
अबमोकोमंदोदरिदहई।वचनकठोरवज्रसमकहई ॥ ८॥
मैंजुकहतिवक्योंनहिंमानी। जूझेदेनहारजेपानी ॥
सबैकाठिनईबहुविधभई। राजहुभूलसबैसुधगई ॥ ९॥

दोहा ।

जितदेखेतितहीदुखी, सुखेसोयोरणमाहिं ॥
ज्योंजहाजबूड़तसबै, बूड़उछरमरजाहिं १०

चौपाई—अबएवचनप्रगटजगभए।यहसीतासततेमरगए
बिनअपराधसीयहरआनी।तातेरह्योनदेवापानी ॥११॥
हमभएमेघनादबिनऐसे। बिनपून्योचकोरगणजैसे ॥
जैसेअंधलकुटबिनहोई । ज्योंबिनलोननवनेरसोई १२॥
वेअतिप्रबलनिबलहमभए । सुखलैअबविधनादुखदए॥
पहलेदेहनछुटीहमारी। तातेपुत्रशोकभयोभारी॥१३॥
उसेरचेढगठीमनताके । मनवचक्रमपौरुषसबथाके ॥

दोहा ।

पुत्रजन्मसमसुखनहीं,मरणसमानसँताप ।
अश्वमेधसमफलनहीं,ब्रह्महतनसमपाप १४

चौ०यहसबबातचित्तमेंराखी।प्रगटसभामेंरिसभरभाषी ।
पहरकवचदुंदुभीवजाई । सेनाचतुरंगिनीबनाई ॥१५॥
वारणमत्तध्वजाफहराई । मनहुँसपंखउडेगिरिराई ॥
असलअसीलचकतचितघोरे। चलेचालनगरुडतेथोरे ॥
रथपंगतइहविधिमिलजोरी।रविरथसमनहिंपुंजकरोरी॥
पाइकचलेपरमाचितगाढ़े रणसुनकरतरोमसबठाढ़े १७॥
उठीधूररविबीचसमाना । जनुरावणकेक्रोधडराना ॥
धूमसुसारानिकसजगभरई । जनुहिमऋतुनभतेहिमपरई॥

दोहा।

द्वादशभानुसमानमुख,रुद्रइकादशतीठ ॥
रामलषणसन्मुखचल्यो,दईलंकतिनपीठ ॥

चौ०-लईचढाइकमानशब्दकर।बाणसँवारफोंकतामुखधर।
शतमुखकुंभकुंभचकचूरन।ब्रह्मादिकभैकरेंसँपूरन२०॥
अरुत्रिशूलतीसरेवज्रसम । जाकेलगतमरहिंकोटिकयम
चौथेचन्द्रहासचमकाई।जाकेतेजडरेंसुरराई ॥ २१ ॥
पचएँफांसजगतकोफांसह।जाकेडरशिवलोकनसासह ॥
छटेछुरीछुरिभांतिविराजै।जाकोनिरखनागपतिलाजै२२
सतएँशिफरसुसरसबनाई । बाणवृष्टितिनसबैबचाई ॥
बनीआठएँबरछीआछी।जनुयोगिनीलहूसोंकाछी २३॥
गोफननएँहाथकलमलई । सौमनकोसोगोलाचलई ॥
दशमेंगदादशोंदिशिफेरै।करप्रहारअरिकोटानिवेरै २४॥
गुरजग्यारवेंगिरिसमआही । डारेंपीसप्रचारेंजाही ॥
आगममंत्रबारएँसोहें । पढछांडेसुरनरअहिमोहें ॥२५॥
शंखशब्दतेरहेंसुहायो । बाजतमनोप्रलैघनआयो ॥
चटकचक्रचौदहेंचलायो। जनुरविरिपुहेमारणधायो२६
नागीधौयपंद्रहेंगही। मानोकालजीभलहलही ॥
गुपतगलोलसोलएँधारे। रिपुचिरईदिनलाखकमारे २७
चंद्रबाणसत्रएँविराजे ॥ शत्रुहनेसुइबचेजुभाजे ॥
भरबन्दूकअठारहछोडे । इतनेउदीपहोयतबडोडे२८॥

दोहा।

लैनेजोउन्नीसवें,अरुयमधरकरवीश ॥
सबैसफलरघुनाथबिन,वरदीनोशिवईश २९

चौ-० भयोसवारलंककोराई। पंचशब्दचहुँओरबजाई ॥
रणमारूइहविधिमनधरई। काइरहोयसुईलरमरई ३०॥
इतरावणलंकारजधानी। चढीमहलमंदोदरिरानी ॥
ढिंगसुरवधूयूथमिलठाढ़ी।मानहुँक्षीरासिन्धुमथकाढ़ी ॥
पतिकोदेखहर्षनहिंकरही। श्रीरघुवीरतेजतेडरही ॥
राजकरतबहुतेसुखपायो। अबविधिआनकुफेरबनायो॥
कंतअजानगरबनिरबाहै। श्रीरघुपतितेजीत्योचाहै ॥
ज्योंपतंगबहुतेबलकरई। दीपनभस्महोइसोमरई॥३३॥

दोहा।

ज्योंमृगगजशृंगनरदन,बडोबडोनहिंहोइ ॥
चित्रलिख्योकेहरनिरख,भाजतलजतनकोइ ३४

चौ-० गरजतनदीदूरतेआवे। मिलेसिंधुकोफिरकोपावे।
ज्योंचलपवनरूखकोतोरे। बलीहोइनसुमेरहुफोरे।३५।
ज्योंदीपकअतिज्योतप्रकाशी।तातनानिरखनसूरउदासी॥
ज्योंदृढबाणहोतेतेछूटे। वज्रहिलगेसोईफिरफूटे॥३६॥
इहविधमनमेंगठीविचारे। सखिनबीचएकैनउचारे ॥
चल्योकंतरणकोसमुहाई। बांधमूंड़बहुभांतबुराई।३७।

लंकापतिरणमेंउच्चरई। लछमनकोजुनमोतेडरई॥
मारोंआजवज्रसमनाना। मेघनादसँगकरैपयाना॥३८॥

दोहा।

ब्रह्ममंत्रपढसैहथी, रावणकरचमकाय॥
कालजलदमेंबीजुरी,जनुप्रगटीहैआय॥३९॥

चौ०-क्रोधउमडसोदईचलाई।पहलेकमलासनतेपाई॥
सफलसदानिष्फलनहिंहोई। चौदहभुवनबचैनहिंकोई॥
तेजपुंजआवतलहलही। सोहनुमानबीचहीगही॥
दृढगहरह्योनछांडीढीली।गरुडउडतसांपनजनुलीली॥
पकरसिंधुमेंदईचलाई। सोफिररावणकेकरआई॥
विसमयभयोलंककोराई।तकलछमनतिनबहुरिचलाई॥
फिरहनुमंतवसहीरोंकी। गहसमुद्रमेंगहरेझोंकी॥
सोफिरगईदुष्टकेहाथा। भयोसुकोपलंककोनाथा॥४३॥

दोहा।

सोबरछीलैलंकपति, चल्योब्रह्मपुरधाय॥
चतुराननकोमारके,बहुरिलरोंगोआय॥४४॥

चौ०-ब्रह्मलोकमेंगयोलंकपती।कमलासनकोप्योचिततेअती॥
क्रोधदीठदेखेदुजपायो। अपनेसिंहासनबैठायो॥४५॥
महाराजहमकछुनबिगार्‌यो।कवनकाजआपनपगधार्‌यो॥
हमपढवेददेहिंफलतोहीं।अबनहिंपढोंकहोजोमोहीं।४६

ज्योंज्योंतुमरूखेद्वैहेरो । त्योंत्योंमरणहोतहैमेरो ॥
तूमेरेकुलमाहिंउजारो । तोतेमोहिंप्रतिष्ठागारो ॥४७॥
पतिजोआजरहेनहिंतोते ॥ तौसुरअसुरडरेंनहिंमोते ॥
जोतुमकहोकरोंअबसोई । थकीरुद्रतेजोकछुहोई।४८।

दोहा ।

कह्योलोकपतिदैत्यसों, करीबडीतुमबात ॥
अजहूंचिंताजिनकरो, दिनएकसेनजात४९

चौ०—कह्योलंकपतिमारोंतोहीं।दीनीकपटसैहथीमोहीं॥
बारपचासकरह्योहँकारै । बिनलछमनफिरआईमारै५०
जिहलछमनसबकुटुंबानिबेऱ्यो।अबहुँआनलंकागढघेऱ्यो॥
होंहीबच्योसुयहगतिमेरी । तापरसकलनबरछीतेरी५१
मनमेंतोविरंचिसुखपायो । मुखफीकोकैशोकबढयो ॥
यहतोसुगमबातहैराई। मारोलछमनकहोंबुझाई।५२॥
तबनारदकोसुमरनकऱ्यो । नारदआनशीशपगधऱ्यो॥
तबहींतातबड़ोबड़भागी । जबहींडीठचरणसँगलागी ॥

दोहा ।

पुनिरावणकोदेखके, डरपगयोमनमाहिं ॥
चितमेंरह्योविचारके, आजकुशलहीनाहिं ॥

चौ०—आयशुदेहुकरोंअबसोई।महाराजकोज्योंसुखहोई
यहदातासबजगतभिखारो ।एपतिराखनहारहमारो५५

जोतुमयाकोमतोनकरऊ। तौतुमप्राणनतेनहिंडरऊ ॥
छाँडविलंबहिआयशुदीजे।लंकापतिकोकारजकीजे ५६
यहयशतातआजकहँपावै। रावणमहाराजघरआवै ॥
जाकीसभासकलसुररहई। सुरगुरुबैठन्यावकोकहई ५७
पँवरबुहारेपवनसदाई । आपनगृहेफूलसुरराई ॥
छप्पनकोटिमेघजलभरई।पावकप्रगटपाककोकरई ५८

दोहा।

वेदपढतहोआपतुम, औरदेवकिहमांहि ॥
सुरपुरनरपुरनागपुर,बसतबांहकीछांहि ५९

चौ०—चंदनछत्रचंद्रमाधरई। छरीहाथठाढोरविडरई ॥
वंदिशालमेंकालविराजै। जैदुंदुभीनिरानिधिबाजे॥६०॥
तिनहठकेजानकीचुराई। ताकेहेततरेरघुराई ॥
पहलेमुनिमरीचितिनमान्यो। छेदतालकपिबालसँहान्यो॥
खरदूषणखिनमांहिखपाए । सिंधुपारलंकागढआए ॥
कुंभकानरणमांहिपछारे।तापाछेमघवाजितमारे॥६२॥
पवनपूतबलवंडप्रबलअति। तिहिछाँड्योवतननलंकापति
सोइमहाराजतातघरआयो। हैकुश्यौंतसबलोहिंसुनायो६३

दोहा।

यहविनतीनारदकही, लंकापतिहिसुनाय ॥
तबरावणविधिसोंकह्यो,करियेकौनउपाय ॥

चौ०-तबबोल्योब्रह्मासुननारद।कहौंबातसुनबुद्धिविशारद
जबलगहनूमानरणमाहीं।।तबलगसफलसैहथीनाहीं६५
पवनपूतजबअनतासिधारे। तबबरछीलछमनकोमारे॥
अबतुमजाहुतुरतहीतहां। रामचंद्रऔहनुमतजहां६६॥
हनूपकरलैअनतासिधारो। तबबरछीलछमनपरडारो॥
महाराजकछुखेदनकरऊ।लछमनप्राणजायतुमहरऊ६७
करोमनोरथजोमनहोई। चलतसैहथीगहेनकोई॥
अबजोबीचयाहिकोगहई।यमपुरजाययातनासहई ६८

दोहा।

नारदसोंलंकेशसों, ब्रह्मैकहीपुकार॥
हनूमानकोतुमगहो,तूलछमनकोमार॥६९

चौ०-इहविधिचतुराननजबभाषी।बीचदियोहरिहरकोसाखी।
विदाभयोमाथोपगनायो।ब्रह्माकेजियमेंजियआयो७०॥
रावणचलतकहेपुनिवैना। लछमनमरेतोहिंकछुभैना॥
जाइसैहथीतापरडारो। लछमनबचेतोहिंफिरमारो७१॥
नारदहोहुहमारोसाखी। औरनाडिंठरावणयोंभाखी॥
लंकापतिइहविधिगरवान्यो।कमलासनजियमेंतबजान्यो
रोगीचपेत्रिदोषनलागे। सोयोंबकेजगतगुरुआगे॥
ताकेसंगनारकरदयो। क्रमक्रमकररावणतबगयो॥७२॥

दोहा।

नारदमुनिहरिकोभगत, विधिकीशासनपाइ
हैजुप्रतिज्ञाताकी, हनूभुलावोजाइ ॥ ७४ ॥

चौ०-नारदचल्योविलंबनकीना।धरकांधेरघुपतियशवीना
हनूमानकोदरशादिखायो । लंकापतिइतरणमेंआयो ७५
उतहनुमानबहुतसुखकीने । नारदामिलेमहारसभीने ॥
करप्रणामपरकरमादीनी।प्र [illegible]
जबहोंलंकदूतह्वैआयो । राजसभामेंदर्शनपायो ॥
[illegible] ७७
पकडबांहनारदलैचल्यो । हनूमानताकेरसढल्यो ॥
नारदहरिमायाविस्तरई।लैगयोदूरसमुझनाहिंपरई ७८॥

दोहा।

रघुवरकथाविलंबसों, सबबूझीऋषिताहि ॥
कपिकुलमणिभरप्रेममन,सबैकहीअवगाहि

चौ०-हनूमानयहभेदनपायो। ब्रह्माकीआज्ञातेआयो ॥
जोकपिपतियहमायाजाने।नारदशारदकछुकनमाने ८०
बतरसअटकेह्वैबड़भागी । समुझनभारीघरीह्वैलागी ॥
हनूमानरामहिंछाँडेघरी। आनबातनारदसोंपरी॥८१॥
पादभक्तिकोभक्तसुफूले । प्रभुकोभजनतुरतहीभूले ॥
बड़ेरामतेरामसनेही । आपनभजेंदृढावहैदेही ॥ ८२ ॥
इहविधिहनूमानहैभूल्यो। चल्योनवशऋषिमायाझूल्यो
इतनेमेंदेख्योलंकापति।हनूमानरणनहींविशदमति ८३

दोहा ।

तबफूल्योविधिजोकह्यो, सोईनारदकीन ॥
अबरणमारोलछमनहीं, जोजानेपुरतीन ॥

चौ०-तबतिनतमकसैहथीसाधी।क्रोधडीठलछमनउरबांधी
तेजपुंजतीक्षणलहलही । मारोरविधाराव्हैवही ॥ ८५ ॥
धूमकेतुजनुनभप्रगटानो । लोकनप्रलैकालकेमानो ॥
जनुजुरकोटवीजुरीचली। सैनासकलतेजतेखली॥८६॥
गिरेभूमिकपिवहुरणलरे । मानोवाणकरोरकपरे ॥
छेदकेलछमनओहादिशगई।सुरपुरमाहिंवधाईभई ८७॥
यातेसबनकुलाहलकन्यो । भलीभईलछमनधरपन्यो॥
जोधरलछमनआजनपरई।तोरावणहमाविननभकरई८८

दोहा ।

अबपूरणअपराधते, रिसकरहैरघुवीर ॥
सियविरहागवुझाइहै, मंदोदरिद्दगनीर॥८९

चौ०-ताछिननारदगयोलुकाई ।हनूमानठगमूरीखाई॥
आयोदौररामकेपासा । रहेठाढ़सबजीवनआसा ॥९०॥
बच्योविभीषणविलपातिबैनन।कपिपतिजलमाँगतहैंसैनन॥
हनूमानकपिकटकनिहाऱ्यो।मानोगढपाथरकोडाऱ्यो॥
भयोनीलनीलोअतिचोटन । पीरेमुखअंगदधरलोटन॥
औरकपिनकीकौनचलावै । ढूंडरह्योरामहुनहिंपावै९२

सबनछाँडहोंगयोएकछिन। इनसबहनकोयहैकालदिन
जोछिनभररघुपतिननिहारों।छाँडप्राणयमपुरहिसिधारों

दोहा।

छलकरनारदहौंछल्यो,बलकरमारसराउ॥
रामरजायसुहैनहीं, अबहरिपुरकोजाउ ९४

चौ०-लछमनराजकुमारनहींरण।क्योंजीवेहनुमानएकक्षण
कह्योविभीषणतबशिरनाई।सबकोबलमतयहमरजाई॥
सुनकपिपतिअतिनिशिअंध्यारी।अबविनतीसुनलेहुहमारी
तेदीपकहमदेखेदोऊ ।सबमरगएकिजीवतकोऊ॥९६॥
आगेकियोविभीषणराई ।पाछेहनुमतदीपजराई॥
देखतजाम्बवंताढिंगआए।अतिसूक्ष्मातिनवचनसुनाए॥
देखविभीषणरह्योविलखमुख।पच्योआनसबकोइकठौदुख
हाथउठायइहैतिनपूंछी ।मुखछविआजसबनकीछूंछी॥

दोहा।

सुनहुविभीषणलंकपति,सुखदैबेगसुनाइ॥
हनूमानजीवतबच्यो, कैंमारोतिनधाय॥९९

चौ०-सुनतविभीषणरोइसुनायो।जीवतजाम्बवन्तहीपायो
तिनहींकहेवज्रसमवैना ।ताकोदेखसिरातननैना॥१००
श्रीरघुवरकीकुशलनबूझी। बहुरोलछमनदेहनसूझी॥
कपिपतिअंगदसबैभुलाने। सबतेअधिकहनूतुमजाने॥
तजनलनीलहिनेहजनायो।रामसहितदलसबबिसरायो

केतुमगएभभररणमाहीं । डरतेसूधरहीकछुनाहीं ॥
हमहैरामकोबहुत भरोसो । सेवककहाआजकहतोसो॥
अबकरवेगसँबोधहमारो । हनूमानकिहहेतुसँभारो १०३

दोहा ।

जाम्बवंतबोल्योतबै, सुनहुविभीषणबात ॥
जाकेजीवतसबजिए,मरेसबैमरजात ॥१०४

चौ०-जोहनुमानप्राणनहिंपरै । जेरणगिरेहोतसबखरै॥
जोहनुमानजूझपगधारै । जेजीवततेऊविधिमारै॥१०५
तबहिंविभीषणवचनसुनाए ।श्रीहनुमानताहिदरशाए॥
श्रीरघुपतिलछमनढिंगखडे।एसबदौररामपगपडे १०६
मिलरघुवीरबहुतहीरोए । लछमनआजसबैसुखखोए ॥
लगेसैहथीप्राणउडाने । छुटेहाथतेभयेबिराने॥१०७॥
अबलछमनबिनछिनक्योंजीओं।जाबिनपहलेनीरनपीओं
अबहींप्रगटतजतहोंप्राणा । ब्रह्मलोकसहवीरपयाना ॥

दोहा ।

बैनसँबोधेकाहुतब, सबरोवतबिललात ॥
जेअधजीवतशब्दसुन,तेऊआवतजात १०९

चौ०-छुटीमूरछासबउठधाए । रोवतरामचंद्रढिंगआए
लछमनदेखसबैबिलखाने । प्राणआपनेसंगनजाने ११०
रोवतनैननजलनहिंरहई । तबरघुवीरवीरसोंकहई ॥
तुमरणधीरमहारणगाढे । गएछांडएऔसरठाढे॥१११

अबतुमसबसोंप्रगटजनायो।वनफलखातबहुतदुखपायो
सीताहरणआजदुखमानो। तातेसुरपुरकियोपयानो ॥
मोबिनभोजनापियतनपानी।रहीमीतसुनप्रीतिकहानी॥
गुप्तशोचजोमनमेंरहई। रोवतरामसुतोसोंकहई ॥११३

स०-जानकीकोजियशोचनहींनसँकोचकछूपितुदेहगवाई।
देशतज्योलियोवेषतपोधनकैकयीकीनगईठकुराई ॥
जैसीकछूदिनरैनसबैसुनवीराविभीषणकीदुचिताई ।
प्राणनिशंकतजेतुमयोंहमरंकभएइहलंकनपाई ।११८।

दोहा।

लछमननिपटअनीतकर,गएछाँडरणमोहिं
अबरघुनाथअनाथसों,योंभावतहैतोहिं ॥

स०-जानतहोमनमेंसुनवीरनतोबिनबानरएकलरैं ।
भजहोरघुकेकुलकोदुखहैमरहोंतबमोदुखसीयमरै ॥
नहिंझूंठीकहीकबहूंमुखतेइहझूंठेतेरघुवीरडरै ।
जिनदेहतजेतबलोंजबलोंनविभीषणजायकेराजकरै ॥

कवित्त-छांड्योनिजदेश कियोतापसीकोवेषदेशरावणनरेशअतिराखसकोडीलहै । अंगदनदीसैसुखीघाइनतेघनोदुखीसुखनकेआगेलागेलोहूकोजुझीलहै ॥ भाईलछमनअबहोतहै सहाईकहकहाजीअआईमेरोजातसुखशीलहै। रोवैरघुराईहायहायनउपाईऔरतोविनासहाईकौनआजनलनीलहै ॥ ११९ ॥ पिछलीतोऐसीरीत

तैसीकीनीमेरीमीतप्रीतप्रगटाईजैसेहैनशशिकोकको । पहलेखवाईफलसेजकोबिछाईदलतापरसुवाईमोहिंपाछे जातेओकको ॥ किधौंजीयपरीवातहमहैंविमातभ्रातऐसी प्रगटायकैवढावतहैशोकको । अजहूँनजागेमोसोंऐसेअनुरागेवीरमोहिंछाँडआगेलगेजानसुरलोकको ॥ १२० ॥ दशरथजूकेदेहत्यागेतेनत्यागीतैंतोमोमेंचितराख्योपैनराख्योहैजनकमें । पाछेवनआएवनफलतै खवाइखाइएतीप्रीतिभाईकोऊतोरततनकमें ॥ जानकीहरणतेनमरणविचाऱ्योतैंतोमेरेजीयकाजराख्योबाणतेधनकमें । आजरघुवंशनिरवंशहोतलछमनसैहथीकेलागेसाथछाँडचोतैंछिनकमें ॥ १२१ ॥

स०-रवितेमनुआदिदिलीपहूतेरघुतेअजतेकिनवंशगयोछैहैनकलंकसवैपितुसोयशस्योअरुजीतहुतीजगजे ॥ अवमेरकलंकचढोशिरदेखोनारगईअरुवीरचल्योदे । वाढीखिसीतिहलोकधसीधुनशीशअहोरघुवीरकहैं १२२

औधकहांरघुनाथकहांपितुवैननतेवनकोउठधावें । रावणसीयहरेसुकहांकपिराजसमाजलियेसँगआवें ॥ सिंधुपटेरघुवीरलटेअवकानघटेमनसोंदुखपावें । जोजियमेंसुपनेहूनसूतसुमूतसवैविधेरखवनावें ॥१२३॥

सोरठा—इहविधिअतिदुखपाय,कैरोवतकैधरलुठत ॥ तापाछेरघुराय, हनूमानसोंरिसभऱ्यो ॥ १२४ ॥

कवित्त—सीतारहोराजभलीबुरीकोऊकहोजीसों आनगहोरिपुमोहिंनेकनाखिसाइगो। सुनरेसमीरसुतपीरसहीजातनहींजहांमेरोवीररघुवीरतहां जाइगो ॥ एकछिनविनालछमनपायोप्राणऋणविनदीनेरामचंद्रकैसेकैसिराइगो। तातेमेरीसबहीसोंरामरामरामकहरावणतिहारेकिहलेखेनिजकाइगो॥ १२६॥

स०-आनजुरेकपिमंडलकालसुमारपरेरणकामनआवे। होबलवंतबडोहनुमंतगयोभजकेनिजप्राणबचावे॥ जाविनआजदुखीइहभांतिसुरामकहांमारुतअबपावे। वीरविनाअबवीरकेप्राणनकोरघुवीरहिआनमिलावे॥

कवित्त—कैकयीकोपूतलछमनजूको छांडरणतेरेज्योंपवनपूतकैसेमुखमोरतो। सैहथीकोघाउलंकरावकोनहोनदेतोरावणकेदलमेंसमुद्रविषघोरतो। एकहीशरासनकेजोरपाकशासनको आसनगिरायकमलासनतेजोरतो। गारतोगरबदशकंधरकोसबैआजहुतोनभरतनझरतजायतोरतो॥ १२७॥

स०-नारगईअरुवीरगिऱ्योरणहोंमनतेसबबातनहाऱ्यो। रावणकेदृढबाणनतेकपिमंडलभूमिपऱ्योनसँभाऱ्यो॥ एकहुतोहनुमानबलीतिनहैजियमेंइहभांतिविचाऱ्यो। आशरहीगरुडासनरामशरासनडारकेआसनमाऱ्यो॥

दोहा।

हनूजानअपराधनिज, सन्मुखकरतनडीठ।
भरतभुजाबलश्रवणसुन, मनरिसमारतनीठ
सोरठा-मनमेंहनूरिसाइ, वदननाइठाढोभयो ॥
प्रभुसोंकहाबसाइ,दीनभयोविनातिकरे॥१३०॥
कवित्त-काहेकोकरतरोषसेवकनदेतदोषठोंकतेजु पीठनेककौनभांतिहारतो। खेदलछमनजूकीदेहकोन होनदेतोनेकतुमकाहूहूकोसिंधुनउतारतो ॥ अवलोंतो सीताजूकोलेकेसंगमहाराजभलीभांतिबैठरथघरहीपधा रतो। गारतोगरवदशकंधरकोसवैआजजैसेलंकाजारी तैसेरावणकोमारतो ॥ १३१ ॥ सवैरहोबैठलंकएकलो हीपैठनाथमूलतेउपारासिंधुधारमेंवहाइद्यों। राक्षसनमा रकिलकारसबकोपछारछिनहींमेंचन्द्रमुखीजानकी को लाइद्यों॥ जेतलच्छयुगनमेंलछमनजूझेरामसुधारसआ नकहोसबकोजिवाइद्यों। काहेकोकमानबानडारतहो महाराजदीजेनेकआयशुतौरावणेगिराइद्यों ॥ १३२ ॥

रामचन्द्र उवाच-दोहा।

हनूमानएसांचसब, जितीकहीतैंबात ॥
रणरावणफूल्योफिरे, करलछमनसोंघात॥
सोरठा-चलीकथाविपरीत, देशदेशपुरपुरनगर ॥
रणरावणकीजीत, रामचन्द्रहारेप्रगट॥१३४॥

हनूमान उवाच।

स०-ह्वैगईएकअचानकहीप्रभुकेबलकोकनकानतहैहैं।
रावणमीचकेहाथपऱ्योगिनतीपलप्राणलिएनिबहैहैं ॥
नीचविधुंतुदज्योंशशिशीलदिवाकरकोपुनिजाइगहैहैं।
तोकहुबैठसभामहँराघवराहुकहूंदिननाहकहैहैं॥१३९॥
चौ०-रावणराहुग्रस्योलछमनशशि। होयोग्रहणअबैजुउठेहाँसि
नाथसँकोचनमनमेंआनो। लछमनकोजीवतहीजानो
सुधासमानहनूकेबैन। तऊवीराविनफूटेनैन ॥
जोहमअबजीत्योलंकापति। बिनलछमनकिहकाजराजपति
द्वैप्रकारसुखनिधिकेपाए। हनूमानतुहिकहतसुनाए ॥
जाविभूतिकोअरिनानिहारैं। मनदुखपाइनहियोप्रजारैं॥
उनभैयनसोंमिलनसुहाई खानपानतहँसभावनाई ॥
हरिगुरुविप्रहेतुनहिंदीनी। बलछलकरइनहूंतेलीनी ॥
जानिधकोनसराहैकोई। सोविभूतिवैरीकीहोई ॥
तातेलछमनबिनअबमरऊं। किहविधिनगरओरमुखकरऊं॥

रामचन्द्र उवाच-दोहा

मेरेपाछेपवनसुत,जोजीवेसियनार ॥
तौलोंघरपहुंचाइयो, लंकापतिकोमार १४१

हनूमान उवाच।

चौ०-तबहनुमतभरलीनेनैना। परसपांवबोल्योसुखवैन।
जोकछुआज्ञादेहुसुकरऊं। कहोजाययमहूंसोंलरऊं ॥

प्राणआनलछमनतनमेलों । जोलरमुरेंतोजीपरखेलों ॥
तवबोलेरघुपतिसुखदाहई । जोहोंकहहुँकरहुकपिराई॥
वैद्यराजलंकागढरहई। नामसुषेणसकलजगकहई ॥
पटतरआजधनंतरदीजे। ताकोअबहिंआनसुखलीजे ॥
जोवहकहेसुकरहुउपाई। सत्यवचनताकोनामिटाई ॥
हनूमानछिनहीमेंकीनो।आनसुषेणसोवतोदीनो १४६

२१७ ।

हनूमानकेप्राणए, रघुपतिजूकेपाय ॥
कैलछमनपगतरमरों, कैअबदेहुँजिआय ॥
चौ०-तांढिगकपिकोऊनपठायो।पकरपांवरघुवीरजगायो
उठतसुषेणदंडवतकीनो।श्रीरघुवीरचन्द्रमाचीनो १४७
पकरबांहलछमनदरशाए।अंगअंगकेघावदिखाए ॥
धुनधुनशीवसुषेणसुनावे।बूटीकठिनकहांकोउपावे ॥
पहुँचेनहींगरुडतहँजाई।बीचबसेआवेदिनराई ॥
मनतेबेगकाठिनकोउधावे।सूरउदैलगसोउनआवे १४९॥
क्योंलछमनजीवेरघुराई । जहँबूटीतहँकोउनजाई ॥
तामेंदुष्टबहुतरखवारे। प्रेतपिशाचभूतमतवारे ॥१५०॥

वैद्य उवाच–दोहा ।

लछमनदेखतदृगभरत, रामदेखमुरझाइ ॥
नीचेनैनसुषेणकर, बोलतमनपछताइ १५१ ।
चौ०-तिनतेकरमकालजोबचै । हिमसमुद्रतामेंपुनिपचै

तातेसबैकठिनईजानहु। मेरेवचनसत्यकरमानहु १५२।
नावगांवपरमानबताऊं। बिदाकरोतेशीशनिवाऊं॥
उत्तरखंडद्रोणगिरिकहई।बसहिंनदेवजुराक्षसरहई १५३
साठलाखयोजनहैकोसा। कौनजायजियहैनभरोसा॥
औपुनिसुनोजरीकोनाऊं।श्रीरघुपतिजीतुमहिसुनाऊं॥
हैविशल्यवल्लीउजियारी। दीपज्योतियोंजलैउघारी॥
बिनरविउदैजरीजोआवै।घसलछमनकेअंगलगावै १५५
तबहींजियेमूरछाभागे। उठलछमनचरणनकोलागे॥
लाखधनंतरजोचलआवै।ताबूटीबिनतेनाजिआवै१५६॥
आनविधाताजोउपचरे। जाइनसकेसंगसोजरे॥
जियनउपाइकह्योमैंसोई। तुमईश्वरतुमतेसबहोई१५७
बातेंकरतनबीतीघरी। तबसुषेणपुनिविनतीकरी॥
सुकोजुमोहिंइहांलैआयो। तबहनुमानरामदरशायो॥
दरशनदेखबहुरिसोकहे। यहमनकरेतुपवनेगहे॥
औरभरोसायाकोआवै। ताहीकोमहराजपठावै १५९॥
तापर्यंकसुषेणसुवायो। हनूमानछिनमेंपहुँचायो॥
कपिमायासुषेणभरमायो। सोइरह्योजनुस्वपनोआयो॥

दोहा।

इहविधिबूटीसमझलै, हनूमानसुखपाय॥
तापाछेविनतीकरी,सबसोंप्रगटसुनाय१६१

हनूमान उवाच।

चौ०—वैद्यकहीसोसबसोंकही। रामआशलछमनलौरही

रामटहलआयोसबकोऊ। यातेपरेटहलनहिंहोऊ१६२
जौलोंसूरननिकसनपावे । जरीउपारकौनलेआवे ॥
अपनेअपनेबलउच्चरऊ। रामकाममेंढीलनकरऊ १६३
प्रभुकेकाजनसेवकआवे। लोकहँसीपरलोकहँसावे ॥
सीताकीचिन्ताकोकरई। अबतोआजसुलछमनमरई ॥
तातेतजहुविलंबअहोकपि।अवधनिकटकटिकसहुचलहुधपि
पौरुषकथाजबैथकजैहै । तबलछमनकोरामनपैहै१६५

दोहा ।

तातेप्रगटकहोसबै,लाजसकुचमनखोइ ।
तापरमंत्रविचारिए, रामकरै सोहोइ ॥ १६६

सबकपिनके वचन ।

चौ०-तबउठनलरघुपतिहिसुनावे ।तीनरातबिनउरेनआवे
इंदकुविंददुइरातबताई । मारगकीकठनईजनाई१६७॥
तबकपिपतिसुग्रीवसुनावे । एकरातबससेवकलावे ॥
नीलकहीअबघटनहिंहोई । यातेबेगनलावेकोई॥१६८।
अंगदउठ्योभुभकबलतोल्यो।पिंचखैंचरघुपतिसोंबोल्यो।
चारपहरजोमाँगेपाऊं । कालदुपहरीलैपहुँचाऊं॥१६९।
सबकेवचनरामजियधारे । मूरछपडेनबहुरिसँभारे ॥
कपिमंडलजेवचनउचारे । रघुपतिहृदैबाणजनुमारे ॥

कवि उवाच-दोहा ।

प्राणनकेपलटेबुटी, प्राणबचतहैंदोइ ॥
सोरघुपतिजानेनहीं, कातेधीरजहोइ१७१॥

चौ०-पियहिंरुधिरयोगिनिकिलकाहीं। जंबुकगीधमांसलैजाहीं
तापररामजियेंकिहलेखे। लछमनकोइहविधिदुखदेखे॥
लछमनआशयामद्वैबाकी। भोरहोतशिरलेतपिनाकी॥
कहींसुषेणकौनदुखहरई। बहुतपंथकपिकुलकिहकरई॥
कपिपतिसहितरामबिलखाई। देखहनूतनकरीबडाई॥
तूअवताररुद्रकोआही। हमजान्योजबलंकादाही १७४
सिंधुफांदसियकोसुखदीनो। तेरोबलहमतबहींचीनो॥
जबजबविपतिपरेहमआई। तबतबहनूमानतेजाई १७५
पवनपूततोसोंजगकहई। रामसूततोहीतेरहई॥
सबकेबलमैंतुमहींजाने। तुमबिनलछमनहोताबिराने॥
अबहोंकहोकौनसोजाई। बातनिदानहनूलोआई १७६

रामचन्द्र उवाच।

कवित्त- सूरजअकाशपितासुरपुरवासकीनोकौन कीशरणजाऊंताकोतूबताइदै। भरतविदेशदेशआनप रोसिंधुपारमांझधारबूडतहैनावपहुँचाइदै॥ चोरीगईनार वीरपऱ्योरणप्राणडारकैहैरघुराइहायऐसोफिरवायदै। ते रोईभरोसोताततोसोंकहोंबारबारवीरहनुमंतबलवंतवी रज्याइदै॥ १७७॥ तोसमनदेख्योकोऊअंगदसुग्रीवदो ऊआननसकतसोऊकहोंशरमाइकै। लायकहोआजजू सहाइकरबेकीबारनातोदईमेररथबैठऐसेपाइदै॥ हाऱ्यो लंकापतीसोंहोंबलीजातहाथसोंहोंरंकरघुनाथकीतूबात

नवहाइदै ।होतहैकसूतहनूमानपुरहूतसुनअंजनीकेपूत मोसुपूतवीरज्याइदै ॥१७८॥ कहाभयोजोपैखरदूषणव नाइमारेकहाभयोजीतकपिसिंधुसेवँधाएहैं। कहाभयोजो पैकुंभकर्णकोनिदानमाऱ्योमेघनादकोपछारशूरमाक हाएहैं ॥ जैसेयोगयज्ञतपतीरथअनेकजपप्रेमकेभजन हीनकाकेकामआएहैं । तैसेबिनलछमनलछमनपऱ्यो दुखपंछबिनजैसेपंछीऐसेदुखपाएहैं ॥ १७९ ॥

स०–देखहनूयहकौनसमैअवतोवलकीविरियांसुतोएहो जौलगवीरनसूरउदैतौलौंल्याइसुजीवनप्राणसनेही ॥
वीरपऱ्योयशसोंरणभूमिजिआइउमैमिलवाटनलेही ।
हैतिहुँलोककीपीरकीभीरपरीसुसहीरघुवीरकीदेही१८०
जोक्षितिओरनिहारतहोंसोईसासलगैवहुतेशरमैहै ।
सीयनराखसकीवनमेंयहराजवडोकिहभांतिकमैहै ॥
जोनभओरकरोंहगतोरविजानकपूतवड़ादुखदैहै ।
तातेरहेअधवीचहीडीठसुऐसोपऱ्योदुखदेखउहैहै।१८१

चौ०-दुहुहाथनमेंवदनरहेधरा।युगलकमलजनुचांदरह्योपर लोचनमुँदेनबिछुरतकोए। जनुजलचरयुगसरवरसोए ।१८२।
शिथिलभालभ्रुकुटीकुम्हलानी।जनुफिरकामकमाननतानी कुटिलअलकमूधीह्वैगई । जनुसांपनिरोगनसीभई ॥ १८३ ॥
अंगअंगश्रमजलकणपरे । रघुपतिगिरझरनाजनुझरे॥
युगलहाथशिथिलताअमितके।मानहुँकमलदोहिमरितके ८४

छूंछेअधरनबिनमधुऐसे। बितहींपकेबिंबफलजैसे॥
युगलजंघसंकोचनमींचे। जनुकदलीबिनहींजलसींचे १८५॥

हनूमान उवाच–दोहा।

कपिकुलनिरख्योपवनसुत, काहूमेंबलनाहिं
अरुरघुपतिकीदशाते,रुदनकरतमनमाहिं॥

चौ.-श्रीरघुपतिबलमनमेंधार्‍यो।उठकेसभामाहिंकिलकार्‍यो।
अबतोजरीसबनतेथकी।मिटीनरामचन्द्रधकधकी १८७
अबजोसबकीआज्ञापाऊं।श्रीरघुबरकोशीशनिवाऊं॥
जरीदूरतुमसबैबखानहु।आजप्रतापरामकोजानहु॥१८८॥
जोकछुपौरुषहोइसुकरो।लछमनप्राणजानतेडरो॥
बकौकहाअबकरोसुजाई।जैसेभजेरामदुचिताई॥१८९
लछमनउठेंबहुरिफिरलरे। तौहनुमानप्राणकोधरे॥
नातोलछमनसंगसिधाऊं। यमकोमारसंगलैआऊं।
दौरहनूचरणनशिरधरई। मोजीवतप्रभुक्योंदृगभरई॥

कवित्त–जोकहोतोजहांतेनिकास्योदेवदानौमिलि
तिहठौरपौंचकेजुएकलोबिलोइल्यों। जोकहोतोजायदे
वलोकरोकों सबैदेव सूधेदेहदेहनहींदेहपातिखोइल्यों॥
कहोतिहीबाटसुरपुरकेकपाटठोंकपौरुषजनाऊंकहोतो
भिखारीहोइल्यों।जोकहोतोसातऊपतालचालमेलोंराम
जोकहोतोसुधाकोसुधाकरनिचोइल्यों॥१९१॥
चौ०-जोगिरिकह्योसुषेणसभागे।सोगिरितोनैननकेआगे

बडीरात्रितातेनाहिंधाऊं। घरीपाउमेंलैहीआऊं॥१९२॥
लछमनकीचिन्तामतकरो। जागहुप्राणनाथजिनडरो॥
चलहुँअबहिंजोआज्ञापाऊं। तोऊंघतहरुएईंथाऊं१९३
श्वासभऱ्योधीरजजियआयो।उघरैनैनकमलरविपायो॥
जाहुहनूअतिकालनकीजै। प्राणदानलछमनकोदीजै॥
तुमहिंचलतआईसुधिबाता। नगरऔधकोशल्यामाता॥
लछमनमातसुमित्रारहई।भाईभरतबहुतदुखसहई१९५

दोहा।

इततेजातप्रवीणकपि, उनहुमिलहुजिनजाय
आवतप्रगटसुनाइअह्व,लछमनजिअनउपाय१९६

चौ०-मिलतिनकाकुशलातहलीजो।तबआवनकोइतमनकीजो
यहसुनहनूपवनह्वैगयो। रामचरणपरमाथोनयो।१९७।
ठोंकपीठमुखचूम्योरघुपति।मोचरणनमेंसदारहोमति॥
बहुरिसुग्रीवआशिषादई। हनूमानतोतिनाहिंनई १९८॥
सबसोंरामरामकहलई। उब्योहनूनदिखाईदई॥
नभसोंमिल्योजाइहनुमंता। बडेबडेशूरनकोहंता१९९
जोमारगमेंविघ्नपसारे। एकचपेटचौंटहीडारे॥
प्राणतजेजाकोकपिडांटे। जैसेधर्मपापकोकांटे॥२००॥

दोहा।

बिछुरेहनुमतरामसों, श्रीलछमनकेहेत॥
जैसेमुकुरमलीनमहँ, मुखनदिखाईदेत॥

चौ०-एकमुहूरतमेंउडआयो।तापर्वतपरपांउटिकायो॥
तिहबूटीकोशोधनलाग्यो। सबएकैसबसोंअनुराग्यो ॥
कौनतजोंकाकोलैजाऊं । तासोंज्योलछमनरविपऊं॥
तबखिसाइउत्तरकहकरों।रघुपतिकोपअग्नितेडरों २०३
बूझोंकाहिसंगकोइनाहीं। उतरेचढेगठीमनमाहीं ॥
अटक्योजियमेंबडोकुलेख्यो।इतहिकुसुपनसुमित्रादेख्यो॥
कालभुजंगरह्योलपटाई । वामअंगसबरह्योचबाई ॥
जागतकौशल्यापैधाई । स्वप्नकह्योइहिभांतिसुनाई ॥

कौशल्या उवाच-दोहा।

सुनतनैनजलभरलयो, कौशल्यादुखपाय॥
उठबैठीपर्यंकतज, भरतवसिष्ठबुलाय२०६

चौ.-तिनसोंस्वप्नसुनायकह्योतिन।इहविधिदेख्योस्वप्नअबहिंइन
तबऋषिकह्योविचारसुनायो।बेरियाबुरीस्वप्नइनपायो॥
रामलषणहूजोकुशलाता। हैयहस्वप्नबडोदुखदाता॥
तबलगहोमयज्ञजपकरहीं। वेदमंत्रविधिसोंउच्चरहीं२०८
भरतधनुषशरलैरखवारो। विघ्नकरेताहीतुममारो ॥
इहविधिकथाअयुध्याभई। हनूमानऔरैमतिठई २०९
लैपर्वतअबचलोंउडाई। जरीदेखलैहैंरघुराई ॥
मेरोकौनजँजारहकरई। अबगिरितेलछमननहिंमरई ॥

दोहा।

लैउपारगिरिकरधऱ्यो, पवनपूतपरचंड॥
निसरअयोध्याकोचलो,गरबकियोभुजदंड।

भरत उवाच ।

चौ०-नैननध्यानभरतनभलायो।यहकोउविघ्नकरनकोआयो॥
जिननिशिमाताडसीहमारी । जाकेकाजकरीरखवारी॥
सोयहयज्ञविघ्नको आयो । तानबानकरक्रोधचलायो ॥
लग्योभालमेंउतह्वैफूऱ्यो।हनूमानबादरज्योंटूऱ्यो२१३
रामरामपुखतेउच्चरई ॥ लछमनप्राणछुटनतेडरई ॥
गयेसकलताकेढिगदौरी । जागेसबैपरीपुररौरी॥२१४॥
चरणनसबैजातहीलागे । रामनामसुनकेअनुरागे ॥
बूझीकुशलकौनतूआही।कितकोउडअबकितकोजाही॥

दोहा ।

रामनामतेमुखकह्यो,तोहमछाँडततोहिं ॥
बिनयाभजनबचेनहीं,शिवसुरपतिजोहोहिं॥

हनूमान उवाच ।

चौ०—सुनोभरततुमसोंसबकहों । वाउसुमाराजियतजोरहों ॥
नामहनूसबजगतउच्चरैं । अपनोजानरामहितकरैं२१७
सोरघुपतिलंकापरधायो। मिलसुग्रीवसमुद्रपटायो ॥
तहांयुद्धऐसोकछुभयो । कुंभकरणयमपुरकोगयो२१८
मेघनादतातेपुनिमाऱ्यो । रावणकोपाकियोतिनभाऱ्यो
ताहिकछूनिशिदिननहिंसूझ्यो। लगीसैहथीलछमनजूझ्यो
अरुविस्तारकथाजोकरों । उदैहोतसूरजतेडरों ॥
तालछमनाहितगिरिगहलायो।सोलछमनतुमस्वर्गपठायो ॥

दोहा।

सूरउदैतेयोंडरयो, जोनलंकहोंजाउँ ॥
उदैहोतलछमनमरैं, तातेबहुतडराउँ।२२१।

चौ०—विनगिरिगएनलछमनजीवे।ताविनरामनपानीपीवे।
उतरघुवीराविनाक्षितिभई। मेरेमुएकहाव्हैगई॥२२२॥
भरतकुमारवातहैऐसी। करहुअवहिंआवेजियजैसी॥
लछमनवातसुनतसवरोए। कौशल्याकेसवसुखखोए॥
वचनसुनतसुमित्राधाई। लछमनकीअतिकरीवडाई॥
होंतोआजसुपूतीभई। लछमनदेहरामहितगई॥२२४॥
प्रभुकेहितजोसेवकमरे। ताकीमातशोककयोंकरे॥
शूरभएकीयहैवडाई। प्रभुदेखतरणभूमिसुहाई॥२२५॥
रणमेंपीठजुप्रभुकोदेई। ताकोमांसगीधनाहिंलेई॥
हनूमानमोंकहियोजाई।रघुपतिजियोसदासुखदाई२२६
लछमनकोकछुशोकनकीजो।रावणजीतवडोयशलीजो।
रणमेंवातहोतहैदोऊ। कैजीतेकैहारेकोऊ॥२२७॥
जीतेपावेराजवडाई। सन्मुखजूझदेवपुरजाई॥
तातेमोहेशोकनाहिंआवे। रघुपतिजियशोकविसरावे॥
कौशल्यामूर्च्छितधरसोई। लछमनपूतपूतकररोई॥
सुनहनुमंतविसराजिनजाई। वोलतनैननजलनरहाई॥
मेरीकहीरामसोंकहियो।तुमलछमनविनजियतनरहियो
फिरआवहुतादोनोभाई। जूझोरणचौगुनीवडाई॥
कहियोकपिरणपीठनदीजो। जूझकामअर्जुनज्योंकीजो

दोहा ।

सियसोंलछमनजोमिले, तौआवहुइहदेस ॥
वीरतियाबिनवनभलो, कीजेगोरखभेस ॥

चौ.-तबवसिष्ठभलकागहकाढ्यो।औषधबलहनुमतकियोठाढ्यो
कहियहुकपिअशीशरघुवरसन।बहुदुखपायोकबव्हैदरशन
रावणकोशिवलोकपठावहु। सीतासाहितवेगघरआवहु॥
अरुजिवायलछमनकोलीजे। आयआपनोराजकरीजे ॥
भरतजायचरणनतबलाग्यो। तुमरेदरशनहीदुखभाग्यो
बिनजानेअपराधनिवारो। जाहुहनूरघुवीरनिहारो२३४
रघुपतिकोपालागनकहियो।हमपरकृपाकरततुमरहियो
कहियोभरतमहादुखपायो।होंलछमनज्योंकामनआयो
अबरावणकोमारगिरावहु। लछमनज्याइसियाल्हैआवहु
भरतचकोरनैनबिनदेखे । बिनशशिचंद्ररामकिहिलेखे
चरणकमलजबरामदिखावै। तादिनभृंगभरतसुखपावै॥
जलदअंगदेखेजाहीदिन । चातकभरताजियेताहीछिन
जरतअंगतबहीसियराऊं। जबरथधूरमाहिंबिलठाऊं ॥
बँधीजटाशिरतबहिंसुधारों। रघुपतिचरणधूरजबझारों
उघरहिंभलेतबहिंदृगकोने। प्रभुचरणनकेकरोंबिछौने॥
अंगसनेहभलेतबलाऊं। जबसनेहचरणनकोपाऊं२३९
भरतकमलफूलेकिहिलेखे। कमलबंधुरघुपतिबिनदेखे॥
अरुदेखतहोदशाहमारी। तुमहौचतुरकहोविस्तारी ॥

हनूमानतनुपुलकितभयो । अपनोप्रेमभूलसबगयो ॥
शोचरह्योमनमाहिंविचारे । रघुपतिभरतहिन्याउसँभारे
तऊभरतकेबलकोदेखों । बहुरिजाइरघुपतिकोपेखों ॥
हनूमानतबकह्योसुनाई । अबतोमोपैउडचोनजाई२४२
येगिरिलैपहुँचाबहुतहां । जूझेलछमनलंकाजहां ॥
जोराविउदैजायउपहासा । तौछांडोलछमनकी आसा॥
जोफिरकोपकरेरघुराई । भरतमूंडसबचढैबुराई ॥
वचनकैकयीरामलियोबन।कपिहतभरतसँहाऱ्योलछमन
भाईशंकनमनमेंधरहीं । हमसेवकसबभांतिनडरहीं ॥
इहविधिभरतहनूडरपायो । भरतगातजनुतीरलगायो ॥

दोहा ।

मूंड़हमारेदेतहो, लछमनकोउतपात ॥
एकबाणलागेहनू, कायरज्योंबिललात२४६

चौ०-भरतकह्योकपितेंबलहाऱ्यो ।अबतूपौरुषदेखहमाऱ्यो
गिरिसमेतमहिचढमोबानह। देउँचलायबहुरितूजानह ॥
बहुरिमोहिंजिनदेइबुराई । मेरेवचनसांचकपिराई ॥
जितीदूरतेलायोहैगिर ।तितीदूरलंकापाछेफिर॥२४८॥
अबकपिचढ्योकमानउडाई । फिरकपिकेजियऐसीआई
कहूंजाय जो परोंअकेला। फिररघुपतिकोमिलनदुहेला
फिरकोतबैबतावेमाही । भरतभुजानीकेटकटाहीं ॥
उतरबाणतेपाँइनपऱ्यो। उतऱ्योगरबजोभौंहनभऱ्यो ॥

हनूमान उवाच–दोहा ।

रामचरणबलमनधर्‍यो, तापरसवैसँदेस ॥
पलहीमेंछलव्हैगयो, भयोपवनकेभेस २५१

चौ०-चितभरचौपलंककोधायो।आंरनभयोरामाढिंगआयो
देख्योसबनहनूबडभागी।रामडीठउतहीकोलागी २५२
गिरिसमेतहनुमाननिहार्‍यो।रघुपतिसुखपायोजियभार्‍यो
जादिनबिछुरेमीतामिलाहीं।तादिनकोसुखसुरपुरनाहीं ॥
हनूमानआएकुशलाता।लायोजरीरामसुखदाता ॥
गहिद्रोणाचलबेगिउठायो।ढूंडतबूटीबिलँबनलायो ॥
लेहुबेगिलछमनाहिंजिआवहु।अपनेमनकोदुखबिसरावहु ॥
साधुसाधुहनुमानाहिंकीनो।रघुपतिबोलबहुरिसुखदीनो॥

रामचन्द्र उवाच–दोहा ।

वेदचारअवतारदश,रुद्रइकादशजान ॥
द्वादशभानुसमानहै,तोसोतूहनुमान २५६॥

चौ०-दौरहनूतबपाँइनलाग्यो।रघुपतिसुखदेदुखलैभाग्यो
भुजभरलटकलिलाटहचूम्यो। भएहर्षहरियावरभूम्यो॥
कंठलगायरहेहनुमानाहि।सोसुखश्रीरघुपतिहियजानहि ॥
भरतसँदेशसुनतसुखपायो । हनूमानकोबलदरशायो ॥
तबसंजीवनतोरमँगाई । पीसततताहिआपरघुराई ॥
तिहबासनतेअँगसरसाने। लछमनकछुजीवतहीजाने ॥

हियेघाउकोजबहिलगाई। लछमनश्वासनलईजँभाई ॥
हाँकतवाउजरीजबसूकी।रामरामलछमनकऱ्योकूकी ॥
उठतक्रोधकरवाणसँभाऱ्यो।रघुपतिशोकदूरकरटाऱ्यो।
भुजभररहेकंठसोंलाई।प्रीतिनीरनैननरह्योछाई॥२६१॥
लछमनघाउपीरसबखोवहु।मेरेहियेपलँगपरसोवहु ॥
तुमअतिशूरकहीमुखबानी । घाउपीरतुमनेकनजानी॥
तबलछमनरघुपतिसोंकहे।घाउपीरमोकोनहिंदहे ॥
कोथलघाउमोहनाहिंलानहु।किहविधिपीरसुतुमहीजानहु
यहउपकारहनूकाआही।मिलहुपसारबाहुतुमताही ॥

रामचन्द्र उवाच ।

स०-कौलगहौबरलोहनुमानजुतैंहमकोउपकारकरे ।
गढलंकजराइसियासुधसोंहमेंसिंचाकियेसुखपुंजहरे ॥
बदलेहमएककेप्राणदएतुहितैंदिनहीशिरऔरधरे ।
सुनपौनकेपूतऋणीहमहैंइहलाजननैननहोतखरे२६४॥

हनूमान उवाच ।

स०-श्रीरघुवीरकहांइतनीबलजाउकहांहमकामकरें ।
हमतोकपिहैंफलफूलनसोंचढरूखनभूखनपेटभरें ॥
भुजमेंभुजलेतुमतापरनेककरीकरुणामुसकाइढरें ।
तेइहैंगएलाखकरोरनकेजोइमोसेगरीबकरोरतरें२६५॥
चौ०-तुमहमसोंकरियहुउपकारा।दासजानलीजियहुसँभारा
तासोंरामबहुरीफिरकहे।हनूमानप्राणनमेंरहे ॥२६६॥

जोफिरअबहूँकहतहैंतोहीं। तौलज्जाउपजतहैमोहीं ॥
ज्योंसंसाररीतिहैमीता। सोऊकहतबडीविपरीता२६७॥

रामचन्द्र उवाच–दोहा।

विपतपरनदुखसहनको, पहलेकरतविचार ॥
तापाछेउपकारको, चाहतप्रतिउपकार २६८

चौ०-तातेतुमहिविपतिमतहोऊ।हमतुमरहेसुखीअबदोऊ
इहविधिलक्ष्मणफेरजिवाए।श्रीरघुपतिबहुतेसुखपाए ॥
जोयहकथासुनेमनलाई। तिहबिछुर्‍योमिलहैफिरभाई॥
श्रीरघुवीरभक्तिदृढहोई। सुतयुवतीकोविरहनसोई२७०
अश्वमेधकीनेफललहे । सोफलहोयरामगुणकहे ॥
तीरथकोटिकरैसौबारा। सोफलहोयअंतनिस्तारा२७१
जोरुचिसोंकोइकहेकहावै। जननीजठरबहुरिनहिंआवै॥
रघुवरकथापुनीतसदाई। सेवकहिरदेरामसुनाई२७२ ॥

कविका वचन–दोहा।

रावणकोअतिकोपकर, मारहिंगेरघुराइ ॥
कथासुआगेहोइगी, संतसुनहुमनलाइ २७३

इति श्रीरामगीते लक्ष्मणजीवनो नामत्रयोदशोऽङ्कः ॥ १३ ॥

चतुर्दशांक १४

रावण उवाच ।

चौ०-लक्ष्मणजियतभयोसुखभारी।फूलीमनहुरामसुखबारी।
रावणसुनतमहादुखपायो। भयोप्रातइकदूतबुलायो १॥
तासोंकहीबातसमुझाई । तुरतसिधारहुजहँरघुराई ॥
जोहोंकहूंसुजायसुनावहु। पुनिजोकहेरामसुनआवहु २॥
भृगुपतिजीतपरशुतुमपायो। तालगहोंलंकेशपठायो ॥
ताबदलेजोजियकोचाहे । सोलंकापतिबोलनिबाहे॥ ३॥
करीप्रणामचल्योतबधाई। रघुपतिचरणनिहारेजाई ॥
करदंडौतप्रकरमादीनी । अपनीद्दष्टिसफलसबकीनी ॥

रावणदूत उवाच-दोहा ।

लोहिताक्षठाढ़ोभयो, चरणनडीठलगाइ ॥
जोलंकापतिकहीसो, तेसबकहीसुनाइ ॥५॥

रामचन्द्र उवाच ।

सोरठा-रेलंकापतिदूत, निकटबैठसमुझायकहु ॥
जूझेजितपुरुहूत, लंकापतिकिहकरतहै ॥ ६ ॥

दूत उवाच ।

कवित्त-सोनेसीअटारीपूंछसोलगायजारीइनभारी
दुखदीनोलंकलोगपछतातहैं । मूलतेउपारीइनहमरी
अशोकबारीऐसीकरडारीफूलफलहैंनपातहैं॥लछमनजू

कीदेहइनाँहिंउवारीऔरसेनाहूउतारीसिंधुदांतनचबातहैं
बैठबैठमीतनमेंभीतकीपछीतनमेंचीतचीतहनूमानका
टकाटखातहैं ॥ ७ ॥

पारिहा ।

सुनतदूतकेवचनचतुरचितमेंहँसे ।
लोहिताक्षद्वैकरनबातमेंहमफँसे ॥
बलतेसबैउपायऔरतबकीजिये ।
नहिंदेहोंभेंटकुठारप्राणकोलीजिये ॥ ८ ॥

छप्पय–तिहअवसररथरामकाजसुरराजपठायो ॥
शत्रुजीतअहिनामपुंजमणिजटितसुहायो ॥
त्रिविधतापदुखहरणचरणरघुपतिगढगंजै ॥
नीलकमलजनुशरदसेतबादरछविरंजै ॥
फहिरंतधुजाहनुमंतकपिकिलकिलाइधुनउच्छल्यो
धसकंतहियोविगसंतमुखतबसुदूतलंकाचल्यो

चौ०–जातहिलोहिताक्षशिरनायो । लंकापतिनीकेसमुझायो ॥
तापाछेराजाफिरबोल्यो ।बलमनमाहिंनिपटझकचोल्यो
रामचंद्रधुजकोनविराजे । जाकीधुनश्रावणघनलाजे ॥
जाकोदेखमहाभयआवै।जनुनभधूमकेतुदरशावै॥११॥
भुजादंडजनुवज्रप्रमाना । चमकनिरखबीजुरीसमाना ॥
तबबोल्योमंत्रीशिरनाई । यहहनुमानकपिनकोराई १२
याकेचरितसबैतुमजानहु । लंकबागअरुसमुँदपछानहु
लक्ष्मणप्रानआनजिनदीनो ।सोरघुपतिधुजपतिहैकीनो

दोहा ।

यहसुनरावणलंकपति, भयोसमुद्रसमान ॥
रघुपतिपूरणशशिनिरख,लहरश्वासअनुमान

सोरठा–कछुरिसकछुमनदीन, चल्योजहांमंदोदरी ॥
अनुजतनुजतेहीन, ज्योंउतरतपून्योशशी १५

कवित्त–रानीसुनऐसीहीनजानीजैसीभईरणमेघनाद आदसबजूझेमनभावने । ऐसेरहगएजैसेडारपातहीनरू खसबैअंगसबहीकोलागतडरावने ॥ तेरेमनऐसीजुहोंरा मैअनुसरौंसीयलेकेशीशकरोंपगधूरकेबिछावनेदे॥खकै सेमारतहोंफौजहेबिडारतहोंऐसेभाजजैहैप्राणपरेंगेबचा वने ॥ १६ ॥

चौ०-सुनतवचनजियक्रोधबढाए।मनहुगर्जघनमेघसुहाए। चल्योचमकरणकोसमुहाई । रविद्वादशदशवदनबनाई आजनिदानकरोंरणमाहीं । कैरघुपतिकैरावणनाहीं १७

दोहा ।

चकितभएसुरनरअसुर, थकितभएरविगैन
छकितभएरणभूमिभट,शंकितभएत्रिनैन ॥

सोरठा–दशचिन्तामनमाहिं, दशोंओरदशमुखकिये ॥
दशोंदिशासुखनाहिं, जेरघुपतिचरणनविमुख॥

कवित्त–एकसीयओरदूजेदेवनकोशोरसुनतीसरोत्रि नैनजाकेकरकोगुमानहै । चौथेचित्तभैसोहनूमानहीं

निहारतहपांचओविभीषणकोदेखरिसमानहै ॥ छटोभ
रछोहभौंहशूरनपचारतहैसातएंसकोपरामचन्द्रसोंनिदा
नहै । द्वैलगेअनीतनीतवाकीकहेंजीतजीतदशोंमुखदशों
ओरकियेसावधानहै ॥ २० ॥

स०–रामकीओरतेबाणचलेचलरावणकेबहुतेभटघाए ।
फोरसनाहनआहकरीफिरमारणकोनहिंहाथउठाए ॥
जोगजराजनकेअसवारगिरेगजकुंभनप्राणबचाए ।
मानहुकामिनकेकुचपायलगाइहियेबहुतेसुखपाए २१॥

सारछंद ।

बाढ्यो युद्धप्रबलप्रचंडपलचरबनचरकिलकारे ।
मुद्गरमुशलगुरजगोफलगोलाअनतोलसँभारे ॥
बानकमानत्रिशूलसैहथीसन्मुखशत्रुपचारे ।
तजमुखढालकरालक्रोधमनअरिकुलफौजविडारे ॥
भकभकायरणपरतसुभटकटरुधिरअंगछविपावैं ।
मानहुमनअनुरागप्रगटकरनिजप्रभुकोदरशावैं ॥
जूझेएकशूरइहभाँतनबाणअंगसबछेद्यो ।
मानहुपानलगायपंखउडदिनमणिमंडलभेद्यो ॥
इकजूझेतरवारधारलगरहीहियेमधफाटै ।
जनुयमजीभपानसेखाएफिराफिरलोहूचाटै ॥
इकयमधरलागतहीजूझेफिरनानिकासनपाई ।
जनुयमदाढकठिनउरगडराहियहउपमाजियआई ॥

बरछीनिकसदुसाररुधिरभरछवितरंगअतिछूटे ।
रणसरितासींचेसुभटनकेजनुयशअंकुरफूटे ॥
कटेकवचजूझेरणसन्मुखबहुरननेकसँभारे ॥
चलेबजायनिशानस्वर्गकोजनुकलंकनिजडारे ॥
दैमुखढालकटेरणक्षितिभटगढेबाणअतिगाढे ।
मानहुकमठपीठवासुकिकेभएसहसफणठाढे ॥
वानरवदनरुधिरलपटानेछविकेउठतअलूले ।
रघुपतिरविप्रतापरणसरवरमनहुकमलकुलफूले ॥
मुखप्रचंडचितचौपहरषसोंलपकभुजागहपेले ।
करकचकवचरुधिरलपटानेजनुहोलीसीखेले ॥
किलकिलाइकालीकरतालीदैदैडमरुबजावैं ।
भैरवभूतपिशाचप्रेतगणरुधिरसमुद्रअनावैं ॥
गीधमवासअकाशउडतलैमाससमहामनभायो ।
श्वानशृगालकाकवृंदनकोमाससुभक्षजनायो ॥
इकभाजतद्रुमगणकचअटकेडरतनउतमुखमोरे ।
छाँडहुप्राणदानदेहमकोकहतशत्रुकोभोरे ॥
चलतबाणसन्मुखआवतकपिकुलतेसबैबचाए ।
जैसेमहायोगसाधककोपापनपरसतपाए ॥
अमरवधूकरकुसुममाललैडोलतअतिअनुरागी ।
मानहुसमरस्वयंबररचकरसुभटवरतबड़भागी ॥
स्वामीकाजलरतजुशूरमायशआयोजिहबांटे ।

मानहुनिरखसुरवधूरीझतलेतशीशकेसांटे ॥
सिंहनादबोल्योतवरावणझाखामृगसकुचाने ।
जैसेवज्रगरजतेगिरिपतिचमकसपक्षडराने ॥ २२ ॥

रावण उवाच ।

स०-नारिनिपातकैतोरशरासनवामनजीतकैफूलगएहो।
शूर्पणखाखरदूषणसोंरणमारमरीचप्रसिद्धभएहो ॥
कानकेअंकनिशंकपरोजिनक्योंसमुझेबिनआइखएहो ।
छांडतहोरघुवीरपधारहुसुन्दरहोअरुवैसनएहो ॥ २३॥

अंगद उवाच ।

स०-अंगदवीरकह्योकिलकारसुनेजबरावणबैनअशीले ।
रेदशकंधसियासँगलैअजहूंभाजियेपदकंजरसीले ॥
ज्योंतुहिछाँड़गएरणमेंशिवयाहितेआजदशोंमुखपीले ।
तूरघुनाथहिछाँड़तहैपरतोहिंनछाँड़तरामहठीले २४॥

रावण उवाच ।

स०-बानरनीचसुरावणहोअरुताहिभलेकररामपिछानो।
शंभुसमेतउठायहिमाचलतोलकियोजिनगेंदतेनानो ॥
तादिनटेढरहीगिरिधातझरेझरनाप्रगटाइबहानो ।
दैभुजदंडनतेतनुव्याकुलल्लोहूवमैअजहूंगिरिमानो। २५

हनूमान उवाच—दोहा ।

हनूमानविनतीकरे,देखरामकीओर ॥
रणरावणकेसेबचे,बोलतबोलकठोर॥ २६ ॥

रामचंद्र उवाच ।

सोरठा-अजहुँभरोसोमोहिं,देसीतारावणमिले ॥
औरसुनाऊंतोहिं,हनूमानयातेवचे ॥ २७ ॥

स०-रामकहीभरबाणअबैजोहोंरावणकेहियमारतहों ।
तहँसीयबसेदिनरैनसदापुनिसीजियमांहिमहारतहों ॥
पुनिमोमेवेदपुराणवसेगनयोंमनमाहिविचारतहों ।
तातेआपनहींगहआपनेहाथनचौदालोकसँहारतहों २८

रावण उवाच-दोहा ।

तबरावणअतिकोपकर, देवनसोंकहटेर ॥
जोहोंकहोंसुकरोअब, मारतसबननघेर २९

स०-रेयमआजविनाहीप्रलैभरपेटहैभूंखजितीमनमें ।
यहमुंडनमालविशालभलीशिवजीपहिरोरुचिसोंतनमें
कमलासनआशतजोजगकीरुचिऔरकीबीजबुयोमनमें ।
तबकाहेकीहोंसरहेतुम्हरोजियरावणकोपकरेरनमें ३०॥

जंबुकगृद्धनसोंकहेरावणमोंविनतीसुनलेहुरेभैयो ।
चौपसोआजलरोंसियकेहितभूमिअकाशभलेमँडरैयो ।
जूझमरोंरणमेंसुनमीतानिचीतह्वैमेरोईमांसअघैयो ।
रामकीओरनिशंकव्हैडोपैघसीटतलंककीओरनजैयो३१

चौ०-सबदेखतचितचौपलगाई।रावणराम निदानलराई
सुरमुनिचढविमानजुरदेखे।रावणडीठबचाइनिमेखे॥३२
मध्यसमुद्ररुद्रअनुरागी । छुटीसमाधिदृष्टिरणलागी ॥

चढीमहलमंदोदरिरानी।मुखछविरघुपतितेजविकानी ॥
सुरगणवधूसंगसवसोहें । वातवनाइकहेमनमोहें ॥
गौरदेहतनुसुथरीसारी।रहीचित्रसीलिखीविचारी ३४॥
यद्यपिदिपैपुंजमणिमोती । सांझसमैमानोछविजोती ॥
जनकसुतात्रिजटीसँगसोहे।चढ़ीविमानदेखेमनमोहे ॥
सवदुचितेमनमेंयोंकहें । रावणमरेसवैदुखवहें ॥ ३५ ॥

रामचन्द्र उवाच—दोहा ।

रघुपतिरावणसोंकह्यो, सुभटसुचेतसँभार ॥
शिवसमेतसवशूरमा, मोपरआजहँकार ३६

कवित्त—सुनलेनिफोटओटकाहूकी नछाँडोंतोहिंसों
झकेउरैलेआजमारहींगिराइहों । काहेकोचवाउकरचाप
केचलावतहैमूंड़काटकैकवंधनभमेंउडाइहों ॥ वानलैक
मानकोसँभारकेपिनाकपानकोहँकारघाउकरपाछेतोहिं
घाइहों । मोजियमेंमोतियकेविरहकीआगहैसुतोतियके
नैननकेनीरसोंवुझाइहों ॥ ३७ ॥

स०-हैविलखीमनमाहिंमँदोदरीव्हैगईहैमुखकीछविफीकी
योंजवपैजकरीरघुनंदनतोपतिकीपतिएकरतीकी ॥
जेयुवतीसवसंगहुतीतिनयोंसमझीजैसेभीरसतीकी ।
भौनभँडारतेयोंउचटीजैसेयोगजुटीमतिहोतयतीकी ॥
कोपकिएदशशीशनकोजवरामकमानकोवानकसेगो ।
लंकमेंआयनिशंकविभीषणमोहिंनिहारनिहारहँसेगो ॥

ताछिनऔरवडीविपरीतसुमोकुहुआननकालग्रसेगो ॥
मेरेईजीवतकालसखीइनभौननमेंकोईऔरवसेगो । ३९।
रुद्रनदीरघुनाथसमुद्रवचावनहींपियकेजियको ।
भरलोचनवारहिवारनिहारतशोचनसोंउमडेपियको ॥
रघुवीरउदैशशिपूरणहैदुखदैसरसीरुहमोहियको ।
पुनिमोहिंकरैचकईयहिसांझचकोरवधूकरहैसियको४०
कांपतहैगढ़कीधरनीकरनीपियकीप्रगटीपछताने ।
टूटतहैनभमंडलतेग्रहजंबुकबोलसुनेडरपाने ॥
अंजनहारतबोलशृंगारउतारहुँश्वेतकरोंसबबाने ॥
काहेतेआजसबैहमलोगभलीविधिकालकेहाथबिकाने
सोरठा—रावणसमझेवैन, अबरघुपतिछांडेनहीं ॥
क्रोधचुचोहैनैन, चपेचोरज्योंनलकरै ॥ ४२ ॥
स०—रावणकोपकियोगरज्योतबदेवअदेवकिएडरयोंहै॥
आजप्रलैदिनज्योंउमञ्योकरचापचढायतनायकेभौंहै ॥
बाणसमूहचलेइहभांतिभलीउपमाउपजीजियमाहै ॥
लक्षकतक्षकज्योंनलगेरघुराजकिधौंखगराजकेसौंहै ॥

कवित्त—मारूकोवजायएकवारहीरिसायपरेबडेबडे सूरजेवेहुतेएकजोरके । साहिवकोखांयकौनमुखफेरेआ जभैनभेंटआएभएप्रानमानेतमभोरके ॥ देखरघुवीरक हीवीरसोंबुलायहँसवीरचढआवतेहैलंकापतिचोरके । रामकविएकरामवाणकोप्रतापदेख राजे यों बिलाने सब रावणकीओरके ॥ ४४ ॥

कविकी उक्ति ।

कवित्त-आजरघुराजजूके पांयनकोपाइबलपांयरोपपाइनसोंदलकोपरेरहैं। काटदशशीशभुजवीसईशशीशधररामयशदशोंदिशसोंगुनोबखेरहैं ॥ आजहीजनकजाकोसबैविसरायदुखसंगलैलिवायरघुनाथसुखहेरहैं । कहेंकपिटेरटेरलंकागढघेरघेररामकीदुहाईरामकीदुहाईफेरहैं ॥ ४८ ॥

स०-श्रीरघुवीरकेवीरतबैसबदांतनपीसकेक्रोधभरे ।
चहुँओरतेलंकलपेटलईरणरावणतेनरतीकुडरे ॥
कविरामपरीरविज्योतितहांरणमेंसबकेतनरोषखरे ।
मनकंचनकोगढएकहुतोकपिकोटनकोटनकोटकरे४६
कंचनकोटसोदेहगईमिलजोमिलजातसदापथपानी ॥
फांदपरेकिलकारसबैगढलंकककेभीतरशंकनआनी ।
औरभलीउपमाकविरामकहेतुमसोंजियमेंजुलभानी ।
योगकेसाधकपौनअराधकज्योंजगछांडभएनभज्ञानी॥
हैयहरच्छकरच्छसकोटनरुंडनमुंडकिएइकठौरे ।
क्रोधभरोचहुँओरकहेकहुँटेकहरावणजोअबखौरे ॥
गावतचौपचढेचहुँओरनतेकपिकूकबुलावतऔरे ।
मानहुलंकजहाजफुट्योजलरामचहूंदिशतेदलधौरे॥४८

कवित्त-रावनके राक्षस कि श्रावनकेमेचकहैंआवनकोपावेपलहीमेंलोटपोटहैं । दैदैमुखढालकरलैलैकरबा

रनागीकालकीसीजीभकीनेसबैभूपचोटहैं ॥ तेतोरघुवी
रकछुऐसीभांतिमारेपरलोकहीसँभारेकहेंकाकीहमओट
हैं । कालकेनिछोटकीनेकोटकउपायपीछेढाहिएकचो
टजेवैकोटनकेकोटहैं ॥ ४९ ॥

दोहा ।

जबकुबंडकरवामले, खैंच्योश्रीरघुनाथ ॥
दक्षिणकरसोंतबकर्‌यो, रिसभरवामेहाथ ॥

कवित्त–दक्षिणसोंबोल्योवामजबहींचढाईरामरणमेंक
मानरिपुभाजैंकहींकेकहीं । दानभोजनकीवारभूषणपह
रतवआगेहुतेकीनोअबमोकोछांडेटेकहीं ॥ बोल्योता
सोंकानलाग्योहींतो नडरपभाग्योबूझतहोंमारकेउडाय
डारोंलेकहीं ।कहोएकवारहीउतारोंदशशीशजोकहोतो
शरशरसोंउतारोंएकएकहीं ॥५१॥

स०–रामकमानतेबानछुटेछुटरावणचाइहडावलचूसी ।
लोहूकीछीटपरीफिररामहिंमानहुघाउकीदेतजसूसी ॥
औरभलीउपमाकविरामकहेजियमेंउपजीज़ुकछूसी ।
मानहुनीलशिलागिरऊपरफैलचलीसबचंद्रवधूसी॥५२॥

कवित्त–शूरनकोमारधूरधूरकैगरूरनसोकोटिककिं
गूरनलँगूरनकेझुंडहैं । बडीएअनीतकहूंजीतकीनबात
विपरीतहोनहारजहांतहांरुंडमुंडहैं ॥ कहूंरथटूटेकहूं
जिरहकवचफूटेफाटेपेटवाजीकहूंकरीबिनसुंडहैं ।

रावणकहतमानोश्रावणकोमेहपर्‍योठौरठौरलंकापरशो
णितकेकुंडहैं ॥ ५३ ॥

स०—रावणएकउपारबडोगिरिरामकोताकचलाइदयोहै
सोहनुमानलयोगहिबीचसुगेंदकियोशिशुखेलभयोहै ॥
लैदुहिहाथनबीचकियोचकचूरसुधूरहिमेंमिलयोहै ।
सोधनहीनमनोरथज्योंउठबीचहींबीचबिलाइगयोहै ५४
रावणऔरकियोबलएकतक्योहनुमानतनाइकैभौंहैं ।
तैसेहिअंगदताहितक्योंदोऊशूरबडेअरुआपनीगौंहैं
द्वैगिरिबीचामिलेबलसोंनभह्वैलटकेसुपरेधरसौंहैं ।
बालवहिक्रमज्योंबिधवाकुचनीचभएचलकेउपरौंहैं ५५
रावणदौरचल्योतबपाँयनघाइनसोंरिसकेभरते ।
तिनधाइगहेनलनीलसुग्रीवगएदबऔरमहाडरते ॥
भुजमेंभरकेसुफिर्‍योगढ़कोसोऊबाटमेंछूटगयेछरते ।
मानोयोंउपजीउपमाचटियाजनभाजगएद्विजकेकरते॥
धाइपरेसबरावणऊपरहैसबकेमनक्रोधजग्यो ।
रथतोरधुजाभुजदांतनचोंथसुग्रीवहिजायसुग्रीवलग्यो॥
रिससोंकिलकारमहारजनीचरघेरनकोजबहींउमँग्यो।
कपियोंसटकेजनुबीचबजारकोंसिंहछुट्योसबलोगभग्यो ।
तेसबबाणचलाइथक्योजिनबाणनतेसुरराजभगे ।
छलसोंबलसोंसेइंदेवनसोंरघुवीरबिनाक्षितिमाहिंठगे ॥
गजराजसुखीतबलोंवनमेंजबलोंमृगराजनचौंकजगे ।
शररावणकेभएरामहियेंजैसेभूतकीईंटचलेनलगे ५८॥

रामचंद्र उवाच ।

कवित्त–अरेलंकनाथमेरेहाथनतेआजकटतेरेदशमाथेरणभूमिमेंसुहाइँगे । कछुकटजैहैंवाकीतोहिंसमुझावें फललाग्योहैअनीतिकोसुऐसेपछताइँगे ॥ ताकेपाछेमेरीओरदेखदांतकाढकाढहाहाछाँडोछाँडो रामऐसेबिललाइँगे । जानकीचुराइवेकेलंकगढआइवेकेसीकेजीकेक्रोधतबहीतोसियराइँगे ॥ ८९ ॥

रावण उवाच ।

स०–कोपकैउत्तरदेतभयोरणमेंयहबातसुनीसबही ।
बिनएककेएकभएअबहींसियभेटनकीजियहौंसरही ॥
कैतोरामहमारसँग्रामकोजीतकैनेमकथातबहोइसही ।
अबआजचलेजगमेंयहबातकिरावणनाहिंकिरामनहीं ॥

कवित्त–कोपआरिजुरेनदुहूंकेमुखमुरेहैं नशूरनमेंदुरेरामरावणमहाबली । जैसेकछुघाउलंकराउकोलगाएरामतैसेसहबेकोदेहवाहीकीरचीभली ॥ वीररसमातेसबतातेनैनरातेरातेलोहूभरेगातउपमानमनतेटली । रामलछमनअंगगंगयमुनातरंगलोहूधारातिनमेंसरस्वतीसीव्है चली ॥ ६१ ॥ रीझरीझलरेदोऊठौरतेनटेररहेरूखनज्योंखरेआछेवीररसछरेहैं । घाइनसोंभरेलोहूझरनाज्योंझरैंतऊतनआहिडरेलरबेकोकरकरेहैं ॥ भएदेवहरेनभतेहूपुष्पपरेप्रानरावणकेआनगेरेइमेंरामधरेहैं । रू

द्भरहेरवडेव्हैनबीचअडेवीरचेरकह्योसदाहमरामअनु
सरेहैं ॥ ६२ ॥

रावण उवाच ।

स०-जेसनकादिकपौनअराधिकयोगजुटीअखियांरहैंलागी
ध्यानधरेंनधंसेंतहँरामसुतेकहियेजगमेंअनुरागी ॥
लंकपतीरणमाहिंकरेतिनहोअररावबआवहुआगी ।
अंकभरेमुकिआउलरेकहुँरावणतेअबकोवडभागी ॥६३
क्रोधकीडीठचितैनभओरसुदेवनसोंकह्योरावणयों ।
धिगमेरईजीवतरामकेऊपरफूलदियेवरषाइसुक्यों ॥
अबयोंरिसआवतहैरणमेंनिर्मूलकरोंतबजानहुजों ।
अतिफूलकीपीरभईतनकोरघुवीरकेतीरसहेसुखसों ६४

कवित्त–जेईजेचलाएबानतेतोतोरेहनूमानप्राननाथ रामओरजानहुनदएहैं । तवहींविलानेकाहूचलतनजाने जैसीदारिद्रीमनोरथविलाइवीचगएहैं॥ताकेपाछेअंगदसु ग्रीवजाम्बवंतनलनीलढीलछांडरणमेंनिसंकभएहैं । सैह थीत्रिशूलताकेफूलनज्योंतोरडारेरावणकेचक्रतेननेकच क्रभएहैं॥ ६५ ॥ताकेपाछेलछमनपैठकेनिशंकरणकाट केकरीकपालआधोआधकऱ्योहै । शुंडबिनकऱ्योतहां शोणितकेकुंडजहांबूडगयोअंगकुंभदीसतउघऱ्योहै ॥ ताहीछिनऐसीछबिआईजियरामकविमानोशिवरूपसब हीकोमनहऱ्योहै ।चंदनगुलाबफूलमालसोंबजाइगालपू जपूजदेववधूयूथपायपऱ्योहै ॥ ६६ ॥

स०-श्रीरघुवीरशरासनतेजबबाणछुटेनहिंजातसह्माऱ्यो
बूंदनज्योंबरषेचहुँओरकहेभभराइदशोंदिशिमाऱ्यो ॥
हाथनतेहथियारगएछुटमाथनतेमुकुटोभयोन्याऱ्यो ।
दाशरथीतबरावणकीगतितोररथीबिरथीकरडाऱ्यो ६७
रावणकोउतपातबडोदुखपोहिगयोगढकोटकँगूरे ।
देखमहारणदेवकहेशठपूरणसोंकिउँचाहतपूरे ॥
ठौरहीठौरभभूकेसेलूकेसेकालकेफूंकेसेबांदसेभूरे ॥
हैसबकेमुखरामहिरामकिमारहिमारकरैरणशूरे ॥६८॥
श्रीरघुवीरकेगाजतहीसुजहांकितहांअरियोंदबटे ।
जैसेसिंहकोशोरसुनेउन्मत्तकरीभयसोंमदसूकलटे ॥
रघुनाथकेकोपनओपरहीसुदशोंशिररावणकेझखटे ।
करहैतरवारकीगंगकीधारमेंपापिनकेजनुपापकटे ६९॥
शीशकटेदशशीशतऊरणमेंरघुवीरहूढूंडतडोले ।
जाइपरेजिहओरवलीक्षितिआगेतेमारहिमारसुबोले ॥
जेरथकुंजरटूटपरेतिनकोभुजबीसनसोंझकझोले ।
ज्योंघरमेंनिशिकोजुनिशाचरभाजनकोतममेंटकटोले॥
तेदशशीशपरेक्षितिमेंजनुद्वादशशूरप्रलयादिनके ।
नउठायसकेयमकेगणआइसुसाहसहैजुकहांइनके ॥
तबशीशकीओरसुबीसहुलोचनचाहरहीउतकोतिनके
छुटप्राणगएनहिंआशछुटीएईहालसदाभएप्रेमिनके ७१
रामसियाशिवासिंधुधराअहिदेवनकेदुखपुंजछुटे ।

रणआसमँदोदरीयोगिनीगीधमशानहवानअनंदलुटे ॥
रघुनाथकेहाथसेरावणकोशिरभूइँलुटेसुलुटेनजुटे ।
तबसातनकेदुखसातनकोसुखदेहछुटीसँगएऊछुटे ७२॥

कवित्त–भूलहूकेरामचंद्रऐसीजिनजानोकिमैं रावण तेजानकीबजाइढोललीनीहै । औराजिनजानोकिमैंबडी ठकुराइतमिलेतेताकेभाईकीबनाईलंककीनीहै ॥ कीनो हैविभीषणवडेईउपकारताहिऐसोयशदीनोजातेरामक थाचीनीहै । सुतोमैंहूजैसीकीनीभलीभांतिजोरावरीआ दिमुक्तिलीनीपाछेसीयआपदीनीहै ॥ ७३ ॥

स०–थोरीएबातकेकाजरेठाकुरतैंअपनीठकुराइतखोई ।
श्रीरघुवीरसोंवैरकियेबिनपत्थ्यकुपत्थ्याविपत्तिसमोई॥
जोसुरपतिफणापतिरामसुअत्तिकरेनचलेदिनदोई ।
रावणसोंकहप्राणचल्योरेविमत्तकेहाथपरोजिनकोई ७४

रावणप्राणसोबातकहेफिरजाहिभलीकरहोंनसँभाऱ्यो
दैमुहिंपीठचल्योकपटीयहकौनसमैतहँहौनपचाऱ्यो ॥
जानकीकोरकटाक्षनऊपरतोरेसेलाखकवारनवाऱ्यो ॥
मैंरणसैनकरीसुखसोंअबछाँडसियारघुवीरपधाऱ्यो ७५
तबग्रीवनवाइसुग्रीवकह्योप्रभुशोभतहैंकपिकेगणयों ।
पनमूरतवंतप्रतापचहूंदिशिफैलरह्योअबलोंधरयों ॥
रणरावणजूझपऱ्योपलमेंशिवलोकधऱ्योसुभलीविधयों
तबरामकेऊपरदेवनकेमनफूलकेफूलपरेघनज्यों ॥ ७६ ॥

श्रीरघुनाथकेपांयप्रतापतेधाइकेरावणजीतीहैलंका ।
सोशरमाइकेयोंबखसीजसदेतउदारालियेकरटंका ॥
जायविभीषणराज्यकरोसुखजाइकेराघवकेयशडंका ।
जोविधलैकोऊबैरकरेसोऊरामकेकोपरहेनहिंबंका ।७७।

फूलगएरघुवीरमहारघुवीरामिलेकपियूथसबै ।
उतजानकीफूलगईचितमेंत्रिजटीसोंकहेउडजाउँकबै ॥
कछुऐसीभईसबहूकीदशावरणतबरामकोहोइजबै ।
इहबीचमँदोदरिकीअपदाकछुथोरीसीहैसुनलेहुअबै७८

कवित्त–भौनते निकसआईरोवेबिललाइहाइहाइलं
कराइधाइपांइनपरतहै । रहीनसँभारकहूंहारकहूंवारआ
जभांतिभांतिआपदाकेपुंजनभरतहै ॥ परेन्यारेन्यारेरा
मबाननउतारेमुंडझुंडनकोलैलैरुंडऊपरधरतहै । जाके
डरचौंकचौंकपरेचतुराननसेसोईचौंकचौंकरानीचेटी त
डरतहै ॥ ७९ ॥ देवनकीबेटीदशकंधरकीभेंटीजीत
जीतजेलपेटीतेतोतबैनिकसतहै । रामकविलंककिधौं
लोभभरेसागरतेएईबडवानलकीलपटेंलसतहै॥ सांझस
मैज्योतपियरायधायधायआयमानोरविरावणमें किनरे
धँसतहै । मानोउतपातदिनसूखेजलजातमधिलंकपति
मेघबीजुरीसीलसकतहै ॥ ८० ॥ किधौंपतिजानाक्षिति
छोडेहोतएकक्षणप्रेमवशह्वैगएहोतातेनसँभारेहैं । चीन
चटकारेवहेलोहूकेपनारे किधौंन्यारेन्यारेरामबाणकाट

हीउतारेहैं ॥ जैसेरामचन्द्रबनसीतासोंकियोहैछलतैसे परपंचकोऊरावरोविचारेहैं । किधौंशिवऊपरचढाएहैंब हुरमुंडजोरेनजुरतजोररहीहाथहारेहैं ॥ ८१ ॥ एकक हैरोइहाथआंसुनसोंधोइकहोकैसेसुखहोइएककांप्योइक रतहैं । एककहैतीयभलेहाथलेलगाएसीयहनूमानदे खएकजीयतेडरतहैं ॥ परीधामधूमएकघूमघूमपरीझूम दुखकोसमुद्रसबक्योंहूनतरतहैं । जेहीमृगनैनीभईभारी दुखदैनीवैनीएडीसोंअटकगिरपाछेईपरतहैं ॥ ८२ ॥

दोहा ।

सबतेदुखीमँदोदरी, रहीचरणलपटाइ ॥
सातभांतउपमाभई, सोअबकहोंसुनाइ ८३

कविका वचन ।

कावित्त–किधौंअपकीरातिप्रगटभईरावणतेकिधौंति हूंलोकनकीअपदाईआईहै । किधौंसीयआसदेहछुटेतेउ दासभईलैगईमुकतपाछेमीचनिजुकाईहै॥किधौंठकुराई लंकराइतेविदाईहोताकिधौंगीधयोगिनी नयोगिनीपठाई है । देख्योरघुराईजबनीकेठहराईयहआइकेमँदोदरीचर णलपटाईहै ॥ ८४ ॥ कैतोइनपांइनकोदेवलोकलोकन केआइनिजकायभेंटभेंटदैनिहोरते । आठोलोकपालन कीसदाईमुकुटभालल्लोटिबोकरतहीनतासोडीठजोरते। यक्षरक्षकिन्नरभुजंगफूलचंदनसोंपूजतहैंसांझलोंबडेभों

रभोरते । रामकविरामडरआजातिनपाँइनकोलाजनभ्र
रतमनजंबुककटोरते ॥ ८५ ॥

मंदोदरीका वाक्य ॥

कवित्त–जादिनतेआनीसीयतादिनतेप्यारीपीयपक्ष
कैहमारेरुद्रदाहनेनभएहैं। दिनेदिनभईहाननेकहूनबची
कानमानहूसँभारभांतभांतसुखलएहैं॥तवहींतेमीजतहों
हाथनअनाथभईजबहींतेप्राणनाथऐसेसोइगएहैं । नेक
नसँभारतहोएकैवारहारतहोनाथमांसलैलैगीधगीधगी
धगएहैं ॥ ८६ ॥

कविका वाक्य ।

स०-जोअभिमानकरेगढकोकोऊतौगढकंचनकोकवहोई ।
खोदकरेपरिखागजवीसकसिंधुवनाइसकेनहिंकोई ॥
जीवतकौनकहेमरकेसुरराजहिजीततकौनसुलोई ।
सोसबरावणकोदईईशहतेपररामकियोभयेसोई ॥८७॥

सुग्रीव उवाच ।

स०-तौलगआनसुग्रीवकह्योतुमखेदतजोरणमेंयहहाऱ्यो ।
रावणबाणतेमूंड्कटेधरहैसबसांचसनेहतुमाऱ्यो ॥
धर्मसोंनीतचलेमिलकेजनरामकीओरदुहूंपगधाऱ्यो ।
श्रीरघुवीरमँदोदरीहैयहयोंकहकेकपिराजपुकाऱ्यो ८८
हैमघवाजितकीजननीमयदानवकीतनयापरधानी ।
राजतहीसबकेशिरनाथइहैदशकंधरकीपटरानी ॥

श्रीरघुवीरसुपाइनलागतह्वैकरजोरमहाबिललानी ।
रावणकेदुखयोंतरफैजैसेमीनमरेबिनसींचतपानी॥८९॥
नायरहेरघुनाथदोऊदृगनीरभरेकरुणारसते ।
नलनीलहनूरघुवीरसुअंगदमौनभजीठठकेहँसते ॥
रसपांचभएरघुवीरकेनैननमेंकछुकारणतेवसते ।
सोइसंतसुनोमनलायसवैउचटोजिनरावणकेयशते ।९०

दोहा ।

तिहअवसरब्रह्मादिशिव, सबरथचढेअकाश
सोयहसबजगहैप्रगट,जहँप्रभुहैंतहँदास ९१

सोरठा—लज्जाकोपप्रसाद, झमकझुंडनैननभरे ॥
करुणाअरुविसमाद, इनसोंमिलपांचोंभए९२।
शिवलक्ष्मणरुसुरेश, मिलिदशकंधरापिताते ॥
मंदोदरिदुखभेस, ज्योंरसत्योंकारणगनैं ॥९३॥

कवित्त— जेईनैनदेखेशिवलाजकेजहाजभएजेईलछ
मनदेखकोपउछरतहैं । जेईइन्द्रभानकेनिशानसुनसीझ
जातलंकपतितातेदेखशोचकोधरतहैं॥ जेईनैनदेखकेमं
दोदरीविपतिकालव्हैकृपालुकरुणाकेरसमेंढरतहैं। तेई
नैनरामकेबचैयाकालधामकेवैरामकविकामनाको पूरण
करतहैं ॥ ९४ ॥ शोकभरबूझीरघुवीरतिहूंलोकपति
नेकभजेदेनहाररोयकहीमुक्तके । बोलीतबदशरथनंदन
आनंदमनकुमतिकटैयाहोबढैयाहोसुमतिके ॥ अबहौं

निराशभईयोगिनीउदासभईएकआशजीयोंपाँइपाइर
घुपतिके । आयशुजोदेहुजरोंपापीपियसंगमरोंचेरीव्है
केपानीभरोंठाकुरभगतके ॥ १६ ॥

सवैया–श्रीरघुवीरहैभूलगईसबयोंटपकेदृगऊनभरी ।
सुजहांकेतहांरहेचित्रलिखेलखिदेवनज्योंपलकोंनपरी ॥
अलिकेशदिनेशकेऊपरभौंहसदारहतीतवक्रोधपरी ।
नअखंडलतोगिनतीविनतीसुकरेकापिमंडलवीचखरी ॥

कवित्त–जाकीदेहछुटेछुटेदूतकहीमेरीजीतसुनकेप्र
तीतकोऊदेवनकरतहै। कहीसुरराजहमेंआजतासुनावो
जिनजोजियतहोततोतोउलटोपरतहै ॥ जानेकमलास
नजोरामगरुडासनहैतौऊशिवकाननमेंआननधरतहै !
कहीरघुवीरयहताकीतीयदेखोकपिएतेपरकालतेतोको
ऊनडरतहै ॥ १७ ॥

रामचन्द्र उवाच ।

स०-सुन्दरिदाहकरोपतिकोवडभागिनमेंतूंवड़ीवड़भागी
संगजरैजिननीतनहींसुनलेवरकोविपदाअबभागी ॥
सांचकहोंयहबातअबैजगजौलगमोहिंभजेअनुरागी ।
तौलगसंगविभीषणकेकरराजइहांगढ़ह्वैपटरागी ॥१८॥
जोकछुअंकलिखोविधनातोईहोतहैसुंदरिशोकनिवारो।
मेराकछूअपराधनहींअरुहैअपराधतोआपविचारो ॥
बारदुतोनकतैंपठएकपिरावणवैरविसारसँभारो ।
आनमिलेसियये पलटेपतिकीरतिलाजलैलंकसिधारो।१९।
सोनकरीतिनयोंसमुझीकह्योरामकेवैररतीनडरों ।

कवित्त–रामकीरजाइपाइहनूमानकीसहाइचौपसों
चिताबनाइरावणकीदेहको । तापरलैधरीफूंकदीनीतेही
घरीदेवकहेंभलीकरीदृगदेखेंभरगेहको ॥ ऐसीपरजरीअ
जहूंलौंहैसुहरीमानोप्रगटजनावतहैंसीताकेसनेहको ।
परेकोटमेहतऊजरेलेहदेहाकिएहिएकेहुलासतेनामिली
जाइखेहको ॥ १०५ ॥

सोरठा–तबलछमनहनुमान, रामरजायशुपायकै ॥
कीन्हेरवकुपलान,जनकसुताजिहवनबसै १०६

कवित्त–जाइशिरनाइकह्योचलोसीयमाइधाइदेखो
रामपाइसतभाइनिरमलसों । होजुलंकराइरणजूझोअर
राइयशदुंदुभीबजाइरघुराइजीतेबलसों॥कहीनबनाइक
हूंलोचनलगाइइतसबसोंकहतआजछूटेकलकलसों ॥
लैचलेलिवाइकविरामबलजाइछविरहीक्षितिछाइनखच
न्द्रिकाकीकलसों ॥ १०८ ॥

स०–मोरचलेअलिकैअहिजानचकोरचलेमुखजानससी
दृगदेखसरोजनतेसुथरेमधुपावलसीयकेसंगधसी ॥
सुनपायननूपुरकीधुनसोंमिलहंसचलेजियमेंजुबसी ।
अजहूंजियलाखसँकोचनसोंतौउदामिनिकोरदपांतहँसी
जोकहहैरघुबीरचितैमुहितेवनमेंमृगकाजपठाए ।
औरइतेपररेखमिटायकैभीखदईतोइतेदुखपाए ॥
तौयमकेहरकोहनुमानएप्राणकुरंगासियाहैबनाए ।

जानतहौंकछुहैविपरीतजुमोहिंबुलावनआपनआए ॥
जोसततेशतयोजनसिंधुहोफांदपन्योपुरठोकजरायो ।
तोसततेशशिशूरफिरैनभशेषधरीक्षितिखेदनपायो ॥
तोसततेरणकोपचढेसुनजानकीरावणमारगिरायो ।
तोहितोबोलतहैदशपैडसुदाशरथीलँघवारिधिआयो ॥

कवित्त–तेरेविछुरेतेऔरबिछुरीहैंसाततीयरावण केमारतहींसातोंदुरआईहैं । लाजराखीनैननप्रवीणतासु वैननमेंग्रीवकरसकुचउदारतासुआईहैं ॥ शोभाअंगअंग अखंडकीरतिअखंडआजभुजदंडनमेंशूरताबसाईहैं । जोतूकहैमोकोठौरकहांरघुवीरमनताकीओरनैनभरदे खनेनपाईहैं ॥ १११ ॥

स०-यद्यपियोंहनुमानकहीतऊसियाजियकोनमिटेखटको
जबकछुरावणकीचलहैतबहीमनमानकहैचटको ॥
वनकंटककुंजविचारनमेंभयोजानकीप्राणमहीपटको ।
कविरामचलेठठकेसकुचेसुभयोतनआजबटानटको ॥
दूरतेरामदिवाकरदेखभयेसियकेदृगकंजहँसोहे ।
श्यामघटाअँगअंगनसोंकियेचातकमोरमहाललचोंहे ॥
नैनसरोजनिहारतहीतेईभृंगकियेउन्मत्तधँसोहे ।
पूरणतासुखचंद्रविलोकचकोरकिएचितकेचपलोहे ॥
जानकीओरानिहारतहीरघुवीरकेनैनभएसरसौंहे ।
औरजितेभटहैंसबकेदृगशीलगहेकिएभूमिधसौंहे ॥

कैप्रगटीमणिवासुकिकीकिधौकंजपरेक्षितिमेंविगसौहे ।
औरभलीउपमाकविरामनिछत्रमनोजलमाहिंलसौहे ॥
श्रीरघुवीरकहीमुसकाइसुनाइकैलोगनसोंसियसों ।
जबलौंनहिंआगप्रवेशकरेतबलौंनगिलानिमिटेजियसों॥
धरणीशलईसुकरोंअबहींशिरनाइकह्योअपनेपियसें ।
अबऔरकीकौनप्रतीतिकरेजबरामसेआजकहेंतियसों॥
सोरठा—अबहोंकरोंप्रवेश,रामरजायशुपाइके ॥
सखीसमीरदिनेश, पतिव्रतअतिपूरोसदा ११६

दोहा ।

हनूमानतबयोंकही, जानतहोंकिहहेत ॥
कंचनदेहसियाहुती, कुंदनसीकरलेत ११७॥
स०-हाथनजोरकहीसियजूतबपावककोशिरनाइकेऐसी।
जोरघुवीरविनाजियमेंसुपनेहुँमेंमूरतऔरहैवैसी ॥
तौममअंगनजारपितातुहिरामकीसोंहरेकानहैकैसी ।
जोपतिपाइनसोंरतिहैतोसरोजसीराखसरोवरजैसी ११८

दोहा ।

शिवविरंचिदेखतसबै, सुरगणअरुसुरराइ ॥
अग्निलपटमेंलपटसी, गईसीयलपटाइ ११९
स०-यद्यपिआनकहीनभमेंसुरपात्रिफणीपतिवेदमई ।
तिहुंलोकनमेंजोरमाऔउमासोइजानकीहैनहिंबातनई ।
अरुआपनजानतहैंपियकीतऊबातकछूसमझीनगई ।

कपिभीरपरीरघुवीरतऊसियआगमेंआगमिलायलई ॥
रामरजायशुतेपहलेगिरिकंचनतेजनुराशिलई ।
घरआयकेलंकरचीरुचिसोंतिहुँलोकनतेतिनभांतिनई॥
तवदेखप्रसन्नभएरघुवीरसुरीझकेताहिसुमोक्षदई ।
जनुराघवरावणचोरसुनारतेचासनीसीसीयतालई १२१
सीयहुताशनमाहिंप्रवेशकियोजवरामरजायसुपाई ।
जानतहोंइहकारणकौनभलीउपमाकविरामवनाई ॥
जानकीतेविछुरेविरहागनहींजियतेजनुवाहरआई ।
रावणमारविदारदियोअवतोपगछ्वैकरहोइविदाई १२२
जानकीशीलकेतेजतेतेजभयोउतपावकऔअतिपीरो ।
पांइनलागकरीविनतीतुमहोजगमातपितारघुवीरो ॥
मोपरआजकरोतुमकोपकपूरपटीरसमीरतेसीरो ।
जानतलोकासियादिवलेतसुआगकोआनपरीदुखभीरो॥
कवित्त–आगतेनिकसआईआगज्योतिसेसवाईरीझर घुराईमनभाईविनखेदसों । मानोप्राणदायनीगवाईमन आईआजकीधौंराजतीनलोकपायोरिपुछेदसों ॥ नाना चितचाइनसोंवैसेईजुभाइनसोंरामचन्द्रपांइनसोंलागीए कभेदसों ॥ मिलेमीतमीताज्योंधनीसोंदौरनीतातैसेरा मैमिलीसीताजैसेगीतामिलेवेदसों ॥ १२४ ॥

दोहा ।

जबनारायणलक्ष्मितब, हरिसँगरुक्मिणिहोइ ॥
जबरघुपतितबजानकी, नएनउपजतदोइ ॥

सोरठा–हाथजोरशिरनाइ, तबलक्ष्मणविनतीकरे ॥
दईलंकरघुराइ, रावणकोधनलीजिए ॥१२६॥

रामचंद्र उवाच ।

सोरठा–जोरिपुजीत्योजाय, शूरकहावेयशवढे ॥
तबकीजियेसहाय, ताकोकछूनलीजिये१२७॥
कपिगणसंगलिवाय, चल्योविभीषणपांइतर ॥
वज्रदुंदुभीनजाय,लक्ष्मणसियासाहितचले१२८

कवित्त-जैसेदानकीरतिसुमासऋतुप्रीतिचितजैसेरत रामकविरामानिधिभागसों ।ज्योंअरथवानीमहारुद्रसोंभ वानीसिंधुगंगचंदचांदनीज्योंमणिशेषनागसों ।ज्योंधरम नीतिभलोसाहिबवसीठतैसेआजमिलीजानकीजूआपने सुहागसों । बैठकेविमानगीरवानचलेसीयरामजैसेकरता लमिलेंतालचलेरागसों ॥ १२९ ॥ चलेरिपुजीतकरीरी तसबशूरनकीजानकीलेसंगमानोप्राणसेलवाइके । सिया सोंकहतदेखआयोवहठौरजहांलछमनइन्द्रजीतमारोहैरि साइके ॥ इहांनागफांसपरीइहांहनुमंतवीरगिर्‌योमेरोवी रमोकोदियोहैजिवाइके । इहांकाहूमाथेदशकाटेलंकराइ हूकेकहीरघुराइवातनेकशरमाइके ॥१३०॥संगसीयवीर औसमीरसुतअंगदसुग्रीवजाम्बवंतकपिमंडलहुलासकी। सेवाको ततौच्छणविभीषणसोंनलनीलपलहीमेंकरेंजो रमूजरामखासकी ॥ सबैबड़भागीअनुरागीप्रभुपाइन

के चाइनसोंबातकहेंसबकेविलासकी । चलेउपरोधम
नोपौदलगीआनँदकीऔधआयगईऔधगईवनवासकी॥

स०-दूरतेदेखवसिष्ठकहीनभमंडलरामअखंडलआए ।
लोगसबैमिलयोंनिरखेशशिसोंदृगपुंजचकोरलगाए ॥
आपनहीमनभावनसोंजनुसावनचातकमोरजिआए ।
राघवरामसियापतिश्रीपतिसोसबकेमुखकंजसुहाए१३२
रामवसिष्ठकेपाँयँपरेमिलबैठभलीरुचिसोंपगधोए ।
भूपतिकीविपरीतकथासुनकेउमड़ेजलनैनसमोए ॥
सिंधुधराधरनागनदीवनवेहडजेपहलेहमजोए ।
देखतश्रीगुरुपांइनकोपलमेंविसरेप्रभुजूदुखखोए १३३॥
कैकइनंदनदूरतेआनप्रणामकियोदुखनैनवहाए ।
मूंड़जटानखवेषतपोधनभूपतिझुंडसबैपगलाए ॥
श्रीरघुवीरलगाइरहेछतियांमुखचूमकछूमुसकाए ।
देखविभीषणऔरसुग्रीवनग्रीवउठीवहुतेशरमाए १३४॥
ऐसीएभांतिसबैमिलकेरघुवीरसुकैकयीकेघरआए ।
पांइगहेसियवीरसमेतकह्योसबअंगनआजसुहाए ॥
तातभयोअरिनीसुनमातकियोहिततैंवनवासपठाए ।
देहछुटेसबकीजगमेंयशलेनचलेनरतेपछिताए १३५ ॥

कवित्त-पूरणपवित्रचले मिलनसुमित्राजुकोलोचन
बिछौनाकरकरेडगडगमें । तिनहूतोरामकोविचारफेरडा
रोतनप्रेमजलआँसुनसोंकीनीकीचमगमें ॥ जायलपटा

यनेहवहुतेजनायप्रभुजानकीसमेतशीशरहेपगधरमें। रामलछमनजूकेगीलेघाउदेखकह्योशूरसुतजननीनजने औरजगमें ॥ १२६ ॥ जौलोंरघुवीरमातमंदिरलैजाहिं जाहिंतौलोंहौंसभिक्षुकनरहीलेनदानकी । भूषणपटंबरउतारसबवारदीनेकहतकौशल्याआजकौनमोरे मानकी ॥ आरतीबनायतिनपौरहीमेंआयलीनोआजहोंसुपूतीभईदेखगतिभानकी । याहीतेउठायमुखचूंमपानीपियोवारछौनादोऊगोदलैकेबीचदीनीजानकी ॥ १२७ ॥
स०-रामकेदेखबेकोसखियांउमडीघनज्योंसँगआनँदजीके रूपनिहारसबैबलजाहिंवैमानहुघूंटतघूंटअमीके ॥
खीजकहेतिनसोंजननीमुहिंवारनदेहुदियासखिघीके ।
तौलगदेखनदेउँनकाहूकोजौलगनैनसिरातननीके १२८

कवित्त-गांवकीलुगाई लैलैआवतबधाई तिनकीअशीशलैलैकौशसौगुनोधरतहै ।एकनकोदानसनमानदैदैएकनकोएकनकेपांइपरबिदाईकरतहै॥प्राणनसमेतवारडारोंरामचन्द्रपरजोईसोईदैदैदुखकोटिनहरतहै।औरकीचलावेकौनवारतहैराईलोनमेरीडीठलागेजिनजीयमेंडरतहै ॥१२९॥ भौनतेनिकसआईराजमंडलीबनाईकीनोअभिषेकऋषिमंडलविचारके। छत्रध्वजाचामरविजनलैकेवीरसवराजकेसिंहासनविराजेअरिमारके ।दुंदुभीवजायसुरराजवरषायफूलशूलमिटीसवहीकीफूलनरनारके ।

रामचंद्रचन्द्रमाकेराजकोसमाजदेखआजतातेरामकवि प्राणदीनेवारके १४०कहेरघुराईसुनभाईहोभरतराईकौ नकौनकहौंउपकारकपिराजके । सीताशोधलाइसिंधुपा टकेबनाइगैलज्यायेलछमनजूको एतेवडेकाजके ॥नील नलहनूमान अंगदसोंजाम्ववानएइहैंजितैयासवरावणस माजके । तातेहमइनकेऋणीहैंअजहूंलोंवीरलोचनहमा रेनउठतमारेलाजके ॥ १४१ ॥

स०—देशनदेशतेआएनरेशसवैरघुवीरकेपांयपरे । फिरथापविदाकरआनँदसोंदुखसूखगएसुखहोतहरे ॥ कपिमंडलऔरविभीषणकोरथवारणदैमनपुंजखरे। कविरामश्रीरामकेसेवतहीयुगचारनमेंकहोकौनतरे ॥

सोरठा—रामभक्तिरसहोइ, तौरघुपतिछांडेनहीं ॥
प्रभुचरणनतनजोइ, हनूमानसवसोकहे १४३॥

कवत्ति—दानपुरहूतसोईकुलमेंसुपूतसोईलाखकामछाँ डकेजुकरेएककामको।पंडितप्रवीनसोईप्रेमजलमीनसो ईऔरपैकहावेआपकहेहरिनामको॥लाजकोजहाजसोई आजकविराजसोईमेरेशिरताजसोईकोजुभरेहामको । रामकविराजसोई राजकोसमाजसोईमहाराजसोईजोईभ जेराजारामको ॥ १४४ ॥

सोरठा—आनँदउरनसमाय, भुजउठायअंगदकहे ॥
रघुपतिकेगुणगाय, क्षणभंगुरतनुजानके १४५

कवित्त–सदारघुवीरकहलछमनवीरकहमहारण धीरकहमनकेसहायरे । सीतापतिरामकहकामहूके कामकहरामरामरामकहऔरदेवहायरे ॥ तीनोलोकना थकहबूडेदेतहाथकहआपरघुनाथकहऔरपैकहायरे ॥ वेदनकोसारकहसवको अधारकह मोक्षलौउदारकहहो तहैसहायरे ॥ १४६ ॥

स०–नृपमंडलतेउठशाइविभीषणआनचढीचितचौपनई । यहभूरतसांवरीनैननमेंउरमेंवसहोइअनंदमई ॥ प्रभुकीमहिमाकहकौनसकेसुनलेहुसबैभटबातनई । जबआनमिल्योतबहींहँसकेमोसेरंकनकोजिनलंकदई ॥

सोरठा–सुखप्रसन्नचितचाउ, नैनकमलकविरामसों ॥
कपटरहितकपिराउ, कीरतिरघुपतिकीकरी ॥

स०–रामकेपांइनकोबलपाइमैंबालिसोंमारकेदेशलयो । अरुरामकेपाँइनकेबलतेकपिमंडलमेंकपिराजभयो ॥ उतरामकेपाँइनमेंजबहींचितचोपमिलायकैनैनदयो । तबहींसबपूरणकामभएकविरामइहैजियजानलयो १४९

सोरठा–शिवविरंचिसुरईश, वेदब्रह्मसेवतचरण ॥
देतवसिष्ठअशीश, सभासहितरघुवीरको १५०

कवित्त–शेषसेससुझवीरव्हेहैं गुणकेभँडारतेईसियासी खकंठभूषणज्योंधरहैं । आपनसमुझसुखपाइऔसुनाइऐ सेगुणगाइगाइजियमाहिंप्रेमभरहैं ॥ तिनकेहियेतेरघुवीर

वीरलछमनजानकीसमेतसदाध्रुवज्योंनटरहैं । रामचन्द्र
गीतकियेचौदहीजुअंकतेऊचौदहीभुवनकोकलंककदूरकरहैं
छप्पय-संवत्विक्रमनृपतिसहँसपटशतअसीहवर ।
चैत्रचाँदनीदूजछत्रजहांगीरसुभटपर ॥
शुभलच्छनदच्छनसुदेशकविरामविचच्छन ।
कृष्णदासतनुकुलप्रकाशयशदीपकरच्छन ॥
रघुपतिचरित्रातिनयथामतिप्रगटकर्योशुभलगनगण ।
देभक्तिदाननिरभयकरहुजयरघुपतिरघुवंशमण। १८२।

इति श्रीकविवरहृदयरामकवि विरचिते भाषाहनुमन्नाटके श्रीरघुनाथराज्याभिषेकोनाम चतुर्दशोऽङ्कः ॥ १४ ॥

समाप्तोऽयं हनुमन्नाटकाख्यो ग्रंथः ।

विक्रय्यपुस्तकें।

नाम.	की. रु. आ.
अभिज्ञानशाकुन्तलनाटक सटीक ...	१–४
रत्नावलीनाटक मूल सटिप्पण ...	०–६
रत्नावली भा०टी० (वाक्यरचना मनहरण)	०–१०
प्रल्हादनाटकलालाश्रीनिवासदासप्रणीत ...	०–६
माधवानलकामकंदलानाटक-ऐसाप्रीतिप्रवाह ग्रंथदेखनेहीके योग्य है लालाशालिग्राम वैश्यकृत	०–१२
मोरध्वज नाटक–रौद्र वीर सत्य और भक्ति-मार्गी करुणा रससे परिपूर्ण भाषा लाला शालिग्राम कृत	०–८
वेणीसंहारनाटक भाषा-करुणा हास्य और शांत व रौद्र रससे परिपूर्ण अत्युत्तम पण्डित ज्वालाप्रसादजीकृत ...	०–१०
विवाहिताविलापनाटक भाषा ...	०–४
आनंदोद्भव नाटक–पण्डितकृष्णबिहारीकृत	०–१
शीलसावित्रीनाटक (सतीत्वप्रभाव) ...	०–८
सीतावनवास नाटक (गद्यपद्य) ...	०–६
एज् यू लाइक इट्ट (शेक्स्पीयर कृत) नाटक पु०गोपीनाथ एम. ए. जयपुर राज वकीलकृत	१–०

नाम.	की. रु. आ.
इन्द्रसभा नाटक (राजा इन्द्रकी सभाका वर्णन रागरागिनियोंमें नाटकाकार) ...	०—४
अभिमन्युनाटक (करुणा, वीररसका एक अपूर्वही दृश्य लालाशालग्रामजीने दर्शायाहै)	०—१२
रामरसायन रामायन-रसिकविहारीकृत ...	४—०
रसिकप्रिया कविवरकेशवदासकृत (नायकाभेद)	१—०
रामचंद्रिका सटीक कवि केशवदास प्रणीत	२—०
विज्ञानगीता केशवदासकृत (वेदान्त) ...	०—१०
काव्यनिर्णयभाषा छन्दबद्ध [भिखारीदास कृत]मनहरण छन्दोंमें कठिन (अलंकार) वर्णन	१—४
जगद्विनोद [पद्माकरकृत नायकाभेद]	०—८
रसराज [मतिरामकृत नायकाभेद] ...	०—६
ब्रजविलास बड़ा मोटेअक्षरका टिप्पणीसहित	८—०
ब्रजविलास मध्यमअक्षरपदच्छेद और टिप्पणीसहित विलायती जिल्द म्लेज ...	२—०
तथा रफ़ कागजका	१—८